শ্রীরামচরিত মানস



পোহ্বামী তুলসালাস

অরণ্যকাণ্ড, স্থন্দরকাণ্ড, কিন্ধিন্ধ্যাকাণ্ড,

লঙ্কাকাণ্ড ও উত্তরকাণ্ড

১৯০ চাম্বন্ধ্র

১৯০ চন্দ্র

১৯০ চন্দর

১৯০ চন্দ্র

১৯০ চন্দর

১৯০ চন্দ্র

১৯০ চন্দর

১৯

বঙ্গানুবাদ

বস্থমতী সাহিত্য-মুন্দির

১৬৬ ন° বহুবাজার খ্রীট, কলিকাতা ১২ প্রকাশক ও মুদ্রাকর শ্রীশশিভূষণ দত্ত বমুমতী প্রেস, কলিকাতা

দ্বিতীয় ধণ্ডের সূচীপত্র

| चियस | পৃষ্ঠা | विवन्न | পূচা |
|---|---------------|---|------------|
| অরণ্যকাপ্ত | | কিছিল্যাকাণ্ড | |
| মক্লাচরণ | > | মক্সাচরণ | ₹> |
| জয়স্কের কুটিপতা | > | শ্রীরামের গহিত হহুমানের গা কা ৎ | 45 |
| অত্তি-মিশন | ર | শ্রীরামের সহিভ স্থগ্রীবের মিত্রভা | 40 |
| গীতা-অনস্বা মিলন ; অনস্বার পাতিব্রত্য- | | স্থগ্রীবের নিজ-তৃঃধ বর্ণন | 9> |
| ধর্ম্ম কীর্ত্তন | 8 | বালি-বধ-প্রভিজ্ঞা; ব ন্ধ-লক্ষণ বর্ণন | ৩২ |
| বিরাধ বধ, শর ভদ-প্রসদ | ŧ | স্থগ্রীবের বৈরাগ্য | 90 |
| শ্রীরামের রাক্ষ্ণ-বধের প্রতিক্রা | 5 | বালি-স্ত্ৰীৰ যুদ্ধ ; বালি-বধ | 99 |
| স্থতীক্ষের ভক্তি; অগন্ত্য-মিলন | ь | তারার বিলাপ ; শ্রীরামের <mark>তারাকে উপদেশ</mark> | 98 |
| শ্ৰীরামের দণ্ডক ৰনে প্রবেশ | > | প্র <u>ত্রীবের রাজ্</u> যাভিষেক | 08 |
| জটায়ুব সহিত সাক্ষাৎ | > | বৰ্ষাশ্বস্থ বৰ্ণন | 96 |
| পঞ্চবটা বনে বাস ; রাম-সন্মধ সংবাদ | > | স্থগ্রীবের উপর শ্রীরামের অসম্ভোব ; সম্মণের রে | ক্লাধ ৩৭ |
| স্পূর্ণথার বিবরণ | >> | শীরাম-স্মগ্রীব সংবাদ | ৩৮ |
| थत-मृय्यामि वय | >> | সীভার সন্ধানে বানর-সৈক্ত প্রেরণ | 9 F |
| হর্পণঝার রাবণের নিকট গমন | 28 | ভপস্বিনীর সহিভ বানরগণের সাক্ষাৎ | 40 |
| সীতার অগ্নি প্রবেশ ও মায়া-সীতা | >4 | বানরগণের সমৃত্র-ভটে গমন | 80 |
| মাতীচের বিবরণ ; মারীচ বধ | 36 | সম্পাতির সহিত বানরগণের ক থোপকণন | 80 |
| গীতা হরণ ও গীতা-বিলাপ | >9 | গম্ দ্র-লক্ষনের যুক্তি | 80 |
| অটায়্র সহিভ রাবণের যুদ্ধ | > F | জ্বাম্ববানের হত্নুমানকে উৎসাহিত করণ | 83 |
| শ্রীরামের বিলাপ; জটারুর প্রসম্ব | >> | শ্রীরাম-গুণ-মা হাস্ম্য | 83 |
| কৰ্ম উদ্ধার | २० | - | |
| শবরীর প্রতি কুপা | २> | ক্ষন্ত কণ্ড | |
| নরবিধ ভক্তির উপদেশ | ٩> | মুদ্দাচরণ | 80 |
| 'রামের বিরহ | રર | হ্যুমানের সাগর লক্ষ্ম | 80 |
| পশা সরোবরে গমন | ২৩ | হতুমান্-পুরসা সাক্ষাৎকার | 88 |
| নার্দ-রাম সংবাদ | २8 | नकार्यम्, नकियेयः, रुष्ट्याटनव नकाव औरवन, | - |
| এ রাম-মাহাত্য প্রবণের মহিমা | २१ | লভার শোভাবর্ণন | 43 |
| | | रष्ट्रवान्-विको यण সংবাদ | 84 |
| | | অশোকবন্ধে সীতাকে দেখিয়া হত্বযানের স্কংশ ; | |
| | | ্ব ব্যৱশের সীভাবে ভর প্রদর্শন | 84 |

| विका | পৃষ্ঠা | विवड | পৃষ্ঠা |
|--|----------------|---|-----------|
| সীভা-ত্রিজট। সংবাদ | 86 | রামচজের শরে রাবণের ছত্ত-মুকুটাদি কর্ত্তন | 16 |
| नी चा-इष्ट्र यान् ज रवाम | 86 | মন্দোদরীর রাবশকে পু-র্ব্বার উপদেশ ; | |
| অংশক্ৰন ছারধার | •• | ও রাম-মহিমা কীর্ত্তন | 94 |
| অক্সমুক্ষার বধ | 40 | অঙ্গদের লঙ্কা-গমন | 96 |
| মেঘনাদ কর্তৃক হতুমানের নাগপালে বছ হইরা | | রাবণ-অঞ্চ সংবাদ | 99 |
| রাবণ-সভার গমন | e> | রাৰণকে মন্দোদরীর পুনঃ উপদেশ দান | 68 |
| रस्यान्-सावण जरवाप | 45 | त्रोय-चळक गरवान | 44 |
| লহা-দহম | & 9 | যু দ্ধারত | 64 |
| হত্মনানের সীভার নিকট বিদার গ্রহণ | ¢ 8 | মান্যবানের রাবণকে উপদেশ দান | 69 |
| সাগর-শব্দনানন্তর সকলের প্রভ্যাবর্ত্তন | 48 | লক্ষণ-মেখনাদ যুদ্ধ | 20 |
| মধ্ বন-ভদ ; পু গ্রীব-মিলন | et | লক্ষণের শক্তিশেল | 34 |
| वित्राय-रङ्गान् गःवाप | ** | হস্থমানের স্থবেশ-বৈগতে স্থানরন | 38 |
| ৰানর-সেনা সহ প্রীরামের সমূদ্রতটে আগমন | ¢ 9 | কালনেমি-ব্লাৰণ সংবাদ | >< |
| मॅटम्मामत्री-न्रावण गरवाम | 46 | মকরী উদ্ধার | 20 |
| রাবণকে বিভীবণের উপদেশ | ¢ b | কালনেমি-উদ্ধার | 30 |
| রাবণ কর্তৃক বিভীয়ণের অপ মান | 60 | ভরতের শরে হহুযানের মূর্ছা | >8 |
| বিভীবণের জীরামের চরণে শরণ গ্রহণ | 60 | अब्र ङ-इङ्गान् गर्वा ष | ≥8 |
| সমূদ্র উন্তরণের প্রামর্শ | હ૭ | শ্রীরামের বিলাপ | Þ¢ |
| রাবণের দৃত্তের আগমন ও লক্ষণের লিশি | | হস্থানের প্রভ্যাবর্ত্তন | 36 |
| শ্ইয়া প্রভিগ্যন | 8 | কুম্বকর্বের জাগরণ | 24 |
| দৃভের রাবণকে উপদেশ ও সন্মণের সিপি দান | 48 | কুম্বকরে রাবণকে উপদেশ দান | 26 |
| সমুদ্রের উপর এরামের ক্রোধ ও সমুদ্রের তব, | 66 | বিভীষণ-কুম্ভকর্ণ সংবাদ | >6 |
| ब ेत्राम- थ ण माश्रापा | 69 | কুম্বকর্ণের যুদ্ধ | 24 |
| - Marian Control | | মেঘনাদের যুদ্ধ ও গ্রীরামের নাগপাশ | >00 |
| | | स्थिनोरमद युक्क ध्वःत्र ७ स्यनाम वय | >0> |
| লহা কাণ্ড | | রাবশের যুদ্ধ ধাত্রা | >°र |
| মঞ্চলাচ রণ | 62 | রাক্স-বানরের যুদ্ধ | 200 |
| সেতৃ-বন্ধন | 43 | লন্ম ণ-রাব ণের যুদ্ধ | >04 |
| জীরাম কর্তৃক রামেশ্বর-প্রতিষ্ঠা | 90 | রাবণের মূর্জ্য ; রাবণের যক্ত ধ্বংস | 305 |
| সাগর- উত্তরণ | 4> | রাম রাবণের যুদ্ধ | >-9 |
| স্থবেল পর্বতে অবস্থান ; রাবণের ব্যাকুলতা | 95 | বিভীবণের প্রতি রাবণের শক্তি-ক্ষেপ | >>> |
| ক্লাখণের প্রতি মন্দোদরীর উপদেশ | 45 | রাবণ-বিভীবণের যুদ্ধ | >>> |
| त्राव न-ध्यं व्य गरवान | 29 | রাব ণ হয় ুমানের বুদ্ধ, রাবণের মারা-ক্ষ্টি | >>6 |
| জ্ববেল পর্বতে চক্রোধর বর্ণন | 44 | খোর যুদ্ধ ; রাবণের মূর্চ্ছ। | >>0 |

| विका | नृक्षे | ৰিখন্ন | পৃষ্ঠা |
|--|-------------|---|-----------------|
| ত্ৰিজটা-গীভা গংৰাদ | 328 | শীভার রাম-দেবা | 787 |
| রাবণ-বং | >>¢ | সন্তান-জন্ম ; অ বাধ্যার রমনীরতা | >8< |
| নবোদরী-বিলাপ; রাবণের অক্টোট ক্রিরা | >>9 | স্বকাদির রাম-স্কাশে আগমন | >8¢ |
| বিভীষণের বাদ্যাভিষেক | >>6 | রাম-সকাশে হছমান্ কর্তৃক ভরতের প্রশ্ন জিঞা সা | >86 |
| হছুমানের শীভা-সমীপে গমন | >>> | শ্রীরামের প্রজাগণকে উপদেশ | >8> |
| গীভার আগমন ; অগ্নি-পরীকা | 325 | এ রাম-বশিষ্ঠ সংবাদ | >6. |
| দেৰগণের তব ; ইজে র সুধা-বর্বণ | ३२३ | নারদের রাম-স্কাশে আগমন ও গুব | >42 |
| ত্রদার শুব | ><> | হর-পার্ব্বতী সংবাদ | >62 |
| হশরণের আগমন | ે રર | কাক ভূষুপ্তির উপাধ্যান | >48 |
| रेट्स्प्र चर | ે રર | शक्टफ़्र ट्यांह | >48 |
| মহাদেবের গুব | ১২৩ | কাক ভূবুশুর নিকট গরুড়ের রাম-কথা শ্রবণ | >44 |
| বিভীবণের প্রার্থনা | 328 | কাক ভূমাণ্ডর নিজ পূর্ব জন্ম কথা বর্ণন | >64 |
| ৰিভী ৰণের ৰানরগণকে বন্ধ, অ লভা র বিভরণ | >२ ६ | রামের মহানতা | >66 |
| রাম সীভা লক্ষণের অযোধ্যায় গমন | ३ २७ | কলি মাহাম্য্য কীৰ্ত্তন | >9• |
| ञ्जिताय-नीना यादाचा | ১২৭ | গুরু-অপমান ও শিবের শাপ | >98 |
| | | क्रजाहेक | >14 |
| উত্তরকাণ্ড | | শিবের নিকট ক্মা ভিকা | >94 |
| মঙ্গলাচরণ | :२३ | জ্ঞান ভক্তি নিরূপণ | >96 |
| ভরভ-বিরহ ও ভরত-হ ত্ন মান্ মি ল ন | >२ ৯ | জ্ঞ:ন-দীপক | 292 |
| ীরাম-ভ রতাদি মিলন | ১৩২ | ভক্তির মাহাষ্ম্য কীর্ত্তন |) > > |
| রামের রাজ্যাভিবেক | >08 | গরুড়ের সাভ প্রান্ন | >6 € |
| চারি বেশের শুষ | 206 | মন-বোগ | >50 |
| মহাদেবের স্থাম-শুৰ | >७१ | ভবন-মাহাস্ম্য | >68 |
| ৰানৰগণ ও শুহকে বিদায় দান | >9b | রামারণ-মাহাম্য | >6 |
| ব্লাৰ-ব্লাজ্য বৰ্ণন | 280 | ভূলসীদাসের দীনভা ও ফল জ্রতি | >>6 |

শুদ্ধিপত্ৰ

| পৃষ্ঠা | দোহা | চোপাই | वरुद | |
|------------|--------|-------------|---|--------------------------------------|
| b . | ১২ | 3 | चढ्डोन तम-चड्ड··· | ···- 3% # 40··· |
| ১২ | >9 | E 7 | কোটি ইংশ্লণ | কোটি ইবস্থন |
| 59 | 30 | 5 | শুন বাম বধুপতি••• | •••ৰাম ৰঙ্গতি••• |
| २२ | 30 | œ | মোর দরশন কলও এ অপার অফুপ | মোৰ দবশন-ক্স এ অপাব ও অভূপ |
| ₹₫ | 8≥,∢) | 3 | ৰাজা কৰ শক্তিশহা হকা কৰেন ভা'ৱ | मांका खदर |
| २क | | গোৰঠা | •••कविश्व [।] त्रवन (वर्ग) भीन | ···ক্ৰিল গ্ৰল বেবা পান |
| ೨೨ | ٩ | > | •••हि ध्वशर्वि (पाव वर्ष करव शर्धान | ·· मृष्टि व्यक्तिं··· |
| • | • | 3 | ভবিলেন নিজ দেহ তা'ব কৰে প্রশন | কৰিলেন নিজ কৰে ভাৰৈ দেহ প্ৰশ্ন |
| 38 | 70 | ¢ | •••মিহা চৰণে জাঁৰ কৰিল সৰে পমন | निषया हवत्य की'वः • • |
| 20 | >> | ૦ | •••-कन ना विभाव सब मिक्टर ना वादवाव | क्ति व। विशव मदः ः |
| ¢5 | ৩৭ | 8 | •••বেঘন চতুব আৰু সৰুপ গুণ নিচন্ন | ···হউক চতুৰ আৰু স কল ওণ নিলয় |
| 60 | 8२ | > | ••• আসিলেন ভ্ৰাপতি সাগৰের এ-পাৰ | সাগ্রের এই পার |
| ৬৩ | GO. | | •••विना व्यवासिह काम क्षिन्सना | •••ভানু কপিবসনা |
| ৬৫ | ૯૭ | 5 | •••দিলেন বাষ জীচীকা ভালে তাঁৰ দেইকণে | •••विद्यान विवाध प्रका••• |
| ৬৭ | ৬৩ | | শুনিলে লাগৰে ভৰিবে ভবেৰে নিধি বিনা জল | यान •••छनिद्य छद्यव••• |
| 98 | >> 4) | œ | হসাহল-সিঞ্চিত নিশিত কর-অসারি | ···নিনিড কৰ অসাৰি' |
| 95 | < ≥(◀) | 8 | ৰাবণেৰ পুৰী ছাৎ জন্ম এক কপি কৰে- | •••কুত্ৰ এক কপি••• |
| ৮৮ | 83 | 8 | चड मारची | •••शावि••• |
| ಶ೨ | ৫৭ | > পাৰ্টা | াৰা (৩ৱ লাইন) — ৰ লে তাঁহার৷ অভিপশ্যাতে | ··· • জ্বাৰ অভিশাস্থাতে • • |
| 200 | ৮২ | > | ७कि दा थन विका रर | ७ ८व थम कि विश्वनुः । । |
| 209 | ba | 57 | क्रतरक नाक… | •••भाक्षं••• |
| • | • | • | ज् वस्य गै न… | 春春 44・・・ |
| 204 | ৮৭ | > | ज्ञान करा कारह क्छ… | चान करवः… |
| 505 | 90 | > | •••নিশিক শায়ক••• | •••নিসিত শারক |
| 220 | • | € ** | •••स्वादः क्षत्र क्षत्रि रूक्तः छनि | ···বক্ষেরা শুনি [*] ··· |
| ১১২ | 58 | 8 | ৰুদ্ধি বলেভে ৰক্ষে পেৰে'ও হারা'ভে নাৰে | • - • 祖(神:• • • |
| 223 | ৯৬ | 8 | •••काबा बन गांदि हात | •••वांवि वाव••• |
| 358 | ৯৮ | 8 | ···লক্ণ-প্ৰতি সোৰে | •••मञ्चन-व्यक्ति••• |
| • | • | ৬ | •••कक्षा निशास्त्र••• | ••• कक्नां निर्वादन••• |
| ১১৬ | 202(4) | | कांक्रिलम् निरव जूक वहवावः | काहिरमन भिवः… |
| 250 | 208 | ٠> | ब्यक्ष बहन निरवः । | थण्ड स्टमः • • |

| পৃঠা | বোহা | চৌপাই | 464 | 94 |
|-------------|--------------------------|-----------|--|---|
| ১২০ | POR | इन्द | वि' (वह १८७ ०० | वर्षि' (तक काळ··· |
| ১২২ | >>> | 9 | •••ছেৰিয়া শিভাৰ শ্ৰতি বিভবেন বৃঢ়ভান | •••হেৰিয়া শিভাৰ শ্ৰেডি বিভবেন সৃচ্ জান |
| 328 | >>8(4) | ર | •••কেশ্ৰী সমান বন থাক' ক্সৰ-কাণ্ডাৰে | •••(कनदो मदान चार्क चन-दन-कांचाद |
| ३२ ७ | >>@(4) | 5 | •••कुर्ण-विषाद्यव | •••कुणा निर्धाटमय |
| ১২৫ | >>₽(4) | | না পাৰে কৰিছে প্ৰেম-বৰ্গে কিছু | না পাৰে কহিছে••• |
| うえお | | 関軍 | শোভাগাৰ-শীভবাগ | শেভাগাৰ পীতবাস |
| 202 | ೨(ಇ) | ၁ | উত্তরদিকে বহে সহযু পাবন-ভোষা | •••явय्••• |
| 508 | ৮(奪) | | ···वानीर (जर | ৰ্বত্ৰই আশীষ, আশাস্ হইবে। |
| 206 | ১ ২(ব) | | •••कुर्शानिकान | •••कुर्गानियान |
| • | • | ** | व हवन प्रांत रह तरमन वाम | সে চরণ যুগে… |
| 204 | 28(4) | ર | •••ॡथ ममूर (महस्य-•• | •••च्च मण्यम••• |
| 204 | ٥٤ | ર | পৰম প্ৰীতিৰ মনে••• | ∙••প্ৰ`ভিন সনে••• |
| 585 | २२ | ၁ | শতেপ্ৰিত ধৰা হিত প্ৰতিনিৱত | •••ৰহিত প্ৰতি নিয়ন্ত |
| 585 | રહ | 5 | नांदम मनक चानिः •• | (সৰ্ব্বছই শনক, সনক হইৰে) |
| \$85 | 8२ | ၁ | ••• শাষাৰ শহুশাসন কাছ-মানে যানে বেই | •••कात्र-मान••• |
| 560 | 8¢ | ર | त्वांव नाव गांत्र थंदाः •• | মোর লাস নাম ব'রে· · · |
| 565 | 89 | 3 | ···নিশিত শাল্পেতে বেদ কি পুৰাণ খডি | •••পুৰাণ শ্বক্তি |
| >७८ | 00 | >(পাণ্টাৰ | हा) ॰॰॰श्वरत कमःलब मबु (८क्षम मबु) भा-काबी | , |
| | | | ভ্ৰমন -ৰম | ণ ···(প্ৰেষ মধু) পানকাৰী··· |
| 260 | 82 | 5 | প্ৰভূব বৃচি ত-কথ । | ···চविक-कथां··· |
| 89¢ | ৫৬ | 5 | মারা-জানিত বহু গুণ••• | মায় -জনিভ••• |
| 200 | GA | ર | নারদের মনে শুনি' উপজে ককুণা অভি | छनि' नावत्तव घरन छेन्रस्वः • |
| ५७८ | PP(4) | | िम ी | সো |
| ১৬৪ | P.)(4) | 3 | •••দেখিবাবে সেই সব | •••(भिशिव••• |
| ১৬৯ | ৯৪(ৠ) | > | •••কহিল ভৰানী ৰাণী সহ অতি অঞ্বাপ | •••क्कि खर्गान गाँगे••• |
| 290 | ১০৬(ৰ) | 5 | •••রে অভাগা জানহীন ঋাত্ম-অভিযানি | ⋯আনহীন আৰু আজু-অভিযানি |
| ১৭৬ | ১ ০ ৭(খ) | 8 | •••চরাচর-প্রের নাথ শঙ্কর নতি পার | •••চৰাচৰ-প্ৰিন্ন নাম••• |
| 22-3 | >>9(₹) | 8 | • • শাঁচদ-স্থীৰে নিজ জ্ঞানের দীপে নিবার | •••দীপে নিভায় |
| 288 |) 2 2 2 (4) | | ···লোভৰণী মহাবায়ু কভূ না ভা'বে নিবায় | ···ক্জু না ভা'ৰে নিভান্ন |
| ১৮৭ | ১ ২২(গ) | ၁ | •••७क मनकानि वय••• | •••७क मनकावि••• |

জষ্টব্যঃ—গ্রন্থের মধ্যে সর্বত্রেই, "কৌশিকী" "কৌশিক" হইবে; "শানক" গ্রনক" হইবে; এবং "আশীষ" "আশীস" হইবে।

অরণ্যকাণ্ড হইতে উত্তরকাণ্ডের নির্ঘণ্ট

| स्व | | পৃষ্ঠা | দোহা ৫ | চীপাই | | পুঠা | त्यामा को | শাই |
|---|---|------------|-------------|-------|--------------------------------------|------------------|-----------------|-----|
| আছিল শীকাৰ স্বাহ্ বিশ্বন্দ সীচাৰ তি হৈ | অ | | | | অভিনোই প্ৰম ধৰ্ম | 244 | 530 4) | >> |
| জান্তি প্রবেশ , সীতাৰ | অপস্থা-বাম মিশন | ь | >> | Ċ | অক্ষ কুমার বধ | an | 59 | 8 |
| ভান্ন ন্ধান ন্ধা | ৰ্দান্ন-পথাকা, সীভাৰ | ১২০ | 209 | ٩ | জ্ঞা | | | |
| सक्षक-देशक সংবাদ । १२ ८৮ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ | অগ্নি-প্ৰবেশ, সীতাৰ | 50 | २२ | 8 | ••• | ১২২ | >>> | > |
| सक्त ने से प्रशाद के विशेष होने । 50 09 र विहार है । | व्यक्षम-दायम ज्ञातिम | 99 | 24 | | | ১৭৫ | 500(a) | œ |
| আছ্নৰ বাধেৰ বিশাৰ লান | अक्षर-वाम भःवाम | ৮ ৫ | ೨٩ | ર | | ુ ર | ئ | > |
| चित्रवन वित्रवन | অঞ্নকে বামের বিদার দান | 202 | ১৬ | 8 | | 292 | 59(¥) | ၁ |
| আন্ধৰের বাববাকে উপাৰেশ পুন ১৯ ১ "আমি আনাৰ" ভূমি ভোমান," আই হালা ১০ ১৪ ১ আন্ধান্দান হ ২ ২ ১ ই আন্ধান্ধ কৰা প্ৰথম প্ৰকাশ কৰিবৰ ১৮১ ১২৭ ১ ই ই আন্ধান্ধ কৰিব হালা বাবেণৰ কৰা কৰিবৰ ১৮১ ১২৭ ১ ই ই ই ই ই ই ই ই ই ই ই ই ই ই ই ই ই ই | व्यक्रमान निर्देशन | 99 | 39/€ |) | • | ১৬৬ | চ৫(৵) | 5 |
| আন্ধনি সন্ধা পদন | व्यक्षत्वय दायनदक छन्दरम् | 99 | >> | 5 | | | | |
| মান্তির ক্তর্ব ত ০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০ | चक्रप्तित अक्षा श्रम | 96 | ১৬(২ |) > | • | 50 | >8 | > |
| আহিকার) কে ? - হাম-কথা প্রবেশ্ব ১৮১ ১২৭ ১ ক্রুপ্রভিত্তর ব্যন্তর্গণ, ও ইন্সেক্তির ব্যন্তর্গণ, ও ইন্সেক্তির ব্যব্ধ হল ১০০ ৭৫ ব চিন্তর্গণ, বিষ্ণান বিষ্ণান বিষ্ণান বিষয়ের জন্মনা করিবে ভিন্তব ব্যব্ধ হল ১০০ ৭০ ২০ ক্রুপ্রভিত্তর ব্যন্তর্গণ, ও ইন্সেক্তির ব্যব্ধ হল ১০০ ৭০ ২০ ক্রুপ্রভাৱ ব্যব্ধ হল ১৮০ ১০০ ৭০ ২০ ক্রুপ্রভাৱ বিল্ণ বিষয়ের হল করিবে বিষয়ের জন্ম বার্বিণ হল ১৮০ ১০০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১ | শক্তি-মিশন | ર | 2 | > | 5 | | | |
| ভাৰকাৰ নি ? - নাম-কৰা প্ৰবিশ্ব | শত্তিৰ গুৰ | 3 | 3 | > | ইন্সজিত (মেখনাদ আইব্য) | 42 | २१ | |
| জন্ম কৰিব বাধেন ভজনা কৰিলে জন্ম কৰেন কৰিব প্ৰতিষ্ঠান কৰিব কৰিব প্ৰতিষ্ঠান কৰিব স্বিত্ৰ কৰিব কৰিব প্ৰতিষ্ঠান কৰিব স্বিত্ৰ কৰিব কৰিব প্ৰতিষ্ঠান কৰিব স্বিত্ৰ কৰিব স্বিত্ৰ কৰি | व्यविकाधी (क १ - बाम-कथा अंतरनेव | ১৮৯ | ३ २९ | 3 | - | 202 | १৫ 🜒 | > |
| জ্বাহের ভর নাই ১৭০ ১০০ খ ১ ইল্লের বাবে ব্যভার ছান ১৮০ ১০৭(খ) ৬ অনজগতি সেবককে জগবানের ভাল লাগে ০০ ২ ৪ আনুলাত সেবককে জগবানের ভাল লাগে ০০ ২ ৪ ইল্লের মুংাবর্ষণ ১৮০ ১০০ ০০ মন্ত্রার পাতিব্রভাগত্ম কথন ০০ ৪০ ১ না থাকিলে গোর নাই ৬ ০ ০ ৪ মারা ০০ ৪০ ১০০ ১০৪ ৪ মারা ০০ ৪০০ ১০০ ১০০ ১০০ ৯০০ ৯০০ ৯০০ ৯০০ ৯০০ ৯০০ ৯ | অন্ত-পাধাৰ বাংমর ভজনা কৰিলে | | | | | 500 | 95 | |
| আনন্ত মতি হে ? আনুহার পাতিব্রতাগন্ম কথন আনুহার কিয়া, রাবণের ১০৬ ৬০ ০ না থাকিলে বোৰ নাই ৬ ০ ০ ৪ ১০৮ ১০৪ ৪ আনুহার কিয়া, রাবণের ১০০ ১৪ ২ ১০০ ১৯ ৯ ১০০ ১৪ ২০ ১৪ ৯ ১০০ ১৪ ২০ ১৪ ৯ ১০০ ১৪ ২০ ১৪ ৯ ১০০ ১৪ ২০ ১০ ১৪ ৯ ১০০ ১৪ ২০ ১০ ১৪ ৯ ১০০ ১৪ ২০ ১৪ ৯ ১০০ ১৪ ২০ ১০ ১৪ ৯ ১০০ ১৪ ২০ ১৪ ৯ ১০০ ১৪ ২০ ১০ ১৪ ৯ ১০০ ১৪ ২০ ১০ ১৪ ৯ ১০০ ১৪ ২০ ১০ ১৪ ৯ ১০০ ১৪ ৯ ৯ ৯ ৯ ১০০ ১৪ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ১০০ ১৪ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ১০০ ১৪ ৯ ৯ ৯ ৯ ১০০ ১৪ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ১০০ ১৪ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ১০০ ১৪ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ১০০ ১৪ ৯ ৯ ৯ ৯ ১০০ ১৪ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ১০০ ১৪ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ১০০ ১৪ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ১০০ | উদ্বাদের ভর নাই | 593 | 205 A) |) ၁ | | ১৮৩ | >>9(v) | ৬ |
| জনস্থা । ত । ত । ত । ত । ত । ত । ত । ত । ত । | অন্তগতি দেবককে ভগবানেৰ ভাল লাগে | 00 | ২ | 8 | | 525 | 505(a) | > |
| আনস্থান পাতিপ্ৰতাণ্য কথন | শ্মস্ত মতি কে ? | 20 | 3 | | ইন্দ্রের স্থাবরণ | ১২৩ | 220 | J |
| আহ্বাগ বাকীত ভগবং-লাভ হর না ত ৬ ৬০ চ না থাকিলে বোৰ নাই ৬ চ চ আংল্যারি কিয়া, বাবণের ১০৭ ১০০ চ চ চ বিধেষ্ঠ বিষয়, বে আনল-আপ্রের ৬ জ ৪ অপমান, বাবণ কর্ত্বক বিজীবণের ৬০ ৪০ চ আংল্যার মারা ত ১৪ ২ আংল্যার গমন, বাম-লাল্যণ-স্টারার ১৪০ ২৬ ২ উল্ভারনক আর্বারার গমন, বাম-লাল্যণ-স্টারার ১৪০ ২৬ ২ উল্ভারনক আর্বারার গমন, বাম-লাল্যণ-স্টারার ১৪০ ১৮৮(গ) চ উল্ভারন, কবছ ২০ ০২ ০ উল্ভারন, নারণকে ১৮ ২৮ ০ উল্ভারন, নারণকে ১৮ ২০ ০ উল্ভারন, নারণকে ১৮ ২০ ০ উল্ভারন, নারণকে ১৮ ২০ ০ উল্ভারন, বারণকে ১৮ ১০ ২০ ১৮ ১০(খ) চ অন্তান্থ, কিয়া, বারণকে ১৮ ০০ ০ বিচ্চার, কবছ ১৮ ০০ ০ উল্ভারন, নারণকে ১৮ ০০ ০ বিচ্চার, বারণকে ১০ ০০ ০ বিচ্চার, বারণকে ১৮ ০০ ০ বিচ্চার, বারণকে ১০ ০০ ০ বিচার, বারণকে ১০ ০০ | बन्द्र रा | 3 | 8 | > | हे <i>त्स्</i> य च य | ১২২ | >>~ | > |
| আন্তারি কিয়া, বাবদের | অনস্বার পাতিরভাগম কথন | ೨ | 8 | ર | ইটদেবতা ভিন্ন অভা দেবতার মন | | | |
| আৰোষ কিন্ন, বাবৰণৰ ১০৮ ১০৪ ৪ ত্বিবাৰ আহিব আহিব আহিব আহিব আহিব আহিব আহিব আহিব | অহ্বাগ বংহীত ভগ্ৰং-লাভ হয় না | ১৫৬ | ৬১ | 5 | না থাকিলে গোৰ নাই | ৬ | 7 | 5 |
| ত্বিহাৰ প্ৰত্যান নাৰ কৰ্ম্বৰ বিভীবনেৰ ৬০ ৪০ ১ ইৰ্বে ও জীবে প্ৰভেদ হৈছে হ ত ১৪ - জাবিছা হাৰ। ১০ ১৪ ২ উ উ আনহাৰ ব্যবহাৰ হাৰ বাৰ ক্ষিত্ৰ বিভীবনেৰ ৬০ ৪০ ১ ১৮৮৮ ১ ত উল্লেখন, মুক্তৰ্বৰি, হাৰবক্ষে হও ১২০ ২ ত আনহাৰ বাৰ ক্ষিত্ৰ হাৰ ক্ষিত্ৰ হ | ਬਰਕਾਰਿ ਨਿਸ਼ ਤਾਰਵਕ ਤ | >>9 | | > | ইট্ট দেবতার দে-ই প্রির, বে অনভ-আশ্রর | ৬ | 20 | 8 |
| ভাগমান, বাবণ কর্ম্বন বিভীবনের ৬০ ৪০ ১ হন্দের ও জীবে প্রভেদ হল ১৪ ত ভারের প্রভেদ প্রাণ্ড মার। ভারের প্রাণ্ড মার। ভারের প্রাণ্ড ১৯০ ২৬ ২ উল্লেখন বিলাপ ১৮৬ ১২০ ৭) ১৮ আবোরার গমন, বাম-লক্ষণ-সভার ১২৬ ১১৮(গ) ১ উল্লেখন, কর্ম লক্ষণ-সভার ১৯৮ ৪১ ত উল্লেখন, মার্ল্ড বিলাপ, মার্ল বিলাপ, মার্ল্ড বিলাপ, মার্ল্ড বিলাপ, মার্ল্ড বিলাপ, মার্ল্ড বিল | (| | | - | & | | | |
| আন্তেন আনী কেই কলিকালে, ত্ৰহিন কৰিবলৈ, ত্ৰহিন কৰিবলৈ আন্তেন আনী কেই কলিকালে, ত্ৰহিন কৰিবলৈ ত্ৰহিন কৰিবল ত্নহিন কৰিবল ত্ৰহিন কৰিবল ত্ৰহিন কৰেবল ত্ৰহিন কৰিবল তেহিন কৰিবল ত্ৰহিন কৰিবল ত্ৰহিন কৰিবল ত্ৰহিন কৰিবল ত্ৰহিন কৰিবল ত্ৰহিন | • | | | - | | 50 | 58 | |
| ভাষাৰ বৰ্ষীয়ন্তা ১৪০ ২৬ ২ উন্তৰ্গত ১০০ ২০ ১৮০ ১৮০ ১৮০ ১৮০ ১৮০ ১৮০ ১৮০ ১৮০ ১৮০ ১৮ | | | | | | | | |
| আবোধার ব্যাপ্তর । ১৪০ ২৬ ১১৮(৪) ১ উমরী বোপ ১৮৬ ১২০ ৫) ১৮ জনরার গানন, রাম-লক্ষণ-শীভাব ১২৬ ১১৮(৪) ১ উল্লেখ, কবল ২০০ ১০ ১ জনরার কালেনিম ক৪ ৫৭ ১ জনবান্তর ১৮৫ ২৮ ১ জনবান্তর বিশ্বন, রাবণকে বিশ্বন, রাবণকে ৪৯ ৫৭ ১ জনবেশন, ক্লেজ্বর, রাবণকে ৪৯ ৫৭ ১ জনবেশন, ক্লেজ্বর, রাবণকে ৪৯ ৫৭ ১ জনবেশন, ক্লেজ্বর, রাবণকে ৪৯ ৫২ ২ জনবাশ্বনর হার্যার ৫০০ ১৬ ১ জনবেশন, ব্লেজ্বর, রাবণকে ৪৯ ৫০ ২০ জনবেশন, ব্লেজ্বর, রাবণকে ৪৯ ৫০ ২০ জনবেশন, ব্লেজ্বর, রাবণকে ৪৯ ৫০ ১০ ৯ জনবেশন, ব্লেজ্বর, রাবণকে ৪৯ ৫০ ১০ ৯ জনবেশন, ব্লেজ্বর, রাবণকে ৪৯ ৫০ ১০ ৯ জনবেশন, ব্লেজ্বর, ক্লেজ্বর, রাবণকে ৪৯ ৫০ ১০ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ ৯ | | | | | @msate | つ ^っ る | - | ~- |
| ব্যংগার গ্রামন, রামন লক্ষণ গভার বিধান করে। ক্ষাব্যের কি । ক্ষাব্যের কি । ক্ষাব্যের কি । ক্ষাব্যের কি । ক্ষাব্যের করে ক্ষাব্যার করে ক | | | _ | _ | | ১৮৬ | 530 e) | 24 |
| আহিবেক কি ? আহিবেক কি হাৰ্যাৰ কি তিনিৰ পাণ্ডৱা আহাৰ্য কৰিবিক কাৰ্য্য আহিবেক আহাৰ্য কৰিবিক লাভ্যা আহাৰ্য কৰিবিক লাভ্য কৰিবিক লাভ্যা আহাৰ্য কৰিবিক লাভ্যা | | | |) > | | 25 | ં | 3 |
| আবাৰ কৰি দি বিনিষ্ণ পাত্ৰয় ১১৮ ১০ ত তিন্তুৰ, মকৰী ১০ ৫৭ আপোকৰন ১৮ ২৮ ০ ত তিন্তুৰ, মকৰী ১০ ৫৭ আপোকৰন কৰি কৰি পাত্ৰয় ১৮৫ ১০ ১৮ ৮ আনাৰ কৰি কৰি কৰি পাত্ৰয় ১৮৫ ১২০(খ) ৮ আনাৰ কৰি কৰি কৰি আকৰাৰ ১৮৫ ১২০(খ) ৮ আনাৰ কৰি কৰি কৰি কৰি আকৰাৰ ১৮৫ ১২০(খ) ৮ ১৮৫ ১২০(খ) ৪ | | | | | • | ∌ 8 | 09 | 3 |
| আপোৰ্থন সিন্ধা কৰাৰ আপোন্ধ কৰিছে নিন্দা কৰিছে নিন্দ | • | | - | | • | ಶ೨ | a a | |
| আনাৰ্যন ৪১ ৭ ০ উপাৰেশ, মুজ্বৰ্ধে, বাৰণকে ১৬ ৬২ — আনাৰ্যন হাৰথাৰ ৫০ ১৬ ১ আনাৰ্যন নাৰণকে ৪৬ ৭ ০ উপাৰেশ, ব্ভেব, বাৰণকে ৪৬ ৫২ ২ আনাৰ্যন নাৰণকে ৪৬ ৭ ০ উপাৰেশ, বিভীবনের, বাৰণকে (৫৮ ৩৭ ২ আইপ্ৰভাৱ লোৰ, ব্যব্ধীর, ৭৬ ১৫(খ) ১ আনাৰ্য প্ৰসাধ্য প্ৰাক্তি আনাৰ্য প্ৰসাধ্য প্ৰসাধ্য প্ৰসাধ্য প্ৰসাধ্য প্ৰসাধ্য প্ৰসাধ্য প্ৰসাধ্য প্ৰাক্তি আনাৰ্য প্ৰসাধ্য প | | | | - | | 99 | >> | > |
| আনোৰ্থন সভাৰ বিষয় বিষ | | | | - | | ৯৬ | હર | |
| অংশাক্ষরন ছারধার অংশাক্ষরন স্থান্ত ৪৬ ৭ ৩ অইপ্রকার পোৰ, রমন্ত্রীর, অসন্তব, কি কি কিনিব পাওয়া অসন্তব, কি কি কিনিব পাওয়া অসাবু ও সাবুর প্রক্তিক ১৮৫ ১২০(খ) ৮ অসাবু ও সাবুর প্রক্তিক ১৮৫ ১২০(খ) ৮ উপ্রেশ, মন্সোধরীর, রাম্বর্গক ১৮৫ ১২০(খ) ৪ | | | • | | | ৪৬ | 02 | ર |
| আইপ্ৰকাৰ গোৰ, ৰখৰীৰ, ৭৬ ১৫(খ) ১ জপদেশ, বিভাৰণেৰ, ৰাৰণকে (৫৮ ৩৭ ২ ৫৯ ৩৯ ৯) ৩ জনাৰ্থ ও নাধুৰ প্ৰজেন ১৮৫ ১২০(খ) ৮ জনাৰ্থ ও নাধুৰ প্ৰজেন ১৮৫ ১২০(খ) ৮ জনাৰ্থ ও নাধুৰ প্ৰজেন কৰাৰ জপেন্দা । উপৰেন, মন্দোৰথীৰ, মাৰণকে ২০০(ন) ৪ | • | | - | | | (00) | 20 | 8 |
| জনমাৰ গাব, বিষয়ৰ, ৭৬ ১৫(খ) ১ বিজ ১৯ ২) ১ বিজ ১৯ ২) ১ ১৬ ৮ বিজ নিৰ পাওৱা ১১ ১৬ ৮ বিজ নিৰ পাওৱা ১৮৫ ১২০(খ) ৮ বিজ ১৯ ২০ ১২০(খ) ৪ ১৯ ২০ ১২০(খ) ৪ ১৯ ২০ ১৯ ১৯ ১৯ ১৯ ১৯ ১৯ ১৯ ১৯ ১৯ ১৯ ১৯ ১৯ ১৯ | | | - | | डेन्पन, विडोर्गन, वार्यक | | ৩৭ | |
| অসম্ভব: কি কি কিনিৰ পাঠায়। ১১ ১৬ ৮ অসামুখ্য সাধুৰ আজেক ১৮৫ ১২০(ৰ) ৮ অসাজ্যত নিন্দা কৰাৰ আপোকা উপবেশ, মন্দোৰথীৰ, মাৰণকে বি ১৩৫ ১ ৭৫ ১৩(ৰ) ৪ | | | | | | 1 | | 0 |
| ক্ষমাৰু ও সাধুৰ প্ৰাক্তেক ১৮৫ ১২০(ৰ) ৮ ক্ষমাকাতে নিন্দা কৰাৰ ক্ষপেকা ১৮৫ ১২০(ৰ) ৮ উপবেশ, মন্দোৰবীৰ, মানবকে বিত্ত ১৩(ৰ) ৪ | | | _ | • | | • | | 3 |
| 10 30(4) | | 224 | ১২০(খ |) > | Samuel | | | - |
| भाभ नाहे >१७ >>>(४) c ' , ' ८४८ ४) | | | | | ७७८वन, मत्नावशाव, जावनरक | 90 | 50(x) | 8 |
| | পাপ নাই | 265 | >>>(4 |) a | • • | (P8 | oc ∢) | |

| | পृष्ठी लाश की | t è | नृडे। | ৰোহা চৌপাই |
|--|----------------------------|------------------------------------|----------------------------------|---|
| উপ্রেশ, মাল্যবানের, রাবণকে | ৮ ৯ 89 | কাকভূবৃতির বামরণ | শ্বৰ্ণনা ১৬২ | 90(4) 3 |
| डेशस्त्रम, बाध्यय व्यक्तात्रशस्य | >८ ६८ | कारण, कादना | > | |
| উপাধ্যান, ভৃষ্ণির | 20 800 | . উ দ্ধৰ | ১২৯ | |
| উপাধি, স্বেহা বাধা | ১৮৩ ১১৭(৯) | ্ 🕡 কিৰিছা | ২৯ | |
| উপাসনা, ভিন্ন ভিন্ন বুগেব | ५१० ५०२,७) | - শহা | ৬৯ | |
| 4 | | , সু ল ব | 83 | |
| ঋদি-সিভি প্ৰভৃতি মায়াৰ প্ৰলোভন | 2₽0 224(4) | 3 | ત્રફ્રા | (माडा क्षीनाह |
| খ্যামুক পর্বাত | ২৯ : | ভাষ- ক্ৰোধাৰি ভীৰ | াণ সৈত্ত ২৫ | 8 0 |
| 4 | | কামিনীর কাঁদ | ২৫ | 80 - |
| কপুষন বোগ | ১৮৬ ১২০,ৰ) : | ৭ কাৰ্স্তৰীধ্যাৰ্জ্ন (স | ণহলবাছ) ৫২ | २५ 🔰 |
| হুপ্ট-বহু খুল-সমান | ৩২ ৬ | 3 | | (ও পাদটাকা) |
| ₹₹. | >>6 >50(4): | | \$6 | |
| | 5 20 02 | ১ সালনেমি-মাবল স | | |
| करक विकास | 🕽 ૨૦ ૭૨ | | াসেবা করিছে হয় ৩১ | |
| কলিকাল-মাহাত্মা বৰ্ণন | ১৭০ ৯৬(ক) | _ | | |
| ফ্লিকালে কথা নাই | ১৫ ২৬ | ৩ কাছাকে বিপুগণ ৰ | | |
| कृतिकारमय स्थ | 590 50R(#) | | | क ३२ १ २ |
| ছলিকালে র হোব | ३१२ ३०५(क) | শাহাদের চাটুৰাণী | তে রাজ্য, ধর্ম ও | |
| ৰশিতে প্ৰেদ-আনী কে የ | ১৭ ২ ৯ ৯ ₩) | _ | কেছ নাশ হয় ৫৮ | |
| " व्याठाववान् (क ? | ১৭১ ৯৭(∢) | ৩ কাহাদের সংক্ষ বি | বোৰ কৰা অক্স্তৰ্য 🗀 | |
| • कृतीन (क ? | 592 500(x) | | " " চলিন্তে পা ৰে ৭২ | |
| ু ওণবাৰ কে ? | ১৭১ ৯৭(২) | | |) >6 |
| ু গৌরববান কে ? | ১৭১ ৯৮খ) | কাহারা ছংখী ও ব | গহাৰা স্থা, বাষেৰ | |
| , कानो क ? | ১९১ २९५) | 8 | প্রভাবে, ১৪: | |
| ্ ভাপস কে ? | ১৭১ ৯৭(শ) | ৪ কাহাৰা ধৰু | 562 |) २२७ ७ |
| ্ল'ষ্ট সাব | ১৫ ২৬ | o কা হাৰা নগ ণ ে নগে | 9 | , , |
| , পণ্ডিত কে ? | ३१ ३ ३१(व) | | | ь 8 |
| ু প্রমায়ু | (k, COC CPC | | | |
| , वक्ता (क १ | ১१२ ३३, ५) | ১ কি ভাবে সেবা ক | রি ভে হর ৩২ |) २२ २ |
| " বিবাগবান্ কে ? | 595 59(a) | | ۹: | |
| ু বুদ্বিমান্ কে ? | ७१० ७१(भ) | ২ কুকাৰ্যা করার সম | য়ে শ্ৰীৰে বল থাকে না 🗅 ' | |
| ু সম্ভকে ? | (K)PG CPC | ২ কুটিলের সঙ্গে সম্বৰ | রোধিও না ১৭৫ | 3 200(4) P |
| ্ নিম্পুক্তর কে গ | 242 24(4) | | 50 | |
| कियूनहें (खंडे यून | 590 502(4) | | | \$ 595 \$ |
| क्रिश नावो | 592 505 (▼) | | | |
| | 5 290 28(4) | ৪ কুঞ্চকর্ণের জাপ্রণ | | |
| কাক-দেচে ভৃষ্থির মমতা কেন ? | (P)06 OPC | ় মুদ্ধ | 5 | |
| কাক-ভুবুণ্ডিকে রাখের বিশবণ প্রা ক্ত | ৰি ১৬১ ৭৫(খ) | | छन्दम कर | |
| ভাক দৃষ্তির উপাধ্যান | 308 00 | ৪ কুল্টা প্ৰা খুল-সং | | |
| কাক-ৰুষ্তিং প্ৰাৰণা | >44 >0≥(4) | | | > |
| , এবং করেব কথা | ১ ০৭ ১৬(ক) | - | | |
| , , বালক কামেৰ সজে খে | | ০ কুণণ নৃণভি শৃশ | | |
| , (বাহ-স্কার | 3 42 90(v) | > কে কে কগতে খু | ज-प्रशंब 🥴 | 2 6 6 |

| | [| J∘] | |
|------------------------------------|-------------------------------|---------------------------------|-------------------------------|
| | পৃঠা দোল চৌপাই | | পৃষ্ঠা লোহা চৌপাই |
| दे क बनाउ | ১৮৩ ১১৮(২) ১ | | |
| কোন্ সভান পিতাই প্রিরতম | ১৬৬ ৮৬ ১ | জীবের প্রকৃত বার্ষ কি ? | >40 %(*) > |
| 4 | | জ্ঞান ও ভক্তিৰ প্ৰক্ৰে | 262 228(4) 3 |
| 4 | 02 20 B | আন-হ'প্≉ | ১৮২ ১১৬৭) ১ |
| चंद-दृष्टनामि रथ | >> >9 > | क ंग-পথ | ১৮৩ ১১৮ খ) ১ |
| শ্বল | ১৮৫ ১২০(৩) ৯ | জ্ঞান-পূৰে বহু বিদ্ন | 240 224(a) - |
| थरनव श्रिप्तराका खरवद कावन | ১৫ ২১ ৪ | क्यान, देवबागा, मादा, क्रिक | |
| बरमद माम बाम कहा बार्शका सहस- | | কাহাকে বলে ? | 5 50 8 |
| नामक छान | ৬২ ৪৫ ৩ | জানুডজি নিৰপ্ৰ | 565 558(*) 9 |
| গ | | জ্ঞানীরা ভগবানের প্রোচ সম্ভান | રહ કર(∉) 8 |
| প্রমালা ও প্লপ্ত রোগ | ১৮७ ১२0(∢) ১٩ | অব হরাগ | ३४७ ३२०(५) ३ |
| গ্ৰুত্ব কাকের কাছে পিরা বাম-চরিত | | (5 | |
| अंदन कविन (कन ? | S 80 C0¢ | ૭ મ[વન] | 80 58 - |
| গৰুড়েৰ ভূষ্বিৰ নিকট গৰন | ১৫৬ ৬২(ব) ১ | ভপৰিনীৰ সহিত বানৰগৰেৰ সাকাৎ | ৩৯ ২২ ১ |
| গ্ৰুড়েৰ মোহ | >08 09 > | ভাড়নাৰ অধিকাৰী কাহাৰা ? | 69 CF 3 |
| গ্ৰুড়ের সাত হোল | ३४७ ३२०(५) ३ | कारा | ეე ც >8 |
| ওণহীন হইলেও আদাৰ পূজা | २ > ೨ ೨ > | ভাবাকে বাঘের উপদেশ | 98 50 5 |
| ७क्रक अभगान, पृत्तिव | >9¢ >0७(₮) - | হারার বিলাপ | 38 50 5 |
| ভঃৰ প্ৰভৃতিকে বিদায়দান, বামের | ১৩৮ ১৫ 🖚 | তিম্বানে কে বল হয় ? | 4n ee |
| গোবিশ | २० ७১ ১ २६३ | আহিক শ্বঃবোগ | ১৮৬ ১২০,খ) ১৮ ১৭৩ ১০২(খ) ১ |
| শ্ৰন্থিবাত ৰোগ | 289 SO(4) 28 | ত্রিকালের অন্তর্ভান | |
| 5 | | विष्ठि। | \$ 228 24 5 84 20 2 |
| इत्जानक, श्रूप्तम भवाष्ठ, | ৭৩ ১০ ১ | ত্ৰিশিয়া | ১৩ ১৯(খ) ২ |
| | 98 >>(4) - | | |
| চরণে মতি কিলে হয় | ৯ ১৩ ৪ | ₩ | |
| চন্দ্ৰ ৰোগ | ১৮৬ ১২০(ৰ) ১৮ | শশুক কানন | ৯ ১২ ৮ |
| চাৰিপ্ৰকাৰ শূপ | ৩২ ৬ ৫ | पक्ष (द्वाप | うから うえの(*) うち |
| ठाविदवरम्ब खन | ১৩৬ ১২(ৰ) — | দরিত্র অপেকা ছঃখী কের নাই | ३४७ ३२०(७) १ |
| জ | | দশ্রবের রামের নিকটে আগবন | 522 555 5 |
| জগতে ভগৰাৰ্-সথাৰ কে ? | ७४ २० २ | নান্তিকের নীভি ভাল লাগে না | 598 506 W) - |
| ₩B1यू | ३४ २४ ४ | লাস আমাৰ প্ৰিয় | ३७७ ४७(या ४ |
| জ টায়ুৰ অসম | >> ≤>(*) > | দানের আশা, প্রভূর ভরনার থাকিলেই | |
| অ টায়ুর ভঞ্জি | 22 00 3 | प्र स्व | ૩૦ ર ર |
| শ্ৰচায়ুৰ স্বাৰণেৰ সহিত সুস্ব | 2P 5P 8 | হ্ৰ'ভ হবিভক্তিৰ অধিকাৰী কে 🏻 | 500 00 5 |
| अ होत्त्र वाद ४ २ | २० ७७ ३-३-४ | प्र न | 55 59 5 |
| শ ড়-চেণ্ডনের পাঁঠ | ১৮२ ১১७(४) २ | (एरम्(नद अन | 252 202(4) 2 |
| জড়-চেডনের পাঁঠ খোলা | ১৮৩ ১১৭(∢) ২ | বেবতাপণ জ্ঞান ভাগৰাসেন না | 280 224'4) P |
| জগ-তগাৰির কন ভগবং-ধ্যেম লাভ | 202 88 2 | দোৰ-যুক্ত হইলেও বান্ধণ পূৰা | २ ১ ৩ ৩ ১ |
| ক্ষান্তের কুটিলত। | ა ა | ■ | |
| काष्यात्व रस्यात्त्र गागशण्यन | | धनहोन चरणका दृश्यो (कह नाह | >>0 (₹)0>€ |
| काबटक छेशदबन बान | 8२ २३, ১ | वक्र कार्यवा | ३४२ ३२७ ३ |
| णोर ७ निर | 20 20 - | वश्र वर्णिक बनाव्यम १९४ वर्ष | >8 ₹0,∢) 8 |
| जोदर क केंब्रदर व्यव्यक | >0 >8 - | वर्षा, श्रेनीय 🎾 🔧 | ં કર |
| | | | |

| | \$. | | حسک | | بلب | | |
|---|-------------|---------------|----------------|--|----------------|------------|------------|
| | 29 1 | লোহা (| शियार | | Ási | ब्यास | क्षेणार |
| ন | | | | ₹ | | | |
| अर्था, कोहाँको नरह | >8 | ₹5(: | a) | ক্ষুক্তি, বামায়ণের | >20 | >00(| ₹) |
| नवर-यात्रक, बर नव तक व्यापका साम | 6 2 | 8¢ | ٥ | काँण, जावीव | २७ | 83 | • |
| बन-एक माध्य क्या कि ? | >85 | 83 | > | ৰ | | | |
| मक्षा गर्वाखंड | ንዶዕ | 250 | 4) C | नश, चक्रवक्राति | 00 | 59 | ٩ |
| মন্বিধ ভক্তি | 25 | 38 | 8 | वर, चत्रप्रनाम | 33 | | 8 |
| নয়জন লোকের সঙ্গে বিহোধ করা অকর্ডব | j de | २৫ | ર | वय, वानि | ೨೨ | | (a) O |
| নাগ্শাশ, রামের | 200 | ૧૨ | ¢ | नम, विशय | å | | *) 3 |
| লাপণাশ, হনুযানের | ¢o | うわ | - | वधः (मचनान | 503 | | - |
| व्यक्तिक वास भावति | ₹8 | 80 | J | 440 044714 | f >>a | ลล | 8 |
| নাবদের বাম সকালে আগমন ও স্বৰ | >७२ | 60 | > | चर्य, जीवन | 239 | | > |
| লাবদের বাম-স্কাশে শ্রেম | રહ | 8२(| 4) > | বৰ প্ৰতিজ্ঞা, বালি, | ં ગર | • | - |
| লাৰীধৰ্ম | 3 | 8 | ٦, | বৰ-প্ৰতিজ্ঞা, ৰাক্স | ৬ | ъ | 3 |
| নারী মাধা-ৰঙ্গিণী | २७ | 83 | | ব্ধ-ব্যোপ্য কাহারা ? | ೨೨ | ь | 8 |
| নারী সব হুংগের আকর | ঽ৬ | 88 | - | বন্ধৰ আচংগ | ৩২ | ů. | ٥ |
| নারী বাধীনতা পাইলে নট হয় | ৩৬ | 58 | 8 | रकु-मक्रव दर्गना | ৩২ | .6 | 5 |
| मानीय कैंग्य | २७ | 83 | ~ . | বৰ্ণনা, বন-শোভা | ર ર | ე ৬ | ર |
| মারীর সভাবের অটপ্রকার গোষ | ঀ৬ | 300 | ¥) > | ু বদ্ধুৰ লক্ষণ | ৩২ | ৬ | > |
| নিজ্ঞাসই ভগবানের প্রিয়ত্ত্য | ১৬৬ | ৮৮ ' | 4) 8 | , বৰ্বা | ৩৫ | ১২ | 8 |
| নীচ অংনত হইলেও হঃখই দেয় | 50 | २७ | 8 | " বামবাক্ষ্য | 580 | ১১ | 8 |
| মীচেৰ আচবৰ | 290 | 2006 | ન) હ | | (6) | 88 | ૨ |
| নীতি ভিন্ন ৰাজ্যবন্ধা হয় না | ১৭৯ | 222 | 4) O | » বাংম্ব কপ | 3509 | | 8 |
| প | | | | | (১৩২ | - 1 | (*) O |
| প্ৰাথ বিনে বাস, বামের | 9 | 50 | > | वर्गमा, भवद | ა ა |)0¢ | ·) > |
| পৃথিত হাব দ্রেণীভাগ | 8 | 8 | 6 | वर्षना, श्रुखीरवत्र इःच | - | ১৫ | |
| भाष्या अरवावव | 20 | 36/1 | (k | ৰান্বপণ ও গুংককে বিশায় শান | 204 | | () |
| প্রম বৈৰাগ্যবাম কে গ | 50 | >8 | 8 | বানবগণকে অসম্বার ও বন্ধ বিভবণ | 248 | ১১৬ | (a) 2 |
| প্রম তথ্য ও প্রম হথে কি ? | | 520(+ |)259 | বানৰগণের কথোপ্ৰথন, সম্পাতিৰ -গ | 78 , 80 | રહ | ٥ |
| পাহিত্রহা ধ্য | 3 | 8 | ່ວ | | 19, 80 | २ ७ | > |
| পর্ম গুরু | 295 | 5b(* | 8 (| ৰানংগণেও সমুখভটে গমন বানংগৈভ জেৰণ, সীভাৰ স্থানে | ೨৮ | | |
| পিড-বোগ | ১৮৬ | ১২০(খ) | DC (| বাল্যনের জেবস, শাতার শ্রাদে | 23 | G | > |
| मूर्क-क्था, काक पृष्धित | 599 | 202(4 |) - | | (33 | ى ق | ડ્ડ |
| भूक्ष कथा, काक पृत्रिक | 262 | 90(2 | | वानि वर्ष | 3 38 | >0 | |
| व्यक्षात्रनरक वास्त्रव छन्।वन | 585 | 83 | > | ৰালি-বধ হৈছিজ। | ે ગર | 6 | |
| এইৰৰ পৰ্ব্যন্ত | 20 | >> | O | वाणि-श्रकोर पूष | ೨೨ | 4 | 50 |
| প্ৰভূৱ ভবদায় থাকিলেই বাসের আশা | | | | ৰাহু-ৰোগ | ১৮৬ | >20(| |
| पृ (स | 8 | 8 | ঙ | Re-Aisi | 50 | >8 | 2 |
| बारका, कोटन ७ केवटन | 50 | 58 | ~ | বিশ্ব কাহাকে বলে ? | ৫৬ | 25 | ર |
| an, atters, atter | રહ | 82(8 |) > | বিশংগ কাহাদের পরীক্ষা হয় ? | 8 | 8 | 8 |
| व्यंत्रं, मन्त्रात्त्र | 9 | 53 | 3 | | 5 50 | >8 | 2 |
| व्यम, माक, श्रक्तक | | ১২০(ৰ |) > | বিভাবণ | 86 | Œ | > |
| 4 5 4 | 100 | ъ, | - | विकोश्त-कृषकर्व मःवाष | ৯৬ | ৬৩ | ર |

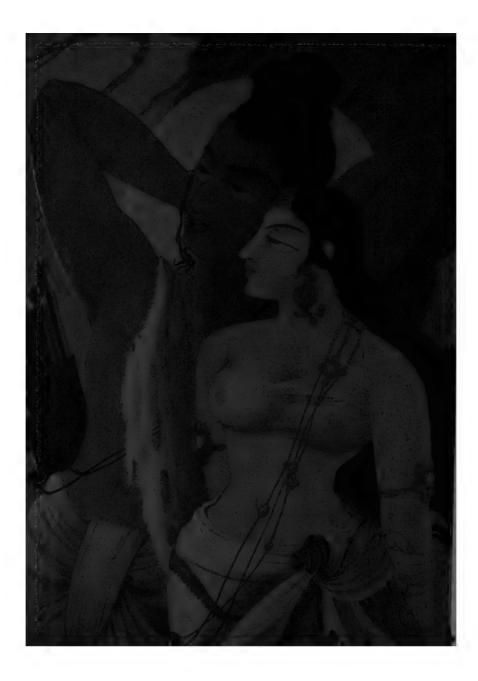
| | পৃষ্ঠা | (गरा (| ो नार | | পৃষ্ঠ | (PT#) | લ્કી ના ₹ |
|--|---------------|---------------|--------------|--|-------------|---------------|------------|
| विक्षीय"-प्रायः वस युव | 222 | 30 | ર | ভক্তি, জ্ঞান, বৈবাগা ও মাহা কারাকে ব | . .5 | 50 | 8 |
| विकीवानव अन्यान, बावप-क्षक | ৬০ | 8) | > | ভতিতেই বাম শ্রীত হন | | 339(| - |
| विधीरानव अस्टिक | 224 | 200 | > | क्षत्रिः, मश् संकाराव | २১ | 28 | ., 8 |
| (| යා | २० | 8 | ভঞ্জি পথ | | 224 | - |
| विशेषात्र উপদেশ, वावानव व्यक्ति 🖁 | Ob | 29 | ২ | ভজিপৰ অতি সুগৰ | 200 | 8& | ,, . |
| (| ¢5 | 32(v) |) 3 | উক্তি পাণ্ডো কত চন্ধ্ৰয় | 560 | å | > |
| বিভীবণের প্রতি হাবণের শ ক্তিপেল কে প | 220 | >0 | | ভক্তি বিহীন শুণ অভি ডজ্ব | 296 | | د (ب |
| বিভীৰণেৰ প্ৰাৰ্থনা | 5 28 | 220 | > | ककि-रिशीन क्षका ७ जगरामक निक हें | | (| ", - |
| বিভীৰণের বানবপ্রণকে অলভার বন্ধ | | | | সাধারণ জীবের সভ | ১৬৬ | ba(+ | n (1 |
| বিভাগ | |) 5 5 C C | | ভ'ক্তে-মাশ্বাস্থা | 568 | 229(| |
| বিভীবণের ভক্তি . | . 8t | _ | 5 | ভক্তিংৰ'গ ভব্ | 50 | ১৬ | > |
| বিভীবংশঃ রাভটাকা | ్తర | | Œ | ভজি শাভ কিরণ ছবহ | coc | co. | 5 |
| | . აან ის | 20¢ | 5 | ভক্তি-পাচের উপার অতি সহজ | 568 | 222: | 8 (• |
| বিভাৰণের রামণনে শব্দ বাহণ | હ ૨૨ | | 5 | ভক্তি-সাধনা কি গ | 50 | 50 | ၁ |
| वित्रक, जारमव | | | | ভক্তের উপথে কৈবল্য জোর করিয়া আসে | ১৮৩ | >>>(| 1) 2 |
| विशय वर्ष | ¢ | | , J | ভাক্তৰ উপৰ ৰামেৰ নিবভিশ্ব প্ৰীক্তি | 206 | 20 | 8 |
| विरुग्ध कवा सकर्खना, काशायन महिन्त ? | 26 | | | ভক্তেৰ কাছে ভগৰান কিছু গোপন | | | |
| বিরোধ করা ১লিভে পারে, কাহারে সহিত | | | () O | য়াখেন না | 20 | 85 | ર |
| বিলাপ, ভারাব | 38 | | > | ৬.ক্টের জন্ম ভগবানের নরক্ষণ বারণ | ১৬০ | 93(1 | s) . |
| विणाल, मरन्यानवीव | _ | 9 200 | \$ | | ь | 25 | ેર |
| বিলাপ, বামের |) 5: | | | ख्यक्तव खण्डरे छगवास्मव मोमा कवा र् | ५ ०७६ | १२(इ |) |
| বিলাপ, স্বতার |) b | | " · | ভক্তের মোহ ভগবাস্রাবেন না | ১৬১ | 9.O(4 | 8 (|
| বিষ্ণু মান্ন। জগতে মারারণে প্রাকাশিত | | > >> > | | ভক্তেরা ভগবানের বালক সম্ভান | ২৫ | 8२(४) | 8 |
| देवदाशा, ब्लान, मादा ७ फिक्क काहारक क | | | 8 | ভগবৎ-চয়ণে মতি কিলে হয় | ٩ | 20 | 8 |
| देवशात्रातान् (क १ | יין דיי סל | | 8 | ভগ্ৰংপ্ৰেমলাভই জগ-ভণেৰ উজেশ্য | 91) | ⊅8 (₹) | ၁ |
| हर्तवाकारान् दर्भ ह | (>8 | | - | ভগৰং-প্ৰেমগাড়ই জীবেৰ প্ৰকৃত স্বাৰ্থ | CP | ac(-) | 5 |
| ৰ্যৰ্থ | 300 | • | 5 | छत्रदर-विश्व अकावत माहाचा नाहे | 90 | 58(*) | ર |
| শ্ৰহ্মান ছই প্ৰকাৰ অগ্নিৰ স্থান | ેડડ | | ٦ | ভগ্ৰৎ-ভক্তি ব্যতীত হঃখের শেষ হয় না | ১৬৭ | bb(+ |) ၁ |
| सकार कर | 533 | 550 | _ | छत्रवान् अपूर्ण शाकिल किছु अमाश | | | |
| बाबन लाश्युक इंहेलल भूका | 2.5 | | 5 | शास्त्र मा | ৫৬ | ు ు | ** |
| आक्षान्य (गरा ७५ किश्वित मध्यायिकांना | | | | ভগৰান কাহাৰ বলে থাকেন | 20 | 50 | 0 |
| क्षामानम् रन्या उर्थे व्यक्तमम् नव्कासस्यानाः स्थ | • | | | ভগবান ৩ ; ভাব প্রচণ করেন | ১৬৮ | क्र)दह | 8-5- |
| ভক্ত (क १ | ১৪৯ | 8२ | > | ভগবাৰ-সমান কে জগতে | ೨৮ | ₹0 | ર |
| ७७ ८क ७१वात्मत्र भागत्र किहुने नाहे | રહ | 85 | J | ভগবানে মতি থাকিলে বুগ-বর্ষের | | | |
| ककरम्ब छेन्दर माजाब व्यकान मार्ग न। | ১৩৬ | 9614 |) > | প্ৰভাব লাগে না | 398 | 30 /(|) 8 |
| कक क्रवादाव व्यानावात | ১৬৫ | ታ ଓ જ |) - | ভগবানেৰ নিকটে প্ৰিয় ব্ৰৈচে | | | |
| জক্ত, সঙ্গ, মোক চায় না | ১২২ | 222 | 8 | প্ৰিৰ্ভৰ কে ? | ১৬৬ | PG(1 |) ર |
| ভক্তি আপনিই আনে | 50 | 3¢ | 2, | ভগ্ৰানের স্বই সামাতীক | ১৮৬ | 3O(0 |) ર |
| ছবিদ ও জানের ব্যক্তের | 242 | 558(4 | ۹ (| फ्रांशास्त्रत संश्वा वाम क्रव (क है | ৬২ | 81 | ą |
| . (| 240 | ১১২ | ٩ | ſ | 242 | *)8¢¢ |) |
| क्रकि कथा काशास्त्र काट्ड बनिटक नारे र् | | ১২৭ | ર | क्षम्य-माशका (|) b d | >>>(* | 1) 9 |
| জক্তি বি ? | 200 | >20(4) | | खश्ट-राव दिनम | ১৩২ | 8(* |) > |
| कांक शांकिश सामगार्त शहरण कि क्ल स्व | 242 |)*,8¢¢ |) > | ७१ -१११ | ১২৯ | 0 | > |

| | [10 | /o] | | |
|---|-------------------------------------|--|--------------|--------------------------|
| | পুঠা লোহা চৌপাই | | পুঠা | लाग कोनार |
| ভৰত-হত্তম'ন্ মিলন | >>> 0 0 | भाग्रवार् | as | ೨೨(४) > |
| ভ্ৰত্তের প্ৰস্নু, রামের সকাশে | ১৪৬ ৩৫ ১ | মায়। কি ! | ر د | 58 5 |
| ভূবৃতিকে গ্ৰামের ব্রদান | >9¢ ₽8(-) > | भारा, काम. देवराशा ७ ७कि काशा स | | :o २ |
| ভূষ্ণিকে বিশ্বৰূপ প্ৰদৰ্শন | ১৬১ ৭৫()১ | মারা, বিভা, ও অবিভা | 20 | 58 ₹ |
| कृष् कित्क निरंदे किनान | 596 20b(·) 2 | भाषा अक्षेत्रास्य नानी | 220 | ી ⊅(સ) |
| पृ ष्ठिक नित्वत वन्तान | 244 20P(A) 8 | মারা জীবামের প্রাশিক | ১৬২ | |
| पूर्श्वित अञ्चत | ১৬৭ ৮৮(ন) এ | মারা সীকা | 56 | २७ २ |
| ভূবৃশ্বিৰ উপাধানি | 308 00 8 | মাহান্তা, রামারণ | | > < (4) > > |
| कृष्ठित काक त्यह स्मा १ | ১৬৯ ৯৩(*) ১ ১৭০ ৯৪(*) ৪ | মিত্ৰতা, বাদেৰ সহিত প্ৰতীবেৰ | 3 0 | 3 |
| ভূষুণ্ডিৰ কাৰ-গেছে সংভা কেন ? | אלל לאל (אל (אל) | মেখনাদ | ۶۵5 | રેવ |
| स्व अर कार्य उत्तर नवका रचन १ | 590 50(7) 2 | (मधनाम दर्ग | 205 205 | |
| জুষ্তিঃ ও দ- লপমান | 598 50b(s) | (भ पन। ध्या भ्या भ्या | (30 | १৫ ১ ८ (क) स्थ |
| ভূষ্ভিৰ নিকট গ্ৰুড়ৰ প্ৰন | ১৫৬ ৬২(ব) ১ | (मध्नादनक नुष | \$500 | 95 3 |
| ভূবৃতির পূর্বকথা | ১৭৭ ১ ০ ৯(খ) | মোৰ কাহাকে আভজ্জ না কৰে ? | 505 | 67(a) 8 |
| কুষ্তিৰ পূৰ্বভন্মকৰ। | ১৬১ ৭৩(ঋ) ১ | स्मारहर वस्त नावी स्वत श्रद्धवाण | ર હ | 80 > |
| कृष्णित व्यथम काणान विवतन | 590 36(1) | (माक, त्रक्ष-०क हार मा | ১২২ | >>> 8 |
| ভূৰুণ্ডিঃ বালক-রামের সহিত খেলা | ১৬১ ৭৪(*) ৩ | য | | |
| জুবুতিৰ মোৰ | ১৬১ ৭৩(•) ১ | | 303 | C 2F |
| ভূষ্তিৰ বালৰ-ৱামৰূপ বৰ্ণনা | ১৬২ ৭৫(*) ৩ | वक्कस्त्रम्, (अवन्यवस्य | ১০৬ | |
| ক্ষুব্ৰিৰ শেবেৰ শৰীৰ | ১৭৭ ১০৯(ৰ) ২ | યક્ષણ,મ, કાંચલ્યક યૂગ, જોળ દે લ્લક | | 503(♦) |
| n e | | यूत्र-वश्व | | 200(a) 2 |
| यक्त्री উদ্ধाৰ | - 60 66 | र् , •्व+ 44 | ৯৭ | ৬৪ ১ |
| | 1 . | | 1 50 | ৪৮(২) ৩ |
| | 25 0 0 | યુષ, ધ્યવનાભ્ય | 2 200 | 45 3 |
| मक्रमाठ ३१ | 85 0 0 | वृष-वाळा, बावरनव | 500 | 99 3 |
| | 69 0 0 | वृष, वावन-विकोदत्वव | 222 | ৯৩ ২ |
| | 1 > 2 > 0 0 | युष, वारण-स्थ्यात्नव | ১১২ | 28 2 |
| म्बुरेन्डेड २००० व्यक्त | 00 २ १ 8 | यूड, वाथ-वावलब | 309 | ъс |
| श्रूरत सम | 20(a) 20 | যুদ্ধ লক্ষণ-বাৰণেৰ | 200 | ₽2 - |
| वन-, बाल अपूर्व भःक्षावदी-(विशाल | >>9 >00 > | यूचाबण, बाब-बाबरबब | ৮৬ | SP(€) > |
| 41441 (4-1) (| (07 30 3 | বুৰ্তী বেন দীপশিশা | ₹ } | ৪৬(ৰ) |
| মন্দোদরীর বাবণকে উপবেশ | 45 6 5 | 3 | | |
| • | (90 50(4) 8 | रमने १ व | 9 | 8 3 |
| | (*)866 656 | वम्बेर कार | ₹ ૯ | 80 |
| महारमस्य साम-स्य | { >>9 >>(⊌)> ६ ₩ | वस्त्रेव चडेळाकाव स्थाप | ৭৬ | >0(4) > |
| ষাভা কৰৰ্ পাৰাৰী-সম আচৰণ কৰেন | ატა მ ა(•) 8 | बाकाज्यित्व क विकोष्टवंब | 224 | 50g \$ |
| यानग-न्या मण्यलयः वानग-मान | 19.2 120(-) 0 | वान्त्रान्त्रियम्, वात्त्रव | 508 | ∌(∢) ₹ |
| महर्गर गर | ১৭৩ ১২০(খ) ৪ ১৫ ২২ ৪ | वत्याक्रित्वक, खबीरवव | ა8 | 30 G |
| भावोह | \$ 50 22 8 50 28 - | वावर-अक्षर गरवार | 99 |) b - |
| | ()0 30 0 | बाबर कर्ज्य विकोगानम जनमान | ৬০ | 80 > |
| वाडोड वर्ष | 29 20 9 | वार्य-कामद्यमि मध्याप | ৯২ | د هه . |
| | | | | |

| | পৃষ্ঠা | त्माका त | ोশा≹ | | পৃষ্ঠা | cetal c | চাপ |
|--|---------------|----------------|-----------|---|--------------|-----------------|-----|
| ৰাবণ-প্ৰচন্ত সংবাদ | 92 | ٩ | 8 | বাম-সকা-শ চতুমানের প্রশ্ন-শিক্ষাসা | 586 | 3 0 | : |
| মাৰ্ব বামের পোপন ভক্ত | 50 | २२ | > | ৰাম-গীতা-সম্মণেৰ অংৰাধ্যায় গমন | ১২৬ | >>b(*) |) : |
| | \$ >>0 >>0 | 22 | 8 | রাম্-দেবা, সীভার, | 285 | ૨૭ | ٩ |
| स्वि रह | ه دد 🄰 | 205 | > | রাম-হইজে বামের দাস ব্ড | >P8 | >>:(-) | ь |
| | 6 ₹ | 3.5 | 8 | ৰামারণ-ৰাহাজ্য | 246 | >=a(·) | 2 |
| ब्रांचन खाम्बर-वर्रमारनंह |) 42 | ও পাদ ১৯ | টোক। ২ | ৰামেৰ কুণা ভিন্ন ভক্তি হয় না | 246 | 5≥¢(•) | 1 |
| Colores ve | 222 | a 3 | ` 2 | ৰামেৰ চৰণে যতি হওয়া ভিন্ন অভ | | | |
| वादर-दिशोदानद युष | СР | ٠.٠ ن | 5 | প্ৰ না | १ ५४९ | ><>(*) | , , |
| बादर-मामको मरवान | 509 | be. | | বাষেৰ নাপপাশ | 200 | १२ | • |
| মাৰণ-বামের যুক্ত | 200 | bR | | বাষের প্রভাগণকে উপবেশ | 585 | 83 | |
| वायप-अञ्चारमंत्र कृष्ट सर्वेश-अञ्चारम् स्थान | 65 | 30 | | ৰামের প্ৰভাপে কাৰাবা ছঃখী ও | | | |
| য়াবণ-হতুষাৰ সংবাদ | ১১২ | ৯৪ | > | सारामा स्पी | 88¢ # | 30 | |
| ৰাবণ-হত্নমানেৰ বৃথ ভাৰণকে ভুক্তকৰ্ণের উপবেশ দান | ৯৬ | હર | | বামেৰ বিলাপ | \$ 22 | २ - (अ) | |
| BIAJOA XAACIN QUOLU AIA | (00 | २० | 8 | minuted in section | 06 | ७ ०(♥) | İ |
| ৰাবণকে বিভীবণেৰ উপৰেশ খান | ab | 29 | 5 | ৰুংমেৰ বিৱহ | २२ | ৩৬ | |
| बायगरक । यञ्चायसम्बद्धाः कर्मान्यम् वान | 60 | ୬ ୭(ଖ | | বামের মহানতা | ১৫৮ | 20(a) |) |
| | (05 | ا عو | ່ ວັ | ৰামেৰ মাহাত্ম্য | २৩ | 89 | |
| বাবপকে মন্দোদরীর উপদেশ দান | 95 | œ | 5 | বাংশব মার)জ্বা প্রবর্ণের স্থরিদা | २१ | 86(* |) |
| Aldato attains and and | 90 | 20(x | 8 (| রামের রাক্যাক্তিবেক | 508 | ৯(∗) |) |
| | (78 | ⊃ @(₩ | | কামের নাক্ষ্য-বধ প্রতি জ্ঞা | ৬ | ь | |
| ন্নাবণকে মাল্যবানের উপ বেশ দান | F 2 | 89 | 0 | ৰামেৰ স্কপ্ৰ বৰ্ণনা | ৬১ | 89 | |
| ৰাৰণেৰ অন্ত্যেষ্টি ক্ৰিয়া | \$ 559 559 | 208 | ک 8 | ৰামেৰ ৰূপ বৰ্ণন। | 204 | F.G | |
| शायत्व एक पुक्रोपि कर्छन | 96 | ১৩(ক) | | রামের স্থপ বৰ্শন। | 559 | 205 | b |
| बारदार का ग्रह्मार करन | 503 | 99 | | ৰাঘের সমুখ-ভটে আগিমন | 89 | ೨೨ | |
| बारावय भारा-रुक्त | 223 | >8 | > | ডামের স্বই অন্ত | ১৬৮ | 90(* |) |
| बादर्भ रक्क्स् | 305 | ъ8 | > | বামের সহিত প্রত্তীবের মিজতা | ₹30 | ن | |
| बावलब क्रम वर्गमा | 99 | 24 | ર | | 100 | 8 | • |
| स्थ-सम्भ मध्याम | ba | ৩৭ | રે | ৰাম্বের সহিত ৰত্বমানের সাক্ষাৎ | ঽঢ় | 0 | |
| बाम-क्या अवस्यत अधिकादी रक ? | | >29 | 3 | ৰামের শ্বৰয়ে খোছ খান পায় না | 5৬0 | , | |
| स्थ-नावन मध्यान | ₹8 | 80 | 3 | বামেশৰ অভিচা | 40 | > | _ |
| वाम निक्रभम | ১৬৮ | ৯১(ৰ) | | त्राक्षत्र-वानस्य युष | 200 | | 9 |
| बाब-विक्रि भरवान | >60 | 89 | > | क्रमाहेक | | >09(₹) | |
| রাম-ভক্তিই স্ক্রণৰে আৰুৰ | | ১২৬ | 5 | क्षण-वर्गमा, वावरमध | 99 | 24 | |
| नाम किल्डिट की करन | | >> 9(%) | | M | | | |
| মাম-ভদনার মাহাম্য্য | | ১২৯ | 8-8: | সহা কাণ্ড | ৬৯ | 0 | |
| ৰাখ-ভৰত মিশন | ১৩২ | . 8(4) | | कदः। अभवन, अञ्चरमञ् | 96 | • |) |
| माम-माम्हा वर्वना | 580 | วล | 8 | मका भवन, रक्षाद्यक | 88 | ₹. | |
| ৰাম-বাৰণ যুদ্ধ | 509 | ρ¢ | | महा परन | 800 | ২৩ | |
| वाम-बादण युवादछ | bo | 2P(4) | > | | 60 | ₹8 | |
| | (8 | 20 | > | मक्ष-स्प्री | 88 | 2 | |
| साध-मन्त्रण गरशंच | } 20 | 53 | 3 | महिनी दथ | 98 | | |
| • | (১৬৯ | ৬৯ | > | शर-इन क्ष | >85 | ₹8 | |

| | পৃষ্ঠা ৰোহা চৌপাই | | शृ क्षेः (स | ारा छोना₹ |
|---|--|--|-----------------------|----------------------------------|
| লপ্প -নেখনাদ যুৱ | nte 5 (*) c8 O4 | ७ भगावृद श्रास्टन ' | 240 £ 3 | २०(४) ७ २०(४) १ |
| मञ्जन-वादानव युद | >>0 PS 413 | a unite most | | |
| | | ও অসাধুৰ লক্ষ্ | 589 | ა ს ე |
| TIMOTH CONTO | • | 1 1149 | ২ ৬ | 88 3 |
| লক্ষণের বামকে কার | ৯ ১৩ ৪ স'ভ | - यदम्या विमन | € 8 } | 8 3 20 3 |
| मम्मानव जिलियान, शांबनक | | -बिक्की गरवाच | \$ 558 | ৯৮ ১ |
| শোষণ মূনি | 24P 220(a) 1/2 | ।- ३ ष्ट्रभान् मः नाम | 85 | 35 8 |
| লোখণ মূনিৰ অভ্তাপ | う9み >><(w) ジ ** (a) ジ | -হৰণ ও নীডা-বিদাপ | \$ 59 | ۶۹ > |
| লোষণ মুনিৰ ব্ৰণান, ভূবৃতিংক | 2PO 225(*) P | 1241 5 110111111 | § 2A | २४ 🕽 |
| M management of the state of th | *** ** | । কি ভাবে লক্ষার থাকেন | 99 | ২৯ ৪ |
| শক্তিকে 1, বিভীৰণের প্রতি | | ার অগ্নি-পরীক্ষা | > io : | 09 9 |
| শক্তিকেশ, গন্ধণের প্রতি | to a second | ति अजि-शर्वम | 24 | રર 8 |
| শুঠ-সেবক শূল-স্থান | সাত | ात्र निक्रे रुष्ट्रशास्त्रतः विश्वासः व्यहन | 89 | 8 07 |
| শ্বণে আসিলেই বক্ষা | শ্ৰেম | ৰ বাম দেবা | 280 | ર ઇ ર |
| नवस्य युनि | 26 20 41 2 | ৰে বিশাপ | 28 | २४ > |
| भवर वर्षन भवर | ના ના | ति नेस्रान-क्ष | 583 | ₹8 ೨ |
| भवशे जन्म ५० जो | 50 56 T | वि मेक्षात्म बानब-देशक द्वाबन | 25 | 25 3 |
| শিব ও জীব জিলুমুক্তি সংখ্যা | 205 02 2 ## | 14 | { ≥ 3 ≥ 0 | 0 > |
| শিব-তুৰ্গা সংবাদ জিলেন বিভাই অসমিত জনত জনত বিভা | | | დ აი | ე) ცეე |
| শিবেৰ নিষ্ট ভূবৃত্তির ওল ৰ ক্ষা ভিগ ভিনেত্ৰ লাভ অস্তিত্ত | | व-वा णि यूप व-विकास | | - |
| শিবের শাপ, ভূব্বিকে | | वि-विभाग १४ - १९५ - चन्द्राह्म | ১১ ১৮ | |
| শিবের ক্ষৰ, বামকে | 300 30(4) 344 | विकास भरतान विकास भरतान विकास विकास अस्त | | २० - ১७ |
| भूग, চাবি व्यकारतय | 23 | বিশ্বিৰ স্থামেৰ নিক্ট বিশ্বাস্থ এছণ বিশ্বৰ উচ্চৰ সংগ্ৰহৰ আম্মেৰ্যাস | ৩৭ |)9 2 |
| मूल-(बाश | 3 Lik 320(-) 31k | रिवर के त्व शास्त्र जनस्थाय | ৩৭ | 39 8 |
| (आक शहा ३ ; २३ | | 'বেৰ উপৰ লক্ষণেৰ কোৰ বৈৰৰ জ্বলাৰ | ৩১ | 0 3 |
| | 200 2221 | িৰের ছ:খ বৰ্ণন বিৰের বৈৰুগ্যয় | ৩২ | ৬৮ |
| ज | ** | ।८५४ ८५४।७) १.५४ बाक्यांक्टरक | 28 | 30 G |
| मध्य-उक्त (योक ठाव न) | ગરર ગગગ ક્ષ | | | ა ა |
| ७७:-मोमा व्या ६ क्व | ১৬১ ৭৩(¥) সুর | বিৰয় সহিত বিজ্ঞা, বাবের 👸 | : { 3 0 | 8 - |
| সনকাৰির বাম সকালে জাগমন | 5 11 A 15 S | ি য়া মূৰি | | a > |
| मकान-क्षत्र, मोकान | ૦ કર રક ૦ જૂન | ৰ কাণ্ড | 83 | |
| ऋखन चळाव | 100 100(1) a | বল পর্ব্ব হ, | 9.0 | 50 5 |
| সন্ধিপ্তে বোপ | 7216 730(=) 716 | ৰে পৰ্বতে অবস্থান | 95 | 8 > |
| अबुक्ष मध्यम, रश्यात्मव, | 00 0 | नम भक्ताल कालाम्य | 98 | >>(4) ~ |
| मध्य भव्यत, यातव-मिनाव, | 4 | 141 | 88 |) > |
| সমূল সংখনের বৃক্তি | 4.6 4 5 | न् देश्य | 5 द | 8 80 |
| সমূজেৰ উপৰ ৰাখেৰ কোৰ | ৬৬ ৫৭ ১ | নিধার বাবশের নিকট প্রন | 86 38 | २०(४) > |
| Andig. | 80 (9 3 | | 8¢ € | २०(५) ७ |
| म्पायन व्यव्यान | | विचाय सारवद निकडे श्रमन | 22 | ১৬ ৪ |
| সাপর উত্তরণ | | निवास स्विमन | 22 | ১৬ ২ |
| সাগৰ গল্পনান্তৰ সৰ্বলেৰ প্ৰভাবিত | | ह् रहन | ৬৯ | ၀ ၁ |
| माष्ठ व्यव, भक्तद्वर, | >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> | । (কভাবে করিছে হয় | ೨৯ | ૨ ૨ ૨ |

| | | পৃষ্ঠা | লোহা চে | नार | | | नेश (| नार। क | াণাই |
|------------------------------------|------|------------|-----------------|---------------|---|---|----------|-----------|------|
| নেব্য-সেবকভাব ভিন্ন ভব-ছংগ বস্ত ২৭ | । না | 248 | >>>(*) | | ऋषान, जीका-स्कृषान् | | 84 | >> | 8 |
| श्रीरमारकः प्रदेशिक स्थाप | | ৭৬ | >৫(◄) | > | मरवाण, प्रकीय-वाम | | ೨৮ | 20 | - |
| चारीमका भारेष्म नारी महे हर | | ೨৬ | >8 | 8 | সংবাদ, হছুমান-বিজীবণ | | 80 | 8 | ξ. |
| सर, चतित्रनिष, | | ೨ | ೨ | > | সংবাদ, হছুমান্-ভরভ | | ৯৪ | () P | 5 |
| 4 4, \$124, | | ১২২ | >>< | > | त्रःवीरः, रक्ष्यान्-वीवन | | 65 | 30 | |
| wa, sifacatra, | | ১৩৬ | ১২(প্ন) | >-≨: | সংবাদ, হয়-পাৰ্কতী | | 505 | 60 | ` |
| चन, क्लाइन, | | 30 | 22 | >- F : | ₹ | | | | |
| क्षव, (क्रवंशलंब, | 5 | | 240 | > | रम्भान् | | ২৯ | 0 | ξ, |
| w 4, (447)(11, | • | | 202(*) | | হয়খান্ কর্ত্ব ভরতের এ খ ভিজা স। | | 286 | 20 | 5 |
| चन, मान्दरन्त, | | 205 | 60 | > | इक्ष्यान्-विक्रीयम् अःवाय | | 86 | 8 | ٦, |
| प र, जकार, | | | 220 | | হতুমান্-ভরত মিলন | (| うそう | 0 | , |
| खद, निरंदर, | { | | >>8(*) | | | ŧ | 200 | 5(*) | |
| | (| >09 | | | रक्षान्-छत्रक मःवार | | >8 | (i.p. | ` |
| चर, मन् कारिय | | 586 | | 5 | रङ्गान्-वारण मरनार | | 65 | २० | - |
| खर, ऋठेक मूनिय | | 9 | | 5 | व्यमान्-बाय मरवान | | œ | २७ | 8 |
| खन,—(क्याहेक) | | | 509(⊲) | 5 | হত্বগন্-সীভা সংখ্য | | 86 | 22 | 8 |
| সংবাদ, जनम-वादन | | 99 | 24 | _ | ভতুষাৰ্-ছৰসা সংবা ৰ | | 88 | > | 5 |
| ऋताम, अञ्चल-व्याम | | 40 | - | ۹ . | ৰ্জুমান্কে সাপৰ প্ৰান ক্ৰিছে | | • | | |
| गरवाप, कागटनिव-दावप | | 5 2 | 99 | ٠ د | ভাগবানের উৎসাহ বান | | 83 | ২৯ | 5 |
| मरबार, नावर वांच | | ₹8 | | | হছুবানের নাগণাশ | | 62 | 29 | |
| সংবাদ, বশিষ্ট ৰাম | | 200 | 89 | ১ | হত্বানের রাবণ-সভার আগমন | | 02 | 28 | 7 |
| স্বাদ, বিভীৰণ-কৃত্তকৰ্ণ | | ১৬ ১০ | ৬৩ | | स्थ्रात्मः नकात्र व्यवस्थ | | 88 | 2 | S |
| मर्वाप, स्वयुक्त रस्यान् | | ৯৪ ৭৭ | | 5 | ক্ত্ৰানেৰ সাগৰ লক্ষ্যৰ | | 83 | 0 | 5 |
| अर्थान, जायप-समय | | 77 52 | | 2 | হছুমানের সাক্ষাৎ, বাবের সহিস্ত | | ২৯ | 0 | 5 |
| গ্ৰোপ, বাংশ-কালনেমি | | 9.5 9.5 | | | হছুয়ানের স্বীকা-স্থীপে গ্রন | { | 85 | 9 | 0 |
| म्ह्याप, वावश-व्यव्य | | a b | - | ÷ | | ۲ | 229 | ३०७ ३८ | 5 |
| সংবাদ, বাবণ-মন্দোদৰী | | ė: | | _ | হত্নানেৰ সীভাৰ নিকট বিবাহ এছণ | { | 68 68 | રહ રહ | 8 |
| म्र्याम, वायण-सङ्गान् | | ₹8 | | <u>۔</u> ئ | চতুমানেৰ পুৰেণ বৈশ্বকৈ আনহন | • | ১২ | 08 | 5 |
| मरवाय, बाम-नावय | | 200 | | 5 | इत-भार्कको मःश्रम | | 265 | 65 | - |
| म्हराष्ट्र, बाय-र्गण्डे | | නගැ. වා | | , | स्त्र गायस्था गायस्य स्त्र-स्राप्तस्य व्यवस्थात्री | | 200 | e3 | , |
| म्र्याप, साम-मण्या-प्रकार | | 00 | | و | वृद्धि क्षणमा स्थित स्थापन स्थापन स्थापन | | 269 | | |
| अर्थाण, नाम-रक्षमान् | | | | 3 | सारत जन्मा क्रिक स्त्राच कृति होते होते होते हैं। | | - · | # V (*) | • |
| সংখ্যৰ, সীভা-বিজ্ঞটা | l | ४६ ३८८ | | 5 | क्षम (वर्ष) | | ১৮৬ : | ২০(*) | 59 |



ञ्जिर्गाय नयः

ঞ্জিলানকীবন্ধতের জন্ম

শ্রীরামচরিত মানস

ত্ৰতীয় সোপান

অরণ্যকাণ্ড

বিবেক-জলধি-শোভা

ঘন পাপ-অন্ধকার

শ্লোক-ধর্ম-বিটপীর মূল

- বৈরাগ্য-অম্বুজ্জ-ভান্থ

মোহ-জলধর ছিন্ন-বন্দি ব্ৰহ্ম-কুলজাত

জল ভরা জলধর-

আয়ত রাজীব-আঁখি মস্তক-উপরে যিনি

জানকী-লক্ষণ-যুভ

ভিন্ন করণ কাল-কলঙ্ক চির-নাশন সমান স্থান্দৰ ভাষু

কবেতে কাম্মুক শর কটিতটে মুশোভিত

পথিক-প্রবর পৃঞ্জি

পূৰ্ণ-বিধু আননদ বিধাতা

আর ভাপে স্থির পরিত্রাতা। নভ:-জাত পরন-আকারে

রাজা রাম শন্ত্র প্রিয়েরে॥ ১

শোভার আধার পীতাম্বর স্থ-উত্তম তৃণীর স্থন্দর।

জটাজট করেন ধারণ

অভিরাম দে রাম-চরণ॥ ২

সো—উমা রাম-গুণ দৃঢ় মোহ লভে ওধু মৃঢ় প্রদানে সাধুরে বিরাগ মর্গ্ম। যে হরি-বিমুখ বিরত ধর্গে॥

জয়ন্তের কুর্তিলভ।

চৌ—নিজমতি অমুসারে অমুপম বিমোহন।
প্রবণ করহ এবে শ্রীরামের লীলা পূড়।
একবার নিজকরে কুমুম কবি' চয়ন।
বিসি' এক মনোহর স্ফটিক শিলার 'পরে।
জয়ন্ত বাসব-মুত ধরি' রূপ বায়দের।
যেন অভি মন্দমতি পিশীলিকা হঠ ভরে।
মূঢ় কাক আপনার ধল-মতি অমুসরি'।
বহিতে কধির-ধারা চইল রাম-গোচর।

করিক্স ভরত পুরন্ধন প্রীতি বিবরণ ॥
করিলা যা' স্থর-মুনি-নর-মন বিমোহিত ॥ ১
বিবিধ ভূষণ রাম করিলেন বিরচন ॥
দেবী জানকীরে প্রভূপরা'ন আদরভরে ॥ ২
কেরিবারে চাহে শঠ পরাক্রম শ্রীরামের ॥
অতল সাগর-তল মাপিতে ত্রাশা ধরে ॥ ৩০০
পলায় জানকী-পায় চঞ্চু-আঘাত করি' ॥
শবঞ্-সন্ধান এক করিলেন রশ্বর ॥ ৪

[•] ভূপের বাণ।

দৌ—অতি কুপাময় তাঁ'রো সনে ছল র**ধুকুল**পতি করে আচরণ

সতত করুণা দীনে। দোষাগার মতিহীনে॥ ১

(b) — মন্ত্র-চালিত হ'রে ব্রহ্ম-শায়ক ধায় ।
আপন প্রকৃত রূপ ধরি' যায় পিতৃ পাশে।
উপজ্লিল ভ্রাস মনে স্বুচে' গেল সব আশা।
বৈলাস আদি করি' সব ধামে বিধি-লোকে।
জয়ন্তে বসিতে কেই নাহি করে আবাহন।
স্বধা হয় বিষ কাক বলে শুন হরি যান।
শত অরি-সম হয় স্প্রদের ব্যবহার।
ভথ্য অনল হ'তে ভা'র কাছে সারা ধরা।
জয়ন্তে বিকল অভি হেরিলেন দেব-ঋষি।
প্রেরণ করিলা ভা'রে রামপদে দ্বা করি'।
ভয়ে ভীত সকাতরে জভা'য়ে ধরে চরণ।
ভোমার অতুল বল প্রভুতা তব অতুল।
নিজকৃত কর্ম্মলল সমুচিত লভিলাম।
কুপাময় শুনি' ভা'র অতি হুখ-ভরা বাণী।

দো—মোহ-বশে সাথে বাদ ককণা করি' অগাধ ভয়াকুল প্রাণ ল'য়ে বায়দ পলা'য়ে যায়॥

বীরাম-বিরোধী বৃদ্ধি' অভয় নাহিক আদে॥ ১
চক্রের ডরে লভে দশা যথা ছুর্বাদা । ॥
ছুটে' আস্তে কলেবর সমাকুল ভয়ে লোকে॥ ২
রাম-ভোইী জনে রাখে বল ধরে কে এমন॥
জননী মরণ-সমা জনক যম-সমান॥ ৩
শৈবলিনী বৈভরণী সমান নিকটে ভা'র॥
এ দশা ভাহার যেবা রাম-বিমুখভা ভবা॥ ৪
সন্ত কোমল-ভিত করুণা উদিল আসি'॥
চীৎকারি' কহে রাখ' প্রণতের হিতকারি॥ ৫
বলে ত্রাহি ত্রাহি প্রভু দয়াল রখুনন্দন॥
আমার ছিল না জানা কুমভি আমি বাতুল॥৬
রাখ' প্রভু এবে তব শরণে ছুটে' এলাম॥
এক শ্রীথি করি' ভা'রে ক্ষমিলেন হে ভবানি॥
এক শ্রীথি করি' ভা'রে ক্ষমিলেন হে ভবানি॥
এক শ্রীথি করি' ভা'রে ক্ষমিলেন হে ভবানি॥

যদিও বিনাশ তা²র বিধি। ১ ক্ষমিলেন রাম গুণনিধি॥২

অত্রি-মিল্স

চৌ—চিত্রকৃটে অবস্থান করি' রঘুমণি রাম।
কিছুদিন গও হ'লে উদয় হইল মনে।
এত ভাবি' মুনিগণ-সমীপে ল'য়ে বিদায়।
অতিমুনির পালে যখন করিলা গতি।
রোমাঞ্চিত কলেবরে ধাবিত উঠিয়া মুনি।
করিতেই দওবং শ্রীরামে বুকে জড়া'ন।
হৈরিয়া শ্রীরাম-রূপ শীতল নয়ন-মন।
অর্চনা করি' কহি' প্রচন মনোহর।
সো—আস্টেনতে প্রভু স্মাসীন

করেন কতেই লালা আংতিযুগ-অভিরাম ॥
হইবে বড়ই ভীত সকলে ফেলে'ছে চিনে'॥ ১
সীতাসনে ছই ভাই যা'ন যথা মন যায়॥
বারতা শুনিযা মুনি, অতি হর্ষিত মতি॥ ২
তাহারে হেরিয়া ক্রত চলিলেন রম্মুণি॥
ক্রেমবারি সহযোগে ছজনে করা'ন স্নান॥ ৩
সাপরে করেন নিজ আআমে আনয়ন॥
অপে'ন ফলমুল প্রীত রাম রম্বর॥ ৪
হেরি' রূপ ভ্রিয়া নয়ন।
অভ্তি' কর করেন বন্দন॥ ৩

मुनिवत भन्नम व्यवीग

অকামী জনেরে স্থান দাও তব নিজধাম। নরনের প্রীতিকর কম শ্রাম কলেবর। কিবা বিকশিত কম রাজীব যুগ-লোচন। প্रमञ्ज ও ভূজ-যুগে বিপুল কডই বল। ভূদীর শায়কবর ভাষণ ধন্নকধারী। পুত দিবাকর-কুল করিলে তুমি উল্লগ । সাধুগণ মূনিবর হুদি অমুরঞ্জন। মনোভব-অন্তক-বন্দিত পদতল। ে 😘 জ্ঞানময় ভূমি বিগ্রহ নিবারণ। প্রণাম ভোমার করি রমার গুদরপতি। শচীপতি-প্রিয়ান্তক ভকতের প্রাণাধার। আপন মনের হ'তে তম: করি' পরিহার। সে কভু ভর্ক-বীচ়ি পুরিত ভবার্ণবে। একান্তে করি' বাস মুক্তির কামনায়। निम्ह श (महेखन शतम श्रुलक-मत्न। সেই এক অদ্বিতীয় মায়ার অতীত প্রস্তু। জগতের গুরু যিনি যিনি চির-সনাতন। ভাব অভি প্রিয় বাঁরে যিনি ভাব-বল্ল । নিজ ভকতের যিনি কল্পাদপ-প্রায়। অফুপম স্থুন্দর হে পৃথিবী-অধিপতি। তুষ্ট আমারে হও প্রণাম পায়ে ভোমার। যেজন এ স্তব-পাঠ করয়ে সহ আদর। অন্তে করয়ে লাভ নাহি তাহে সংশয়।

ছু-প্রণাম ভোমার পায় ভক্তছনে সদয়। কোমলভা-ভরা প্রাণ ওচে প্রভু কুপাময়। চরণ-সরোজে নমি' ভজি প্রাণ-অভিরাম ॥ ১ তুমি ভব-জলধিতে মন্দর ধরাধর॥ কাম মদ মোহ-আদি দব দোষ বিমোচন ॥ ২ বিভব ভোমার প্রভু কে আছে যে পায় ভল 🛚 ত্রিলোক-অধিনায়ক ত্রিভাপ ছরিভহারী॥ ৩ थुर्व्छिण-श्रे छात्रि' दिश्योहेटल निष्क रहा ॥ অমর-অরাভিদল-দর্শ বিভঞ্জন ॥ ৪ সেবিত কালাস্ত্রক অজ-আদি সুরদল। দূষণ কলুষ যভ করহ অপহরণ # ৫ স্থাপর আকর চির সম্ভন্মনের গতি। অন্তল্প শক্তি-সনে ভজনা করি ভোমার॥ ৬ নিয়ত যে করে সেবা কমল-পদ তোমার॥ ওছে প্রভু কুপাময় স্বপনেও নাতি ভূবে॥ ৭ ইপ্রিয় বোধি যেবা রঙ তব সাধনায়॥ স্বগতি কবিয়া লাভ যায় নিজ-নিকেতনে ॥ ৮ সব সাধ-বিরহিত ঈশ্বর আর বিভু॥ ত্রিগুণ-অতীত যিনি স্বগত প্রমান্ত্রন ॥ ৯ কু-যোগিগণের কাছে যিনি মহাত্র্লভ ॥ সম স্থাধে সেবা-যোগ্য ভজনা করি তাঁহায় ১১০ ভোমারে প্রণমি' আমি দেব জানকীর পতি 🛚 ভক্তি কমল-পদে দাও মোরে কুপাধার ॥ ১১ সেজন ভোমার পদ ওছে প্রভু পরাৎপর ॥ ভোমার ভক্তি-রুসে ভিজিয়া তে কুপাময়॥ ১২

দো-করিয়া মিনতি ও পদ-কমল

শির নত করি' যেন প্ৰভুনাহি ক'ন করি' কর জোড। কভু ত্যজে মন মোর॥ ৪

সীতা-অনসৃয়া-মিলন ; অনস্থার পাতিব্রত্য ধর্ম কীর্তন

🧲 এনস্মাদেবী-পদ ধারণ করিয়া সীতা। করিলেন সম্ভাষণ সুশীলা অভি বিনাডা ॥ ঋবি-ঘরণীর মন অপার সুখেতে ভাসে। পরা'লেন চারু<mark>ষাস আভরণ সুন্দর।</mark> ক'ন ঋষিবধু সহ সরস কোমল বাণী।

আশীষ করিয়া দান বদা'লেন নিজ পালে ॥ ১ নিত যা' নুভন রয় নির্মণ মনোহর ॥ রমণী-ধরম যাহা কিঞিৎ বিধরণি ॥ ২

স্থানক স্থানী আডা সকলেই হিতকারী। নিচ্চ ভর্মার দানে নাতি সীমা নাতি পার। ধৈষ্য ধরম নিজ-বান্ধব আর নারী। বৃদ্ধ অমুস্থকায় মূর্য ও ধনহীন। ত্তন পতিকেও যদি দারা করে অপমান। কায় মন বাণী সনে পত্তি-পদে অমুরাগ। এ জগতে পতিব্রতা চারি প্রকারের রয়। উত্তম যেবা তা'র সদা এই ভাব মনে। মধ্যম পর-পতি দরশন করে হেন। ধশ্ম ভাবিয়া মনে কুলে থাকে নারী যত। ভয়ে কিন্তা অ-সুযোগে পতিরতা হ'য়ে রয়। পতি-বঞ্চনা করি' পর-পতি করে আশ। ছট্টা কে ভা'র সম যে ক্ষণ-মুখ কারণে। ছল ছাড়ি' পতিপদে যাহার অচল মতি। ভর্তার প্রতিকৃষ আচরণ হয় যা'র।

> সো-সহজে অ-পূতা নারী যশ গায় বেদ চারি শ্ববি' সীভা তব নাম তুমি ড' রামের প্রাণ

(5)—শুনি' জানকীর প্রাণ পুলকে হ'ল অধীর। আদরে চরণ 'পরে নমিত করেন শির। করুণানিধান তবে কহেন মুনির প্রতি। সভত আমার 'পরে রাখিও তব করণা ধরমের ধুর-ধারী জীরামের ছেন বাণী। যাঁ'র কুপা শঙ্কর বিধাতা ও শনকাদি। ভেমন বিগতকাম পুরুবের(ও) প্রিয়তম। এভদিনে বুঝিলাম রমার কি চতুরভা। কেহ নাহি ত্রিভুবনে যাঁ'র সম অভিশয়। কোন প্ৰাণ ল'য়ে মুখে ক'ব প্ৰাড় যাও তুমি। এত বলি' প্রভূ-পানে চেয়ে র'ন মুনিবর।

> প্রেমে প্রাণ জরা हे जिस्राको ज

कि बाहरय मीमा अन न्श-च्क्माति । অধম রমণী সেই যে না সেবা করে জাঁর। ও विभागत काल छत्व वृक्षा यात्र अहे हाति ॥ অন্ধ ৰধির ক্রোধ-পরায়ণ অতি দীন॥ ৪ সে নারীর যমপুরে ছংখ আছে বিধান ॥ এই শুধু ধর্ম ত্রত নিয়ম কেবল এক॥ ৫ নিগম পুরাণ সাধু সকলেই এই কয়॥ বিতীয় পুরুষ নাহি স্বপনেও ত্রিভূবনে॥ ৬ সবে পিতা সহোদর পুত্র আপন যেন। হীনা নারী সবে ভা'রা বেদের বিধান মভ ॥ ৭ বুঝিবে অধম নারী এরা সারা জগময়॥ রৌরব-মাঝে শতকল্প ভাহার বাস॥ ৮ শত কোটি জন্ম তুপ-ডর নাহি আনে মনে॥ আয়াস বিনা সে নারী করে লাভ পরাগতি॥ ৯ যৌবনে বিধবা-দশা লিখিত ললাটে ডা'র ॥ ১০

> সেবি' পতি শুভ গতি পায়। আজিও তুলসী হরির পায়॥ ৫ (ক) পতি- 10 মারী পালিবে সদা। জগভের ভরে বলা এ কথা॥ ৫ (খ)

অপর কাননে যাই যদি হয় অমুমতি॥ ১ নিজ দাস জানি' মনে স্নেহ যেন ত্যজিও না॥ ভনিয়া প্রেমের সনে কহিলেন জ্ঞানী মুনি॥ ২ করেন নিয়ত সাধ যত পরমার্থবাদী। তুমি সেই দীননাথ কহ হেন কথা কম॥ ৩ সকল দেবেরে ভাজি' কেন ভোমা 'পরে রভা ॥ কেন না হইবে কহ তাঁহার হেন বিনয়॥ ৪ তুমিই বলহ নাথ তুমি ত অন্তর্যামী। নয়নেতে জল বহে পুলকিত কলেবর ॥ ৫

> কমল-আমনে স্থাপিত আঁথি ៖ कि मानना-वरण बाजुदत्र एमि ह

ছ-পুলক শরীরে মন জ্ঞান থাণ

| ধর্ম বোগ জণ জ্রীরঘুনাধের | আচারের ফলে প্তলীলা-গান | পরমৃ। ভক্তি লভরে নরে। নিশিদিন দাস তুলসী করে॥ |
|------------------------------------|---------------------------|---|
| ভো —কলির শমন | মানস-দমন | রাম-যশ সুখমূল। |
| দাদরে যে ও নে | ভাহার উপরে | হ'ন রাম অনুকৃল ॥ ৬ (ক) |
| সো —কলি খোর মলাগার | ধৰ্ম | জ্ঞান নাহি কি যোগ। |

করি' সব পরিহার

রামে ভজে যেবা চতুর লোক ॥ ৬ (খ)

বিরাধ বধ ; শর্ভদ-প্রসঙ্গ

(চ)—মুমির কমল-পদে অবলেবে করি' নতি। গমন করেন বনে সুর-মুনি-অধিপতি॥ অত্যে চলেন রাম পাছে যা'ন লক্ষণ। উভয়ের মাঝধানে শোভিতা এমন সীতা। छुर्त्रम घाँछि वन नजने शिविवदा । যথায় যথায় যা'ন প্রভু রাম রভুরায় I বিরাধ অমূর-অরি পাইলেন পথে ভা'র। মরিভেই রাম-করে মনোহর কায়া পায়। সহিত অনুভবর জানকীরে ল'য়ে সাথ।

ভাপসের বরবেশে স্থাশোভিত বিমোহন ॥ > ব্রহ্ম জীবের মাঝে মায়া যথা সুশোভিতা। আপন প্রভুরে চিনি' পথ দেয় সমাদরে॥ ২ নভে মেঘ ছায়া করি' ডথায় ডথায় যায়॥ সমুখে আসিডেই করিলেন সংহার ॥ ৩ পাঠা'ন আপন ধামে ছঃখিত হেরি' ডা'য় 🖟 শরভঙ্গ মূনি-পাশে আসিলেন রখুনাথ।। ৪

দো—হেরিয়া শ্রীরাম-আদরে অচল

আনন-কমল र'न मधु भारन মুনির লোচন-ভঙ্গ। মহাধক্ত শরভঙ্গ ।। ৭

(5)—মূনি ক'ন রমুবীর শুন প্রভু হে কুপাল। ওচে শকর-মন-মানসদর-মরাল।। যাইডেছিলাম আমি দেব চারিমুধ-ধাম। निमितिन আছি চে'য়ে ভদবধি পথ পানে। खडीव अधम आमि नक्न नाधनशैन। সে কিছু আমার 'পরে নহে তব পক্ষপাত। এলে যদি রহ ভবে এ দীনের হিড ভরে ষাগ যোগ ব্ৰভ ডপ যা' করেন মূনিগণ। এমনি ভক্তি-পরা লঙি' মুনি শরভঙ্গ।

প্রকণে আসিপ তুমি কাননে আসিবে রাম।। ১ আৰু তোমা হেরি' প্রভু শীতল হ'লাম প্রাণে।। क'रत्र इक्क्रण। भारत जानि' निक जन मीन।। २ রাখিলে আপন পণ জন-মনচোর নাথ।। যতদিন নাহি পাই তোমা ভ্যঞ্জি' কলেবরে॥ ৩ প্রভূরে সমপি' সব ভক্তি-বর থেচে' লন।। বসেন রচিয়া চিতা প্রাণে ড্যঞ্জি' সব সঙ্গ।। ৪

(प)-जानको अधूव मम खरा वान সঙ্গেতে প্রভূ কর অবিরল

नीम नीत्रशत-शाम। সপ্তণ-মূরতি রাম।। ৮

টৌ—এতেক কহির। যোগ-অনলে-দহেন কায়। আত্মা হরির-ধামে যায় রাম-করুণার।। হরির চরণে লয় এ কারণে নাহি পা'ন॥ ১ এখমেই ভেগ-ভক্তি লুভিলেন বরদান।

খাষিগণ মুনিবর হেরি' শরভঙ্গ-গতি। ক্ষবিলেন জড়ি রামে মিলি' যত মনিগণ। করিলেন অমুভব পরাণে পুলক অভি॥ জয় হে প্রণড-হিত করুণার নিকেতন।। ২

শ্রীরামের রাক্ষসবধের প্রতিজ্ঞ।

পুনরায় রখুনাথ চলেন কাননে আগে। একস্থানে বহু অস্থি করি' রাম দরশন। ক'ন তাঁরোকি জিজনোস' জান'ত সকলি স্বামি । সর্বে-দরশীতুমি স্বার অন্তর্যামী॥

বিপুল মুনির কুল তাঁহাদের সাথে লাগে # কুপা করি' মুনিগণে শুধা'লেন কি কারণ॥ ৩ শুনি' জলে উঠে ভরি' জলজ যুগ-নয়ন॥ ৪

দো-ত্ৰ' বাহু তুলিয়া মনিদের বাসে

রাক্ষসগণ করে মুনিগণে ভক্ষণ॥

ক'ন নিশাচর-গিয়া তা'র পর হীন ধরা হ'বে এবে। ধন্য করেন সবে। ৯

স্থভীক্ষের ভব্তি; অগস্ত্য মিলন

(D) - অগ্যের শিষ্য এক আছিলেন জ্ঞানবান। ভগবৎ-পদে মতি সুত্তীক ওাঁচার নাম। কায় মন বচনেতে রাম-সেব। পরায়ণ। প্রভ-আগমন-কথা অবণ করিয়া কাণে। হে বিধাত। দীননাথ সেই রাম রখুবর। অরুজ সহিত মোরে জানকীর নাথ প্রভু। क्षपरम खत्रमा नाहि नाहि विश्वाम पृष्ठ। নাছি হ'ল সৎসঙ্গ নাহি জপ যোগ যাগ। ত্তবে এক প্রতিশ্রুতি আছে গুণ-নিধানের। হইবে সফল আৰু যুগল মম লো6ন। প্রেমী মুনির প্রাণে সীমাহীন নির্ভরতা। पिक कि विपिक अर्थ कान छान नाहि मन। কখনো স্ব্যুথে চলি' আবার পিছা'য়ে যা'ন। অবিরল প্রেমাভক্তি লভিলেন মুনিবর। অভিশয় প্রীভিভাব করি' রাম দরশন। অমনি বদেন মুনি **পথের মাঝারে স্থির**। আদেন নিকটে ভবে রম্মণি কুপাময়। মুনিরে কতই ভাবে করিলেন সম্বোধন। হরণ করিয়া ডবে রাজ-রূপ আপনার।

অন্ত দেবতা-প্রতি স্বপনেও নাহি মন॥ ১ ছুটেন ব্যাকুল করি' কভই মানদ প্রাণে॥ করুণা কি করিবেন আমা-সম শঠ'পর ॥ ২ আপন ভক্ত-ভাবে দিবেন কি দেখা কড়॥ ভকতি বিরাগ নাই নাহি জ্ঞান আমি মৃচ॥ ৩ কমল চরণ-ভলে নাহি দৃঢ অনুরাগ। দেই প্রিয় নাহি যা'র আঞায় অপরের ॥ ৪ ছেরি' সে রাজীব মুখ ভবত্থ-বিমোচন ॥ ভবানি সে দশা তাঁর কৃতিবার ভাষা কোথা।। ৫ কোপা যা'ন করেন কি না জানেন তা'ও ভ্রমে ! কখনো নাচেন করি' প্রভুর মহিমা গান॥ ৬ লুকা'য়ে বিটপী-আড়ে হেরেন করুণাকর ॥ হরিতে ভবের ভয় জদয়ে উদয় হন। ৭ পনস# কলের মত কাঁটার ভরা শরীর # ভক্তের দশা হেরি' পুলক নিরতিশর ॥ ৮ ধ্যানে-পাওয়া সুখ-ঘোরে মুনি র'ন অভেডন ॥ ठातिञ्च कार्थ निम्न थरवन श्वनरहा जां'त ॥ >

, রাজ-রূপ না হেরিয়া উঠেন আকুল হ'য়ে। **সমূপে ভেরেন শ্যাম বর-কলেবর** রাম। ধরায় দশু-সম পড়িয়া ধরেন পায়। স্থবিশাল ভুজ্যুগে <u>ধ্</u>রিয়া তুলেন রাম। মুনি সলে আফিঙ্গনে খোডেন কুপাল ভেন। দাঁডা যৈ চাহিয়া র'ন ঞ্রীরামের মুখপানে।

আকুল ব্যেমন ফণী হয় মণি ছারাইয়ে। জানকী অনুজ সনে সকল সুখের ধাম ॥ ১٠ মগ্র ৫ হমের সরে মহাধকামুনিরায়। পরম প্রীতিতে বুকে ধরিলেন গুণধাম॥ ১১ কনক-পাদপ-গলে তমাল জড়া'ল যেন # চিত্রে মুনিরে যেন এঁকে' রাখে কোন জনে॥১২

লো—ভা'ব পর মূনি আনিয়া প্রভুরে

সম্বরি' নিজে নিক আশ্রমে

পড়ি' পায়ে বারবার 🛭 পুজেন বস্তু প্রকার॥ ১০

অসীম মহিমা তব আর মোর লঘু মতি। শ্রামল ভামরস-দামের সম বয়ান। করে শরাসন শর কটিতে বাঁধা তৃনীর। মাহের বিপিন ঘন দহনকারী কুশান্ত। রাক্ষদ-করী যুথ তরে তুমি মুগরাজ। অরুণ রাজীব-আঁথি পরিধান চারুবেণ। গিরিজা-বিলাস-হাদি-মানস বাল মরাল। সংশ্য-ব্যাল-অরি বিন্তার বাছাধন। ভবভয় ভঞ্জন শ্বপাড়া দেবতার। স-গুণ অ-গুণ তুমি বি-সম সম-সরূপ। অমল অধিল অনবত তুমি অপার। কল্ল-পাদপবন তুমি তব ভকতের। চতুর নিরতিশয় ভব-পারাধার-দেতু। অতৃলিত ভুজ-বল প্রতাপের চিবধাম। ধর্ম্ম-বর্ম তুমি নর্মদ * গুণগ্রাম। যদিও বিরক্ত তুমি ব্যাপক অবিনাশী। ভথাপি অমুদ্ধ 🕮 সহ প্রভু হে ধরারি। আফুক বে জানে ডোমা পুজা প্রভু আমার। कामाला पछि (महे बाबोव-नयन बाम-। অমেও এ অভিমান যেন দুর নাহি হয়। মুনির বচন ওনি' তৃপ্ত জীরাম-মন।

চৌ—মুনি ক'ন শুন প্রভু অধীনের এ মিনতি। কি ভাবে করিবে দাস দীননাথ তব স্তাতি ॥ দিবাকর-আগে যেন জোনাকীর মান জ্যোতি॥> অটার মুকুট শিরে মুনি-চীর পরিধান 🛚 প্রণতি চরণে তব অবিরত রঘুবীর॥ ২ সন্ত-কমলবন বিকাশন তুমি ভান্তু॥ করহ আমারে ত্রাণ হে ভব-বিহগ-বাজ ॥ ৩ জানকী-নয়ন যুগ-চকোরে ভূমি নিশেশ। প্রণতি ভোমারে রাম উর ভুক্ক স্থবিশাল ॥ ৪ কৃটিল ভৰ্ক-জ্বাভ বিষাদ-জ্বালে শমন ॥ করত আমারে ত্রাণ সদা কুপা:-পারাবার ॥ ৫ জ্ঞান বাণী ইচ্ছিয়ের অতীত তুমি অসুপ॥ প্রণতি হে রঘুনাথ ভঞ্জন ভূমি-ভার॥ ৬ कात-धनायक क्वांच (लाख मन e कारमत h সদা পার কর মোরে দিনকর কুল-কেড়॥ ৭ বিপুল কলির পাপ-ভঞ্জন তব নাম। কর বিভরণ সদা কল্যাণ মম রাম॥ ৮ নিত্যই সবাকার হৃদি-কন্দরবাসী॥ করহ নিবাদ মম মানদে কানন-চারি॥ ৯ স-গুণ অ-গুণ আর হৃদিবাসী স্বাকার॥ রূপে মোর জ্রদিত্তে কর' আপনার ধাম॥১০ আমি দাস আর পতি রখুপতি কুপাময় ৷ আবার হরষ-আণে মুনিরে বুকেতে ল'ন ॥ ১১

আনশ্বারক।

ক'ন মোরে অভি শ্রীত মনে বৃক্তি' মূনিরাক। মুনি ক'ন কড় বর যাচিনি' ড'.ভব পায়। ভোমারে যে বর ভাল লাগে হে রখুনায়ক। রাম ক'ন অবিরূপ ভক্তি বিজ্ঞান জ্ঞান। যাহা দিলে তাই প্রভু লইলাম অমুরাগে।

যাহা সাধ যাচ' বর ভাহাই পুরা'ব আল । किया याति कि ना याति अ कितात कता नात्र 122 সেই বর দাও মোরে ভক্ত সুধ-দায়ক। বিরতি শভিয়া হও সকল গ্রহ্ম-নিধান ॥ ১৩ এবে দাও সেই বর আমার যা' ভাল লাগে #১৪

দো—অমুজ জানকী क्षप्र-গগনে

সাথে ল'য়ে প্রভু চক্র-সমান

ধরি' শর শরাসন। বাস কর' সারাক্ষণ॥ ১১

৫5)—তা'ই হো'ক কহি' এই তথন রমা-নিবাস। পুলক-পরাণে যা'ন অগস্ত্য মুনির পাল॥ বহদিন গত হ'ল সুভীক্ষ তথন ক'ন। আমিও গুরুর পদে প্রভু ভব সনে বাই। মুনির চাতুরী হেরি' ভবে কুপা-নিকেডন। করিতে করিতে পথে বিবরণ ভকতিব। ছরায় স্থভীক্ষ হ'য়ে গুরুর চরণ-গত। হে প্রভূ কোশলপতি দশরথ স্কুমার। আসিলেন তব সনে সাক্ষাৎ করিবারে। ব্দগন্ত্য ছুটেন উঠি' এ কথা করি' প্রবণ। ফুই ভাই পড়িলেন মুনির চরণ 'পরে। अधा'न कुल्ल नव नमान्दत मूनिवत ।

অপিলাম আঞ্জমে করি' গুরু-দর্শন ॥ ১ ইহাতে ভোমার প্রতি কোন অমুবোধ নাই 🛭 ভাই ছুইজনে হাসি' তাঁহারে সাংখতে ল'ন ॥ ২ মুনি-আশ্রমে গিয়া উপনীত রঘুবীর ৷ দণ্ডবৎ নতি করি' কঠিলেন এইমত॥ ৩ শ্রীরাম অনুক্ত সনে বৈদেহী সনে আর॥ দিবানিশি বাঁ'র নাম জপ কর' প্রেমভরে ॥ ৪ পড়িতেই হরি চ'থে অলে ভরে গু'নয়ন II বুকেতে জড়া'ন ঋষি অভীব পুলকভরে ॥ ৫ আনয়ন করি নিজে বদা'ন আসন 'পর॥ ক'ন আমা-সম নাই ভাগ্যবান কেহ আর॥ ৬ হ্রখ-কন্দে দর্শন করি' হর্ষিত চিত॥ ৭

(म)---ग्रिनगग-मारव শরতের চাঁদে

ডা'র পর প্রভূ-পূজা করিয়া বছ প্রকার।

যতেক ছিলেন মুনি সেইখানে উপনীত।

বদেন প্রীরাম যেন চে'য়ে রয় সবারি পানেতে ফিরি'। চকোরের। আঁথি ভরি'॥ ১২

Cb) —মূনিগণ-প্রতি তবে রঘুমণি রাম ক'ন। তোমাদের সনে প্রস্তু নাহিক কিছু গোপন ॥ থে কারণে হেথা আদা নহে ড' তা' অজানিত। দে কারণে নাহি কহি করি' কিছু বিস্তৃত॥ ১ এখন সে উপদেশ দেহ প্রভু সবে মোরে। প্রভুর বচনে মুনি ঈষৎ হাসিয়া ক'ন। তব পদ-ভঙ্কনার প্রভাব করি' আধার। বিশাল ভোমার মায়া উড়ুম্বরডর•-হেন। জন্তর সম জীব চরাচর সমুদয়। সে কল আহার করে যে খোর কাল করাল।

मूनि-अति निभावत्रशरा विध य श्रकारत ॥ কি মনে ভাবিয়া প্রভু প্রশ্ন মোরে এমন। ২ কণাটুকু অবগত শুধু তব মহিমার ॥ অন্তহীন ব্ৰহ্ম-মন্ত উপ্ত তাহে ফল-সম॥ ৩ नारि कात्न किছू जात्र छाराति मावादत बद्ध । সে কাল(ও) ভোমার ডরে শব্ধিত চিম্নকাল ॥ ৪

হ'য়ে ভূমি নিজে সেই ত্ৰিভুবন-অধিপতি। বাচি কুপা-নিকেডন এই বর তব পাশ। আচলা ভক্তি তব সাধুসঙ্গ ও বিরাগ। यमिक व्यवश कृमि जन्म मौमा विशीन। व्यक्तिरमञ्ज कतिरमञ्जूष जाहा वर्गम । নিক ভকতেরে সদা সম্মান কর দান। হে প্রভু র'য়েছে এক ঠাই অতি মনোহর। श्चिष्य कामरमरत कत्रह टालू भावन।

কুজ মানব-প্রায় শুধাইছ মোর প্রতি। দরিভা অফুল সনে জন্মে করহ বাস 🛭 ৫ চরণ-কমলে রহে অবিচ্ছেদ অমুরাগ ॥ অরুডব-গম্য সাধু যাঁহার ভদ্দে শীন 🛚 ৬ সঞ্চণ-রূপেতে রুহে বারবার রুড মন 🛚 বুঝিলাম তা'ই ভব ওধান' আমারে রাম ॥ প পঞ্বটী নাম তা'র অভি পৃত স্থন্দর। স্থভীষণ মুনিবর-শাপেরে কর হরণ॥ ৮

জীরামের ছণ্ডক কানমে প্রবেশ

मुनिशन 'शदा धारे प्रशा कत्र' अध्वतः। চলেন জ্রীরাম তবে লভিয়া মূনি-আদেশ।

তথায় করহ বাস দিবাকর-কুলেখর ॥ পঞ্বটী নিকটেতে উপনীত অবশেষ॥ ৯

(पा-१अत्राच मतन গোদাবরী-কাছে হইল মিলন র'ন প্রেজুরচি'

সহিত কত প্রণয়। বাস পল্লবময়॥ ১৩

পक्ष्यो यदम-बाज ; ज्ञाम-लक्ष्मण प्रश्याप

(5)-यमविध त्रच्नाथ स्रांतिश्वन उथा वात । নিরি নদা সরোবর বন হ'ল মুশোভিত। খেচর ভূচর যত দবে প্রমোদিত রয। কাননের বিবরণ দিতে হারে অহিরাজ। **এकवाद ताम**ठक ञुथामरन ममामीन। **(इ अपन मत पूनि म-अक्त क्त-थर।** ছে দেব আমারে তাহা বুঝাও করুণাময়।

মুনিগণ অভি সুখী বিগত হইল ত্রাস। সবাকার শোভা হয় দিনে দিনে বর্দ্ধিত। ১ গুল্পে মধুর অলি নির্থিতে শোভাময়। करतन अत्रवाश यथाय नित्व विताय ॥ २ লক্ষ্য নিবেদন করেন কপট-হীন॥ নিজ-প্রভু জ্ঞান করি' শুধাই চরণে তব ॥ ৩ সকাল ভ্যঞ্জিয়া যাহে ও চরণে মতি হয় ॥ কিবা জ্ঞান কি বিরাগ মারাই বা বলি কা'রে। ভক্তিও ব'লে দাও দয়া কর' যা'র ভবে ॥ ৪

দণ্ডক :----রাজবি ইক্রুত্ব মত পবিত্রাত্বা দানবের পূলগণের মধ্যে রওক নামে এক ছ্রাচার পূজ্ঞ অভ্রত্ব ক্রিয়াছিল। বিভাও নীলগিরি পর্বাচনবের মধান্তিত ভূ-ভাপ ভাতার অধিকাবে দেওয়া হইবাছিল। একলিন লওক হঠাৎ নিজগুল গুক্লাচাৰ্ব্যে আল্লাম আগমন কৰিয়া, জাহার জ্যেষ্ঠ। কল্লা অরলাকে দেখিরা বোহিত হব, ও জাহার নিকট कु-अक्षां करतः। अवका कांश अक्षांनां अविराग भेत, एकक कांशत अधि अभिक्रे वावश्व करतः। अवका भिकारक त्रकम कथा विभिन्न (लग । हें हा छनिया छक्षाठावी विभागन, "(व स्थलव ध्वकाशामक नवश्कि এह ध्वकारवत, रक्षक रहरन्य অতি সুখঁৰ নাশ হওৱাই উচিত। আঞা হইতে সাত বিনেৰ মধ্যে ভোষাৰ ৰাজ্য হৰ দুইবে। দেববাজ ইঞাবেন আছৰ ও বুলি বুটি কৰিব। তোমাৰ ৰাজ্য নাশ কৰিব। নেল। " অনজৰ ভফাচাৰ্য্য ৰাজ্যেৰ প্ৰজাপনের মধ্যে এই বোৰণা कविया विरमन त्व, त्व त्व व्यानमाव व्यानवका कवित्व हारह, त्म त्म त्वन व्यविमाय ताहे याका छात्र कविया व्याचान करता हेश क्तिहा महरने स्म बीका मिरहाने कविन । विद्यंत्र विदर्भ छैश भक्त भन्ने विशेष धृतिवद विश्व-व्यवस्था भक्तिक - व्हेन অবশেষে গুগবাৰু সামচজ বৰন তথাৰ প্ৰাৰ্থি কৰিলেন, তথন আবাৰ সে ছান পৰিত্ৰ ইইল।

বো-সমরে জীবে কি প্রভেদ প্রভূ বাহাতে চরণে হয় রভি যায়

वृक्षां'रम् वन नकन। শোক মোহ ভ্রম-দল ॥ ১৪

(5)-রাম ক'ন সংক্রেপে দিই ভোমা বুঝাইয়া। তন ভাত বৃদ্ধি মন জার চিত লাগাইয়া। আমি মোর তুমি তব এই মায়া বুঝ মনে। রাখে যাহা নিজ বশে তুলাইয়া জীবগণে ॥ ১ ই জিয়-গম্যত মন যায় যভদুর। প্রভেদ ভাছার মাঝে শুন বলি এ ভোমারে। বিভামায়া একটিরে অবিভা বলে অপরে ॥ ২ অবিভা অভীব হুটা অভিশয় হু:খ-রূপ। বিজ্ঞা-স্থান্ধিত বিশ্ব ভিনপ্তণ বলে যা'র। ভাই জ্ঞান মান-আদি দোষ-ছফ্ট যাহ। নয়। পরম বিরাগবান্ কহিবে মানবে সেই।

স্বারি মাঝারে জেন মাহা রহে ভরপুর ম যাহার অধীনে জীব প'ড়েছে এ ভব-কৃপ ॥ প্রভুর(ই) প্রেরিড ভাহা নিজ বল নাহি ভা'র ॥৩ ব্রন্দোর রূপ যাতে সবে প্রতিভাত হয় # তিন গুণ আর সিদ্ধি তুণ সম ভ্যমে যেই ॥ ৪

(म-माग्रा छगवान् বন্ধ মোক্ষ-প্রাদ

निक्दर ना कारन মায়ার প্রেরক

ভাহারে বলিবে জীব। সর্বেরাপর সেই শিব॥ ১৫

(5)-বিরাগধরম হ'তে যোগ হতে জাগে জ্ঞান। জ্ঞান মোক প্রদায়ক বেদ করে সদা গান ॥ বাচাতে জবিত ডাত আমি মতি সম্বর। দে ভক্তি নিজে আসে নহে কা'বো আন্তিত। তাহারি অধীনে জ্ঞান আরু সমুভব যত। ভক্তি উপমাহীন সুধের অ-শেষ মূগ। ভক্তি-সাধনা কিবা কহিতেছি বিবর্ণি'। প্রথমেই বিপ্র-পদে প্রীভিতে মজিবে মন। বিষয়ে ইহার ফলে উদিত হ'বে বিরাগ। আৰণ মনন আদি ন'-ভকতি দৃঢ় হ'বে। नश्च-कमन्तरात दश्यम या'त इस शाह । শ্বক জননী গুরু ভর্তা দেবতা ভ্রাতা। মন গুণ-কীর্ত্তনে পুলকনে ততু ছায়। কাম দম্ভ মদ-আদি পরিশুক্ত হাদি-তল।

আমার ভক্তি তাহা ডক্তের সুথকর॥ ১ সে ভক্তি মিলে সস্ত হ'ন যদি অমুকৃল ॥ ২ এ পথ সুগম•অতি এতে মোরে পায় প্রাণী। বেদের বিধান-মত নিরত কাজে আপন ॥ ৩ আমার ধরমে তবে হ'বে তা'র অনুরাগ ॥ আমার লীলায় রভি অতীব মনেতে ভবে॥ ৪ कर्ण्य वहरत मरत खबरत नियम पृष् ॥ नृष्-त्यवा करत ज्ञानि' व्यामादा यव-दिशाखा ॥ € গদগদ হয় বাণী জলে আঁখি ভ'ৱে যায় ৷ হে ভাত ভাহার বশে রহি আমি অবিরল। ७

(मा-कांग्र बाक् मत्न ভাহারি জনম- আমি যা'র পড়ি कमण माखादत

সদা ভজে নিষাম। মোর নিড বিজ্ঞাম । ১৬ '

(5) — छक्किरवांश-७व ७ मि' व्यक्ति युथ अम क्यार्थ । स्थिरमस मञ्जूष खीतारमत खीठतरथ ॥ मधक वरन मिन अधीख इहेशा यात्र ॥ > क्रोडे जारव क्यांन लग विवृक्ति-चापि कथाय ।

সূর্পণখার বিবরণ

মূর্পণ্ডা নামে ছিল রাখণের সহোদরা। পঞ্বতী কাননে সে গিয়াছিল একবার। ৰাক কয় কিবা পিডা ভ্ৰাডা স্থুত উন্নগারি। অভীৰ বিৰুদ্ধ প্ৰাণ বলে না আনিতে পারে। প্রভুর নিকটে যায় সনোহর রূপ ধরি'। ৰলে তোমা সম নর আর নারী মোর প্রায় ৷ আলোড়িয়া ত্রিভুবন খুঁ জিয়া দেখে ছি আমি। পে হেতু কুমারী ভাবে জীবন করি যাপন। চাহিয়া সীভার পানে ক'ন প্রভু কুপাময়। (श्रम मन्त्रप-शारम क्रिके व्यक्ति-मरहामता। স্থানর শুন আমি আজীবন ওঁর দাস। সর্ব্ব শক্তিমান্ প্রভু কোশলের অধিপতি। দাস যদি সুধ চায় মান খুঁজে যে ভিখারী। লোভী যল ভরে মরে চারি বর্গ অভিমানী। যায় রাম-সমীপেতে তখন সে পুনরায়। **লক্ষ্মণ ক'ন ডোরে বরণ করিবে সেই।** রাগত হইয়া তবে পুন: রাম-পাশে যায়। শানকীরে ভয়ভীতা নিরখিয়া রখুবর।

मानिनी-मन्भ दिशा অভি খোর ভর্তরা । হেরিয়া বিকল হ'ল যুগল নুপ-কুমার ॥ ২ পুরুষে হরপ হেরে ধর্ম-জ্ঞানহীনা নামী। রবিকান্তমণি যথা জবিত তপনে তেরে ॥ 🕫 🧍 মধুর বচন কচে চাসিতে আনন ভরি? # আনেক বিচার করি' নিরমিল বিধাভায়॥ 8 কোথাও নাহিক কেচ মোর অন্তর্মণ স্থামী। ডোমারে দেখিয়া মোর শান্ত আজিকে মন । ¢ আজিও অনুজ মোর না করিল পরিণর ৷ टाफु-भारत हाहि' कथा क'त रकामकडा-खता ॥ ७ পরাধীন এখানে না পুরিবে ডোমার আদ ॥ যা' করেন তাই সাজে উহার অমিত গতি ঃ ৭ দাত সুরা-সেবী ধন ওড-গতি ব্যাভচারী 🛭 আকাশ-দোহনে তথ চাতে এ সকল প্রাণী ॥ ৮ পুন: লক্ষ্ণ-পাদে ঞ্জিরাম পাঠা'ন ডা'য় 🕍 পণ করি' সব লাজ পরিহার করে যেই 🛚 🝃 নিজ ভয়াবহ রূপ তখন প্রকাশ পায় ॥ ভাইয়ে ইঞ্জিড করি' ডাকিলেন শ্বরা-পর 🛭 ১০

বো-সন্থা অভি ভা'র হাত দিয়া পুলকে করেন রাবণের কাছে

শ্ৰুতি নাসাহীনা ডা'র। আহ্বান বেন যায় ৷ ১৭

पत्र-मृत्रभाषि वर

🖒 —হারা'রে অবণ-নাসা আকুলা সে অন্তরে। রুধিরের স্রোভ ধারা গিরি হ'তে যেন ব্যরে 🛊 শর ও দুবণ-পাশে কাঁদিতে কাঁদিতে যার। ওথাইল হেডু যবে করিল সে বর্ণন। व्यथाविक र'न यक निमाहत-रमनामन। আরোভি' বাছন নামা ধরিয়া নানা আকার। অভত-দর্শন সেই কর্ণ নাগা-বিচীনারে। অগুণ্ড-শসুন যত হ'তে গ্রাকে ভরম্বর'। পূৰ্বের হয়ার করে উত্তে তা'রা নভোপরে।

करक विक् शोक्सरव वरण छव विक् हांब्र ॥ > ত্নি' নিশাচর দ্বরা করিল সেনা-গঠন। পক্ষ-বৃত্ত মসী-কায় গিরি যেন সে সকল।। ২ ধরি' প্রহরণ কড ভয়ানক ও অপার ৷ नंदन महेबा नर्य हरन शुर्बाखारण क'रब ॥ ७ मंत्रन चनाय विन' व्याप्त नाहि करते छत्र ह সেনা হেরি' বীরদের পরাণ পুলকে ভবে 🛚 ৪

(कह वा विन'रह क्यांच प्रति। क्षित्र क्ष्म श'ता। त्मरत्रिगिक क्रिएं। मात्र ७ प्रतिदित क्ष्म दिवास धुनिएड धुनिएड (इ'र्य मनिन इ'न গগন। গিরির গুহার যাও জানকীরে সাথে ক'রে। সতর্কে থে'ক তথা শুনিয়া প্রভুর বাণী। 🗃 রাম হেরিয়া অরি হইতেছে অগ্রসর।

আহবানি' লক্ষণে রাম তবে এই ক'ন॥ ৫ ভয়ানক নিশাচর-সেনা আগে হুকারে I সীভা-সনে লক্ষ্মণ যা'ন শর ধরু-পাণি॥ ৬ হাসিয়া তখন গুণ চড়া'ন ধয়ুর 'পর॥ ৭

| ছ-কোণত কঠোর | ধরি' কটাজুট | বাঁধিয়া মাধায় লোভেন ছেন। |
|----------------|-------------|----------------------------|
| নীশগিরি 'পরে | কোটি ইরশাদ- | সনে অহি-যুগ যুঝি'ছে যেন॥ |
| কটিতটে খাঁটা | তৃশীর বিশাল | করে ধরি' চাপ বিশিখ-চয়। |
| হেরি'ছেন প্রভু | গল-যুথ পানে | যেন মুগরাজ চাহিনা রয়॥ |

সে—িমাসিয়া স্রোভের প্রায় বাল-রবি অসহায়

ধর্ ধর্ বীরগণ করে। পে'য়ে দৈত্য# যেইমত যিরে ॥ ১৮

65 — अपुरत হেরিয়া আর না পারে হানিতে শর। স্তব্ধ হইয়া রয় যতেক রঞ্জনীচর॥ সচিবে ডাকা'য়ে তবে কহিল খর-দূষণ। অসুর অমর নর মূনি অহিদল যত। **কিন্তু জীবনে হেন হেরি নাই** কোন দিন। যদিও ও হত-রূপা ক'রে দিল ভগিনীরে। পুৰায়িতা বনিতারে মোদের করি' অর্পণ। মোদের আদেশ এই শুনাও সকলে ওরে। 🕮রামেরে জানাইল এ আদেশ দূতগণ। **पांकि फलिय़ (**मात्रा) कानरन कति निकात । ৰশবান রিপু হেরি' প্রাণে নাহি করি' ডর। যদিও মন্ত্র মোর। দত্রজ কুল-নাশন। বল যদি নাহি থাকে যাও সবে খরে ফিরি'। इत् चारुयान है (य भठेडा क्या क्याना । মুভেরা ফিরিয়া গিরা সকলি আনে গোচরে।

কেৰা এ নুপতি-সুভ মানবকুল-ভূষণ 🛚 ১ হেরে'ছি জিনে'ছি রণে কতই ক'রেছি হত॥ হেন বিমোচন রূপ আভাষয় অমলিন। ২ ভবু বধ অফুচিত এ অনুপ পুরুষেরে। প্রাণ ল'য়ে গুহে ফিরে' যাক্ ভাই ছইজন 🛚 😕 উত্তর দেহ ওর আসি' ফিরে' ছরা ক'রে। ভনি' রঘুমণি তবে ঈবৎ হাসিয়া ক'ন ॥ ৪ খুঁজি' ফিরি খলপত সম ভোমা-স্বাকার॥ একবার কাল-সনে আসিয়া কর সমর । € थल प्रश्व-विशासक वालक मूनि-शालन ॥ সমর-বিমুধ জনে কা'রেও না প্রাণে মারি ॥ ৬ অরিরে করিলে দয়া বীর-গুণ পায় নাশ। ওনি' খর-দুষণের সারা দেহ আলা করে। ৭

👺 पश्चिम खनग एकाति' कग्र थ्य ७१व ছुटि ब्रम्मनीहर । শক্তি ডোমর শুল করবাল পরশু-ধর। শ্বাসন শ্ব টঙ্কার খোর রাঘবমণি। করেন কঠোর প্ৰথমে ধনুতে হারার চেডনা আরাব ওনি' 🛭 হইল অধীর बाक्ष्म बीव

ৰে - সাবধান হ'বে ্র শ্বামের উপরে ভিল ভিল কৰি' कर्विया श्रम ₩-তখন ছুটিল हिन्द निमित्र হেরি' সে শারক কোপে তিন বীরঙ আপনার করে মরণ আছিকে কোপ-যুক্ত অরি হানিলেন পুনঃ বধা তথা শির শায়ক-আখাতে শত-টুকে কাটা আকাশে উডি'ছে মাংস-ডুক খগ ₩—ভয়ন্তর রব দিভেছে বেডাল প্রিরামের বাণ পড়ি'ছে ধরায়

দোড়ে সকলে বৰ্ষতে লাগে নে আৱ্ৰচয় শ্ৰবণ প্রিয়া

কাল-সম শর
শর-মিকর
রণ্পরিছরি
কহে পলায়নকরিব সংহার
রহিয়াছে জানা
নেহারিয়া রাম
বিপুল নারাচ
দেহ পদ কর
চীৎকার-ভরে
বীরগণ-কারা
কর ও মুও
কাক ও শুগাল

সবল বৃঝি' জরাতি।
গ্রেহরণ বহু ভাঁতি॥ ১৯ (ক)
কাটিলেন রখুবীর।
ভাজেন আপন ভীর॥ ১৯ (খ)

গরজিয়া যেন কোটি ফণ-ধর।
কাঁপি'ছেন ফ্রোধে রখুকুলবর॥ >
পলাইতে সবে দরশন করি'।
কথা রণে যেবা করিছে মনন॥ ২
ভানি' কিরে মনে করিয়া বিচার।
মারে ভবে রামে প্রহরণ নানা॥ ৫
ছাড়িলেন চাপে চড়াইয়া বাণ।
ধণ্ডিত লয়্ম বিকট পিলাচ॥ ৪
পড়িতে লাগিল ধরণীর 'পর।
ধরাধর-সম ধরণীতে পড়ে॥ ৫
তবু উঠে ভা'রা প্রকাশিয়া মারা।
মন্তক বিনা ছুটি'ছে রুপ্রণা॥ ৬
ডুলি'ছে বিকট আরাব করাল॥ ৭

দিতেছে বেতাল
শ্রীরামের বাণ
পড়ি'ছে ধরার
পিশাচের হাডেসংগ্রাম-রূপী
নিহড মথিড
হেরি' নিজ্ঞদল
শক্তি শারক
রক্ষঃ বীরদলে
নিমিব-মাঝারে
দল-দল্য শর

তুলে শিবা সব
ধর্ণরৈ তাল
করে ধান ধান
উঠি' পুনরায়
ধরা অন্ত ল'রে
নগরী-নিবানী
বীর অগণিত
কিরি'ছে বিকল
ভোমর কুঠার
সবে এককালে
নিবারি' ভাহারে
, বক্কজগর

শিশাচ প্রেডেরা কণাল ডরে।
নাটি'ছে যোগিনী পুলক-ভরে ॥
বীরগণ-শির বাহ ও দেহ।
বুক্থে ধর্ খর্ হাঁকিরা কেহ ॥ ১
আকাশে শকুনি বাই'ছে উড়ি'।
বালকেরা বেন উড়ার খুড়ি ॥
বিদারিড-বুক কডই বীর।
রক্ষ্ণ ঘূবণ খর ত্রিশির ॥ ২
দূল ভরবার কোপের ভরে।
করি'ছে প্রহার রামের 'পরে ॥
ছভারি' প্রভু করেন রণ।
লভিল রক্ষ্ণ-নায়কগণ ॥ ৩

[ः] वंशः प्रा ७ विभिन्नाः

f cres

বীর পুনরায় উঠে নাহি মরে দেখার মা**র**িং, मुडो'दश धराश (रति' जगरतत भिरुद्ध कांच्रा । গ্ৰভু সাথিহীন ভা'রা সীমাহীন মারাপতি দীলা দেখান ডবে। एहति यूनि खुन ক্ষয়েতে আতুর মরে হানাহানি করিয়া সবে॥ ৪ হেরি' এ উছারে রাম মনে ক'রে পান্ন পদ-লিক্বাণ। (का--त्राय त्राम कहि' ভাৱে কলেবর নাখেন কুণানিধান ॥ ২● (क) এ উপায় করি' পদকেতে অরি আকাশে নাকাড়া ৰাজে। इत्राम यत्राम কুশুম অমর বিমানে বিবিধ সাজে ॥ ২০ (৭) সবে যায় কিরি' জ্ঞতি করি' করি'

সূর্পণধার রাবণের মিকট গমন

(ठो—विश्वत्र यथन त्राण गण्डित्मन अनिवान । কিরিলেন সক্ষণ সাথে স'য়ে জানকীকে। চাছিয়া রছেন সীডা কম শ্যাম-কলেবরে। পঞ্বটীতে বাস করি' রাম এ প্রকার। बद-ब्रुव्याद माभ कतिया लाउन-गड। शोक्षन (क्यार्थत खरत तावरन करह वहन। করিল মদিরা পান দিবার।তি খুমে ভোর। নীভি ছাড়ি' রাজ-কাজ ধর্ম ছাড়ি ধনার্জন। विरव्यक्त ना क्षांशा'रत्र कात्रांश्यन विशात्र। मण-दनारवरक माध् त्राका क्-मञ्जना-वरम । ব্দহত্বার-লোবে গুণ নম্মতা-বিনা শ্রীতি।

লো -অরি রোগ ছডাশন পাপ করি' হেন বিবিধ বিলাপ (कां —जावग-प्रकास काकीय काकरत

खुरे खारन (बैर्ड' बाकिएक जावन

जाननात कथा वस् करह छर्द ममानन। ब्यायात्रात्र व्यक्षिणकि क्ष्मेष्ट्य-नम्बन्। **जांत्र जा**हबून (इति मटन मात्रे विश्वाम । লেনে ডা'র খুবিলাল ভুমব্গ-জাঞ্চ দেবিতে বালক বেন অভি ধীর বছর্ম। শ্বর নর মূলি সব হইল বিগত-তাস। পড়িতে প্রভুর পায়ে হরষে ধরেন বুকে॥ ১ ভিরপিত নহে আঁখি পরম প্রণয়-ভরে। সুর মুনি সুথ-দাতা করেন লীলা অপার । ২ স্পৃপথা করে গিয়া রাবণেরে উত্তেজিত ॥ ভূই ভ আছিস্ ভূলে যাবভীয় রাজ্যধন। ৩ অরাতি শিয়রে খাড়া সে জ্ঞান নাহিক ডোর 🛭 শুকর্ম যে নাহি করে জীহরিরে সমর্পণ ॥ ৪ পরিণামে ভা'র হয় আনম করা তথু সার 🛚 मारनत एएटिएड खान मच्चा मित्रा-र्लार ॥ ६ শ্বায় বিলোপ পায় শুনিয়াছি এই নীডি॥ ७

> क्षक्र बश्या (छ'रवा ना। *(कें(स' कग्न मनम-(वस्त*ी ॥ २.১ (क)

विमाल्य माना क्षकांत्र। এ দশা ছ'বে আমার ॥ ২১ (খ)

(6) — শুনিয়া আকুল হ'য়ে উঠে সভাসদ্ সবে। হাত হ'য়ে তুলে' ভায়ে বুঝাইল কত ভাবে। নাসিকা ঋবণ ডোর কেটে' দিল কোন্ খন 🛭 ১ भानव-रक्ष्मती आहम मुगदाब छटत वन ह ब्राक्कमहीन रहा कतियात ककिमार ॥ २ विष्युत करत यस्य मृतियां विश्वष्ठ-केंद्र । কালান্তক কাল-সম নানাঞ্গ-প্ৰবীশ্বত। ও

बपुणम यणभाजी तारे कारे प्रदेशन । । चुप्रतिकेतिरक्षम नाम स्वयं माम छा द। विश्वत त्रभ में द्या विधि छा देत निव्यति । আইটা এ ছৈন দল ভাহারি অভ্য-লাল। আমার রোজনৈ ধর ও দূবণ ভুটে' গেল ৷ ট্রিশিরা মুবণ ধর নিহত করি^র ভাবণ।

्षा-कंटि' निक वन ं সূর্ণাবারে है है की कि **ज्यानादा** दशन চিত্তিত মন

ু তুষ্ট-দলমন্ত্ৰত দেবতা সূনি-পালন ঃ সজে বদৰী এক তথা স্থাসী-সার ৷ ৪ যদন্মাহিনী শস্তকোটি রূপে পরাজিল। ডোর ভগ্নী শুনে সে-ই ক'রেছিল পরিহাস 🛭 ৫ निरमय-मासारत छा'त रमनामरण निशां किन ॥ অলিয়া উঠিল রেগে লঙ্কেশ দলানম 🖁 ৬

> क्षारवाधिया वरुखाँ छ । লাগরণে গেল রাভি। ২২

(ठो-छावि'एर तावन युत्र मत देनका मान-मारक। त्मारत अमूक्टरत जित्न रहन वन का'त आहरू ॥ पत ७ इंदन हिन यामा-मय वनवान्। শুর-বন রঞ্জন ভঞ্জন মহীভার। ভবে নিশ্চয় তাঁর বৈর করি' সাধন। তমোগুণ জরা দেহে সাধনা ড' নাহি হ'বে। আর যদি নূপ-স্থুত নর হয় কোনজন। मन व्हित कवि' अका तर्प प्रभान्न यात्र। ष्यक्र मिदक तथुवीत करतन छेलाग्न यथा।

'खा'रमम विमान क्वा करम विमा खनवाम ॥ ১ পরম্ প্রভুর যদি হ'য়ে থাকে ভাৰভার ॥ ভরিব প্রভুর শরে প্রাণ করি' বর্জন ॥ ২ কায় মন ৰচনেতে পণ দৃঢ় এই ভবে। त्राण नतां छवि ' क्षिट क्रिय नातो इत्रम । यात्रीठ यथाय तरह नागरतत किमाताय ॥ अवन कत्रह छेमां त्नहें मत्नाहत कथा॥ 8

নীভার অগ্নি-প্রবেশ ও মাছা-সীভা

ं दुर्ग-लग्मान यद

কানমেডে যা'ন ক্ষেন ছাসিয়া

্রেটা--- ওন ব্যায়া দরিতের অন্তরতা চারুশীল।। করিব এখন কিছু লগিত মানব-লীলা।। यक्षतिम निर्माहद्वशत्य ना कवि दिनाम । বেমলি জীরাম সব কহিলেন প্রকাশিয়া। আপনার প্রতি-রূপ রাখিয়া গেলেন সীতা।

জনক-মুভারে

জতদিন হতাশন-সাঝে ভূমি কর বাস। ১ व्यक्र-शम- करन धति कारत शामन शिया » নেই রূপ সেই শীল সেইমত স্বিনীভা 🛚 ২

(भागरन या' किছू नौना बहिरनम क्रभवान ॥

निमिन यारेश उथा यथाय त्रक्ष मात्रीह में ठ অসুশ ধনু অহি মার্জার বেইমত ॥

वारमत्र कात्र् छथा यमरमत्र व्याप्र-वानी ॥ 8

मात्रोटक्स दिवस्य : माहीक यथ

লক্ষণের এ সবের খুণাকার নাহি জ্ঞান। चार्टिक नमा मन मभानन व्यक्ति नीह । कु:बहे (मध नीठ यहि रुग्न अवन्छ। व्यकारन-कृषिक कृत य ध्यकाब दह खवानि ।

> (मा—कति' व्यक्ति। মারীঃ তথ্য কি স্বার্থে এড

विक्रिक महन

नापटन किन क'न।

একা ভাত আগমন ॥ ২৪

(5)—ভাগ্য-হত দশানন তখন মারীচ-পাদে। কছে তুমি যাও তথা মায়া-মুগ রূপ ধরি'। अभिया भारी क्या निर्वतन तरकावत । বৈর-আচরণ তাভ ক'রো না তাঁহার সনে। এ নুপ-সুভেই মুনি আনে যাগ-রক্ষা ভরে। ডা'র হার ক্লণ-মাঝে এলাম শভ-বোলন। ভূঙ্গ-কীট সম এবে হ'য়েছে দশা আমার। বদিও মানব তাঁ'রা অভি বীর বলবান।

প্রকাশ করিয়া করে অভিমান-ভয়া ভাবে 🛊 🕞 যাহে আমি নূপ-নারী পারি আনিবারে হরি' ১১. মানব-রূপেতে তিনি চরাচর-অধীশর ॥ বাঁচিবে রাখিলে তাঁ'রে মারিলে মরিবে প্রাথে ১১ ফলক-বিহীন শর হানিলেন মোর 'পরে। শত্রুতা তাঁর সমে ভাল নছে কদাচন 🛚 ৩ যথা যাই ছ-ভাইয়ের মূরতি করি নেহার। विस्त्राद्ध कां'रणत नामि ह'रव नाकवान ॥ 8

দো-ভাড়কা বিনাশি' দূষণ ত্রিশিরা

স্থবাছ বধিয়া খরে যে বিনাশে कारक (य श्रद-रकामधः। সে নর কি বীর চণ্ড । ২৫

(5)-- ফিরে' যাও রাখি' মনে রক্ষ:-কুলের হিত। তনি' গালি দশানন দিল ডা'রে যথোচিত ॥ গুরুর সমান মৃত্ উপদেশ-বাণী মোরে। তথন মারীচ মনে করে এই অসুমান। আছে-পাণি প্রভু মৃত গুপ্ত-কথা বেই জানে। ধনবান্ বৈভ ভাট কবি স্পকার জনে॥ ২ উভর দিকেই যবে বুঝিল নিজ মরণ। অভাগা বধিবে মোরে উত্তর দিলে পরে। চলে দশানন-সাথে স্থির হেন করি' মদে। মনেতে হরব অভি প্রিয়তম শ্রীরামেরে।

আমার সমান বীর কে আছে ধরণী 'পরে ॥ ১ এই নয়জন সনে বিলোধেতে অকল্যাণ ঃ করিল তথন সাম্ব শ্রীরাম-পদে শরণ। কেন তবে নাহি ভ্যাজি পরাণ রামের শরে ॥ ৩ রাখি' অবিচল প্রেম রঘুনাথ-জীচরণে 🛭 নয়নে হেরিব কিন্তু কিছুই না কহে তা'ৰে । ।

ছি—মোর প্রিয়ত্তমে সাহুত জানকী কোপানল ঘাঁ'র সে তুখ-সাগর বো-পশ্চাতে মোর হেরিব প্রভুরে

नित्रिषि' नग्रतन সুপা-নিকেডন-মোক-ভূথাগার সন্ধানি পর ধাৰন-নিরড हारि किरम' किरम'

আছিকে সফল করিব আঁথি। চরণের ডলে এ মূন রাখি' ৷ ভক্তি অ-বশে বশেতে আনে। ৰ্ষিবেন মোরে স্বকরে বাংগ # করে শর শরাসন।

तकन इ'रव कीवन । ३७

চৌ—লে বনের সামুদেশে দশানন ধবে যায়। মারীচ তথন ধরে কণ্ট-মূগের কায়। ৰণিতে নাহি ভাবা হেন রূপ মনোহর। রমণীয় মুগ হ'ল সীভার আঁথি-গোচর। সীভা ক'ন শুন দেব রখুপতি কুপাময়। সভ্যসদ প্ৰভু উহারে কার' বিনাশ। তথন করুণাময় জানিয়াও সব মনে।

কনক-জড়িত মণি-বিরচিত কলেবর 🛭 🕽 প্রতি-অঙ্গরূপ-ভাতি মন-প্রাণ মোহকর য় **ठर्षा-वद्गण (भाव क्यांण भन इ'रव मग्र ॥ २** চশ্ম আনিয়া দাও পুরাও মনের আশ ঃ উঠেন হরষ ভবে ত্বর-কাঞ্চ সম্পাদনে 🛭 ও मुश मत्रभन कति' वैं। शिलन शतिकत्र। কহেন বুঝা'য়ে প্রভু দক্ষণে তা'র পর। কর জানকীরে তুমি ভালমতে রক্ষণ। প্রভুৱে হেরিয়া মৃগ লাগিল পলা'য়ে যে'ছে। কভু মুগ কাছে আসে করে দুরে পলায়ন। मिया निया नुकारेया वह इन ध्वकानिया। স্থির-লক্ষ্যে শেষে রাম করিলেন শরাঘাত। व्यथरमर्टे উচ্চরবে नम्मागत धति नाम। আণ ভাজিবার কালে ধরে নিজ কলেবর। ভাহার প্রাণের প্রেম বুঝিলেন ভগবান।

ধারণ করেন করে ক্রচির ধচুক-শর॥ বেড়ায় কাননে ভাই অগণিত নিশাচর # 8 বৃদ্ধি বিবেক বলে কাল করি' বিবেচন ম भंद्रांगन भंद्रा मांकि' या'न श्रेष्ठ्र शंकार**छ ॥ ৫** বেদ বাঁ'রে নেতি বলে খ্যানে শিব নাহি পা'ন। মায়ামুগ-পিছে পিছে সেই এড় ছুটে' বা'ন ॥ কিছু দেখা দেয় কভু নিজেরে করে গোপন ॥ ৬ বছ দুরে ল'য়ে তাঁরে হেন যায় পলাইয়া॥ ধরা'পরে পড়ে ভবে করি' ঘোর আর্ত্তনাম ॥ ৭ পরে নিজ মন-মাবো পারণ করে জীরাম। শ্মরণ ভকতি ভরে করে রাম রঘুবর ॥ ৮ মুনি-ছপ্লভি গতি ভা'রে করিলেন দান ॥ ৯

(দা-বর্ষিল মুর স্থান নিজ পায়ে প্রস্ব প্রচুর टेक्टका स्मन दहन

প্রভু-গুণগাধা গায়। मीननाथ त्रश्तार्त्र॥ २१

সীভা-হরণ ও সীভা-বিলাপ

চৌ—খলেরে বিনাশি' ছরা কিরিলেন রছ্বীর। করেতে শোভিত হন্ন কটিতে বাঁধা তৃশীর। আর্দ্ধনাদ-বাণী যবে শুনিলেন কাণে সীডা। করহ গমন ছবা বিপদে পতিত ভাতা। জকৃটি-বিলাসে যাঁ'র স্প্তির হয় লয়। বচন মরম-ভেদী কহিলেন সীভা যবে। न निया नौखाय वनत्तव निक्शानगत। রক্ষকহীন করি' দরশন দশানন। যা'র ডরে স্থরাম্মর রহে হেন এক্ত-চিতে। সার্মের-মত চুপে সেই বীর দশানন। अमनहे कुलाथ यात हाल (कह रह बाराना। বিবিধ বচন-জাল করি' শঠ বিস্তার। करहन कानकी अन महानि महाभग्र। ख्यम व्यानन ऋश (मथाय की दित त्रावन । গভীর ধীরতা-ভরে জানকী কছেন তবু। (कनदीव वर्ष कृष्य मनदक (यमन हांग्र। পশিছেই কথা কাণে ক্রোধে ছরে দশানন।

কহিলেন ক্ষমণে হ'য়ে অতি ভয়ভীতা ॥ ১ হাসিয়া কহেন তবে লক্ষণ গুনু মাডা। স্থপনেও সন্ধট তাঁ'র কি কখনো হয়। ২ লক্ষণ-মন টলে হরি-প্রেরণায় ডবে ॥ রাবণ শশীর রাভ যথা যা'ন সেইখানে। ৩ সক্তাসী-রূপ ধরি' তথা করে আগমন ॥ দিবসে নাহিক অন্ন নিজা নাহি রক্তনীতে ॥ ৪ এদিক ওদিক চাহি' সভয়ে করে গমন # শরীরে নারহে তেজ বুজির বল-লেখ। ৫ রাজনীতি ভয় প্রীভি দেখায় সীতারে আর॥ কথা ত কহি'ছ তৃমি হুষ্ট জনের প্রায় ॥ ৬ ওনাইতে নিজ নাম ত্রাসিত সীভার মন । দাড়া ধল এইক্ষণে আসিবেন ফিরে' এড় ॥ ৭ তথা তুই কাল-গ্রাসে পতিত রাক্ষসরায় 🛭 मत्न मत्न कुथ भाव विकि मीछा-हक्ष्ण । ৮

জ্ঞায়ুর রাবণের সহিত যুক্ত

লো— কোধ-যুত হ'য়ে চলে ব্যোম-পথে

রাবণ তথন ভয়াতুর মন

লয় তাঁ'রে রখোপরে। রথ চালাইতে নারে॥ ২৮

চৌ-এ অখিল বিখের এক বীর রঘুরায়। হা ছথ-হরণ প্রভু শরণের সুধকর। হায় সন্মণ তব নাহি এতে কেশ দোষ। • বিলাপ বিবিধ ভবে করেন বিদেহ-সূতা। বিপদ-বারতা মোর প্রভুরে কে দিবে হায়। বিলাপ মরম-ভেদী শুনিয়া জানকী মুখে। পশিতে জটায়ু-কাণে গভীর বিলাপাবলী। চীন রাক্ষস-করে হ'তেছেন অপহতা। করিয়া উরিল সীতে বংসেনা কর তাস। ক্রেমধ-যুক্ত খগরাজ ছুটিল বেগে ভেমন। करह थन किवा रिष्ठु ना शंत्र प्रशास्त्रभान। করাল কুতান্ত সম আসিতে হেরিয়া ধে'য়ে। মৈনাক গিরি এ কি অথবা বিহগপতি। স্থবির জটায়ু এই কহিল সে তা'র পর। ভালয় ভালয় ফিরে' সীতা তাজি' যা' ভবনে। রম্বংশ-অবভংস ক্রোধ-ছডাশনে যোর। এর উত্তরে কিছু না কহিল দশানন। কেলে ধরি' রথহীন করি' ভূমে ফেলে' তা'রে। ফিরিল জটায়ুরাখি' জানকীরে একধারে ॥ **एक-टाहारत करत रमह छा'त विमात**ण। ভীষণ ক্রোধের ভরে দশনে চাপি' দশন। কর্ত্তিভ-পক্ষ খগ পড়ে ধরণীর 'পরে। সীতারে আবার রথে উঠাইল দশানন। বিবশ বাাধের ভয়ে মুগী-প্রায় ভয়ভীতা। रेमन-निश्त 'शरत नित्रचि' वानत-कून। এইভাবে জানকীরে দশানন ল'য়ে যায়।

পাশরিলে নিজ দয়া কোন্ অপরাধে হায়॥ হা রাঘবকুল-রূপী সরোজের দিনকর॥ ১ লভিলাম ঠিক ফল থেমন করিতু রোষ॥ সে কুপার পারাবার রহিলেন এবে কোথা I ২ যজের দেব-ভাগ রাসভে পাইতে চায়। চরাচর জীবগণ অভিভৃত হ'ল হথে॥ ৩ চিনিলেন রঘুকুল-তিলকের নারী বলি'। সুরভী কপিলা যথা মেচ্ছ কবদ-গভা॥ ৪ এই নিশাচরে স্থির করিব এবে বিনাশ।। ধরাধর-অভিমুখে অশনি ছুটে যেমন।। ৫ নিভর চলিয়া যা'সু কে আমি নাহিক জ্ঞান। রাবণ ভাবিশ মনে তা'র পানে ফিরে' চে'য়ে ॥৬ সে ড' জানে মোর বল সহিত আগন পতি ॥ মম কর-ভীর্থে আসে ভাজিবারে কলেবর ম ৭ জটায়ু এ কথা শুনি ধে'য়ে আসে ক্রোধ ভরে। কছে শোন্দশানন যেই শিক্ষা দিই ভো'রে॥ নতুবা রে বছবাছ এই দশা হ'বে রণে ॥৮ বর্ত্তি-সমান হ'বে সমুদয় কুল ভো'র॥ করিল তথন গুঞা ক্রোধে ভা'রে আক্রমণ ॥ ৯ परिश्व एरत स्थान शतादेश हमारून ॥ ১० করাল কুপাণ করে রক্ষ্য-বাজ নিম্বায়ণ ॥ 🕮রামের অভুত দীলায় স্মরণ ক'রে॥ ১১ চলিল সন্তাস ভৱে শান্ত নহেক মন॥ কাঁদিতে কাঁদিতে যা'ন আকাশ-পথেতে সীতা # ১২ উচ্চারি' হরিনাম দিলেন ফেলি' ছকুল। অশোক-কানন মাঝে রাবণ রাথে উাহায় ॥ ১০

তথন অশোক-

व्यवय (प्रवार्थ পাদপের তলে

गरवर७ हे थम हारत । वाधिन यखन क'रत ॥ २৯ (क)

অরণাকাও

থাবিত হ'লেন রাম। কুরগের পিছে যে ভাবে কপট-থাকেন রটিছে নাম ৷ ২৯ (খ) थतिहा कपरम দে ছবি জানকী

এরামের বিলাপ ও জ্টার্র প্রসঞ

(চী—রব্পতি অনুজেরে আসিতে করি' লোকন। বাছ-ভাবেতে হ'ন অতি চিস্তিত-মন। অবহেলা করি' মোর উপদেশ সমুদয়। নিশাচরগণ বনে কভ করে বিচরণ। धतिया महाक-शाम अञ्चल कृष्टिया कत । লক্ষণ সনে প্রভু করেন গমন তথা। হেরিয়া কৃটির এবে জনক-ছহিতাহীন। ক'ন হার গুণ-খনি জনক-ছহিতা সীতা। লক্ষণ বছভাবে প্রবোধ করেন দান। হে খেচর হে কুরগ ওতে মধুকরগণ। কপোত খঞ্চন শুক স্থ-আঁখি কুরগ মীন। দাড়িম দামিনী আর বিমল কুন্দ-কলি। বক্রণের পাশ হংদ মনোজের শরাসন। কদলী কনক বিল পুলকিত অভিশয়। ভোমার বিহনে গীতা ইহারা স্বাই আঞ্চ। কেমনে সহি'ছ প্রিয়া ইহাদের স্পর্দ্ধা হেন। এ ভাবে খুঁজেন আর কাঁদেন জগত-স্বামী। পূর্ণকাম যে জ্রীরাম অপার আনন্দ-রাশি। পতিত থাকিতে আগে হেরিলেন ফটায়রে।

একাকী সীভারে ছাড়ি' হেথা কি আসিতে হয় #> আপ্রমে নাহি সীতা হেন লয় মোর মন # কছে মোর অপরাধ কিছ নাই কুপাকর॥ ২ গোদাবরী-ভটদেশে আঞ্চম রহে যথা। সাধারণ নর-প্রায় হ'লেন বিকল দীন॥ ৩ হায় রূপে সুবিনয়ে নিয়মে ব্রতে পুণিডা । ব্ৰভটী পাদপে এড়ু শুধা'ডে শুধা'ডে যা'ন ॥ ৪ মুগ-আঁখি জানকীরে ক'রেছ কি দরশন। কাল-ভূজগিনী কিবা কোকিলা মহাপ্ৰবীণ॥ ﴿ কমল শারদ বিধু মধুর-নিনাদী অলি ॥ শুনি'ছে কেশরী গল বাধান আপনাপন ॥ ७ সংখ্যাত নাহি মনে নাহি আর ভিল ভয় ॥ পুলক-পুরিড প্রাণ যেন ভোগ করে রাজ ॥ ৭ ছরায় ফিরিয়া আসি' উদয় না ছও কেন॥ বিরহী বছই যেন ডিনি যেন অভি কামী । ৮ করেন মানব লীলা আজ সেই অবিনাশী # • রেখাবলী-লাঞ্চিত রাম-পদ চিস্তা করে॥ ৯

লো—সরোক্ত্র-করে শোভার আগারে

পরশেন শির নির্ধি' নয়নে

রাম কপা-পারাবার। বিগত যাতনা তা'র ॥ ৩০

েচী- को । বচন করে করি' নিজে সম্বরণ। এ দশা আমার লক্ষাপতি দশানন-করে। লইয়া গিয়াছে তাঁ'রে দক্ষিণ দিক পানে। প্রভু তব দরশন-আশে রেখেছিছু প্রাণ। জীরাম কহেন ভাত রাখ'নিজ কলেবর। মরণ-সময়ে নাম গ্রহণ করিলে হাঁ'ব। সেই ডোমা আঁখি-আগে দরখন করি যবে। ক্রেন জীরঘুনাথ জলে ভরা ত'নয়ন।

শুন রাম রধুপতি ভবভয়-ভঞ্জন। ল'য়েছে হঃণ করি' সেই থল জানকীরে ॥ ১ বিলাপ করেন অতি আকুলিত ক্রেন্সনে॥ विषाय हत्राण याहि अथन कुशा-निशान ॥ २ জটার ওধান হাসি' কি হেতু করুণাকর। অধ্যেও পরা-গতি পায় বেদ কছে সার ॥ ৩ ক্রিসের আশায় তবে জীবন রাখিতে হ'বে 🛭 কর্মের মত ভাত গতি পায় জীবগণ # 8

অপরের হিত-সাধ নিয়ত জ্বদয়ে যা'র। ভমু পরিহরি' ভাত যাও মম নিজ্ধাম।

ত্রভ ধরামাঝে কিছই নাহিক ভা'র। কি দিব ভোমারে বল তুমি ত পূরণ কাম॥ ৫

দো—দীভার বারতা

ব'লো না পিডারে

শপথ করিয়া কই।

স-কুলে রাবণ

নিজে গিয়া ক'বে

যদি রাম আমি হই ॥ ৩১ '(5)—ফটায়ু ডাজিয়া কায়া ধরিল হরির রূপ। আভরণ কডবিধ বসন পীত অনুপ।

শ্রাম কম-কলেবর স্থবিশাল ভূজ চারি।

खिंछ-शान तम वनतन नश्रतन ८०० स्मात वाति ॥ ১

| ए।—ज ग्न वर्ग-पूर् | অমুপম রূপ |
|---------------------------|---------------------|
| ভীম দশানন | ভূজ-বিপণ্ডন |
| তমু জলধর | মুখ মনোহর |
| নমি সদা পায় | রাম কুপাময় |
| বল অতৃলিভ | মায়ার অভীত |
| গোবিন্দ# গো-পরণ | সব-দশ্ব হর |
| রাম-নাম মল্ল | জপে যেই সম্ভ |
| নমি সদা রাম | সে প্রিয় অকাম |
| বাঁ'রে মায়াতীত | ব্ৰহ্মা স্ব-গভ |
| করি' যোগ ধ্যান | বিরতিও জ্ঞান- |
| সেই কুপা-কন্দ | স্থমার বৃন্দ |
| ন্তদি-এ ভ্রমর | প্রতি অঙ্গ 'পর |
| অগম স্থগম | শাস্ত অ-সম |
| যোগিগণ বাঁ'রে | য তনে নেহারে |
| সেই ভ ব পতি | রমা-প্রাণপত্তি |
| क्षप्रद्य व्यामात | বাস হো'ক তাঁ'র |
| ছো—অচলা ভকতি- | বর ভিক্ষা করি' |
| তাহার সংকার | করেন বিহিত |
| | |

ু সঞ্চণ অ-ঞ্গ মাহার পতি। চণ্ড শর-ধর ভূষণ ক্ষিতি।। কমল লোচন রাজীব-দল। **७**व-निवात्रग जुक विभाग ॥ ১ আদি অ-জ এক হে অগোচর। विद्धान-चन ध्रुगीध्र ॥ অনন্ত-ছাসের মন যে হরে। कांभामि मर्ग रय मनन करत् ॥ २ অ**ত্র রক্তা**তীত বেদেতে গায়। সাধনে মুনিরা বাঁহারে পায়॥ জগ-বিমোহন নিজে প্রকাশ। বহু কাম-শোজা করে বিকাশ। ও স্বভাব-বিমল সম যে সদা। ইন্দ্রিয় মনে দমিয়া সদা ॥ ভক্ত-বশ যিনি সভত র'ন। পুত लोला याँत खर-वाद्रण ॥ 8 গুঞ গেল হরি-ধাম। আপনার করে রাম॥ ৩২

কবল-উদার

গুঞ্জধম ধগ আমিয় করে আহার। ভৱ ক'ন শুন উমা তা'রা অভি ভাগাহীন। সীতা-সভান রত হুই ভ্রাতা ভা'র পর।

যোগিলন-বাঞ্চিত সুগতি হইল তা'র ॥ ১ হরি ডাঞ্জি' হয় যা'রা বিষয়-রসেতে লীন । অভীব বিকল প্রাণে চইলেন অগ্রসর । ২

e জোৰাজা বাৰা জোৰ। † ইন্সিৰ-পাতীত।

ভক্ষতা সমাকৃষ গভীর খন কানন। কৰছে গমন-পথে আসিতে করেন নাল। कहिन इद्यांना अवि विना এই অভিনাপ। ক'ন রাম প্রবর্গ আমার ওল বচন।

কডই বিহুগ মুগ কেশরী কড বারণ। নিজ শাপ-কথা রক্ষঃ কহিল প্রভুর পাশ 🛚 😕 व्यकु-भग पर्भात चुहिन करव (म भीभ ॥ ব্রহ্মকুল-অরি আমি নাহি সহি কদাচন ॥ ৪

বো—কার বাক মনে ব্ৰহ্মাশিব আর কণটডা ডাজি' আমার সহিত

বিপ্র-সেবা যে করে। जय (पर्व वर्ष करत्र ॥ ७७

শবরীর প্রতি ক্রপা

টৌ-হ'ন শাপ-দশু-প্রদ রচভাষা-পরায়ণ। कतिरव विरक्षत्र भूषा इहेरण स्थारीन। বুৰা'লেন নিজধর্ম করি' ডা'র বিবরণ। রছুপতি-পদতলে শির অবনত করি'। উদ্ধার করি' তা'রে উদার-চরিত রাম। আশ্রমে উপনীত হেরি' রাম রখুরায়। জলজ-লোচন ছই বাছযুগ ত্বিশাল। এক শ্রাম কলেবর স্থ-গৌর আরম্বনে। क्षिप्पटक विरक्षांत्र व्यान वहन ना च्यारम मूर्य । चांतरत निम नाम श्रुवारम क्य-ठत्रण ।

ভবু বিজ পূজনীয় সাধুদের এ বচন। শুক্ত কড় পূজ্য নহে হ'লেও গুণে প্ৰবীণ ॥ ১ ছেরি' প্রেম নিজ পারে প্রসন্ন রামের মন **।** বায় সে গগন-পথে আপনার রূপ ধরি' ॥ ২ শবরী-আবাদে গিয়া উপনীত গুণধাম। মভঙ্গ মূনির বাণী শ্বরি' পুশকিত-কায়॥ ৩ ষ্টার মুকুট মাথে গলে খোভে বনমাল। भवती भएकुन मूर्छ' क्कारेता क्षेत्रस्य ॥ ४ ৰারবার পদে নতি করি'ছেন মহাস্থাধে। বর-ভূথাসন ল'য়ে করা'ন উপবেশন ॥ ৫

(प)-- कम मून कन প্রেমডরে প্রভ

অতি সুরসাল करतम चारात

আনিয়া করেন দান। করি' বছ গুণগান ॥ ৩৪

মহবিৰ ভজিন উপদেশ

কৌ-- ভোড় করি' ছই পাণি দাঁড়া'লেন সমূবে। প্রভুরে নয়নে হেরি' ভক্তির বান বুকে ॥ নীচাছপি নীচ বেবা ভা' হ'ভেও নীচ নারী। কান রাম গুন ভাষা মোর এ বচন পির। আড-পাঁত কুল-মদ ধর্ম মান প্রধানতা। ভক্তি-বিহীন নর বিভরে শোভা ভেমন। নৰধা ভকত্তি-কথা কচিতেতি ভব কাছে। প্রথম ভক্তি হ'বে সম্বের সংস্কে।

কি ভাবে এ দাসী প্রভু করিবে ভোমার **ভডি। ভাতিতে অধ্য আমি জতি** মোর জড় সভি a> ভাহাদেরো মাঝে আমি হীমতম হে পাপারি। সম্পর্ক জীবের সনে শুধু মোর ভক্তির 🛚 ২ ধন বল পরিজন গুণ কিম্বা চতুরভা ॥ জল বিনা জলধর নয়নে লাগে বেমন 🛚 ৬ অবহিত হ'রে শুন গেঁপে' রাখ' হাদি-মাঝে। বিতীয় ভক্তি রতি আমার ক্থা-প্রসঙ্গে 🛭 ৪

শে-ভৃতীয় ভ্ৰতি চতুৰ্থ আমার

শুক্ত-পদ সেবা क्ष्य मध्यम्

বর্জন করি' মান। অৰুপটে কৰা গান ৷ ৩৫ চৌ—মম নাম ৰূপ করা সহ দৃঢ় বিখাস।

যর্চ ইন্সির-রোধ বিনর বিরাগ মনে।

সপ্তম আমি-মর করা ৰূগ দরশন।

আইম যথা-লাভে মন-মাঝে সস্তোব।

নবম সরল সবে অকপট ব্যবহার।

এই নরটের মাঝে একটিও যা'র হয়।

হে ভামিনি সেই মোর পাশে বিয়েভম অভি।

যোগিক্সন-হল্ল ভি গতি যাহা সুমহান্।

মোর দরশন-ফলও এ অপার অমুপ।

হে দেবি এখন বল যদি তব রহে জানা।

কহিলা শবরী যাও পম্পা সরসী-পানে।

করিবে সে নিবেদন সব ভোমা রছ্বীর।
বারবার প্রভু-পদে শির করি' অবনভ।

এই পঞ্চম বেদে র'য়েছে ইছা প্রকাশ ॥

অবিরত রত থাকা সজ্জন-আচরণে ॥ ১

মো' হ'তে অধিক করি' দেখা পাধু-সজ্জন ॥

অপনেও আঁখি মেলে' নাহি দেখা পর-দোষ ॥ ২

আমারি ভরসা প্রাণে বীত সুখছখ-ভার ॥ ।

হ'ক সে পুরুষ নারী জড় কি চেতনাময় ॥ ৩

ভূমি ত সকল ভাবে সুদৃঢ় ভকতিমতী ॥

সে গতি ত' তব তরে সুখ-লভ হয় জ্ঞান ॥ ৪

জীব অধিকার করে খাভাবিক নিজরপ ॥

বারণ-গামিনী কোণা সীতা মৃগ-স্নয়না ॥ ৫

তথায় মিভালি হ'বে তব স্থীব সনে ॥

ক্লেনে'ও তথাও মোরে কিবা প্রভু মতিধীর ॥ ৬

ভ্যায় ভকতি-ভরে শবরী বারতা যত ॥ ৭

| ছনিবেদি' সকল | সে মুখ-কমল | नित्रचित्रा श्रम समस्य थंदा। |
|------------------|--------------|------------------------------|
| যোগে দহি' কায় | হরি-পদ পায় | যথা হ'তে কভু কেহ না ফিরে॥ |
| বহুষ্ত কৰ্ম | সকল অংশ্ম | শোক-প্রাদ সব ত্যক্ত নর। |
| করি' বিশ্বাস | ৰলে তুলসীদান | কর নতি রাম-চরণ 'পর॥ |
| দো—জন্ম নীচ কুলে | পাপে ধরাতকে | ভারিলেন হেন নারী। |
| ওরে ধল মন | স্থ আকিঞ্ন | এ হেন প্রভু বিসারি'॥ ৩৬ |

রাদের বিরহ

(চ)—সে কানন(৩) করি' ত্যাগ চলিলেন রছুবর। মানব-কেশরী ছই অতুলিত বল-ধর ॥
বিরহী-সমান প্রাপু সহিত কত বিধাদ। কহি'ছেন অছুজেরে কত কথা-সংবাদ в ১
ক'ন গল্পণ হের বন কিবা শোভাষয়। হেন শোভা হোর' কা'র প্রাণে ক্ষোভ নাহি ছয়॥
দয়িতার সনে সব জস্তু বিহগগণ। নিন্দা করি'ছে মোরে এই যেন লয় মন॥ ২
আমারে বিলোকি' দূরে মুগেরা পলা'য়ে যায়। মৃগীরা হাসিয়া কহে ডোমাদের নাহি ভয় ৯
সাধারণ-মুগলাত ডোমরা কর বিহার। পুঁলিভে কনক-মুগ কাননে আসা ইহার॥ ৩
কুঞ্জর নিক্ষ পাশে বধুরে টানিয়া লয়। যেন ভা'বা ইলিতে আমারেই শিক্ষা দেয় ৹॥
স্থাচিন্তিত শাল্র যত দেখ ভূমি বারবার। স্থানিত্রত রূপে বংশ ভে'বনাক' আপনার॥ ৪

रम वह निका तथ त, बीरक क्ष्मन्छ वकाको बाचिका विकेश केकिक मार ।

यमिष्ठ नातीरत निम तूरक शूरत नाथ कष्ट्र। मधुत मनव्याकृ (इत मन-विर्याहन।

শান্ত বৃৰ্তী নূপ বংশ নাছি রয় ভবু। বিয়ার বিহনে মোর' করে ত্রাস উৎপাদন ॥ ৫

| দে। —বিরহে বিকল | বলহীন অভি | একা মোরে তা'র কানা। |
|------------------------|-----------------|-----------------------------|
| मधून कानन | বিহুগেরে ল'য়ে | কাম দিল ডা'ই হানা ॥ ৩৭ (ক) |
| দেখে' গেল দুক | ভ্ৰাতা সনে মোরে | সংবাদ লভি' ডা'র। |
| থামাইয়া যেন | আপন বিপুল | বাহিনী স্থাপিল মার ॥ ৩৭ (খ) |

(5)-বিশাল পাদপ হ'তে ঝুলিছে ব্রভতী যত। রচিত হইল যেন তথায় শিবির কড ॥ উড়িছে পতাকা ধ্ৰঞা যতেক কদলী ভালে। ধ'রেছে বিবিধ ফুল নানাজাতি তরুদল। হেপা হোপা মনোহর তরুগণ শোভা পায়। পিকের কৃজন যেন মন্ত বারণ-রব। ময়ুর চকোর শুক কপোত মরালচয়। তিতির বটের যত পদাতিক সেনাগণ। রথ ধরাধর-শিলা ছুন্দু ভি নিঝর। মধুকর-গুন্গুন্ তুরী আর ভেরী-হেন। চারিদল অনীকিনী ল'য়ে সাথে আপনার। মীন-কেতনের এই সেনা করি' দরশন। বসণী কামের এক বড়ই প্রবল বল।

ধীৰতা যাহাৰ মনে লে কড় নাহিক টলে # ১ যেন তীরন্দাক বহু আগুলিছে বন্দিদল ॥ পুথক্ ছাউনি যেন কোন কোন বীর ছা'য়॥ ২ ডাছক কোৰিল উট অখডর যেন স্ব্যু धीती (यन मरनारक्षत महारक्षक त्रा-ह्यू ॥ ७ কত ক'ব মনসিজ-বাহিনীর বিবরণ ॥ চাভক-ভাটেরা গায় গুণচয় নিরম্বর 🛚 ৪ ভিনবিধ সমীরণ মদনের দুত যেন। রণে আবাহন করি' বিচরণ করে মার ॥ ৫ বে পারে ধরিছে ধীর খ্যাতি লভে সেইজন ॥ বিজয় যে লভে ভা'তে বীর সেই মহাবল ॥ ৬

| দো—ভাত এই ভিন | থল অভিবল | কাম ক্রোধ কোভ আর। |
|---------------|---------------|----------------------------|
| পলে বিক্ষোভ | তুলে মূনি-মনে | ধাঁ'রা বিজ্ঞানাগার॥ ৩৮ (ক) |
| লোভের ইচ্ছা | मख महाय | নারীই কামের বল। |
| ক্রোধের সহায় | প্ৰকৃষ ৰচন | ৰ'লেছেন মুনিদল॥ ৩৮ (খ) |

शन्भा-जटकाबदक शमम

(5)—গুণের অতীত তিনি চরাচর-জগস্থামী: काभीत्मत्र मीन-छात त्मथारेग्रा त्रचूत्र । ক্রেন্থ কাম মদ লোভ মায়া-আদি সমুদায়। वाकीकत या'त 'शदत त'न मना अध्कृत । উমা কহিতেছি আমি নিজের বা' অমুভব। তা'র পর যা'ন প্রভু সেই সরসীর ভীর। সন্ত-হৃদয় সম নির্মাণ ডা'র বারি। মথা তথা জলপান করে বস্তু পউদল u

ভবানি তিনিই রাম সবার অস্তর্যামী॥ করিলেন বিবেকীর বিরাগ অ্দুঢ়ভর ৷ ১ ঞীরামের দয়া হ'লে আপনি খুচিয়া যায়॥ বাজীর মায়ার তা'র কদাচ না হয় ভুগ ॥ ২ হরির ভজনা সার স্বপ্ন জগত সব ॥ পম্পা যাহার নাম মনোহর স্থগভীর ॥ ৩ ভাহাতে বাঁধান' ঘাট রহে মনোহর চারি। উদার দাতার গৃহে যেমন যাচক দল 🛭 ৪

সহকে না পা'বে মর্ম। (प)--कमन-भार्ग লুকান' সলিল যথা নিশুৰ অক্ষা ৩৯ (ক) না পার দরণ মায়াবৃত জীব এক-রঙ্গে মাডি' অতল জলের মাঝে। স্থাৰ বহে মীন কেটে' যায় সুধ-সাজে ॥ ১৯ (খ) ধর্ম্ম-নিরভ জীবন বেমন

(5)—বিকশিত বহুভ'াতি সরসিজ শোভমান। গুলে ভূজ বহু ভূলিয়া ললিত তান। वन-कृक्षे ভাকে মরাল चु-त्रव करत। চক্রবাক বক-আদি কডবিধ ধপ আর। নয়ন-ভূলান' পাখী করে গান বিমোহন। সরোবর-ভটদেশে কত মুনি-আশ্রম। চম্পা বকুল আর কদম কিবা ভমাল। নব কিশলয়-সাজে সক্ষিত ভক্ষচয়। অভাবজ-ফুশীতল মন্দ স্থ্রভি-যুত। 'শৃত্মুত কুত্তুত কোকিলেরা তুলে ভান।

व्यकुरत रहतिया यन मरव अनेनान करत ॥ > মুখে নাহি যায় কহা দেখিবার(ই) সে বাহার # প্রধারী প্রিকেরে যেন করে আবাহন ॥ ২ কাননের চারিদিকে ডক্ন রছে মনোরম। পাটল পনস আদি সহকার স্থুরসাল। ৩ कृरण खत्र। मधुकत खब्धरत मरनामग्र॥ जिनविध नमीत्रग तरह ख्था व्यवाहिक ॥ 8 রস ভন্না সেই রব শুনি' মুনি গড-ধ্যান ॥ ৫

ৰো-কল-ভাৱে নমি' পর-উপকারী

পাদপ মিকর मन वर्षा मय

ধরণী পরশি' রয়। লভিয়া বিভ চর ॥ ৪ •

চৌ-রমণীয় সরোবর করি' রাম দরশন। হেরি' মনোহর এক পাদপ ভাহার ছায়। আদেন তখন তথা মূনি ঋষি স্থরগণ। পরম হরষ-মনে বসিয়া তথা কুপাল।

ম**জ্জন করি' ডাহে অভীব মোদি**ত মন 🛚 বসিলেন অন্তুম্বের সনে তথা রম্বরায় ॥ ১ निक्रमिक शार्य या न कति भन-रम्मन ॥ অনুজের সনে ক'ন কত কথা সুরসাল ॥ ২

নারদ-রাম লংবাদ

বিরহ-পীড়িত ভগবানে করি' দরশন। ভাবেন আমারি শাপ দয়াল করি' স্বীকার। এমন প্রভুরে গিয়া করি আজি দরশন। এ কথা ভাবিয়া মনে করেছে শইয়া বীণ। মূখেতে করেন গান মৃত্যুত্ রাম-নাম। করিডেই দণ্ডবৎ ধরিয়া তুলেন তাঁরে। স্বাগত করিয়া তাঁ'রে আপন পাশে বসা'ন। অভীব ভাবনাযুত নারদ মুনির মন 🛭 জীরাম সহেন এই ছঃখ নানাপ্রকার॥ ৩ হেন অবসর আর হ'বে না পরে কখন 🛭 গেলেন নারণ যথা সুখে এড়ু সমাসীন ॥ ৪ করেন ভক্তি ভরে বিবিধ দীলা বাধান। চাপেন আপন বুকে নারদেরে বারেবারে ॥ ৫ भवान वाजि व्यानि' व्यानति श्रम श्रुवा'न ॥ ७

খো-বছবিধি স্বতি কহেন বচন

ক্রিয়া উাহার 1137 G47

প্ৰভুৱে মোদিত খানি'। · पृष्टिया क्यल-भागि ॥ 83 (5)—সংক-উদার ওন হে রঘ্নারক।

যাচি ও পদতলে এক বর দেহ আমি।

আমার প্রকৃতি ভাল জান মূনি রাম ক'ন।

কি আছে এমন প্রিয় কছ এ স্জন 'পর।

আনেয় ভকতে মোর নাহিক কিছু এমন।

নারদ কহেন ভবে প্রাণে ভরা পুলকতা।

যদিও হে প্রভু নাম গণনাহীন ভোমার।

রাম-নাম হ'ক নাথ বড়-নাম সকলের।

স্থান অগম স্থাম বরদারক ॥

যদিও বিদিত সব অস্তর্যামী ॥ ১

ভকতের কাছে কভু থাকে কি কিছু গোপন ॥

যাচিতে যা' মোর পাশে নাহি পার' মুনিবর ॥ ২

এ প্রতীতি ভূলেও না কভু হ'রো বিসরণ ॥

এই বর যাচি প্রভু ক্ষম মম ধুইডা ॥ ৩

এক হ'তে এক বড় বেদ এই বলে আর ॥

ব্যাধের সমান হ'ক যত পাপ-বিহগের ॥ ৪

| ড়ো —পূর্ণিমা নিশা | ভোমার ভক্তি | রাম-নাম হ'রে সোম। |
|---------------------------|----------------|-------------------------|
| অন্তে ভারা সম | করুক উঞ্চল | ভকত-ছাদর-ব্যোম ॥ ৪২ (ক) |
| ভাহাই হইবে | মুনি-প্ৰতি ক'ন | कुणानिधि त्रशूनाथ। |
| বিপুল পুলকে | প্রভুর চরণে | নারদ নমা'ন মাথ ॥ ৪২ (খ) |

Cbl—তখন নারদ রামে অতি প্রসর জানি'।
তন প্রভু রভুনাথ মায়ারে করি' প্রেরণ।
বিবাহ করিতে তবে হ'য়েছিল অভিলাষ।
অবধান মুনিবর কহি ভোমা প্রীভিন্তরে।
তেমনি তাহার সদা করি পরিরক্ষণ।
ধরিতে অনল অহি শিশু যবে ছুটে' যার।
প্রোচ্ও হ'লে স্কুত মাতার তনয়-'পরে।
প্রোচ্ তনয় সম যে সকল জ্ঞানিগণ।
ভক্তের মোর বল নিজ্বল জ্ঞানীদের।
পণ্ডিত এ বিচারি' আমার ভজনা করে।

কহিলেন আর বার সং স্কোমল বাণী।
বিমোহিত ক'রেছিলে যখন আমার মন। ১
দিয়াছিলে বাধা তাহে কি হেতু রমা-নিবাস।।
সকল ভরসা ত্যক্তি' বে মোর ভঙ্গনা করে। ২
মাতা যধা করে শিশু-রক্ষণাবেক্ষণ।।
মাতা তব আগুলিয়া রক্ষা করেন তা'য়।। ০
কেহ রয় তবে নহে পূর্কের মত ক'রে।।
বালক-তনয় মম অ-মান ভঙ্গজন। ৪
কাম-ক্রোধ আদি রিপু আছেই ত সকলের।।
করিলেও জ্ঞানলাভ নাহি ছাড়ে ভক্তিরে॥ ৫

দো—কাম ক্রোধ লোভ ডা'র মাকে অভি মোহ অহন্ধার ত্থদ দারুণ এরা ভীম অনীকিনী। নারী মায়া-স্বরূপিণী॥ ৪৩

(5)—সন্ত পুরাণ বেদ এই বলে মুনিরান্ধ।
অপ-তপ-নিয়ম-জলাশর হ'তে বারি।
কাম-ক্রোধ-মদ-ভেকেরে হরব দিতে।
কু-বাসনা বিকশিত কুম্দ-নিকর-প্রায়।

কামিনী মোহের বন-মাঝে যেন ঋতুরাল।।
লোবণ করয়ে সব নিদাঘরূপিণী নারী।। ১
এরাই প্রারুট-রূপা শুধু এক এ মহীতে।।
এ শরংখড় হ'ডে ডা'রা সদা হুখ পায়।। ২

२७

ধর্ম যতেক ভা'রা কমল-আকার ধরে।
নারী-চিমঋতু পেয়ে তথন মমভা-কাশ।
পাপ-পেচকের চির অস্তর-বিনোদিনী
বুদ্ধি বল সভ্য শীল এ সকল মীন।

নীচ-স্থপদা নারী হিমরপে দতে ভা'রে। সবারে আবরি' করে নিজেরে তেজে প্রকাশ॥ ৩ রমণী তমসাময়ী ঘন ঘোর নিশীথিনী॥ এদের বঁড়শী যেন রমণী বলে প্রবীণ॥ ৪

দো—যাতনা-দায়িনী এই সব বৃঝি' সব দোষ মূল ভা'ই নিবারণ সকল ছথের খনি। করিয়াছিলাম মুনি।। ৪৪

(5)—মনোহর রঘুপতি বচন করি শ্রবণ।
ভাবি'ছেন বল' কোন্প্রভুর এমন রীতি।
ভাম করি বরজন যে প্রভুরে নাহি ভজে।
আদরের সনে পুন: কহেন মুনি নারদ।
সাধুজন-লক্ষণ কহু দেব কুপা করি'।
রাম ক'ন শুন মুনি সাধু গুণ-বর্ণন।
জিত যিনি ছ' বিকার অ-পাপ বিগত কাম।
সীমাহীন জান বা'র ইচ্ছাহীন মিত-ভোগী।
সাবধান মানদাত। আপনি মদ-বিহীন ।

পুলকিত মুনি-কায় জলে ভরে ত্'নয়ন।।
ভকতের তরে কা'র এমন মমতা প্রীতি।। >
জ্ঞানের কালাল সেই কু-ললাট-পাঁকে মজে।
কহ প্রভু রঘুনাথ বিজ্ঞান-বিশাবদ।। ২
ভবভয়-নিবারণ হে নাথ ছ্রিভহারি।।
তাঁ'দের অধীন আমি রহি সদা যে কাবণ।। ৩
অবিচল অকিঞ্ন পৃত আর সুখধাম।।
সভ্য-রভ সব কালে পণ্ডিত কবি যোগী।। ৪
বৈধ্যাশীল ধর্ম-জ্ঞান আচারে মহাপ্রবীণ।। ৫

দৌ—ভব-ছ্**ৰ**হীন আমার চরণ গুণের আধার বিহনে কিছুই নাহি কোন সন্দেহ। নহে প্রিয় গৃহ দেহ॥ ৪৫

(5) — কৃষ্ঠিত হয় শুনি' আপনার গুণগান।
সম শীতল ভাব ত্যাগ যে না করে নীতি।
জ্বপ তপ ব্রুত দম নিয়ম সংযম আর।
শ্রেজা ক্ষম। সধা-ভাব দয়া ভরা অন্তরে।
বিরাগ বিবেক শীল ভরা অনুভব-জ্ঞানে।
দস্ত মান মদ নাহিক কাহার সনে।
মম লীলা-গান মুধে কাণে শুনে অবিরত।
শুন মুনি সাধুদের লক্ষণ এ সকল।

শুনিলে পরের গুণ অধিক হরষে প্রাণ॥
স্মভাবে সারল্য ভরা স্বারি সহিত প্রীতি॥ ১
গোবিন্দ গুরু ছিল-চরণে ভক্তি যা'ব॥
প্রমোদিত ভাব প্রেম আমার চরণ 'পরে॥ ২
যথাযথ জ্ঞান যা'র কিবা বেদে কি পুরাণে॥
শ্রমেও না দেয় পদ কখনো কুপথ-পানে॥ ৩
বিনা হেতু অপরের উপকারে সদা রত॥
বর্ণিতে মানে হার বাণী আর বেদ-দল॥ ৪

ছ—হারে বীণাপাণি বাসুকী এ শুনি' এ-ভাবে কুপাল দীনের দরাল বার বার নমি' পদ-কোকনদে পুলসি সে ব্যক্ত ভালি আলা দ্বন্ত কমল-চরণ মূনি জড়া'ন। ভকতের গুণ শ্রীমূখে গা'ন। গেলেন নারদ ধাতার ধামে। রঞ্জিত রহে যে হরি-প্রেমে।

এরাম-মাহাত্য্য শ্রেবণের মহিন।

দৌ--রাবণ-অন্নির

পুণ্য-মূষণ

যে জন শুনিবে গা'বে।

বিনা থোগ জ্বপ বিবাগ বামের

দৃঢ ভক্তি দে পা'বে । ৪৬(ক)

দীপ-শিখা প্রায় যুবভীর কায়

হ'যোনামন পতঙ্গ।

ভক্ত রাম-পদ তাকি ক'ম মদ কর সদা সংস্কু ॥ ১৬(খ)

কলিযুগের সমস্ত পাপ-বংসকারী শ্রীরামনরিত-মানদের এই তৃতীয় দোপান সমাপ্ত হইল॥

(अत्रगंकाश जदां छ)

श्रिश्वाय म्यः

क्षेणामकीयद्वरकत्र कत्र

শ্রীরামচরিত মানস

চতুর্থ সোপান

কি জিন্ধা কাণ্ড

শোক—কৃষ্ণ নীল-ইন্দীবর
অধিতীর ধহুর্জর
মায়ায় মানবন্ধশী
সীতা-অধ্বেশপর
ব্রহ্ম-বারি সমুম্ভব
ফুদমা বিস্তার করি?
জন্ম-মবশ রোগে

গৌর-শ্রামল রূপ
শোভাধার বেদ-কদ্য
রত্ত্ত্বর হুটি
পথিক-প্রবর সদা
কলির কলুব যত
সর্ববিদ্যাল তরে যেই
স্থাসম ঔষধ
নিশিদিন নিরস্কর

অভিবল বিজ্ঞানের ধাম
গো-ব্রাহ্মণগণ-প্রোণারাম।
সন্ধর্মের বর্ম হিতকারী
হ'ন ভক্তি বিভরণকারী॥ ১
নিংশেষ-বিধ্বংলা নাল হীন
শ্রীশজ্ব মুখ-ইন্দু লীন।
আনকীর প্রাণের সমান
শ্রীরামের নামায়ত পান॥ ২

সো—মুক্তি-জন্মভূমি কানি' যথা র'ন শঙ্কর-ভবানী দহিত হেরিয়া স্বরগণ না ভঞ্চিদ্ তাঁ'রে মৃচ মন

ধক্ত ভা'রা যা'রা করে

জ্ঞানকর পাপ-বিনাশন।
দে কাশী না দেবি কি কারণ॥
করিয়া গরল যেবা পান।
কে কুপাল দে শস্তু সমান॥

জ্ঞীরাবের সহিত হমুসাবের সাক্ষাৎ

চৌ—পুনরায় আঞ্চান হ'ন রাম রঘ্বর।
সেধা স্থাীব রহে আপন সচিব সনে।
অতীব ত্রাসের ভরে কতে শুন চমুমান।
ধরি' ব্রহ্মচারী-রূপ আপনি ওধানে বাও।
থেরিত কুটিল বালি যম্মণি ওরা হয়।
বিশ্ব-বেশ ধরি' কপি করিল তথা গমন।

ঋষ্যমুক শৈলের হ'লেন নিকটভর ॥
আসিতে হেরিয়া মহাবল রাম-লক্ষণে ॥ ১
কে ওই বুগল নর বল ও রূপ-নিধান ॥
মর্ম্ম বুঝিরা সব বারভা মোরে জানাও ॥ ২
পর্বত ড্যাঞ্জ' ডবে এখনি পলা'তে হয় ॥
নমিত করিয়া শির শুধাইল এ বচন ॥ ৩

কে তোমরা ছই জন গৌর-খ্যাম শরীর। স্থকঠিন ক্ষিভিতলে কোমল চরণ ফেলে'। মৃত্র মনোহর স্থলর কলেবর। ত্রি-মুর্ভি মাঝ হ'তে ভোমবা কি ছুইজন। কিরি'ছ কানন মাঝে রূপে ক্ষজ্রিয় বীর॥ হে প্রভু এ বনদেশে বিচরিছ কোন্ছলে॥ ৪ সহিছ' আতপ-ভাপ সমীরণ ক্লেশকর॥ অথবা ভোমরা কি গো সেই নর-নাবায়ণ। ৫

দৌ-কিম্বা জগত-আপনি অখিল

তারণ-কারণ . ভুবনের পতি

ভঞ্চন ভূমি-ভার। নেছ' নর-অবতার॥ ১

চৌ—স্বত মোরা কোশলের নুপতির রাম ক'ন। জনক-বচনে বনে দোঁহাকার আগমন। মোরা ভাই তুইজন লক্ষণ রাম নাম। হেপা সেই জ্বানকীরে রাক্ষস নিল হ'রে। করিলাম বর্ণন নিজেদের ইভিহাস। প্রভুরে চিনিয়া হমু পড়িল চরণ ধ'রে। পুলকনে ভরে তমু মুখে না আসে বচন। তথন ধরিয়া ধীর করে তাঁ'র স্তুতি গান। ক্ষে মোর শুধানতে নাহি কিছু অক্সায়। তোমারি মায়ার বশে ভ্রান্ত হইয়া ফিরি।

সাবে সুকুমারী নারী ছিল আঁখি-অভিরাম ॥ ১ ব্রাহ্মণ ফিরি মোরা তা'রি উদ্দেশ ক'রে ॥ নিজ-কথা এবে দ্বিজ করহ মোরে প্রকাশ ॥ ২ সে স্থ ভাহার উমা বর্ণনা কেবা করে॥ প্রভুর রুচির বেশ করে শুধু দরশন ॥ ৩ े চিনিয়া প্রভুরে নিব্দ হরষে ভরিল প্রাণ॥ তুমি কি শুধাও প্রভু তুক্ত মানবপ্রায়॥ ৪ সে কারণে আপনার প্রভুরে চিনিতে নারি॥ €

দো-একেই ত নিজে তাহে তুমি প্ৰভু

শুড় মায়াবশ ভুলাইলে মোরে

कृष्टिन क्रमग्र अख्वान। দীননাথ ভগবান ॥ ২

চৌ—যদিও আমার প্রাভু অপরাধে দীমা নাই। প্রাভু যেন দেবকেরে না ভূলিও এই চাই॥ ভোমারি মায়ায় নাথ মৃগ্ধ জীব সকলে। ভত্পরি ভোমার দোহাই হে রঘুরায় সন্তান জননীর প্রভু-ভরসায় দাস। এ বলিয়া সকাভরে পড়িয়া চরণ 'পরে। তখন জ্রীরঘুনাথ উঠাইয়া বুকে লন। ক'ন কপি মনে গ্লান আনিও নাকোন মতে। তুমি মোর পাশে প্রিয় বিশুণ লক্ষণ হ'তে μ সম-দর্শী বলি বলে মোরে সবজনে।

নিস্তার পে'তে পারে ভোমারি দন্ধার বলে। ১ কিছুই ড জানা নাই সাধনার সতুপায়॥ অ-ভাবনারহে প্রভুপালিলেই পুরে আল ॥ ২ হলে প্রেম ভরা নিজ শরীর প্রকাশ করে॥ স্থ্ড়া'ন আপন আঁবি-বারি করি' সিঞ্ন ॥ ৩ সেবক অনক্ষগতি মোর প্রিয় লাগে মনে॥ ৪

দো-মতি অনক্স আমি দাস ভাহারি যাহার আর চরাচর-ক্রপে मत्न এ व्यवेग उदान। প্রভু মোর ভগবান। ৩

শ্রীরামের সহিত ত্মগ্রীবের মিত্রভা

(51-- হেরিয়া প্রনম্বত জীরামেরে অলুকৃদ। অপার প্রসাদ প্রাণে মিটে গেল স্ব শৃল ॥ বলে প্রভু গিরি 'পরে কপিপত্তি করে বাদ। স্থগ্রীব নাম ডা'র দে-ও ডব এক দাস ॥ ১ *

ডাহার সাথেতে প্রভু স্থাপন কর প্রণয়। সে-ই জানকীর তব করাইবে অধেষণ। এই ভাবে জীরামেরে সব কথা বৃষাইল। পায় স্থগ্রীব যবে জীরামের দরশন। মিলিল আদরে নত করিয়া চরণে শির। স্থগ্রীৰ মনে মনে কবিতেতে এ বিচার।

ভা'রে দীন বুঝি' মনে প্রদান কর অভয়॥ চারি দিকে কোটি কোটি কপিরে করি' কেরিণ ॥২ ष्ट्रष्मत्त्व निष्क काँट्य ष्याद्वारण क्वारेण ॥ করিল জনম অভি ধ্যা বলি' গণন॥ ৩ ভাই সনে সম্ভাষণ করিলেন রঘুবীর ॥ করিবেন কি হে বিধি প্রণয় সনে আমার॥ ।

ব্যে—হনুমান তবে অনলে সাকী দোঁতে দোহাকার রাখিয়া মিডালি সকল কথা গুনায়। করাইল ছ'জনায়॥ ৪

(5)—প্রণয় ভাপিত হ'ল না রহিল অন্তর। লক্ষ্য রাম-গাথা কহিলেন অতঃপর ॥ স্থগ্রীব কহে ভবে নয়নে পুরিত বারি। মন্ত্রিগণের সনে এইথানে একবার। তখন গগনে যে'তে কবিয়াছি দরশন। রাম রাম হায় বাম হবে চীৎকার করি'। যাচিতে বসন রাম এনে দিল ছবাপর। সুগ্রীব করে তবে শুন প্রভু রঘুবীর। সকল প্রকারে দেবা করিব আমরা সবে।

আবার পাইবে নাথ মিথিলেশ-সুকুমারী ॥ ১ বসি' বসি' সবে কিছু করিতেছিলু বিচার ॥ পরের কবলে পড়ি' করেন বহু রোদন॥ ২ দিলেন বসন ফেলি' আমা সবাকায় ভেরি'। সে বাস জদয়ে চাপি² ঞীরাম অতি কাতর ॥ ৩ খেদ কর ভ্যাগ এবে পরাণে ধরত ধীর। जनक-कुमात्रो मीखा खाटर किरत' পांचता या 'रव॥8

(দা-স্থার বচন কহ কি কারণে

শুনি' প্রীত অতি বনে বাস কর

কুপানিধি বলধাম। স্থগ্রীবে ক'ন রাম॥ ৫

স্থগ্রীবের নিজ ছাখ বর্ণন

চৌ--- মুগ্রীব.কহে নাথ বালি আমি হুই ভাই। কড যে প্রণয় ছিল বলিবার ভাষা নাই॥ ময়-দানবের স্থৃত মাযাবী ভাহার নাম। অর্দ্ধ রাত্রে করে চীৎকার পুরদ্বারে। বালিবে ধাবিত হেরি' লাগিল দে পলাইতে। গিবির গুহায় এক সে দানব প্রবেশিল। মোর আসা-পথ চে'য়ে র'বে পক্ষান্ত-তরে। একমাস কাল তথা রহিলাম হে খরারি। ভাবিলাম হত বালি আগিবে মোরে মারিতে। নির্থি নুপতি হীন বালির সচিবগণ। मानरव विश्वा वानि छवरन वानिन किरत । অরাতি-সমান মোরে করিল অতি প্রহার। ভাহার ত্রাদেতে ওহে রখুবীর কুপাময়।

একবার এসেছিল সে প্রভু মোদের গ্রাম॥ > অরাভির বল বালি পারিল না সহিবারে॥ ছটিত্ব তথন আমি ভ্রাতার সহায় হ'তে 🛚 ২ তখন আমারে বালি সম্ভাষি' এ কচিল 🛭 যদি নাহি ফিরি মনে বুঝিবে গিয়াছি ম'রে॥ ৩ বাহির লাগিল হ'তে ক্রধিরের স্রোড ভারি ॥ গুহা-মূখে শিলা চাপি' লাগিলাম পলাইছে॥ 8 হঠে মোরে করাইল রাজাসনে আরোহণ॥ বিরোধ জদয়ে তা'র বাডিল নির্থি' মোরে ॥ ৫ भक्ति हतिया निम क्लाफ निम साया चात ॥ क्टित'हि (वहांन ह'रा नकन खुवनमग्र॥ ७

শাপের কারণে হেথা নাহি করে আগমন। জকভের হুথ শুনি' দীনের প্রতি কুপাল। ডথাপি র'রেছি হের সভত ত্রাসিত মন॥ সজোরে তৃশেন উচ্চে ভুজবুগ সুবিশাল॥ ৭

वानि-वध श्रीकृष्ठाः ; वच्च-नक्षन वर्गम

জেল শিবের

বধিব বালিরে নিলেও শরণ

সন্ধানি' এক বাণ। তবু না রহিবে প্রাণ॥ ৬

কো — বকুর ছবে আগে যেজন না ছব পায়।
নিজ গিরি-সম ছব রেণু ব'লে মনে করে।
আজাবিক ভাবে যা'র হেন মতি নাহি আসে।
ফিরা রে কুপথ হ'তে কিরা'বে স্থপথ পানে।
আদান-প্রদানে লেশ-শল্পা বিহীন চিত।
শতগুণ সেহ র'বে ভাহার বিপদ কালে।
সমুধে মধুর কচে বচন করি' রচন।
যাহার মনের হেন সর্প-সমান গতি।
কুপণ নুপতি শঠ সেবক কুলটা নারী।
চিন্তা দূর কর স্থা ভাজ' সব মোর' পরে।
স্থাব কহে ভবে অবধান রস্থীর।
ছুন্তুভি রক্ষ:-ছন্তি দেখাইল বুক্ক ভাল।

হেরিলেও ডা'রে চ'থে পাপ হয় অভিশয় য়
বজুর কণা-চুথ স্থুমের-সমান হেরে॥ ১
সে শঠ কি হেডু মিছা মিডালি করিতে আলে॥
বাড়া'বে স্থাণ বড দূর করি অপশুণে॥ ২
আপনার যথাবল করিবে সদাই হিড॥
পরম সথার গুণ এই সব বেদে বলে॥ ৩
আড়ালে গুধুই মানি কৃটিলণা ভরা মন॥
ডেমন কু-স্থা জনে বর্জনে শুভ অতি॥ ৪
কপটডা ভরা সথা শূল সম এই চারি॥
ডোমার সকল ভার লইয়ু আপন করে॥ ৫
বালি মহাপরাক্রম অভিশয় রণধীর॥
বিনায়াসে করিলেন চুণ ডা'রে দয়াল॥ ৬

चुतीद्वत देवतागा

হেরিয়া অমিত বল ফদয়ে বাড়িল শ্রীতি।
বার বার করে নির আনত চরণ 'পর।
উপজিত হ'ল জ্ঞান বচন কহিল বীর।
সম্পদ সুখ আর খ্যাতি মান পরিবার।
শ্রীরাম ভকতি-পথে এরা সব অস্তরার।
অরাতি-বান্ধব-সুখ হুংখ জগতময়।
বালি অতি হিডকারী তা'র তরে লভিলাম।
অরেও থা'র সনে হইবে হল্ম মোর।
এখন হে কুপাময় কর স্কুপা এই ভাঁতি।
ভনিয়া বিরাগভরা কপির মুখের বাবী।
যাহা কিছু বর্দিলে সভ্য সকলি ভাহা।
কাক কহে হে খগেশ শ্রীরাম বেছে এ খলে।

ই হা হ'তে বালি-বধ হ'বে হ'ল পরতীতি ।
লভি' প্রাভূ-পরিচয় হুফ মন কপিবর ॥ ৭

হে নাথ কুপায় তব মন মোর হ'ল স্থির ॥
করিব তোমার সেবা সব করি' পরিহার ॥ ৮

এই ক'ন সন্তেরা বাঁ'র মন তব পায় ॥

মায়ার রচিত শুধু সন্তা প্রকৃত নয় ॥ ৯

তোমা হে ককণাময় হুঃখ-শমন রাম ॥

ভাগরণে মনোমাধে উদিবে শোচনা ঘোর ॥ ১০
সব ডাজি' ডোসা যেন ভজি আমি দিবারাভি ॥

হসিত-বদনে ডবে ক'ন রাম ধ্রুণাণি ॥ ১১

মিখ্যা কখন স্থা না হ'বে কহিছু যাহা ॥

মটের বানর-প্রায় নাচান স্বারে ছলে ॥ ১২

वानि-मूळीव-पूष ; वानि वर

শুগ্রীবে সাথে ল'কে পরে রাম রখুনাথ।
পাঠা'লেন শুগ্রীবে বালি-পালে সেই'খন।
ভানিভেই হুবার ছুটে বালি ফোখাড়ুর।
ভান নাথ শুগ্রীব জুটে'ছে বাঁ'লের সনে।
কোশলেশ-আছল লক্ষ্মণ আর রাম।

চলিলেন ধন্দ্ৰার প্রাহণ করিয়া হাত ঃ
কাছে গিয়া প্রীরাদের বলে করে গর্জন ঃ ১ঞ্
চরণ ধরিয়া ভারা বুঝার ভা'রে প্রচুর ।
ভেজ আর বলাধার তাঁ'রা ভাই চুইজনে ঃ ১৪
কালেও জিনিতে রণে সক্ষম গুণধাম ৷ ১৫

পে—বালি কচে শুন ক্যাপিও যদি ভীক প্রিরডমে বধেন আমারে সম-দিঠি রযুনাথ। স্থশীলে হ'ব সনাথ। ৭

তৌ—এডেক বলিয়া যায় সহ মহা অভিমান।
ভেটিল দোঁহায় দোঁহে বালি করে ওর্জন।
পালায় আকুল হ'য়ে স্থগ্রীব সে প্রহারে।
বলেছিমু রখুবার কৃপাময় ভোমা হেন।
রাম ক'ন অবিকল আকৃতি চুইন্সনে।
করিলেন নিজ দেহ ডা'র করে পরশন।
গলায় পরা'য়ে রাম দিলেন কুন্থম-মাল।
আবার কতই মতে হইল ভীষণ রণ।

স্থো—বহু ছল-বল স্থগ্রীব করে করবি' শায়ক হানেন শ্রীরাম

তুণের সমান লখু প্রতীবে করি' জ্ঞান ।
মৃষ্টি প্রহারি' ঘোর রবে করে গর্জন । ১
জ্ঞানি-সমান লাগে মৃষ্টি-প্রহার ভা'রে ।
জ্ঞাই নয় সাক্ষাৎ কাল মোর বালি যেন । ২
স্থ্যমবশে বধ নাহি করিলাম সে কারণে ।
কুলিশ হইল জয় খুলিল সব বেদন । ৩
পাঠা'লেন ডা'রে পুনঃ দিয়া বল প্রবিশাল ॥
বক্ষের আড়ে রাম করি'ছেন দরশন । ৪

জদরে বিশিত-ভর। ভেদিরা বালি-কদর॥৮

চৌ—আকুল হইয়া পড়ে ধরায় শরের যায়।
স্থাম কলেবর নিরে বিরচিত জটাভার।
বার বার তাঁরে হেরি' সে চরণে দিল মন।
মুখেতে কঠোর ভাষা পরা প্রেম ভরা বুকে।
কর্ম-কারণে প্রভু তোমার অবতরণ।
অরাতি ভোমার আমি স্থগ্রীব প্রিয়তর।
রাম ক'ন শোন্ শঠ প্রাতৃবধু সহোদর।
ইহাদের পরে করে যেজন কু-জাধিপাত।
রে মুঢ় জ্বন্মে ডোর অভিশর অভিমান।
ময় ভুজবলাজিত জেনে'ও মনেতে ডা'রে।

প্রভুবে সম্পে হেরি' উঠি' বসে পুনরার
অরুণ নয়ন-যুগ করে ধরু লর আর ॥ ১

চিনিরা প্রভুবে মানে সকল নিজ জনম ॥
কহিল তথন বালি চাহি' শ্রীরামের মৃথে ॥ ২
ব্যাথের সমান ছলে করিলৈ মোরে হনম ॥
কি দোব আমার প্রভু বাহাতে পরাণে মার' ॥
পুত্রবধ্ ও ত্হিতা সকলে সমান এরা ॥
ভাহারে করিলে বধ কিছু নাহি অপরাধ ॥ ৪
বনিতার উপদেশে সে হেতু না দিলি কাণ ॥
গর্মিব অধম সাধ স্থ্যীবে বধিবারে ॥ ৫

্ৰেথ—শুন রাম নাথ-এখনো কি প্রভূ সহিত আমার রহিলাম পাণ্ট

ৰুজু না চলিবে ছল। লঙ্কি' ও চরণ-ডল॥ ৯ (b) - अवन कतिया ताम मन शान-शता वानी। কহেন অট্ট দেহ করি তুমি রাখ' প্রাণ। জনম জনম মুনি করেন কত সাধনা। নামের প্রতাপে যাঁ'র শঙ্কর বারাণসী-। পে'য়েছি নয়ন-আগে আজ তাঁ'রে সুপ্রকাশ।

ছ---নয়ন-গোচর আজিকে সে জন জিনি' প্রাণ-মন ইন্দ্রিয় বোধি অভি অভিমানী মনে মোরে জানি' কোন মুচ হঠে হুর-ভক্ন কেটে' নাথ এ কামনা করিয়া করুণা যে-যোনি ভিতরে ক্রিয়া অমুসারে সমান বিনয় এ মম তন্ম ধরি' এর হাত শ্রর-নর-নাথ দৃঢ় অনুরাগে **८पा**—बाटमत ठतरन গল-চ্যুত হ'লে কুমুম-মালিকা

বালির শিরের 'পরে রাখিয়া আপন পাণি 🛦 উত্তরে বালি কহে শুনহ কুপা-নিধান॥ ১ चार उवाणि वाम-नाम मूर्य वाहित्व ना ॥ ধামে সকলেই সম-গতি দেন অবিনালী # ২ ੰ আর কি কখনো প্রভূ পা'ব হেন অবকাশ 🛚 🔊

> বেদ নেডি যা'ৰে সভত গাছ। ধ্যানে মূলি যা'লে কদাচ পায় # ক'ন প্রভুরাথ' এ কলেবরে 🛚 তা'দিয়ে বাবুল গাছেরে ছেরে 🛚 🔾 কুপা-চ'থে হের দেহ সে-বর। যাই প্রেম রহে চরণ 'পর ম वन कुला कति भत्रा नहा वकरम मात्र-शरम वत्राख । २ বালি করে ভমু ভ্যাগ। তা যথা জানে না নাগঞ ৷ ১০

फाबात विमान. बीबादमत फाबादन छेनदमन

চৌ-পাঠাইলেন রঘুনাথ বালিরে আপন লোক। আসিল ব্যাকুল হ'য়ে নগরের যত লোক ॥ করিল বিলাপ তারা আসিয়া কতই মড। ভারারে আকুলা হেরি' রখুনাথ দয়া করি'। কহিলেন ক্ষিতি বারি ব্যোম ডেক সমীরণ। সে দেহ ভোমার আগে ভূমিতে পড়িয়া রহে। উদিত যখন ভ্রান পড়িল চরণ 'পর। শিব ক'ন উমা সবে কাঠের পুতুল মত। ক্রিলেন সুগ্রীবে তখন আদেশ দান।

এলায়িত কেশদাম দেহ মহে সংযত॥ ১ করিলেন জ্ঞানদান লইলেন মায়া হরি'। এই পাঁচ হ'তে অতি ছার দেহ বিরচন ॥ ২ সনাতন জীৰ ভবে কেন ভব মন দহে॥ যেচে' নিল উা'র পাশে পরমা-ভকতি বর 🛚 🗸 নাচান প্রীরাম প্রভু চরাচরে আছে যত ॥ যথা-বিধি সাধে বালি-মুডক্রিয়া অনুষ্ঠান ॥ ৪

অ্ত্রীবের রাজ্যাভিবেক

ডা'র পর রাম ক'ন বুঝাইয়া লক্ষণে। ব্রামের আদেশ শিরে ধারণ করি তথন।

> ডাকা'য়ে বিপ্ৰ স্থগ্রীবে আর

বসাও আপনি গিয়া স্থগ্রীবে রাজাসনে 🛭 নমিয়া চরণে তাঁর করিল সবে গমন 🛚 ৫

> নগরবাসী-সমাঞ जनरम युवब्रोक । ১১

বো-লক্ষণ স্বরা রাজা দিলেন

🧲 🕳 বানি 🎒 রাম শম হিডকারী জগময়। কিবা গুরু মাতা পিডা ভাই প্রভূ কেহ নয় 🛭 দেবতা মানৰ মূনি সকলেরি এই রীতি। আকুল বালির ত্রাসে ছিল বেবা দিবা রাতি। সেই স্থগ্রীবে দেন কপিদের রাজাসন। জানিয়াও করে যা'রা হেন প্রভ পরিহার। অভঃপর সুগ্রীবে কাছে করি' আহ্বান। **ক্ছিলেন স্থ**গ্রীব গুন সথা কপিরাজ। নিদাত হ'য়েছে গভ বরষার আগমন। অঙ্গদ সনে ভবে কর তুমি এবে রাজ। স্থগ্রীব ফিরে' যবে আদিল আপন পুরে।

স্বার্থের তরে করে অপরের সনে প্রীতি ॥ ১ শরীরে আঘাত বহু ভাবনায় ভরা ছাতি # অভীব কুপাল রাম রমুকুল-বিভূষণ ॥ ২ কেন না বিপদে নর পড়িবে না বার বার # নুপতির বছনীতি শিখা'লেন প্রভুরাম 🛭 🕹 চারি-দশ বর্ষ আমি না রব' বস্তি-মাঝ ॥ নিকটের শৈল 'পরে রহিব আমি এখন ৪ ৪ কিন্তু স্মরণে সদা রাখিও আমার কাঞ্চ 🛭 গেলেন স্থারাম ভবে প্রবর্ষণ গিরি 'পরে । €

বো—আগেই দেবতা কিছদিন এসে

রেখেছিল তথা করিবেন বাস

রচি' গুড়া ফুন্দর। কুপাধার রঘুবর॥ ১২

(ठो--- মঞ্ কানন-ডল কুমুমিভ অভি শোভা। গুঞ্চে মধুপ দল মধুলোভে মনোলোভা॥ कल भूग ७ कल-भेज मानम-इत । **অফুপম ধ্রাধ্র করি' রাম দর্শন**। ভ্রমরা বিহুগ মুগ-দেহ ধরি' দেবদৃশ। যবে হ'তে রমাপতি করিলা কাননে বাস। স্ফটিকের শিলা এক অতি খেত মনোহর। জ্মুক্তের পাশে ক'ন কাহিনী-কথা অনেক। প্রারুট্-গগনে খন-আর্ড ব্লব্র ।

ছেয়ে'ছে কানন যবে আসিলেন রঘুবর 🛚 ১ স্থর-ভূপ আভাসনে করিলেন নিবসন # করেন প্রভুর সেবা সিদ্ধ মূনি সকল ॥ ২ ভবে হ'তে বন হ'ল সব মঙ্গলাবাস ॥ সুখাসনে সমাসীন হুই ভাই ডগুপর॥ ৩ ভক্তি বিরতি আর রূপ-নীতি ও বিবেক। গরক্ষন-রত লাগে অভি প্রাণ-মনোহর॥ ৪

वर्षाचकु वर्षन

খে--সম্মণ হের বিরাগ-তাৰণ

নাচে শিথিগণ গৃহী প্ৰীত যথা হেরি' ঘন নভঃ 'পর। নেহারি' ভক্তবর । ১৩

(5)—अथरत कनश्त करत रचात्र शतकन। দামিনী-দমক আর খন-মাকে নাহি রয়। बद्भेन-निकृष्टि स्नारम वदाय क्रमण प्रमा। ব্রষ্টি-কণার ছাড সহে গিরি সেই মড। প্লাবিয়া ভালিয়া তট ডটিনী ছটি'ছে তথা। ধরণী-পর্মে নীর তেমনি মলিন হয়।

ভরাসে শিহবি' উঠে প্রিয়াহীন মোর মন & খলের প্রশন্ন যথা কথনই স্থির নর। ১ विश्वा मिख्या नड (यमन कानी मकन । ष्ट्रहे-वहरन माधु यथा नरह विह्निष्ठ ॥ २ यञ्च विरुष्ठ थन मर्गामा छूरन वर्षा ॥ বেই মড মায়াজাল-বিজড়িত জীবর্চয়। ৩

সদ্পুণ যেইমত জড় হয় সাধু-পাশে। জ্রীহরি লভিয়া বথা জীবগণ হয় স্থির। বারি-সমাবেশে তথা সরসী ভরিয়া আসে # তেমনি সাগর মাঝে প্রবেশি' তটিনী-নীর # &

দো—ভূণে আরুত

শ্রামলা ধরণী উদয়ে বেমন নাহি দেখা যায় পদ্ব। লোপ পায় সম্প্রন্থ । ১০

ভণ্ড-মতবাদ উদয়ে

(চী—মধ্র দাহর-রব চারিদিকে অসু-'ধন।
নব কিশলয়-সাজে সাজিয়াছে তরুদল।
অর্ক * জবাসা এরা পত্র হারা'য়ে দীন।
ধূলি আর ধরাপরে নাহি নিলে সন্ধানে।
শত্তে সাজিয়া ধরা সেই মত সুশোভিত।
রজনীর ঘন-তমে খন্ডোত শোভাপার।
ক্ষেত্রের বাঁধ ফুটে ধারা-বরবার জলে।
জানী যথা ত্যাপ করে মদ আর মোহ মান।
চক্রবাক্ পাথী আর চ'থে নাহি দেখা বার।
উবরে প'ড়েও বারি তৃণ নহে উদ্গত।
বিবিধ প্রাণীতে ধরা সেইমত শোভমান্।
পথিক স্থাপত-গতি হ'য়ে যথাতথা রয়।

মন লোপ পায় সদ্গ্রন্থ ॥ ১৪
বেদপাঠ করে যেন মিলি যত যডিগণ ॥
বিবেক সাধক-মন যথা করে ঝলমল ॥ ১
স্থ-রাজার রাজ্যে খল যেমন উভ্তমহীন ॥
ধর্ম লুকায় যথা ক্রোধরিপু আগমনে ॥ ২
উপকারী মানবের সম্পদ যেইমভ ॥
দন্তীর দল যেন গড়িয়াছে সম্প্রদায় ॥ ৩
নক্ত যেমন হয় নারী স্থাধীনতা পেলে ॥
নিড়ায় ভেমনি ক্ষেভ কৃষিদল মভিমান্ ॥ ৪
কলিযুগ-সঞ্চারে ধর্ম যথা লোপ পার ॥
ভকভের জলে কাম উপজেনা যেইমভ ॥ ৫
বেমন স্থ-রাজ পে'লে প্রাল হয় যর্জমান্ ॥
ভানের উদয়ে যথা ইক্রিয়-দশা হয় ॥ ৬

জো-ছারখার করি' কু-ভনর কুলে কখনো দিবসে মুচে পুন: জাগে জ্বল-পট্ল উদিলে যেমন ঘোর আঁথিয়ার জ্ঞান বেই মড কজু বারু বেগে বর। ধরমের নাশ হয় ॥ ১৫ (ক) কজু ভাতে দিবাকর। মু-কু-সঙ্গ ক'রে জর॥ ১৫ (খ)-

(b) —বরষা অভীত এবে শরতের আগমন।
ফুল্ল কাশের ফুলে ধরাতল আরুত।
সমুদিত ছায়াপথ জলেরে করে শোষণ।
সরসী তটিনী-বারি নির্মাল শোভাময়।
ভকায় সরসী নদী সেই মত ধীরে ধীরে।
শরৎ এসেতে জেনে 'খঞ্জন আসে ফিরে'।
নাহি ধূলি কর্দম শোভে বহুমতী হেন।
জল-সংহাচে মীন সেইমত আফুলিত।
মেঘহীন নির্মাল শোভি'ছে শরদাকাশ।
কোধাও বা মৃত্ব লমু শরতের বরষণ।

কিবা মনোহর শোভা দেখ দেখ লক্ষণ ॥
প্রার্ট আপন জরা খেন করে প্রকাশিত ॥ ১
সন্তোব আসি' যেন লোভেরে করে ছরণ ॥
অপগত মোহমদ সাধুর যেন জনর ॥ ২
আনিজন মমভারে বেইমভ ভাগ করে ॥
পুণ্য যেমন কিরে' আসে শুভ-অবসরে ॥ ৩
সুনীতি-নিপুণ রুপজন-আচরণ যেন ॥
বিবেক-বিহীন সুহী খন বিনা বেইমভ ॥ ৪
শোভে যথা ভক্তেরা পরিহরি' সব আশ ॥
আমার ভক্তি যথা লভরে বিরল জন ॥ ৫

(प-इत्रविक हरन হরির ভক্তি

পুরী ছাড়ি' যোগী লভি' যথা ভালে

বণিক রূপ ভিখারী। শ্রম আশ্রমী চারি। > >

(5)—সুখে রতে সেই মীন অগাধ জলে বে রয়। হরির শরণে যথা কোন বাধা নাহি রয়। श्रुमि' मन भंडमन विड्रात सुवमा उपा। अक्ष मध्यक्त मृथत । असूर्मा। চক্ৰবাক্ ছথে ভাসে বামিনী আগত দেখি। **চাডক ফাটার গলা** ত্বা ডা'র অভিশর। শরৎ-আতপ-ভাপ শশী হ'রে লয় রাতে। নিরখিয়া শশধর চকোরেরা সেইমড। अनक म्हान यक नहे जिस्सद खरव।

ব্ৰহ্ম রহিত-গুণ সগুণ হইলে যথা ৷ ১ युष्प त अर्ग-तव माना व्यक्ति-मत्नादम ॥ পর-সম্পদ হেরে বেমন কু-জন গুণী ॥ ২ भक्त-(जाही यथा कछ सुधी नाहि हम् । যথা পাপ কেটে যার সম্বের সাক্ষাতে ॥ ৩ হরি পেয়ে ভকভেরা চে'রে রয় যেইমভ। कुलनाभ दर यथा विधा-त्यारदत ভरत ॥ ह

শে-বরবার-জাত সংশয় ভ্ৰম

জীব ছিল যভ অপুগত যেন

শরতে পেয়েছে নাশ। সংগ্ৰহ পে'য়ে পাশ ॥ ১৭

च्योर्वत छेनत बितारमह जनरसाय : नकारनत रकाध

চৌ-বরষা অতীত হ'ল নিশ্মল ঋতু এ'ল। কোন মতে একবার যদি সন্ধান হয়। বেশানেই থাক সীডা যদি প্রাণে বেঁচে' রয়। লভি' ধন লভি' পুরী বনিতা ও রাজাসন। ৰালিরে যে-শরষায় পাঠা'মু সদনে কাল। বাঁহার কুপায় উমা মোহ মদ খুচে যায়। मुनि छ्यानी ब्राम-পদে मैं(भ'रहन याँ ब्रामन। বুঝিলেন লক্ষ্মণ ক্রোধবুড ভগবান।

অখনও নাহি ভাত সীভার বারভা এ'ল ॥ নিমেব মাঝারে আনি কালেও ক'রেবিজয় । ১ যতন করিয়া ভাত আনি ভা'রে নিশ্চয়। স্থাীব মোর কথা হইরাছে বিসরণ॥ ২ সেই শরাখাতে মৃচে বিমাশ করিব কাল # অপনেও তাঁর ক্রোধ কখনো কি ভাবা যায় 🕪 তাঁ'রাই জানেন দীলা প্রাভুর ইহা (ক্ষমন। ধমুতে চড়া'য়ে জ্ঞা লইলেন করে বাণ ॥ ৪

(प)-वश्रुष ७४न

বুৰা'লেন রাম

করণার পারাবার। স্থগ্ৰীৰে একবার ॥ ১৮

खय स्वाहेशा হেধা আন' ডাড (5)---अमिरक शवन-शुष्ठ मरन मरन ठाडिन। সমীপে করিয়া গভি স্থগ্রীবে প্রণমিল। শুনি' সৰ স্থাীবের ভয়ে ভীত হ'ল প্রাণ। এখন প্রন-শ্রভ না করিয়া কালক্ষয়। ৰ'লে দাও পক্ষ মাঝে বেবা কিরে' না আসিবে। আমার করেতে তা'র নিশ্চিত প্রাণ যা'বে 🛭 এ ওনিরা দুডগণে ডাকাইল হয়ুমান।

শ্ৰীরামের দেওয়া কাজ স্থগ্রীব পাশরিল # সাম দান ভেদ দও-নীতি কহি' বুঝাইল ৷ ১ ক্ষে বিষয়েই মোর হ'রে নিল সব জ্ঞান » পাঠাও সকল দিকে কপি-সেনাইসমুদয় ৮২ সকলের প্রতি করি' বছবিধি সম্মান । ৩

^{🕫 💐} हैविव कक्षि गांक कवित्रा छोतिरिय, बालवी (वश्न गांधन-कनिक शृदिल्लंग शृदिल्लंग करवन, সেইयक वर्षाप्त परक मन्द्र कडू मारेंबा, बांकं, कमवी, वनिकु, क्रिवाडी--मक्टन्टे निक निक भूकी (बाळव्यक) क्यांत्र कविद्रा वाहिंद ब्हेरकाइन। ई क्रीन।

ভীতি-প্রদর্শন আর প্রীতি-নীতি দেখাইল। হেন অবকাশে পুরে আসিলেন লক্ষণ।

চরণে করিয়া নতি সকলে ভবে চলিল # क्तांथ (इति² कशिष्ण मत्य करत शलायन ॥ 8-

(मा—शब् छेठीरेग्रा হেরিয়া সবারে ক'ন ভবে পুরী অভীৰ ব্যাকুল

দ্রিয়া করিব ছার। আদেন বালি-কুমার। ১৯

(5)—চরণে নমিয়া শির করিলেন স্থাতিবাদ। ক্রোধ-যুক্ত লক্ষ্মণ প্রবণ করিয়া কাণে। হতুমান কথা শুন ভারারে সাথেতে ল'য়ে। ভারারে সাথেতে ল'য়ে গিয়া তবে হনুমান। মিনতি করিয়া কত মন্দিরে আনে তাঁরে। তা²র পর কপিরাজ চরণে করে নমন। বলে বিষয়ের সম মদ কিছু নাতি নাথ। মিনতি আবণ করি' সুখেতে মগন মন।

লক্ষ্মণ অভয় দেন তুলিয়া আপন হাত # কহিলেন অভিশয় সন্ত্রাস-ভরা প্রাণে ॥ > কুমারে মিনভি করি' এখনি বুঝাও গিয়ে # বন্দি' চরণ তাঁ'র স্থক্ত করে যশোগান। ২ धुशारिय চরণ যুগ বসায় শয়ন 'পরে ॥ লক্ষণ হাত ধরি' করিলেন আলিঙ্গন ৮ ৩ মুনির(ও) মনেতে কণ-মাঝে হয় মোহ-পাত ▶ ভাহারে অনেক ভাবে বুঝা'লেন লক্ষণ॥ ৪

बिताय-प्रकीय-गरवाप

(प)-- हिन इत्रव লক্ষণে আগে

স্থগ্ৰীৰ ডবে করিয়া সকলে

ज्यक्रम जानि माथ। यात्र यथा त्रधुनाव ॥ २०

(5)—চরণে নমিয়া শির কহে করি' করছোড়। তে নাথ ইহাতে কিছু অপরাধ নাহি মোর # ছে দেব ভোমার মাহা প্রবল নিরভিশয়। সবাই বিষয়-বশ' স্থর নর মুনি স্থামি। রুমণী-নয়নশর যেইজনে নাছি লাগে। গুলায় লোভের ফাঁস নাহি পরে যেই জন। কেবল সাধনা-বলে এগুণ না পাওয়া যায়। ख्यन ब्रीवाम क'न वहरम क्षेत्रर हाति। সে যভন কর ছরা দিয়া সবে প্রাণ মন।

जूमि यिन मेश कत्र खटावें खां मृत इंग्र ॥ ১ আমি ত পামর পত বানর চরম কামী॥ **ঘোর ক্রোধ-ভমোলিশি-মাঝে যেবা সদা আগে ॥**২ সে ত'ভবে ডব সম ওহে প্রভু সনাতন । ভোমারি করণা-বলে কোন কোন জন পায় 🛚 ৩ অমুক্ত ভরত সম তোমা আমি ভালবাসি 🛭 कानकी ह एवं गार्ट अर्व हम निक्रश्व । 8

সীভার সন্ধানে বামর-সৈক্ত প্রেম্বণ

পো-হ'তেছে এ ভাবে বিবিধ বরণ

ক্ৰোপক্ৰম य मिरक्रे (रूत व्याशिन बानवश्रम। ख्या कृषि क्षेत्रगन ॥ २)

চৌ-ভবানি বাদর সেনা করিয়াছি গরশন আসি' শ্রীরামের পদে প্রথমে বানরচয়। কপি-সেনা মাঝে ছেন না রহিল একজন **८**। छुद्र निक्ष्ठि किছू मञ्जवहीन नेव ।

मूछ (म छ। रावद्र त्यवा कविरक हारह शवन । চাर्रिया त्म करनेवरम कुकोर्च र'रव अग्र ॥ S याश्रीत कुमण अभ ना कृतिका विकासन ! বিশ্বরূপ শ্রীরাম ধ্যে ব্যাপ্ত: মুগজন্ম । ২

च्याका भारेश यथा जवा नत्व मांफ्रांरेन। देश जीवारमर्व काक जात त्यांत जलनत । सनक-प्रशिक्ष भीकारमधी कर्त्र छ करा। -अंगाषिन-भरते स्वरा चानित्व इ'रत्न विकन ।

ভাদিদে' সকল কথা সুগ্ৰীব বুঝাইল ॥ पर्म पर्म हात्रि पिरक यां छ हा वानतहत्र ॥ ० মাস-গতে সৰে ভাই আসিৰে করি' বিশেষ ঃ मद्रण व्यामाद करत (करन' (द्रव' व्यक्तिक । ह

(ए)-एनिया चारम স্থগ্ৰীৰ ডবে

কপিরা চলিল ডাকা'লেন নল पत्रा हातिस्क शास्त्र । व्यक्त रहमादन । २२

4्छो-छन नीम सम्म छन वीत रहमान। -मार्व वीत्र-धूतकात यां व मक्तिन भारतः। कान्न यन कारनाज छेलान कन्नह चित्र। ভান্থ-দেবা পৃষ্ঠযোগে বক্ষযোগে হুডাশন। শায়া ছাড়ি' করিবারে হয় দেবা পরলোক। কলেবর ধারণের এই শুভ পরিণাম। সেই সব-গুণজ্ঞাত। বড় ভাগ্যবান সেই। আদেশ করিয়া জিক্ষা চরণে নমিয়া শির। সকলের শেষে পায়ে নতি করে হনুমান। পরশ করেন শিরে সহ স্রোক্ত পাণি। ক্ষেন প্রবোধ দিও বহু ভাবে জানকীরে। জনম সকল হ'ল মনে ভাবে হতুমান। यनिও প্রভুর পাশে কিছু নহে অজানিত।

শাসুবান ধীরমতি স্ফুচতুর জ্ঞানবান ॥ मी**जा**द উদ্দেশ-कथा **७**थां व मकन स्रात् ॥ ১ যা'তে নির্বাহ হর কাজ রাম রখবীর 🕯 সর্বভাবে প্রভু-দেব। ছল করি' বরজন ॥ ২ যাহাতে মিটিবে সব সংশয়-খাত শোক। সকল কামনা ছাডি' আরাধনা করা রাম ১ ৩ 🕮 রাম-চরণ 'পরে অনুরাগ-বৃত্ত যেই ॥ -हिन रुद्ध खर्ज खर्म धनि त्रचुरौत ॥ 8 কার্য্য-বিচার করি' নিকটে প্রভু ডাকান ॥ অঙ্গুরী খুলি' দেন আপন ভকত জানি'॥ ৫ মোর বল আকুলতা কহি' বরা এল ক্লিরে # **5 लिल खपर मार्या दाथिया कुलानिशन ॥ ७** ভবু রাজনীতি তা'র হইতেছে আচরিত 🛭 ৭

ডো—চলে আলোড়িয়া জীরামের কাজে

কানন সরিত ভশ্বর মন

भूँ एक नमी श्रष्टा शित्रि। দেহ-বোধ বিশ্ববি' ৷ ২২

তপ্তিনীর সহিত বানরগণের সাক্ষাৎ

<ি—বৃদ্ধি কোন রাক্ষণ সনে দেখা হ'য়ে যায়। করে তা'র প্রাণ নাশ এক এক চপেটায় a কভই প্রকারে খুঁজি' সবে গিরি কান্ধারে। পুঁ জিবার প্রম-ভারে ছাতি ফাটে পিপাসায়। হুতুমান নিজ মনে করিল এ অধুমান। ष्मारताहि कृथत-मिरत ठात्रिमिक शास्त ठात्र। -छेफि'ट्र अत्राम वक ठक्कवाक ठाविशादा । श्रविक हका इ'एक दश्यान (नत्य' ज'न। সব কপি হতুমানে স্থাপি' নিম্ন পুরোদেশ।

(मथा (शएम कोन मूनि मत्य चित्त वतम की'दा #S ঘন বনে পথ ভূলে জল নাহি পাওয়। বায়॥ **এবার মরিবে সবে না করিয়া জল পান ॥ ২** কৌতৃক এক ভূমি-বিবরে দেখিতে পায়। প্রবেশ করি'ছে বছ বিছপেরা সে বিবরে ॥ ৩ সবারে লইয়া গিয়া সে-বিবর দেখাইল ঃ विमय ना कति' करत विवत भारत धारवन ॥ 8

দো-গিয়া হেরে সর মন্দির এক

বর-উপবন ক্লচির তথায়

বিকশিত বহু কঞ্চ। বসি' নারী তপঃপুঞ্জ ৷ ২৪

(b)-- पुत्र इटफ नत्व छां'त छेत्पाम धार्मिन। কভিলেন তবে তিনি কর সবে জলপান। মভ্চন করে সবে স্থমধ্র ফল খায়। তখন সে তপ্ৰিনী শুনান আপন কথা। নিজ নিজ আঁখি মৃদি' এ বিবর ভ্যাপ কর। মদিল নয়ন সবে পুলিতে হেরিল বীর। ভপ্রিনী যা'ন ভবে যথা রাম রম্বুনাথ। নানাভাবে করিলেন মিনতি ও স্থাতিগান।

ওধাইতে আপনার বিবরণ নিবেদিল ॥ সরস স্থাসর নানা কলেতে জুড়াও প্রাণ । ১ নারীর নিকটে পুন: সকলে মিলিয়া যায় ! करहन यादेव अरव अवाम चारहन यथा । २ পা'বে সবে জানকীরে প্রাণে ছখ নাহি কর # র'য়েছে সকলে মিলি' দাঁড়া'য়ে সাগর-ভীর 🛚 🕹 গিয়া পদ-শভদলে করিলেন প্রণিপাভ দিলেন ভাঁহারে প্রভু অবিচল প্রেম দান ॥ ৪

দো-প্রভুর আদেশ হৃদয়ে রাখিয়া

ধরিয়া মাপায় অজেশ-পৃঞ্জিত গেলেন বদরী-বন। **এ**রাম বুগ-চরণ ॥ ২৫

বারতা না পাই যদি কি হ'বে তখন ভাই 🛚 ১ বুঝিভেছি কু'য়েতেই অমািরে মরিতে হ'বে 🛭

अमिटक कितिया (ग'रम मातिरव वानत-ताय ॥ »

ভাহার দ্যায় নহে রাম রাখিলেন মোরে ৷ মরিভেই হ'বে কিছু সংশয় নাহি ভা'য় ॥ ৩

ভাষা নাহি আসে মূপে নয়নেতে বহে নীর #

তা'রপরে একযোগে এই কথা সবে কয়॥ ৪

কখনো যা'ব না ক্ষিরে' হে প্রবীণ ব্বরাজ !

যসিল সকলে মিলি কুশদল বিছাইয়া॥ ৫

ক্তিল বিশেষ ভাবে উপদেশে এ বচন ॥

গণাদিন ব'য়ে গেল কাজ নহে উদ্ধার ॥

বানরগণের সমুজভটে গ্রন

(b)- धिमत्क वानवर्गण खनरत्र करत्र विठात । সবে মিলে' এ উচারে এ কথাই কহে ভা'ই। নয়নেতে ভরা কল অঙ্গল বলে তবে। এদিকে সীতার কোন উদ্দেশ নাহি হায়। স্থামারে মারিত সে ড' পিডার নিধন-পরে। বার বার অঙ্গদ কহে এই সবাকায়। অঙ্গদ-খেদবাণী শুনে সবে কপিবীর। এক পল ভৱে সবে চিস্তা-মগন রয়। না করিয়া সমাপন সীতা-উদ্দেশ-কাজ এত বলি' লবণামু-সাগরের তটে গিয়া। জাত্বান অঙ্গদ-খেদ করি' দরশন। হে ডাত রামেরে কতুমানব ডে'বোনা যেন। ব্রহ্ম আ-গুণ অঞ্জ অঞ্চেয় বলিয়া জেন'॥ ৬

त्म म-खन उक्क-भरम में भिग्नाहि मनद्यान । १ ধরা ছিচ্চ ধেরু লাগি'। রছে মোক্ষেরে ভ্যাঙ্গি'॥ ২৩

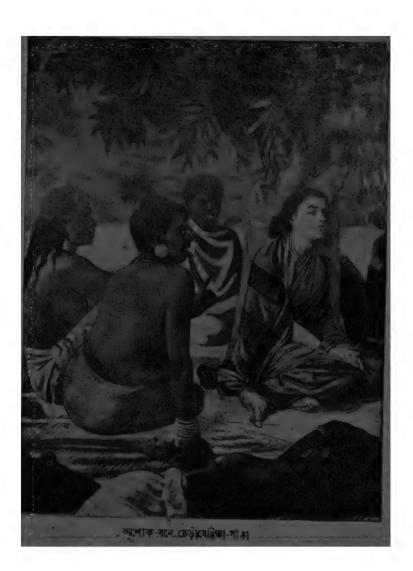
দো-শ্ব-চ্ছার প্রস্থ স-প্রণ-সেবক

সেৰক আমরা সবে অতি মহাভাগ্যবান ।

আসিলেন স্থর সাথে সেবা-রড

সম্পাতির সহিত বানরগণের কর্থোপক্ষন

এইভাবে জামুবান ক'ন কথা নানা ভাঁতি। আলোচরা-শুনে গিরি-কলরে সম্পাতি । ভাবে মোর পাঠা'লেন খাত জগদীখর # ১ বাহিরে আসিয়া হেরে বসিয়া বন্ধ বানর।



वह पिन गण र'न थान वार जैनवादम । ক্ৰনো না পাওয়া যায় উদর ভরি' আছার। শকুনির কথা কাণে আসিতে ভরেতে সারা। কলিরা দাঁডা'য়ে উঠে হেরিডেই সম্পাতি। जन्म निक मत्न विठात कतिहा क्यू। 🕮রামের উপকারে ওলু করি' বর্জন। শুনিরা বিহগ এই শোক-হর্ষ ভরা বাণী। সবারে অভয় দিয়া কাছে গিয়া গুধাইশ। मण्याणि सनि' निक महामत-साहब्रग ।

ু সবারে ধাইব আজ মিটা'য়ে মনের আশে 🛭 আজিকেই দিল বিধি সে আহার একবার 🛚 ২ এবার আমরা সবে সভা গেলাম মারা ॥ জাম্ববান-মন মাঝে চিন্তা বিশেষ অভি ॥ ৩ আহা জটায়ুর সম থক্ত কেহই নয়। হরি-পুরী পুণাবান করিল লোজা গমন # 8 আসিগ নিকটে ভরে উড়িল কপির প্রাণী। ভধন বারতা সবে সম্পাতিরে শুনাইল ॥ ৫ রামের মহিমা করে বছবিধি বরণন ॥ ৬

(स)-न'रत्र ठल त्यादत বদলে হইব

সাগর-কিনারে বচনে সহায়

তর্পণ করি ভার। পা'বে থোঁজ কর যা'র ৷ ২৭

cb)--অমুজের ক্রিয়া শেষ করিয়া সাগর তীরে । আপনার কথা কহি 'গুনাইল কপিবীরে ॥ करह छन वीत्रशन व्यथम-रयोवरन इहै। না পারি' সহিতে তেজ করি প্রতি-আগমন। পক্ষ দহিত হল সূর্য্য-তেক্তে অপার চক্রমা নামে এক মুনি মহা সদাশর। আমারে জ্ঞানের কথা কহিলেন কড মড। ত্রেভার ত্রাক্ষর হ'বে মানব-রূপ ধারণ। পাঠা'বেন তবে প্রস্তু তাঁর উদ্দেশে চর। আবার গলা'বে পাখা ভাবনা ক'রো না মনে । চন্ত্ৰমা মুনি-বাৰী সভ্য হইল আৰ। লক্ষা বিরাজ করে ত্রিকুট-গিরির ²পর। ভাছার মাঝারে যথা বিরাজে অশোক বন।

ভাই মিলি' একবার তপন-সমীপ চই ॥ ১ অভিযানী আমি করি তপন-পালে গমন 🛚 পড়িন্ন ধরণীতলে করি' ছোর চীৎকার ॥ ২ আমারে হেরিয়া জাঁ'র দহা আসে অভিশয়। দেহ-অভিমান মোর করিলেন বিপুরিত 🛊 🗢 রাবণ ডাঁহার নারী করিবে অপহরণ 🛭 ভাহাদের পে'য়ে পুড হইবে বিহগবর ॥ ৪ সীভাৱে দেখা'য়ে দিও তুমি সেই চরগণে # আমার বচন মন্ত কর সবে প্রাক্ত-কাজ ॥ ৫ তথায় রাবণ রহে স্বভাবত বিনা ভর 🛚 সে বনে বসিয়া সীতা শোকে র'ন অনু'ৰণ॥ ৬

দো-নামি হেরিভেছি স্থবির এখন

না ছের ভোমরা নহে করিতাম

শকুন-দৃষ্টি অপার। কিছু কাজ স্বাকার ৷ ২৮

८ठो-मध्यत्व त्यवा ७३ मानव मर्छ त्याबन । त्यात्र व्यक्ति ग्रंहि' गर्व समस्य वाँधह शीत । भार्श-त्रक कर्न(के) केंद्रि प्रतर काहात नामन বেচামরা ড' ডা'র মুক্ত হ'ছে আগব্যীভূ দুমুনুন

कतिरव रत प्रक्रियान जीर्भ-कोक न्यांशन ॥ बारमब कुलाय किया ईईल मम नहीं व । > অপার ভবের পারে যায় সেই ভাগারীন ॥ श्रप्रदेश क्षेत्रिया जारम क्षेत्रक मान यक्त ॥ २

ममूख-मध्यद्भन्न मूकि

হেন কহি' খগরাজ গুঞ চলিয়া গেল। আপন আপন বল করিয়া সবে জ্ঞাপন। স্থবির হ'য়েছি এবে কহিতেছে ঋক্ষেশ। বামন-রূপেতে যবে আসিলেন খর-অরি। বানরগশের মনে বিশ্বর অভি এল ॥ লভিয়তে পারাবার সন্দেহে দোলে মন ॥ ৩ নাহি আর এ শরীরে পূর্ব্ব-বলের লেশ। তখন ভরণ আমি দেহে মোর বল ভারি॥ ৪

দো-বলিরে বাঁধিতে আমি কিন্তু ডবে প্রভূ-ভমু কভ সাত বার পাক্

বাড়িল কে ভাহা বলে। লাগা'য়েছি ছুই পলে॥ ২৯

আঘবাদের হতুমানকে উৎসাহিত করণ

(5)--অঙ্কদ বলে আমি বে'তে পারি হ'য়ে পার। তবে সন্দেহ প্রাণে হয় কালে কিরিবার॥ আস্বান্ বলে তুমি যোগ্য সকল ভাবে। ঋক্ষেশ বলে কিবা বল তুমি হহুমান্। প্রন-ভনয় তুমি প্রন-সমান বল। এক্সতে কোনু কাৰ কঠিন আছে এমন। রামের কাঞ্চের ডরে হ'ল তব অবতার। কনক-বরণ তমু তেজ-ছটা উপচিত। করিল প্রনম্বত সিংহনাদ বার বার। যতেক সহায় সনে রাবণে করি' হনন। এখন হে জাত্ববান্ শুধাই শুধু ভোমারে। ভাত তুমি এই কর কহে তবে ঋক্ষেশ।

রাজীব-লোচন তবে দেখাইতে ভুজবল।

কিন্তু নায়ক তুমি সেহেতু কেমনে যা'বে ॥ ১ নীরবে বসিয়া আছ কিবা ওহে বলবান্॥ বৃদ্ধি বিবেক আর অমূভবে নাহি ডল ॥ ২ অক্ষম তুমি যাহা করিবারে সমাপন # ভনিভেই দেহ ভা'র ধরিল ভূধরাকার॥ ৩ সকল গিরির রাজা সুমেরু-সম শোভিত। হেলায় লবণ-অমুরাশি আমি হ'ব পার॥ 8 আনিব হেথায় করি' ত্রিকুটেরে উৎপাটন ॥ यथायथ व'ल मां कि कतिए ह'त सादि ॥ १ সাক্ষাৎ সীভা সনে করি' আন সন্দেশ ॥ কৌতুক ভরে সাথে ল'বেন বানর দল ॥ ৬

ছ-কপি সেনা ল'য়ে ব্দানকীরে রাম व्यानिरवन किरत तकः नामि'। স্থুর-মুনিগণ ত্রিলোক-পাবন গাবেন রামের ত্যশ-রাশি॥ যা' শুনে' যা' গেয়ে' কহিয়ে বুঝিয়ে সেই পরা-পদ মানব পায়। কিম্বর এই তুলসী গায়॥ ভাহে রমুবর-চরণ ভ্রমর

এরানগুণ-নাহাম্য

ব্যে—ভবের ভেষত

রঘুনাথ-যশ সব মনোরথ अनित्व (य नवनावी । कतिरवन जिभिन्नानि ॥ ७०(क)

েনা—নীলোৎপল-ভতু শ্রাম শুন জা'র গুণগ্রাম

সিদ্ধ ভা'দের

কোটি কাম হ'তে শোভা অধিক। বাঁ'র নাম অঘ-খণে বধিক 🕯 ৩ • (খ)

कश्चित्रका नमस्य भागभरः नकारी श्रीवामहतिक मानरनत अहे हकुर्व तानान नमास हहेन ह

(কিবিব্যাকাও স্বাধুর)

শ্ৰীগণেশার নম:

ঞ্জিলানকীবরুভের জয়

শ্রীরামচরিত মানস

পঞ্চম সোপান

স্থন্দরকাণ্ড

শ্রেষ্ঠ শাস্ত ও সনাতন অপ্রমের পাপহীন বেদান্তের অধিগম্য সর্বগত অনীশ্বর রাম-নামে অভিহিত জগদীশ সুরগুরু কুপাকর রঘুবর নুপাতর চূড়ামণি সত্য কহি রঘুনাথ নাহি স্থাদে অক্স আশা হে রঘু-পুক্রব দেহ অনক্স-ভক্তি তব অত্লিত-বল-ধাম হেম-শৈল-আভ দেহ রঘুনাথ-প্রিয়ভক্ত সকল গুণ-নিধান নির্বাণ-পরমা শান্তিদাতা
শস্তু-শেব-দেবিত বিধাতা।
মায়া-নরকায়াধারী হরি
বন্দনা চরণ যুগ করি ॥ ১
আর অন্তরাত্ম। তুমি অধিল ভূবন।
আর কাম-আদি দোষ শৃক্ত কর মন ॥ ২
দৈত্যবন-অগ্নি সম জ্ঞানী-অগ্নগণা তুমি।
কপিনাথ বাযু-স্ত ভেনাবে প্রশমি আমি॥ ৩

হ্মুমানের সাগর-লঞ্চন

টো—ছাহ্বান্ মূথ হ'তে নি:স্ত সু-বচন।
হন্ন কর মোর আদা-পথ চেরে ততক্ষণ।
যতক্ষণ পুন: নাহি ফিরি হেরি' জানকারে।
এত বলি' সবাকার চরণে নমিয়া শির।
সাগরের তটে ছিল গিরি এক সুন্দর।
বার বার রখুবীরে হুদরে করি' শারণ।
যে ভূষর পারে পদ দের হন্ন বানরেশ।
যেমতি অমোঘ শতি রামের করের বাণ।
বীরামের ভূত বলি' দাগর মনে বিচারি'।

পবন-মৃত্তর লাগে অভি প্রাণ-বিমোহন ॥
বহ ভাই সহি' ক্লেশ ফল করি' ভক্ষণ ॥ ১
হ'বেই নিশ্চর কাল প্রাণ মম সুখে ভরে ॥
হদয়ে স্মরিয়া রামে যায় হলুমান বীর ॥ ২
কৌতুক ভরে হলু আরোহিল তত্তপর ॥
তখন বিপুল বলে দিল এক লক্ষ্ন ॥ ৩
প্রবল বেগেতে ভা্রা পাতালে করে প্রবেশ ॥
তেমনি ভাবেতে কভে বায় বীর হলুমান্ ॥ ৪
মৈনাকে কৃহে প্রীর ছও ভুমি প্রমহারী ॥ ৫

পোল ইম্পান ভাবে ক্ষেত্রাম-কাল कतिया शक्त সমাগন विना করিল পুনঃ খ্রাণাদ। কোবা মম বিশ্লাম ॥ ১

হলুমান-ভুরুলা সাক্ষাৎকার

চৌ—প্রধাবিত সমুমানে দেখে যত দেবগণ।
নাগ-মাজা স্থরসারে-সবে মিলি' পাঠাইল।
দেবগণ দিলা মোরে দয়া করে' স্থ-মাহার
সাথি' শ্রীরামের কাজ কিরে' আসি' একবার।
প্রবেশ করিব তবে তব মুখ-বিবরেতে।
ভাহার মিনতি যবে কোন মতে শুনিল না।
যোজন ব্যাপিয়া নিজ বদনেরে প্রসারিল।
স্থরসা বাড়া'ল মুখ ষোড়শ যোজন ধরি'।
যেমন যেমন মুখ স্থরসা বাড়া'য়ে যায়।
করিল যোজন শত মুখ যবে আপনার।
বদনে প্রবেশ করি' আসিল পুন: বাহিরে।
কচে তবে পাঠাইল। দেবগণ যে কারণে।

করিতে ভাহার বল-বিবেচনা নিরূপণ ॥
হন্মান্-পাশে গিয়া এইমত শুধাইল ॥ ১
ভাহার বচন শুনি কহিল বায়্-কুমার ॥
প্রভুরে প্রদান করি জানকীর সমাচার ॥ ২
সভ্য করিয়া বলি এখন মা দাও থেতে ॥
হন্মান্ কহে মোরে গ্রাস যেন করিও না ॥ ৩
দ্বিশুণ বানর ভা'র নিজ ভন্ম বাজাইল ॥
বিক্রিশ করে হন্ম নিজ ভন্ম বাজাইল ॥
ভাহার দ্বিশুণ দেহ ধরে হন্ম কপি-রায় ॥
ভামনি করিল হন্ম অভি লঘু দেহাকার ॥ ৫
বিদার যাচিল ভা'রে প্রেণ্ডির অন্তরে ॥
পাইলাম পরিচয় সেই বল বৃদ্ধি গুণে ॥ ৬

দ্যো—হ'বে ভোমা হ'তে
দিয়া আশীৰ্বাদ

তুমি বৃদ্ধি বল-ধাম। হ'য়ে চলে হনুমান ॥ ২

(5) — দিকুব মাঝে এক রাক্ষ্মী করে বাস।
জন্ত জীব যে সকল উড়ে অত্বর 'পরে।
ছায়ারে ধরিয়া লয় উড়িতে না পারে আর।
পবন-স্থতের 'পরে প্রকাশে দে এই ছল।
ভাগারে করিয়া বধ পবন-তনয় বীর।

মায়া রচি' উজ্জীন বিহণে দে করে গ্রাস॥
অল-মাঝে ভাহাদের দেহ-প্রভিরূপ হেরে'॥ >
এ ভাবে গগন-চরে করে সে সদা আহার॥
ভাহার এ চতুরভা বুঝে কপি অবিকল॥ ২
অবশেষে ধার মভি পারে গেল বারিধির॥

नका-वर्गम, नकियो वथ, बसुमारमञ्ज नकाञ्च थारवभ, नकाञ्च माना वर्गम

রাম-কাজ সব যায় চলিং প্রীড

উত্তরি' হেরে হমু পরম কানন-শোভা। বিবিধ পালপ তথা কলে মুলে শোভাময়। বিশাল ভূধর এক করি' আগে দরশন। কলির মহিমা এতে নাহি উমা শিব ক'ন। শৈল-উপরে উঠি' লহাপুরী নেহারে। ভূক অতীব ভাহা অকনিবি চারি পাশে। মধুলোভে গুঞ্জরে মধুকর মনোলোভা ॥ ৩
খগ মৃগ দরশন করি' মনে সুখ হয় ॥
ভয় ত্যাগ করি' ফ্রেড করে তাহে আরোহণ ॥ ৪
প্রভুরই প্রতাপ শুধু কালে করে বিনাশন ॥
দুর্গ প্রকাণ্ড এত কহিবারে ভাষা হারে ॥ ৫
বর্ধ-প্রাকার ভা'র চাকে বিভা পরকাশে ॥ ৬

| ছ—কনক প্ৰাকার | শোভার আধা |
|---------------|------------|
| মু-পথ বাজার | গলির বাহার |
| গল অখতর | বাজি পদচর |
| 26 250123 | ৰক্ষ:-নিকৰ |

র্যাপিনর তাতে বিবিধ হর।
গঠিত সে পুরী কডই তর র
কে গণে তথার রথ বে কড়।
অতি বলধর সৈক্ত হড ৪ ১

| ৰন উপবন- | বাটিকা কানন |
|-------------------------|---------------|
| গন্ধৰ্ব মান্ৰ | নাগ স্থর-বালা |
| কোথাও বা মাল # | দেহ স্থবিশাল |
| নানা ক্রীড়া-স্থলে | अक्र महा प्रत |
| কোটি ভীমকার | বীর সমুদায় |
| কোপা পশু নর | थम निभाज्य |
| নিশাচরগণ- | কথা এ কারণ |
| জ্বীরামের শর- | ভীর্থের 'পর |
| দো —অনেক প্রহরী- | রক্ষিত পুবী |
| লঘু-রূপ ধ'রে | ঢুকিব নগরে |

कृ॰ देगदावत कि त्यां । शदा। রূপে মুনি মন মোহিত করে॥ বিরাম-বিহীন গরঞ্জ করে। আবাহে হন্দে ভর্জ-ভরে॥ ২ যভনে প্রহর। দিভেছে পুরে। व्यक्त व्यवख्त केमरत शृत्त ॥ বিস্তার করি' তুলসী গায়। দেহ ছাড়ি' গভি পা'বে স্বায় 🛭 🥏 হেরি' কপি ভাবে মনে। ঘোর নিশা আগমনে॥ ৩

(b) - मणक-ममान वसू लघु-करलवत धति'। তখন লঙ্কিণী নামে এক ঘোর নিশাচরী। মৰ্ম আমার দেখি জানা নাই শঠ তোর। মৃষ্টি-প্রহার এক হন্দু লাগাইল বলে। সম্বরি' আপনায় লঙ্কিণী উঠে তবে। খাতা যবে দশাননে করিলেন ববদান। ক্ষেন বানর-করে ২'বি ধ্বে জ্ঞানহার।। হে ভাত কি ক'ব মোর হৃত্ত অভিশয়। প্রবৈশে পুরীর মাঝে প্রাণে ধরি' নরহরি ॥ বলে কোথা যাও তুমি আমারে গোপন করি' ॥১ আমার আহার শুধু জগতের যত চোর॥ ক্ষরি বমান টলি' পড়িল ধরণীতলে॥ ২ কহিল জুড়িয়া কর সভয়ে মিনতি-ভাবে। মোরে ভা'র বিনাশের লক্ষণ ব'লে যা'ন। ৩ তথন জানিস্মনে দশানন যা'বে মারা। রঘুবর রাম-দুভ নয়ন-গোচর হয়॥ ৪

লে—স্বরগের আর হয় না সমান মোক্ষের সুখ যে শুখ পলকে তুলাদতে রাথা যায়। क्रग-माधु मरन शांग्र ॥ 8

টে -- নগরে প্রবেশ করি' কর যাহা কিছু কাজ। জ্বদয়ে ধারণ করি' কোশলের মহারাজ। বিষ হয় সুধা তাঁ'র অরিও মিতালি করে।

সিন্ধ গো-পদ বহিন শীতল-আকার ধরে॥ ১

হত্যান বিভীষণ সংবাদ

হে গরুড রেণু সম মেরু গিরি লাগে তা'রে। অতিশয় লখুরূপ ধরি' তবে হলুমান। প্রতি গৃহমাঝে পশি' থোঁজ করে জানকীর क्ष्मानन-प्रमिद्ध क्षिण श्रद्ध व्यव्या । ছেরিল শয়ন-'পরে গু'রে রয় দশানদ। चक्र चंद्रमध्येक रम्या राज श्रमताम ।

বারেক কুপায় রাম দরশন দেন যা'রে ॥ পশিল পুরীর মাঝে স্মরি' হাদে ভগবান ॥ ২ অগণন যথা-ডথা ছেরে নিশাচর যীর 🛭 দে পুরী বিচিত্র অভি কহিলে না হয় শেষ। ০ সে পুরীতে জানকীর নাহি পে'ল দরশন। हति-मन्भित छवा भुवक मिबिएछ शास ॥ 8

86

বো-রামের আযুধ-নব-তুলসীর

অন্ধিত গৃহ বুক্ষ সেখানে শৌভা কহা নাহি যায়। হেরি' প্রীত কপিরায়॥ ৫

চৌ--সভা ত' নিশাচর-নিকরের বাদে ভরা। হেপা কোথা সাধুলন-নিবাস মানসহরা ॥ ভর্ক এমনি করে হতুমান মনে মন। রাম রাম রাম রব বাহির হ'ল বদনে। এঁরই সনে নিজে গিয়া করি ভবে পরিচয়। বিপ্রের রূপ ধরি' ডাকে তাঁ'রে হহুমান্। প্রণাম করার পরে কুশল শুধা'ন ভা'র। আপনার দরশনে প্রীতি জাগে জদিমাঝে। অথবাকি দীনজনে অনুরাগী নিজে রাম।

করেন এহেন কালে বিভীষণ জাগরণ n ১ ফুল-পরাণ কপি সঙ্জন বৃঝি' মনে॥ সাধু হ'তে কাজ হানি কখনে। হ'বার নয়॥ ২ শুনিতেই বিভীষণ উঠিয়া তথায় যা'ন॥ কহেন বলুন দ্বিজ কিবা কাজ আপনার॥ ৩ আপনি কি একজন হরির ভকত-মাঝে॥ चामिल यामात एक कतिवाद जागावान ॥ ४

দো-তখন কহিল শুনি ছঁহু কায়

হতুমান সব রাম-কথা নিজ নাম। পুলক মগন মন স্মরি' গুণগ্রাম ॥ ৬

(5)—আমার থাকার কথা শুন বাযু-সুত ওহে। দশন-মাঝারে যথা অভাগী রদনা রহে। ছে ভাত অনাথ মোরে করি' মনে বিবেচন। ভামস এ কলেবৰ কিছুই সাধনা নাই। এতদিনে মনে আশা উদিল হে হহুমান। ক'রেছেন রঘুবর কুপা যবে মোর 'পরে। হমুকর প্রভু-রীতি শুন ওছে বিভীষণ। ৰলুন ড' আমি কি সে জাতিতে মহাকুলীন। প্রভাতে উঠিয়া যেবা নাম মোর লয় ঠোঁটে।

কখনো কি করিবেন রাম দয়া বিভরণ॥ ১ «সে চরণ-শতদলে প্রীতি মনে নাহি পাই ॥ সম্ভ না মিলে কুপা না করিলে ভগবান ॥ ২ তথনি দরশদান হ'য়ে গে'ছে হঠ্ভরে ॥ ভক্তের 'পরে প্রীতি রহে তাঁর অন্থ-'ধন 🛭 ৩ চঞ্চল কপি জাতি সকল প্রকারে হীন। সে দিন তাহার আৰু আহার নাহিক জোটে #9

(प)-- এमनि व्यथम ক'রেছেন দয়া তবু শুন স্থা তা'র গুণ স্মরি' মোর 'পরে রখুবীর। নয়নে ভরিল নীর॥ ৭

(5)—বানিয়াও প্রভু হেন তাঁহারে ভূলে যে বন। ঘুরে ম'রে কেন ছুথে না হ'বে সে নিমগন ॥ এই ভাবে বিবরিতে জীরামের গুণগ্রাম। তখন সকল কথা কহিলেন বিভীৰণ। 😘ন ভাই বলে হয়ু তবে বিভীষণ-পাশ।

ভাষাতীত তৃত্তি পে'য়ে মহাশাস্ত হ'ল প্রাণ॥১ জনক-ছহিডা সীতা যেভাবে তথায় র'ন। জানকী মায়েরে মোর হেরিবারে অভিলাষ ॥২

ज्ञानवरम जीजारक (प्रविद्या स्थूमार्टम्ब क्रःच ; রাবণের সীভাকে ভয় এখর্ণন

দেখার উপায় সব বিভীষণ ব'লে দিল। श्रुवः शधुक्रश धति' कतिन ख्या श्रम्म ।

বিশায় গ্রহণ করি ইন্নমান চ'লে পেল 🛚 **जुल्लाक्र-क्रा**नन-भारव जानकी यथाह त'त ॥ ७ হেরিডেই মনে মনে করিল তাঁ'রে প্রণাম। ক্ষীণ তত্ত্ব নিরে ঝুলে কটাময় এক বেণী।

বসিয়াই কাটে তাঁ'র প্রতি রাতে চারি যাম ॥ क्रवर्य व्यापन मना जीवार्यव खन-रश्चनी ॥ 8

বো-আপন চরণে

' লাগা'য়ে নয়ন

রামপদে মন লীন।

উদিল দারুণ ছুখ হন্তু প্রাণে জানকীরে হেরি' দীন॥ ৮

C5]—বিটপী-পল্লব মাঝে রহিল সে লুকাইয়ে। কি কর। এখন যায় এ বিচাব শুধু ছিয়ে॥ হেন অবসরে তথা উপনীত দুখানন। অনেক প্রকারে ধল জানকীরে বুঝাইল। কহিল রাবণ শুন জ্ঞানবতি সুনয়নি। শপথ তোমার পাশে হ'বে তব অমুচরী। মাঝে তৃণ ব্যবধান রাখি' বৈদেহী क'ন ●। 😎 न नगानन आन स्वानाकोत स्वाडिः-धार्य। একথা ব্রিও মনে আবার জানকী ক'ন। শুক্তে আমারে শঠ করিলি অপহরণ।

সাথে ল'যে নারী বহু করি' নানা প্রসাধন ॥> সাম দান ভয় ভেদ এ সকলি দেখাইল। আছে মোর যতক্ষন মন্দোদরী-আদি রাণী॥ ২ একবার মোর প্রতি চাহ শুধু আঁখি ভরি'॥ সে পরম প্রেমময় শ্রীরামে করি' স্মরণ॥ ৩ কমলেরে বিকশিত কম্ভ কি কবিতে পারে » রামের শরের কথা হইও না'ক বিস্বুণ ॥ ৪ লাজ নাহি আসে তোর লাজহীন রে অধ্য॥৫

সো-আপনারে শুনি' শুনি' রুচ বাণী

জোনাকীব প্রায় নিকাশি' অসি

তপন-সমান রাম। কতে রোধে দহমান॥ >

(5)—জানকি করিলে তুমি আমার এ অপমান। কাটিব ভোমার শির সহ ভীম এ কুপাণ। विनय ना कति' नरह स्मान ना स्मात वानी। শ্রামল সরোজদাম সম প্রাণ-বিমোহন। এ গলে সে ব'হু নহে ভোমার কুপাণ ঘোর। সীতা ক'ন চন্দ্রহানণ হর' মম পরিতাপ। নিশিত শীতল অতি ভোমার এ বর-ধার। ममानन विश्वारत हुटिं आत्म अ कथाय । ৰত রাক্ষসগণে রাবণ ডাকা'য়ে কয়। মাসেক ভিতরে যদি মোর কথা নাহি মানে।

नत्र विश्वभूषी श'रव ভোমার জोवनशानि ॥ ১ করী-কর সম প্রভু-ভুজবুগ দশানন। ছই মাঝে এক খল এই স্থির পণ মোর ॥ ২ রঘুপতি-বিরহের দারুণ অনল-ভাপ ॥ হরণ করহ মম ত্রুপের গুরুভার ॥ ৩ ময়-সুভা তবে ডা'রে নীডির ভাবে বুকার 🛚 मकरण विविध ভাবে সীভারে দেখাও ভয় ॥ 8 कुलात्वत चाग्र करव छेहात्त्र विश्व व्यार्थ ॥ १

(पा-छरान भमन मीजारत स्पर्धात्र

करत्र प्रचीनन নানাবিধ জয ट्या भिभाविनीवृत्स ।

আইস্টিভিড পূক্তবের সৃষ্টিভ বাক্টাপাপ করিতে নারীমের বে বাজাবিক সম্ভাব ব্যবহাম (বা পর্বা) থাকে, व्याज चारा मुंबेक राविरावं अवसान नारे ; कारे मौका विशायक माउन कतिशः, त्यम अवनाहि कृत प्राज्यक सम्बद्ध (भर्षा) यद्यम वाक्तिहै, वाक्तव मृद्धि प्रश्ना कृष्टिक भाषक कृष्टिमन (🍴 क्षत्रवृद्धि ।

भीखा-जिच्छा मरवाम

চৌ— ত্রিকটা নামেতে ছিল রাক্ষসী একজন। আপন অপন কথা শুনা'য়ে সবারে কয়। অপনে হেরে'ছি পুরী বানরে করে দহন। নগ্ন লকেশ আর আরেট রাসভ 'পর। এই ভাবে দশানন দক্ষিণ দিকে যায়। নগরে সকলে করে শ্রীরামের জয় গান। দেখে'ছি স্থপন বাহা কহি করি' চীৎকার। শুনিয়া ভাহার বাণী সবে প্রাণে ত্রাস পায়।

বিবেক-নিপুণ। সেই রামের চরণে মন # জানকী-সেবায় নিজ হিত কর সঞ্চয়। ১ নিশাচর-অনীকিণী সবারে করে হনন ॥ মুণ্ডিত শির ভা'র পণ্ডিত বিশ কর ॥ ২ লক্ষার রাজাসন বিভীষণ বেন পায় 🛭 ভা'র পর রম্বর সীভারে ডাকি' পাঠা'ন ॥ ৩ সত্য হ'বেই হ'বে গত হ'লে দিন চার॥ সকলে মিলিয়া পড়ে জনক-স্থতার পায় ॥ ৪

দো-করিলে প্রয়াণ মাদ গত হ'লে সকলে তখন নিশ্চয় নীচ

চিন্তা দীতার মনে। আমারে বধিবে প্রাণে ॥ ১১

🖒 — ত্রিকটার প্রতি ক'ন করিয়া হু'কর ক্লোড়। তুমি মা সঙ্গিনী শুধু এ বোর বিপদে মোর 🛭 ষরা যাহে দেহ যায় কর তুমি দে উপায়। বিরচিত কর চিতা আহরিয়া ইন্ধন। আমার দয়িত-প্রেম সতা কর কুপা-গুণে। ভনি' কথা পায়ে ধরি' কত ভাবে বুঝাইল। নিশিতে অনল কোথা পা'ব কহ স্থকুমারি।

তু-সহ বিরহ আর মো' হ'তে না সহা যায়॥ > ভাগতে অনল মাতা কব পরে সংযোজন। কহ শুলসম বাণী সদা কাণে কেবা শুনে । ২ প্রভুর প্রভাপ বল যশোগাথা শুনাইল। এ কহি' ভবনে নিজ চ'লে গেল নিশাচরী ॥ ৩

সীভা-হমুমান্ সংবাদ

ভানকী ভাবেন মনে বিধাতাই প্ৰতিকৃল। অম্বরে বিরাজিত ওই অসার এত। ইন্দু পাবকময় না ঢালে অনল-ধারা। ভনহ মিনতি মোর ভরুবর হে অশোক। ত্তর নব-কিপলয় পাবকের সমতুল। অভীৰ বিরহাকুল সীভারে দরশ ক'রে।

> সো-করি' কপি হুদরে বিচার দিল যেন অশোক অঙ্গার

(চ)—দেখিয়া তখন সেই অঙ্গুরী স্থলর। ক্রকিড হটুয়া চাহি' রহেন ভারারে চিনে। লে অজের রখুনাথে কে করিতে পারে জয়। এই মত माना कथा ভাবেন **चानको म**न्ता।

মিলিল না ভ্তাশন মিটিল না হাদি-শূল 🛭 একটাও ভা'রা কই মহী'পরে পড়ে না ভ'॥ 8 এ যেন আমারে বুঝি' চির্ভরে ভাগ্যহারা। নামেরে সফল কর অপহর' মোর শোক॥ ৫ দাও বহিন বাড়া'য়ো না আর এ বিরহ-শুল 🖫 কর-সমান প্রতি'খন কপি মনে করে। ৬ অঙ্গুরী ফেলি' দিল সাঁডায়। रुविर कानको निरमन खा'य॥ ১२

🕮 রামের নাম যাহে 🕶 বিত মনোহর 🔉 हत्रय-विदाप वर्ड गहत छाँहात भूत ॥ ১ মালার এমন গড়া ডাও সম্ভব নর। ें ब्रह्म खेरव इंपूजान मधुष राजन निर्मा है है

বামচন্দ্র-গুণগাথা স্থক করে বর্ণিতে। লাগা'য়ে প্রবণ মন কবেন কথা প্রবণ। আবণের স্থা-সম যে শুনা'লে এই ভাষ। তখন নিকটে তাঁ'র করে গতি হলুমান। জননী জানকি রাম রমুবব-দৃত আমি। আমিই এ অঙ্গুরী সাথে মাত: আনিলাম।

ওনিযা সীতার হুখ মপগত চিত হ'তে॥ আদি হ'তে সৰ কথা শুনায় হনু তখন॥ ৩ কেন ভাই সম্মুখে নাহি হও স্থুপ্ৰকাশ। পিছন ফিরেন সীতা বিশ্বয়ে ভরে প্রাণ॥ ৪ সত্য আমার ভাষা শপথ ক্রদয়-যামী ॥ তোমারে এ অভিজ্ঞান পাঠা'যে দিলেন রাম ॥ ৫

দো—প্রণয-পৃবিত কপির বচন জানিলেন তা'ৱে বাণী কায় মনে

শুনি' জাগে বিশ্বাস। কুপানিধানের দাস ॥ ১৩

নেচী—হবিব ভকত জ্বানি' প্রীতি বাড়ে অন্তরে। পুলকনে তছু ছাঘ নয়নেতে জল ভরে। বিরহ সাগব মাঝে ডুবিতে হে হমুমান। এখন কুশল কহ আমি যাই বলিহারী। স্থাকোমল চিত তিনি কুপাম্য রঘুবায়। সহজ-সভাব ভরে ভকতে সুখদায়ক। আমাব নথন ভাত আর কভদিন পর। বচনে সরে না ভাষা নযনে ভরিল জগ। সীভারে হেরিয়া কপি অতীব বিরহাকুল। জননি অনুজ সনে কুশলেই প্রভুর'ন। আব কিছু ভাবি' মাতা করিও না খেদ মনে।

তুমিই হইলে তাত বাঁচাবার জল্যান। ১ অমুজ-সহিত সুখ-নিকেতন খর-অরি॥ এ নিঠর আচবণ কি হেতু তাঁহার হায। ২ क्थरना व्यातन कि रंगा आमारत त्रघुनायक ॥ হইবে শীতল হেরি' খ্যাম মৃত্-কলেবর ॥ ৩ ক'ন নাথ আমারে কি ভুলিলেন অবিৰুদ। বিনীত ভাবের সনে বলে বাণী অমুকুল ॥ ৪ তব হুখে হুখী অতি সদা কুপা-নিকেতন॥ বিগুণ ভোমাব 'পবে প্রেম রয় প্রভু-মনে॥ ৫

দো-রামের বারতা এ বলিয়া কপি

শুন মা এখন গদগদ হ'ল

পরাণে ধরিয়া ধার। নয়নে ভবিল নীর॥ ১৪

(6)—ব'লে দিয়েছেন রাম জানকি বিযোগে তব। বিপরীত মোরে সব হয এবে অহতে ॥ নব-কিশলয় যেন হইযাছে হুভাশন। কমলেব বন লাগে শুলভবা বন-প্রায। প্রাণারাম ছিল যা'বা পীড়া দেয় ভা'রা সবে। কহিলে প্রাণের খেদ হয় কিছু প্রশমন। ভোমার আমার মাঝে প্রণ্যের ভেদ যাহা। দে মন আমার সদা ভোমারি নিকটে রয়। প্রভুর প্রেরিত বাণী জানকী করি' প্রবণ। হত্ত কয় হাদে মাতা ধারণ করহ ধীর। রামের প্রভাপ বলে ভরহ নিজ ক্রময়।

কাল-নিশা সম নিশি ইন্দু যেন তপ্ন ॥ ১ অলদ তৈল যেন তপ্ত বর্ষি' যায়॥ ত্রিবিধ সমীর লাগে অহি-খাস অহভবে॥ ২ কারেই বা বলি কথা নাহি কেহ হেন জন। মাত্র মোর মন আছে অবগত প্রিয়া ভাষা ১৩ ইহাতেই কর' প্রেম অফুমান যাহ। হয়। মগ্ন প্রণয-নীরে দেহ-বোধ বিসরণ॥ ৪ সেবকের সুখদাতা স্মর' রাম রঘুবীর ॥ আমার বচন ওনি' বর্জন কর ভয় 🛚 ৫

প্রীরাষ্ট্ররিউ মান্স

(प)-- त्रकः निकत ধৈৰ্ঘ্য ধর মা

.

পতঙ্গ সমান হিযায় জানিও রাম-শর হুতাশন। পুড়ি'ছে রক্ষ:গণ॥ ১৫

চৌ - যদি রাম বসুপতি শভিতেন সন্ধান। ীরামের শর-রবি হে দেবি হ'লে উদয়। এখনি মা পারিভাম যাইতে ল'য়ে ভোমারে। किছ पिन धीत द'रत कत मा रहथा यानन। যা'বেন লইয়া বধ করি' নিশাচরগণে। ভোমারি ভ'অফুরূপ হে ভনয় কপিগণ। আমার হৃদয়-মাঝে এতে বড় সন্দেহ। কনক-ভূধরাকার স্থবিশাল সে শরীর। তথন সীতার মনে বিশ্বাস উপবিজ্ञ।

দেরী না হই'ত ভবে একডিল পরিমাণ। তমোরপী নিশাচর কোথায় ব। আর রয় ॥ ১ রামের শপথ হেন আদেশ নাহি মোরে॥ কপিগণ সনে রাম করিবেন আগমন॥ ২ গাছিৰেন তাঁ'র যশ নারদাদি ত্রিভুবনে॥ রাক্ষস অতি বীর আর (তজ-পরায়ণ॥ ৩ গুনিয়া প্রকাশ হত্র করিল আপন দেহ ॥ রণে ত্রাস-উৎপাসক অতি বলশালী বীর ॥ ৪ আবার আকার লঘু হতুমান ক'রে নিল ॥ e

(मा-७नइ क्निन পারে ক্ষুদ্র অহি

শাখামূগগণ গরুড়েও খে'তে

নহে অভি-মতি বল। यिन भाग्न व्यञ्ज-वन ॥ ১७

कटमीकवम हान्यान

65 — ভক্তি প্রতাপ তের আর বলে পূর্ণ বাণী। তুনি' সম্ভোষ-মন জানকী রমণীমণি। জীরামের প্রিয় বৃঝি' করেন আশীষ দান। হও হুত গুণনিধি জ্বাহীন মৃত্যু হীন। कक्रने कक्रगा टाञ्च এ कथा छनिया कारग। বারবার পদতলে করি' শিশ্ব অধনত। এখন মা চরিতার্থ হ ল তব সন্তাম। নিবেদি' মা পদে আমি কুধিত নিরতিশয়। সীড়াক'ন মহামহারাক্ষণ বীরগণ। रुष् कश जाशास्त्र कति नाक' मत्न स्था।

ক্ছিলেন হও তাত শীল আর বল-ধাম। ১ করুন প্রভূত কুপা ভোমারে ভকতাধীন। ভক্তিতৈ তথ্য হ'ল হতুমানু মনে॥ ২ জোড় করি' করযুগ কহে কপি এই মত॥ ভোমার আশীববাণী কদাচ না হ'বে আন। ৩ এ ক্ষুধা পে'য়েছে হেরি' সুন্দর ফল5য়॥ নিয়ত এ কাননের করে স্থুত রক্ষণ॥ ৪ যদি এতে সম্মোধ তোমার মনেতে হয়॥ ৫

পো-হেরি' বৃদ্ধি বল-📆 রাম-চরণ

নিপুণ হন্তুরে রাখিয়া জনয়ে জানকী কচেন যাও। স্মধুর ফল থাও॥ ১৭

টৌ-প্রণতি করিয়া পদে কাননে করে প্রথেশ। খায় ফল আব নাল করে তরু সবিশেষ। বছ বীর ছিল তথা কাননে প্রহরা দিতে। কভক বা গেল মারা কিছু ধায বার্ত্ত। দিতে ॥ ১

অক্য় কুমার বধ

কহে প্ৰভু আসিয়াছে কপি এক সুভীৰণ। খায় নিজে ফল আর উপাড়ে বিটপীদলে।

क्लिन डेबाड़ कर्ति नात्थत व्यत्नाक्यन । রক্ষকে পিশে' পিশে' মাটির উপরে কেলে। ২

হুলারকাও

७ निया त्रांत्र ८ थ:त ७ थ। तक्ष वाकुषान ● । मर निवाद्यभारत कति म किन इनन। অকর কুমারে পাঠাইল রক্ষোনাথ। ভা'দের আসিতে দেখে' গর্জে তক ধরি' করে। বিনাশ করিয়া সবে তর্জে হুলার ভরে ॥ ৪

छ।'दार बित्र थि 'करत शर्कान रहामान् ॥ চীৎকার দনে ধায় কিছু অর্ধ-মূভগণ ॥ ৩ চদুৰে ভেটিভে যায় অগণিত বীর-সাথ॥

(न-का'त्व वा मात्व

কেহ ফিরে' গিরে

हृत्वी का दिव আর্দ্রনাদ করে

কা'রে করে ধূলি-প্রার। মহাবদী কপি হায়॥ ১৮

দেখনাদ কর্তৃত হতুমানের লাগপাৰে বন্ধ হইয়া রাবণ-সভায় গমন

(5) — उनायत वस अनि' नाष्ट्रण त्वावशृत्र । অতুল নিপুণ রণে বাসবে যে করে জয়। আসি'ছে দাকণ বীর হন্তু দেখিবারে পায়। ষ্মতীব বিশাল এক ভক্ন উৎপাটন ক'রে। ভা'র সনে মহা মহা বীরগণ রহে যত। বীরগণে বধি' শেষে মেখনাদ সনে লড়ে। মৃষ্টি প্রহার করি' চড়ে বিটপীর 'পরে। চেতনা লভিযা মায়া বিস্তারে নানামতে।

পাঠাইল দে ভখন বলী মেঘনাৰ স্কুত। ব'লে দিল বেঁধে এন মেরোনা ভাহারে প্রাণে। কোধাকার সে বানর হ'বে ভা'লইভে জেনে'॥> खांडांब निधान मान त्वार्यंत्र श्लावन वस्र ॥ গর্জে পেষণ করে দাঁতে দাঁতে আর ধায়॥ ২ তা'র খায় রপহীন রাবণ কুমারে করে। আপনার অঙ্গ-সনে করে হনু ঘর্ষিত ॥ ৩ তুই গ্লবাজ যেন এ উহার ঘাড়ে পড়ে। ভাহাতে হারায় জ্ঞান মেঘনাদ ক্ষণতরে॥ ৪ জ্ম করিবারে নারে তা'তেও পবন-স্থতে। ৫

দো-ব্দ-আযুধ ব্ৰহ্ম-শরে যদি হানে কপি মনে অসন্মান করি

ভাহাতে করে বিচার। মছিমা না র'বে ভা'র ॥ ১৯

নিরখিয়া ইক্রজিভ মূর্জিছভ চমুমান্। শিব ক'ন শুন উমা অপ করি' নাম বাঁর। ভাঁ'র দৃত বন্ধ-দশা কবে লাভ কি কথন। বনদী জানিয়া কপি রাক্ষদগণ ধায়। হমুমান তথা গিয়া রাবণের সভা হেরে। कत-त्वाफ़ कति द्वरंश मिक्शांण खूतरान। হেরিয়াৰ এ প্রভাপ হফু নহে ভরষ্ত।

(5)--- এক্স-শর মেলনাদ ক'পরে আবাত করে। পড়িবার কালে হয়ু বছ দেনা সংহারে ॥ नाभभारन वाँ भि' करत्र मार्थ न'रत्र ध्वांचा ॥ > জ্ঞানী নর ভব-বাধা হ'তে সদা হয় পার। কার্য্যের ভরে প্রভু ঘট।'লেন বন্ধন॥ ২ কৌ চুক হেরিবারে সভামাঝে সবে যায়। ভাহার বিভব কত বর্ণিতে ভাষা হারে॥ ৩ আড়েও হেরিলে হয় শক্তিত স্ব-মন ৷ অহিগণ মাঝে যথা নিভর বিনতা-সুত॥ 8

ब्युमान्-क्रांवन जरवाय

(पा-कशिद्र निव्रवि' স্থুত বধ মনে

হানে দশানন করি' ভা'র মন কটুভাৰা মুখে কয়। বিষাদ-পুরিত রয়॥ ২०

CD - नारक न करह वल (त वानत पूरे कान। का'त वल ध'त' (नरह खेळाड़ कतिम् वन ॥ কাণে ভোর কথনো কি পশে নাই মোর নাম। রাক্ষদগণে তই ব্ধিলি কি অপরাধে। হলুকহে যাঁ'র বলে বলী হ'রে দশানন। বাঁ'র বল করি' লাভ বিধি বিফু মহেশ্বর। সহস্র-বদন শেষ করি' ঘাঁ'র বলাপ্রয়। ৰুভ দেহ ল'ন যিনি অমরে করিতে তাণ। कर्छात रुरत्व भग्न जिला (य व्यवस्थल । খরে দুষণেরে আর ত্রিশিরা রাক্স বালি।

(मथा याग्र अरत मर्फ फत्रकोन (फात्र व्यांन ॥ > নিজ প্রাণ ষা'বে ভা'য় এ বাধা না মনে বাধে ম সীমাতীত ব্রহ্ম-অণ্ড করে মায়া বিরচন॥ ২ সম্ভন পালন নাশ করি ছৈন নিরস্কর ॥ স-কানন ধরাধর চরাচয় শিরে বয়॥ ৩ কতবিধি তোমা সম শঠে দেন শিক্ষা দান ॥ তা'রি সনে নুপদল-মদ যে চরণে দলে॥ ৪ বধিলা যে এ সকলে অতিশয় বলশালী ॥ ৫

Cদা--গাঁ'র অণু বল হ'রেছ বাঁচার

করি' আঞায় প্রিয়তমা আমি জিনিলে এ চরাচর। তাঁ'রি দুত রক্ষ:বর ॥ ২১

চৌ—ভোমার প্রভাপ বল সব আমি অবগত। ৰালিরণ সহিত রণে সুযশ লভিলে যথা। কুধার থে'লাম ফল রক্ষ:রাজ দশানন। পকলেরি নিজনিজ দেহ লাগে প্রিয়তম। ৰধিক তা'দের তবে আমারে মারিল যা'রা। এ বাঁধন ভরে মোর মনে কিছু নাহি লাজ। লোড়করে এ মিনতি করি তোমা লক্ষেশ। দেশ ভূমি নিজ পুত কুলেরেঃ বিচার করি'। থেই কাল শুরাশুর চরাচর সব গ্রাদে। বৈরভা ভাঁ'র সনে করিও না কলাচন।

সহস্র-বান্তর# সনে সমর হইল যত। রাবণ বচন শুনি' হাসিয়া উড়া'ল কথা।। ১ বানর-স্বভাব বশে তরু করি উৎপাটন ॥ প্রহারে ছপ্টেরা যবে করে মোরে আলাতন ॥২ তা'র পরে স্থত তব বাঁধিয়া করিল সারা। আমার ড' অভিলাষ সাধিতে প্রভুর কাজ ॥ ৩ অভিমান তাঞি' ধর আমার এ উপদেশ। ভ্রম তা**জি' ভল সেই** ভক্তের ভয়হারী ॥ ৪ সে প্রবল কাল কাঁপে থরথরি' যাঁ'র তাসে॥ মোর অমুরোধ মানি' সীতা কর অর্পণ । ৫

(ছা--প্রণত-পালক পড়িলে শরণে কুপা-পারাবার রাখিবেন জোমা

খরারি জানকীনাথ। পাশরিয়া অপরাধ॥ ২২

८ठी-नाम शन-भंडमल खनरत क्र शांत्र। মহর্বি পুলস্ত্য-যশ: নির্মাল শশধর।

তা'রপরে এই পুরী অচল কর শাসন। रु'रशा ना कल्फ (यन त्म विधुत तकःवत ॥ ১

[•] हैं हाद व्यापन नाब कार्खरीपार्व्यून । हैनि अन्न बननान् हिस्मन व बादनत हैं हाद निकट बन्ती हिस्मन । कार्खरीक्ष প্ৰভাৱানের পিতা জমদল্লির কামধেলু অপহরণ করিরা তাঁহাকে বধ করেন। ইহাতে প্রভরাম কার্ত্রীর্থাকে সংহার করেন।

[া] বাবৰ বালিব বল প্ৰীকা ক'ৰিতে চাহিয়াছিল। বালি ভখন সন্ধা কৰিতে উভত। বাবৰ অপেকা কৰিতে সম্বন্ধ লা হওয়ার, বালি ভারতে অনারালে নিজ ভূকি-মংখ্য চালিরা ধবিরা, প্রভিণিনের নির্ম মত চারি সমূত্রে ব্রিডা সদ্ধা শেৰ কৰে। অবনেৰে পূৰ্ব্য-মৰ্ব্য দিবাৰ সময় ভূলিয়া হাত উঁচু করিতে গেলে ৱাবণ বাহির হয়, ও অনেক বিনয় কৰিবা ভালাৰ সহিত বন্ধুৰ স্থাপন কৰে। 💠 বাৰণ পুলক্ষ্য মুনিৰ কলে বিশ্ৰবা মুনির পুলা , পুতরাং আক্ষণ-কলোংপাল ।

বিহনে জীবাম-নাম বচন না শোভা পায়।
হ'লেও ভূষণে সব বিভূষিতা বরনারী।
জীবাম-বিমুখ যেবা প্রভূতা বিভব ডা'র।
যে নদীর উংস দেশে জল-জ্যোত নাহি হায়।
দপণ করিয়া কহি শুন লক্ষা-অধাশ্বর।
সহত্র মহেশ বিষ্ণু সহত্র চতুরানন।

মদ মোহ পরিহরি' মনে বৃঝি' দেখ ভা'র ॥
বসন বিহনে শোভা নাহি পায হে স্থবারি ॥ ২
পেলেও নাহিক রম্ম পাওয়া খোওয়া একাকার॥
বর্ষার অবদানে পুনঃ ভা' শুকা'য়ে যায়॥ ৩
রাম-বিমুখের ত্রাভা কেচ নাহি ধরাপর ॥
রাখিতে না পারে রাম-বিবোধীরে ক্লাচন ॥ ৪

দো—মোহ-মূল বহু ভঞ্জ রাম-রঘ্-

তুঃখ-আধার কুলের নায়ক ভ্যন্ত তম-অভিমান। কুপানিধি ভগবান্॥ ২৩

लका-मरम

(চ)—যদিও কহিল কপি বাণী অতি হিতকর।
উপহাস-হাসি হাসি' কহে মহা অভিমানী।
ছই মরণ তো'ব শিষরে ঘনা'য়ে আসে।
হছু কহে বিপবীত হ'বে এর পরিণাম।
কপির বচন শুনি' মনে ক্রোধ অভিশয়।
শুনিভেই বধ-ভবে ছু'ট বাক্ষসগণ।
নমিত করিয়া শির মিনতি করিয়া কড।
দণ্ড অপব কোন ইহার কর বিধান।
শুনি'কথা দশানন কহিল হাসির ভরে।

ভক্তি বিবেক নীতি-সিঞ্জিত মনোহর ॥
জুটে'ছে বানর গুরু আমার পরম জ্ঞানী॥ ১
উপদেশ বাণী মোরে তা'ই তো'র মুখে আসে॥
তো'রি হ'ল মভিদ্রম নিশ্চয় বুঝিলাম॥ ২
ছরা এরে বধ কর দশানন রোঘে কয়॥
তথনি সচিব সহ আসিলেন বিভীষণ॥ ৩
ক'ন দূতে বধ করা সব নীতি-গঠিত।
সকলে কহিল সাধু যুক্তি করিলে দান॥ ৪
অক্সহীন করি' ফিরে' পাঠা'রে দেহ বানরে ॥৫

জে — বানরের মার। তৈল সিক্ত বাস লাঙ্গুলে রয় বাঁধিয়া ভাহাতে কহি সবে বুঝাইয়। দেহ অগ্নি লাগাইয়া॥ ২৪

(ট)—লাজুল-হীন হ'রে বানর যাউক ক্সিরে'।
যাহার করিল মুখে এতই মহিমা গান।
একণা শুনিযা কপি মনে মনে হাসে তবে।
রাক্ষসগণ শুনি' রাবণের এ বচন।
রহিল না পুরীমাঝে তেল ঘৃত কি বসন।
রঙ্গ হেরিতে আসে যথা তথা পুরবাসী।
বান্ধিতে লাগিল ঢোল সবে দেয় করভালি।
অগ্রি অলিত হেরি' হ'রে অতি ম্বরাপর।
মুক্ত-বাঁধন হ'রে চডে হেম-সৌধ 'পরে।

আমুক আবার মৃঢ় প্রভুরে সাথেতে ক'রে॥
দেখিব প্রতাপ বল তাহার কি পরিমাণ॥ ১
বুঝি' দেবী বীণাপাণি সহায় হ'লেন এবে॥
মূর্থেরা সবে করে আয়োজন আরস্তন । ২
লাঙ্গুল করে হছু কোতৃকে প্রসারণ॥
চরণ প্রহারি' ক'রে কতই প্রকার হাসি॥ ৩
নগর খুরা'য়ে দিল লাঙ্গুলে অনল আলি'।
ধারণ করিল হনু অতি লখু কলেবর॥ ৪
রাক্ষসীগণ হেরে' সকলে ভ্যেতে মরে॥ ৫

দো-হরি-প্রেরণার অট্রহাসি হাসি' সেইকালে বয় গৰ্জিয়া কপি

বায়ু উনপঞ্চাশ। ছুঁয়া'ল দেহ আকাশ। ২৫

(চ) — অতীব বিশাল তবু অভি লঘু কলেবর। পলক মাঝারে যায় গৃহ হ'তে গৃহান্তর ॥ প্রথমেই ব'লেছিন্থ বানর এ কছু নয়। সাধুজন-অপমান-প্রতিফলে এইমত।

অবিতে লাগিল পুরা পুরবাদী ভয়ে মরে। কোটি করে ভতাশন করাল-ঝাপট মারে॥ ১ চারিদিকে সেইকালে শুধু এই শুনা যায়। কোথা পিতা মাতা কেবা মোদের বাঁচা'বে হায় # বানরের রূপ ধ'রে কোন দেব নিশ্চয়॥ ২ প্রজলিত সারা পুরী অনাথ-নগরী মত ॥ . এক নিমেবেতে সারা করিল পুরী দাহন। 💍 💖 বিভীষণ-পুরে না লাগা'ল হুতাশন॥ ৩

হত্তমানের সীভার নিক্ট বিদায় গ্রহণ

উমা হতু তাঁ'র দৃত অনল স্জন বাঁ'র।

একারণে না দহিল অনলে শরীর তা'র॥ এক প্রান্ত হ'তে লক্ষা পুরীরে করি' দাহিত। লক্ষ্ দিয়া পারাবার-মাঝে হ'ল মজ্জিত॥ ৪

বো-পুচ্ছ নিবা'য়ে জনক-স্তার

পুর করি' আংম সম্মুখে গিয়া

পুন: লঘুকায় ধরি'। দাঁড়া'প ছ' কর জুড়ি'॥ ২৬

🚺 — কৃছিল জননি মোরে দেহ কিছু নিদর্শন। দিলেন আমারে যথা রাঘবকুল-মোদন॥ চুড়া হ'তে মণি খুলি' জ্ঞানকী দিলেন তা'রে। সংইল পবন মৃত পরম হর্ষ ভরে॥ ১ এভাবে প্রণাম মম ক'রে। ভাত নিবেদন। তথাপি করুণা দীনে করিবারে পণ তবন হে ভাত জয়ন্ত-কথা করা²য়ো তাঁ'রে স্মরণ। শরের প্রতাপ তাঁ'র তাঁহারে ক'রো জ্ঞাপন। বল' ভাত কি প্রকারে দেহে প্রাণ আমি ধরি। তুমিও ত কহিতেছ এবার যাইবে ফিরি'॥ ভোমারে হেরিয়া প্রাণ জুড়া'য়েছিল আমার।

পরিপূর্ণ-কাম তুমি প্রভুরঘুনন্দন।। হর নাধ হর মম সকটে ভবধব ॥ ২ মাসেক মাঝারে যদি উা'র আসা নাহি হয় । জীবিত আমারে ডিনি না পা'বেন নিশ্চয়। ৩ দিবা রাতি সম হ'বে আমার কাছে আবার॥ ৪

সাগর-সভ্যনামন্তর সকলের প্রভ্যাবর্তন

দো-সীভারে বৃঝা'য়ে চরণ কমলে

বহুভাবে হয়ু করিয়া প্রাণাম তাঁহারে প্রবোধ দিল। রাম-পদে ফিরে গেল। ২৭

চৌ-প্রস্থান-কালে করে মহারবে গর্জন। সাগর লজ্বিয়া পুনঃ আসিল এ-ভট 'পরে। হর্ষিত হ'রে সবে চাহে হতুমান পানে। মোদিভ বদন ভেজ শরীরে করে বিরাজ। সকলে খেরিল ভা'রে প্রাণে মোদ অভিশয়। সকলে পুলক-মনে যায় এরামের পাল।

ত্রাসে জ্ঞানহার। হয় রাক্ষ্য-নারীগণ ॥ কিচ্কিচ হর্ষরৰ শুনা'ল যত বানরে 🛚 ১ নুতন জনম পে'ল এ-ভাব স্বার মনে ॥ বুঝা গেল সাধিয়াছে হতুমান রাম-কাজ। ২ কণ্ঠাগত-প্রাণ মীন বারি পে'লে যথা হয় # কহিতে শুনিতে পথে এই নব ইভিহাস 🛚 🗢

ৰধুবন ভদ ; ভুগ্ৰীব-মিলন

হেনকালে হ'ল সবে মধুননে উপনীত। প্রহরীরা ভাহাদের যেমনি ভাড়া'তে এল। খায় মধুফল করি' অঙ্গদে সম্মত॥ মৃষ্টি-প্রহার লডি' সকলে পলা'য়ে গেল ॥ ৪

(পা-ভা'রা হেঁকে কয় স্থগ্রীব শুনি'

সব গেল বন বুঝিল কপিরা

छेकार ज्न युवदाक। সেধে এল প্রভূ-কাজ ৷ ২৮

(Б)—না যদি উদ্দেশ লাভ করিত সবে সীতার । মধুবন-ফল খায় এমন ক্ষমতা কা'র ॥ মনে মনে এ বিচার করে যবে কপিবাজ্ব। আসি' স্থগ্রীব-পদে সবে মাথা নোয়াইল। क्मन ख्यांत यान क्मन (इति हत्। সবে কহে প্রভু-কাজ সাধিয়াছে হরুমান। ন্ডনি' স্থগ্রীব ভা'রে সম্ভাষে আরবার। রাম যবে হেরিলেন কপি কবে আগমন। স্ফটিক শিলার 'পরে ব'দে র'ন ছ'জনায়।

হেনকালে এল হয়ু সহিত কপি-সমাঞ্চ॥ ১ কপিরান্ধ শ্রীডিভরে সবাকারে সম্ভাবিল 🛭 রাম-কুপাবলে কাজ হইয়াছে সমাপন ॥ ২ সে-ই রক্ষা ক।রয়াছে বানরগণের মান **।** কপিদের সনে যায় যথা রাম কুপাধার 🛚 🕏 কাৰ্য্য সমাধা হ'ল বুঝি' পুলকিত মন॥ আসিয়া সকল কপি পড়িল ভাঁছার পায় 🖁 🛢

(দা-প্রণয়ের সনে শুধা'ন কুণল মিলেন সকলে বলে শুভ এবে

করুণা-সাগর রাম। হেরি' পদ কুপাধাম॥ ২৯

এরাম-হত্তমান সংবাদ

চৌ—জাপবান কচে তবে শুন ওবে দয়াময়। ভাহার সদাই শুভ কল্যাণ নিরন্থর। विश्वय लङ्ख (मर्डे (म खनी विनयवान्। প্রভুর করুণাবলে হ'য়েছে সকল কাজ। হে নাথ পবনমুভ যে কাজ এসেছে ক'রে। মনোহর কাজ যত আচরিল হহুমান। হমুমান-ক্রিযাবলী লাগে ভাল রাম-প্রাণে। কহিলেন সীভা এবে কহ ভাত কি প্রকারে।

ভোমার করণা আপু যাহার উপর হয় ॥ অমর মানব মুনি প্রীত র'ন ডা'র 'পর। ১ উজ্জল ত্রিভুবন ভাহার যশে মহান্॥ মোদের জনম ভবে হ'ছেছে সফল আৰু ৷ ২ সহত্র হ'লেও মুখ সাধ্য কা'র ডা' বিবরে 🛭 শ্ৰীরামের শ্রীচরণে নিবেদিল জাত্ববান্। ৩ পুলকে আবার বুকে লইলেন হয়ুমানে॥ রহেন রাখেন প্রাণ আপনার সন্ধাপুরে ॥ ৪

দো –দারী তব নাম পদ-লগ্ন আঁথি

কপাট ভাহার এ তালা লাগান'

দিবানিশি ভব ধ্যান। কোন পথে যা'বে প্রাণ 🛚 ৩ •

(b)—ফিরিবার কালে মোরে দিলেন চূড়ার মণি। আদরে হৃদয়ে চাপি' ধরিজেন রখুমণি॥ হমুকহে প্রভুসহ বারি-ভরাছ'নয়ন। পড়িও অমুজ-সহ প্রাস্তুর চরণ 'পর। আমি ভ কায়ায় মনে বচনে চরণ-রভা।

জনক-ডনয়া কিছু ভোমারে বচন ক'ন। ১ ব'লো তুমি দাননাৰ প্ৰণত-বিপদহর ॥ कान् व्यवताय नाथ कतिरल हत्रग-हाडा ॥ ६ এক, অপরাধ মম আমি তা' করি বীকার।
কিন্তুদেব এ ত'মোর নয়নের অপরাধ।
বিরহ অনল যেন তুলাদেহ নিশাদ।
নিজ্ঞ হিত-লাগি' বারি নয়ন করে ক্ষরণ।
জনক-মুতার তথা বিপদ অতি বিশাল।

বিরহে এ প্রাণ নাহি করে দেহ পরিহার ॥
বাহিরিতে গেলে প্রাণ দে-ই তাহে সাথে বাদ ॥৩
সমীরণ পারে ক্ষণে দেহের করিতে নাশ ॥
বিরহ-অনল নারে করিতে কায়া দহন ॥ ৪
সেকথা না কহা ভাল চবণে দানদয়াল ॥ ৫

দো—এক এক পল চল ত্বরা প্রভু কল্প-সমান আন' বাহুবলে কাটে তাঁ'র এক্ষণে। জয় করি' খলগণে॥ ৩১

(চ)—জনকস্থতার হেন রেশ শুনি' কুপাধার।
ক'ন কায় বাণী মনে রত যেবা মোর পরে।
হয়ু কহে বিপদ ত ভাহারেই প্রভু কয়।
ভোমার নিকটে নাথ এ আর কি বড় কথা।
প্রভু ক'ন হয়ুমান ভোমা সম উপকারী।
এর প্রতি উপকার কি করি তব এথন।
শুন মৃত তব ঋণ নতে কভু শোধিবার।
বারবার কপি-পানে চাহি'ছেন কুপাধার।

নলিন-নয়ন্যুগে ভ'রে আদে জলভার ॥
অপনেও কি,বিপদ কোনকালে লাগে তা'রে ॥ ১
তোমার ভজনা ধ্যান যা'র তরে নাহি হয় ॥
রিপুদলে জয় কার' আনিতে জনক-স্থুতা ॥ ২
কেহ নাহি স্থর নর মুনি-মাঝে তমুধারী ॥
তোমার সমীপ হ'তে নাহি পারে মোর মন ॥ ৩
অবদ্য-মাঝারে আমি দেখে'ছি করি' বিচার ॥
রোমাঞ্চ শ্রীকলেবরে নয়নেতে জলভার ॥ ৪

দো-প্রভূ-বাণী শুনি' প্রেমাকুল হ'য়ে হেরি' ফুল মূ্ধ পায়ে পড়ি' কহে হর্ষিত হমুমান। ত্রাহি ত্রাহি ভগবান॥ ৩২

প্রেমাকুল হ'য়ে পায়ে প
(১)—প্রয়াদ করেন প্রভু তুলিবারে বারবার।
ছাপিত তাহার শিরে প্রভুর কমল-কর।
দখরি' নিজ মনে শহুর পুন: ক'ন।
কপিরে তুলিয়া প্রভু বুকের 'পরে লাগা'ন।
ক'ন কহ হমুমান রাবণ-রক্ষিত পুরে।
প্রভুরে মোদিত-মন জ্ঞান করি' হমুমান।
শাধা-মৃগদের এই পুক্ষার্থ অভিশয়।
লাভ্য' সাগর করি' কমকপুরী দহন।
ভোমারি প্রভাপ ভাহা সকলি ত' রঘুনাথ।

অমনি মগন প্রেমে তুলিতে শক্তি কা'র ।
সে দশা করিয়া মনে ওমায় হ'ন হর । ১
জননী ঈশানী-পাশে সে কাহিনী মনোরম ।
হাত ধ'রে একেবারে আপন কাছে বসা'ন ॥ ২
আর বাঁকা ছর্গে তা'র দহিলে কেমন ক'রে ।
কহিল বচন হেন পরিশ্যু অভিমান ॥ ৩
শাধা হ'তে অম্ম শাখে গমনে শক্তি রয় ।
রাক্ষসগণে বধি' উজাড় করিত্ব বন ॥ ৪
কিছুই বড়াই তাহে নাহিক আমার নাধা । ৫

দো—কিছু নাহি তা'র তোমার প্রভাবে সাধ্যের বা'র তৃলা'ও অনলে তুমি অমুকৃল যা'রে। দহন করিতে পারে॥ ৩৩

(5)— মচলা ভক্তি তব মোর অতি ভাল লাগে। কুপা করি' দেহ নাথ মিন্তি চরণ-আগে ॥ তুনি' প্রস্থু বানরের প্রম স্বল বাণী। 'এবমস্ত্র' এই তবে কহিলেন হে ভ্বানি ॥ ১

ঈশানি স্বভাব তাঁ'র জানিয়াছে যেইজনে। এ ভব্ত হ'যেছে যা'র হাদিগত একবার।

ভঞ্জনা ব্যতীত কিছু ভাল নাহি লাগে মনে ॥ ভক্তি শ্রীরাম-পদে সে ক'রেছে অধিকার। ২

বানর-লেমা সহ এরামের সম্ভ-ডটে আগমন

প্রভুর বচন গুনি' কপিগণ সবে কয়। করিলেন রাম ভবে স্থগ্রীবে আবাহন। কিসের কারণ আর এবে বিলম্ব করা। লীলা হেরি' বছ ফুল বর্ষিয়া সুরগণ।

करा यूथ-मृणाशांव करा करा क्रांक्रांमग्र॥ কহিলেন কর এবে যাত্রার আযোজন॥ ৩ আদেশ হরায দেহ যাত্রা করুক ভা'রা ॥ আপন আপন লোকে কিরে' যান প্রীত মন ॥ ৪

দো—মুগ্রীব ছরা বিবিধ ববণ ডাকা'ন সবাবে ঋক কপিদল

আসে ভা'রা দলে দলে। অতুল দেহের বলে॥ ৩৪

(6)—প্রভু পদ শতদলে সকলে নোযায শির। গর্জে ঋক্ষ কপি মহাবল মহাবীর। কপি-অনীকিনী করি' রঘুমণি দবশন। রামেব কুপাব বল লাভ করি' কপিদল। ক্রেন হব্যে ত্তে যাত্রা রত্ম-মোদন। কীর্ত্তি বাঁহার সদা সব-মঙ্গলময়। স্পন্দিত হ'য়ে বাম-অব্যব জ্ঞানকীরে। যা' যা' হয় মঙ্গল দীতাৰ শক্ৰচয়। চলিল বাহিনী কেবা করিবে বা বর্ণন। নখর-আযুধধব চলিছে নিডর মনে। গৰ্জন করিতেছে কপি-ভালুকদল।

করেন সবাব 'পরে কুপা-দিঠি বর্ষণ॥ ১ হ'ল যেন পক্ষযুত ধরাধর মহাবল ॥ হইতে লাগিল শুভ সুন্দর লক্ষণ॥ ২ তাঁ'র যাত্রায় শুভ লীলা মহিমায় হয় 🛚 রাম-আগমন যেন তাঁহাবে ছোঘণা করে ॥ ৩ ভাহাই রাবণ তরে অগুভ-কারণ হয়। অগণিত কপি ভালু করিতেছে গৰ্জন ॥ 8 ধরি' পর্বত ভক্ন ধবণীতে কি গগনে॥ বিচলিত দিক্-করী করে তা'রা টলমল ॥ ৫

| ছ—দিক্-গঙ্গ ডাকে | বস্থমতী টলে | চঞ্চল গিরি কাঁপে সাগর। |
|------------------|----------------|-----------------------------|
| হর্ষিত মন | স্থুর মুনিগণ | হইল সকলে বিগত ভর॥ |
| দাতে কট্কট্ | করে বহু ভটণ | কোটি মৰ্কট সবেগে ধায়। |
| জয়জয় বাম | মহা বলধাম | বলি' গুণগ্রাম সকলে গায়॥ ১ |
| বহিবারে নারে | অনীকিনী-ভারে | শেষ বারেবারে মুরছ। যায়। |
| কঠোব কৃৰ্ণের | পৃষ্ঠেতে দাঁতে | কামড়ে ভাগতে কি শোভা হার। |
| বিমোহন রাম- | সমরাভিযান | অতি মনোহর ভাহারে জানি'। |
| কৃশ্মের পিঠে | যেন দাগ কেটে | চিরতরে নাগ লিখে সে বাণীঞ। ২ |

[•] প্রকু-ভূতা ভাব। † বোদা। 🗦 সেনাৰ ভীবণ ভার বহিছে অসমর্থ হট্যা বাত্মকি বার বার মৃদ্ধিত হইতেছেন, আৰু কুৰ্বেৰ কঠন পিঠেৰ উপৰ কামছ দিবা ধনিতেছেন (অৰ্থাৎ নিকেকে সামলাইতেছেন) , এইৰপ বাৰ বাব পাত দিয়া কাম ছাইব। ধরায় কুথেব পিঠেবে সকল বেখা পড়িকেছে, ভাহাতে কি অপূর্ব্ব শোভা হইতেছে। প্রীরামন্তের এই সম্বাভি-বানকে অভি মনোহর বিবেচন। কবিলা, নাগবাল বাত্মকি কুর্মের পিঠে লাগ কবিলা চিরভবে ভাচার ইভিবৃত্ত কোলিভ कतिया वाबिएएएका ।

এীরামচরিত মানস

দো-এইভাবে চলি' আদেন সাগর-ভীর। করুণা-সাগর বহু ভালু কপিবীর॥ ৩৫ খায় অবিরল মথা তথা ফল

भटन्मामत्री-जावश जश्वाम

(5) - ওদিকে রাক্ষদগণ রঙে ত্রাস-যুত মন। নিজ নিজ গৃতে বৃদি' কবে তা'রা এ বিচার। যাহার দুভের বল নাহি আদে বর্ণনায়। দতীগণ-মুখ হ'তে শুনি' পুরবাসী-বাণী। নির্জ্জনে পতি-পদে পড়ি' করি' জোড়কর। দ্রোচ কর পরিহার কান্ত হরির সনে। যাহার দুতের কাজ করিতে মনে স্মরণ। ভাল যদি চাহ নাথ তবে তা'র দয়িতারে। ভোমার কুলের কম কমল কানন ভরে।

œ.

রাক্ষসকুলে আর রক্ষা নাহি এবার ॥ ১ দে নিজে আসিলে আর কিবা শুভ তাহে হায়॥ সমধিক আকুলিত হ'ন মন্দোদরী রাণী॥ ২ নীতি-রসে সিঞ্চিত ক'ন এ বচন-বর ॥ হিতকর বলি' মোর বচন ধরহ মনে॥ ৩ শিহরিত-প্রাণ হয় যত নিশাচবীগণ ॥ নিজ সচিবের সনে পাঠাইয়া দেহ ফিরে'॥ ৪ আসে সীতা তথ দিতে বিভাবরী-রূপ ধ'রে ॥ শুন নাথ যদি ফিরে' সীতারে না দেওয়া যায়। বিধি হর কহিলেও হিত তব নাহি তা'য়। ৫

যবে হ'তে হন্দ্র যায় লক্ষা করি' দহন॥

দো-রাম-শর অভি-গণের সমান গ্রাস না করিতে করহ উপায়

ভেক-সম রাক্ষস। নাহি হ'য়ে হঠ-বশ ॥ ৩৬

(5)-अवर्ण अनिया मर्ठ मत्नामतीत वागी। স্বভাবে অতীব ভীক্ষ সত্যই নারীগণ। যদি আসে লঙ্কায় বানরের সেনাগণ। লোকপাল যা'র ডরে কম্পিত-কলেবর। এত কৃষ্ণি পুন; হাসি' ভাহারে ধরিল বুকে। রক্ষ:রাণী-মনোমাঝে জাগে শুধু এ ভাবনা। যেমনি সভায় বসে বারতা করে প্রাবণ। 😎 धारा महिवशरण कि छेलास कर मरव। জিনে'ছেন সুরাসুর আন্মনাহি হ'ল তা'য়।

হাসিল বড়ই হাসি ধরা-খ্যাত অভিমানী॥ ওভেতেও প্রাণে ভয় চর্কল তব মন॥ ১ ছুখী রাক্ষস তবে জীবন করে ধাবণ। ভয়ভীতা ভা'ন রাণী এ বডই হাস্তকর ॥ ২ চলিল সভার পানে মমতা দেখা হৈয় মুখে॥ স্বামীর উপরে এবে বিধাতার বিভ্ননা। ৩ সাগরের পর-পারে উপনীত অরিগণ॥ হাসিয়া সকলে বলে নীরবে রছ'ন এবে ॥ ৪ মানব বানর এরা কিবা আসে গণনায়। ৫

গুরু তিনে যদি দো-ভিষক সচিব রাজ্য ধর্ম দেহ তিনটিই তবে

প্রিয় কহে লোভে ত্রাসে। ছরা নাশ হ'য়ে আদে ॥ ৩৭

(5)--রাবণের উপনীত দেই যোগাযোগ এবে। মন্ত্রী চাটু-বাণী কচে গুনা য়ে গুনা যে দবে।

রাবণকে বিভীষণের উপদেশ

হেন কালে বিভীষণ তথা আসি' উপনীত। পুনঃ নমি' করে নিজ আসনে উপবেশন। কুপাময় মোর 'পরে যদি অমুমতি হয়।

ভাতার চরণ 'পরে শির করে অবনত ॥ ১ আদেশ করিয়া লাভ কহে তবে এ বচন ॥ তি ত-বাণী কহি তবে যাহা মোর মনে লয়॥ ২ যেজন কামনা করে কল্যাণ অপনার। তাহার উচিত পর-বনিতারে হে রাজন্। চারি-দশ লোকপতি যদিও দেজন হয়। যেমন চতুর আব সকল গুণ-নিচয়। সুষশ সুমতি সুখ শুভগতি অনিবার॥ চতুর্ণীর শশী সম সদা করা বংজন ॥ ৩ জীব সনে বিরোধেতে তা'রো নাশ নিশ্চর॥ অল্ল লোভও তা'র শ্রেয় কেচ নাহি কয়॥ ৪

দো—কাম ক্রোধ মদ এ সবে ভাজিয়া লোভ এর প্রস্ ভঙ্গ রঘুবীর নরকেতে ল'য়ে যায়। সম্ভ ভজেন গাঁ'য়॥ ৩৮

(5)—শুধু মানবের বাজা ন'ন বাম রলুবর।
বেলা ভিনি অ-বিকার জন্মগীন ভগবান্।
ধরণী সুরভী ধিজ দেবতার হিত্রকাবী।
ভকতের বঞ্জন হুর্জন-মৃত্তুঃ
ভ্যাগ কবি' ড্যোহ উ:'র নমিত করহ শির।
হে প্রভু বিদেহ-মৃত্যা ফিবাইযা উা'রে দেহ।
বিশ্ব-জ্যোহের পাপে যে হয় পাপ-ভাজন।
বিশ্ব-লোহের পাপে যে হয় পাপ-ভাজন।

কাল যে ভাহারে। কাল সর্বলোক-অধীশার ॥
আক্ষে আনাদি আর ব্যাপক আ-পরিমাণ ॥ ১
কুপার সাগর রাম নবের শবীরধারী॥
ভিনি ভাই সদ। বেদ ধর্মের রক্ষক॥ ২
প্রণভের সব তুথ ভঞ্জন বন্ধীর॥
আহেতুকী হিতকারী-চরণে শরণ লহ ॥ ৩
শরণে আসিলে সে-ও না ভ্যাঞ্জন কদ।চন॥
প্রকট সে প্রভু ইহা লক্ষেশ বুঝ মনে॥ ৪

দো—বার বাব পড়'
কোশল-অধিপে
মুনি পুলস্ত্য

শুভ-অবদর

চরণে তাঁহার ভঙ্গ মোহ মান নিজ শিষ্য দিয়া লভি' সম্বর মিনতি এ দশানন।
মদ করি' বরজন ॥ ৩৯ (ক)
পাঠা'লেন এ বারভা।
জানা'লাম সেই কথা॥ ৩৯ (খ)

(b) — মাল্যবান্ নামে এক চত্র সচিব ছিল।
কহিল অনুজ তব অতি নীতি-বিভূষণ।
অবির মহিমা গান করে মৃত হইজন।
মাল্যবান্ গুহে গেল করি' এ শ্রুভি-গোচর।
কিবা বেদ কি পুরাণ সবেতেই প্রভু কয়।
যথায় সুমতি তথা সম্পদ অগণন।
তোমার হৃদয়ে করে হুর্মতি অধিষ্ঠান।
রাক্ষস-কুল তবে কাল-রক্ষনীর প্রায়।

বিভীষণ-বাণী শুনি' অভিশয় মুখ পে'ল॥
কলেয়ে গ্রহণ কর কহে যাহা বিভীষণ॥ ১
কে আছে সম্মুখ হ'তে করহ অপসারণ॥
বিভীষণ ক'ন ভবে জ্যোড় করি' হুই কর॥ ২
স্বারি ক্ষদয়-মাঝে কুমভি স্থমভি রয়॥
কুমভি যথায় ভথা বিপদ নাহি গণন॥ ৩
ভা'তেই অহিতে হিড আর স্থা হয় জ্ঞান॥
সীভা 'পরে অভি ভব অন্তরাগ দেখা যায়॥ ৪

দো—ভাত পদে ধরি' রামে দেহ সীতা

করি এ কামনা কথনো অহিত মোর প্রতি স্নেচ-ডরে নাহি হ'বে ক্ষণভবে॥ ৪৩

অৰ্থাং কোলে বেমন চতুৰীৰ নই-চক্ৰকে ৰক্ষন কৰে।

রাবণ কর্ত্তক বিভীষণের অপনান

(5) — পুরাণ পণ্ডিত একতি সম্মত বর বাণী। ভাহা শুনি' দশানন অতীব কোপেতে তবে। মোর অলে মৃট তোর এ যাবৎ রহে প্রাণ। ৰন্দেখি লঘুমতি কে আছে এ ধরাতলে। মোর পুরে করি' বাদ তাপদের 'পরে প্রীতি। এত কহি' বিভীষণে চরণ প্রহার করে। শিব ক'ন হে ভবানি সাধুর মহিমা এই। পিতার সমান ভাল ক'রেছ মোরে প্রহার। সচিবে# লইয়া চলে নভোপথে বিভীষণ।

কহিলেন বিভীষণ সাধু-নাতি বিবরণি'॥ কহে খল মৃত্যু ভো'র নিকটে আগত এবে॥ । অরাতির পক্ষ তবু শ্রেযতর হয জ্ঞান ॥ যাহারে বিজয় নাহি করিলাম ভুজবলে॥ ২ যা' অজ্ঞান ভা'র পাশে ভা'রে শিখাগে যা' নীতি। অমুদ্ধ তথাপি ধরে পদ তা'র বারে বারে॥ ৩ ভাহারি করেন হিত অপকার করে যেই। শ্রীরামের আরাধনে হে নাথ শুভ ভোমাব। ৪ সবজনে শুনাইয়া ব'লে গেল এ বচন ॥ ৫

দো—সভ্যবত প্রভু মোর অপবাদ

রঘুকুল-মণি मि'रहा नाक' **य**न কাল-গ্রাসে সভা তব। এবে রাম-পদে যা'ব॥ ৪১

65-এত বলি' স্থান ছাড়ি' বিভীষণ যা'ন যবে। মরণ নিশ্চিত হ'ল রক্ষ:গণেব তবে॥

মূল সনে শুভ নাশ পায স্থির চিরতরে॥ ১

বিভীষণের এরামের চরণে শরণ এছণ

যেইক্ষণে বিভাষণ দশাননে ত্যাগ করে। রামের চরণ-তলে যা'ন হর্ষিত মন। হেরিব তথায় গিয়া সে চরণ শতদল। যে পদ পরশ করি' ভরিল ঋষির নারী। (य श्रेष क्षेत्रक-श्रुष्ठा यक्टान ख्रुष्टारा श्रुत्र । হরের জনয়-সরে সরোজ-সম যে পদ।

সাধ্যন-অপমান-ফলে অভি সহরে।

তখনি সে হতভাগা হারা হ'ল বিভবেরে॥ করিতে করিতে পথে কতইবিধ মনন ॥ ২ ভকভের সুধদাতা অকণ অতি কোমল। क्लोड-मूराज लिए या' ছুটে ধরণী 'পরে॥ ধ্যা ললাট মন্ন হেরিব লে কোকনদ। ৪

বে1—ধাঁহার চরণ-আঞ্জিকে এখনি পাছকায় মন यादेया नग्रत्न

লাগা'য়ে ভরত র'ন। कतिव का मत्रभन ॥ 8२

(5) —করিতে করিতে মনে প্রেম দনে এ বিচার। আসিলেন মরাপতি সাগরের এ-পার ॥ কপিগণ বিভীষণে হেরে' তথা আসিবারে। ভাঁহারে তথায় রাখি' সুগ্রীব-কাছে আসে। সুগ্রীব কহে তবে শুন প্রভু রম্বুনাথ।

অরির বিশেষ দৃত বলি' হেন মনে করে॥ ১ ভাঁহার বারভা সব নিবেদন করে পাশে 🛚 রাবণের ভাতা আসে করিবারে সাক্ষাৎ॥ ২

ব্রীরাম কহেন সথে কিবা তব অনুমান। রাক্ষদ-মায়া কিছু অনুমানে নাহি আদে। তথ্য লওয়ার তবে উহার হেথা উদয়। ডোমার বিচার করে নীভির অনুসরণ। প্রভুর বচন শুনি' হমুমান হর্ষিত।

কপিপত্তি কহে তবে শুন হে কুপা-নিধান॥ মায়ারূপধারী হেথা কিসের কারণে আসে॥ ৩ বন্দী উহাবে করা ভাল মোর মনে হয়॥ আঞ্জিভ-ভয় দূর করা-ই আমার পণ ॥ ৪ ভাবে আহা আঞ্রিত-বংসল প্রভু কভ ॥ ৫

বো-মাপ্রিত কনে কলুষেতে ভরা

যেৰা ত্যাগ করে সে পামর নর

নিজাহিত অমুমানি'। ভা'রে হেরিলেও হানি॥ ৪৩

(5)—:কাটি বিল-বধ পাপ লেগে'ছে যাহার 'পরে। শরণে পড়িলে সেও কেহ নাহি ত্যকে তা'রে। আমার সমীপ-দেশে আসে জীব যেইক্ষণ। স্বাভাবিক ভাব এই পাপাচার-রতগণে। এ যদি প্রকৃত হ'ত হুই-দ্রদয়বান। নির্মাল মন যা'ব সেজন আমারে পায়। যদি সন্ধান ল'তে প্রেরে এরে দশানন। যত নিশাচর রহে জগত মাঝারে স্থা। আর যদি ত্রাস-ভরে লইতে আসে শবণ।

কোটি জনমের পাপ নাশ পায় সেইক্ষণ॥ ১ আমার ভজনা 'পরে ভাব নাহি আসে মনে॥ আমার সমীপে তবে হইত কি আগুয়ান্।। ২ কপটতা ছল-ছিজ্ৰ ভাল না লাগে আমায়॥ ভাহাতেও হানি ভয় কিছু না করি গণন॥ ৩ সবে লক্ষ্মণ পারে নাশিতে নিমেষে এক।॥ প্রাণের সমান ভা'রে রাথিব করি যভন॥ 8

দো—হাসিয়া কহেন জ্য প্ৰভু বলি'

কুপা-নিকেতন অঙ্গদ হয়-

ছ'য়েতেই আন' তা'রে। সহ চলে আনিবারে॥ ৪৭

চৌ-সমাদরে বিভাষণে অগ্রে ল'য়ে বানর। দুর হ'তে বিভীষণ করে তবে দরশন। আরবার শোভাধার বাম-রূপ নির্থিয়া। প্রালম্ব বুগল ভুজ আঁখি লাল শতদল। আয়ত স্থূন্দর উর স্কন্ধ কেশরী-সম। নয়নে ভরিল নীব পুলকিত হ'ল কায়। প্রাক্ত দশ-আননের সহোদর এই দাস। ষভাবত: পাপ-প্রিয় তামস এ কলেবর।

চলিল রহেন যথা রখুপতি কুপাকর॥ নয়নের সুধকর সেই ভাই তৃইজন। ১ স্তব্ধ হ'য়ে অপশকে সেদিকে রচে চাহিয়া॥ প্রণতের ভয়হারী কলেবর স্বুখ্যামল॥ ২ অমিত মদন-মনোমোহন আনন কম ॥ ধীরতা ধরিয়া মনে কহেন মুত্র ভাষায়। ৩ নিশাচর-কুলে জন্ম হে ত্রাতা অমর-ত্রাস। ভম: 'পরে পেচকের প্রীতি যথা নিরম্বর ॥ ৪

দৌ—তব যশ শুনি' শরণ-সুথদ

আসিয়াছি প্রভু আর্দ্তি-হরণ

ভঞ্চন ভব-ভয়। রাশ' পায়ে কুপাময়। ৪৫

টে —এত বলি' দণ্ডবৰ্ণ নমিতে হেরিয়া ভা'রে। ছরিতে উঠেন প্রভ অতীব হরষ ভরে ॥ বিশাল ভুজেতে বাঁধি' আপন বুকে লাগা'ন 🛭 ১ দীনভাষা শুনি' রাম মনে অতি সুখ পা'ন।

ভ্রাতা সনে সম্ভাষি' নিকটে বসা'ন হরি। কহ লগা-অধিপতি সহ নিজ পরিবার। অসৎ-সমাজ মাঝে নিশিদিন তব বাস। তব বীতিনীতি সব বিদিত আছে আমার। হে ডাভ বরং শ্রেয় নরকেতে অবস্থান। রক্ষ: করে দাস বুঝি' করিলে মোরে করুণা।

কহেন বচন তবে ভকতের ভয়হারী॥ কুশল ত' তব বাস কু-দেশ 'পবে তোমার॥ ২ কেমনে ধরম নিজ নিকাছ' বারমাস ॥ অতি নীতিযুত তুমি অনীতি বিষ ভোমার॥ ৩ তবু ধাতা যেন খল-সমাগম নাহি দেন। হেরি' পদ নাথ এবে কুশল করি গণনা॥ ৪

দো—শোকের আগার তদবধি শুভ

কামনা ভ্য**জি**য়া স্বপনেও মনে

রামে নাহি ভজে যবে। শান্তি না পায় জীবে॥ ৪৬

(5)--यमविध कपरम ना निवरमन त्रधुनाथ। তদবধি হাদিমাঝে রচে যত পাপাশয়। त्राम-(द्रय-, अहरकत व्यार्ग स्थय अमाग्निमी। उनविध त्म तकनी कीव-मत्न (ह्र'रा तरा। এখন কুশল মম মিটে'ছে ভবের ভয়। হে কুপাল যা'র 'পরে তুমি হও অমুকুল। রাক্ষস আমি অতি অধম-স্বভাববান্। যাঁহার রূপের ছবি মুনিও না ধ্যানে পা'ন।

কটিতে ভূগীর বাধা শর শবাদন সাথ॥ লোভ মোহ অহতার মদ মান রিপুচয়॥ ১ মমতা-রূপিণী ডমোময়া ঘোর নিশীথিনী॥ প্রভুর প্রভাপ-রবি যদবধি অমূদয়॥ ২ হেরিয়। কমল-পদ তোমার হে দয়।ময়॥ ভাহারে না লাগে কভু ত্রিবিধ ভবের শুল ॥ ৩ ক ছু ওছ-আচরণ কথনো না করিলাম। সে প্রভু প্রীতির ভরে হৃদয়ে মোবে লাগা'ন 🛭 ৪

দো-দীমাগীন ওহো বিধাতা মহেশ-

সুকুতি আমার সেবিত ও পদ

কুপা হুখ-রাশি বাম। এ নয়নে হেরিলাম॥ ৪৭

চৌ –রাম ক'ন শুন সধা আপন অভাব কই। জানেন মহেশ কাক আর উমা কুপামরী॥ হইলেও ডোহী নর কিবা জড়ে কি চেডনে। আর ত্যক্তে নানাছল - নিজ মদ মোহ মান। জনক জননী ভ্রাতা সম্ভান বনিতারে। সবার মমতা-ডোর যে জন করি' ছেদিত। সম-দিঠি রহে যা'র কিছু না কামনা রয়। হেন সজ্জন মম জাদে হেন বাস করে। ভোমার সমান সাধু অতীব প্রিয় আমার।

मञ्जू श्वनरत यनि तम जारम मन भवरन ॥ > সম্ম ডা'হ'লে করি ভাহারে সাধু-সমান ॥ শরীর ভবন ধন স্কুদ ও পবিবারে॥ ২ মনেরে আমার পায়ে করে দৃঢ় নিয়োঞ্চিত। না হরষ নাহি শোক মনোম'ঝে নাহি ভয় 🛚 ৩ অব্দয়েতে লোভী যথা ধনের লালসা করে। অস্ত কাহারো তরে ধরি না এ দেহ-ভার॥ ৪

দো—সগুণ-ভকভ সে মানব মম পরহিতে রঙ প্রাণের সমান নীজি নিয়মেতে রভি। ৰিজ-পদে যা'র প্রীতি॥ ৪৮

(5)—এ সব ভোমার গুণ স্থন লক্ষা-অধিপতি। সেহেতু ভোমাতে মোর অভিশয় প্রীত মতি। রামের বচন শুনি' কপিদল সবে কয়। শ্রবণ করেন কাণে প্রভু-বাণী বিভীষণ। চরণ-সরোঞ্জ 'পরে নিপ্তিত বারবার। করেন শুনহ দেব চরাচর জগ-স্থাম। প্রথমে আছিল কিছু বাসনা মানদ-তলে। এখন হে কুপাময় পাবনী তব ভক্তি। 'এবমস্তু' কচি' তবে রঘুমণি রণধীর। কহেন যদিও স্থা তব অভিলায নাই। হেন কঠি' রাজ্ঞটীকা দেন রাম বিভীষণে।

অপার কুপার নিধি রঘুনাথ জয় জয় ॥ ১ প্রাবণ-অমিয় জানি' তিরপিত নাহি হ'ন॥ ধরে না হৃদয়-মাঝে দেই প্রেম-পারাবার॥ ২ তে প্রণত-প্রতিপাল জ্বদয়-অন্তর্যামি॥ ভাগিয়া গিয়াছে এবে প্রভু-প্রেম-নদীব্দলে॥ ० দেহ দাসে শিব-মন জ্বীভূত যাহে অভি॥ কহিলেন হরা করি' আনিতে সাগর-নীব॥ 8 অমোঘ দরশ মম ধরা মাঝে স্বর্ণাই। প্রচুর বরষে ফুল যতেক অমরগণে॥ ৫

সমীরে প্রবল রাবণের ক্রোধানলে। (দা---আপন বচন-অথগু-ভিলক ভালে ॥ ৪৯ (ক) দগ্ধ বিভীষণে জুড়া'য়ে দিলেন যে সম্পদ শিব (पन पर्यान्दन **लम मित्र-विनिम्हा ।** তাহাই শ্রীরাম করিলেন দান বিভীষণে ভয়ে-ভয়ে ॥ ১৯ (খ)

আপনার দাস ব্ঝি' আপনার ক্রি' ল'ন।

চৌ—এমন প্রভূবে ত্যজি' যে ভলে অপরজনে। সে মানব পশু বিরে পুক্ত ও শিং বিনে॥ প্রভুর স্বভাব লাগে কপি-মনে বিমোহন॥ ১

সমুদ্র উত্তরণের পরামর্শ

তখন সর্ব্বজ্ঞ প্রভু স্বার হৃদয়-বাসী। কার্য্যতরে নররূপ দমুল-কুল ঘাতক। শুন কপি-অধিপতি আর লক্ষাপতি বীর। মকর ভূজগ মীন-সঙ্গুল পারাবার। বিভীষণ কহে শুন হে প্রভু রখুনায়ক। তথাপি নীতি এ বলে আপনার কাল-ভরে। সর্ব্বরূপধারী সব-বির্হিত ও উদাসী॥ কংগন বছন এই নীতির প্রতিপালক ॥ ২ এ গভীর পারাবারে কি প্রকারে পা'বো ভীর॥ তলহীন অর্থবৈ ভরে সে শক্তি কা'র॥ ৩ কোটি হেন পারাবার-শোষক ভব শায়ক॥ সাগর-সকাশে গিয়া মিনতি জানাও তা'রে ॥৪

দো-হে প্রভু ভোমার বিনাই প্রয়াস

কুলের প্রবীণ ভাল কপি-দেনা

জ্বলধি ক'বে উপায়। সাগরে ভরিবে যা'য়॥ ৫०

(5)-রাম ক'ন স্থা তুমি কহিয়াছ সতুপায়। দেবতা সদয় হ'লে তবে ইচা করা যায়॥ এই যুক্তি লক্ষণের পরাণেতে নাহি লাগে। ক'ন নাথ দৈব 'পরে ভরদা আছে বা কোন। কাপুরুষণণ-মনে কেবল জরুসা ভারে।

রামের বচন শুনি' প্রাণ ভরে অন্তবোগে। ১ মনোমাঝে ক্রোধ আন' সাগরে কর শোষণ।। 'रेमव रेमव' व'मि फा'का ही श्कारत वांत्रवात ॥ २

এ কথা প্রবণে হাসি' ক'ন তবে রঘুবীর। এই কথা বলি' প্রভু বুঝাইয়া অমুদ্ধেরে। শির অবনত করি' প্রথমে প্রণাম করি'। বিভীষণ আসিলেন যেমনি প্রভুর পায়।

ভাহাই করিব মনে এখন ধরহ ধীর # সাগর-সমীপদেশে যা'ন রাম তীর 'পরে॥ ৩ কুশ বিছাইয়া পরে বসিলেন তটোপরি # সেইক্ষণে তাঁ'র পিছে রাবণ দুভে পাঠায়॥ ৪

ধরি' ছলে কপি-দেহ।

শরণাগভেরে স্বেহ ॥ ৫১

সুগ্রীব-সম্মুখে সকলে বাঁধিয়া আনে ॥ ১

অবয়ব-হানি' করি' ইহারে কর প্রেরণ ॥

রামের শপর যদি কর মোর কর্তন॥ ৩

বাঁধন ঘুচা'য়ে দেন ছরিতে দয়ায় হেসে'॥

श्मिनारमत हादिशारत वाँशिश **छा** देत भूताय ॥ २ চীৎকার করে তবু নিস্তার নাহি তা'র॥

রাবণের দূতের আগমন ও লক্ষাণের লিপি লইয়া প্রতিগমন

দো—সকল ব্যাপার নির্থিল দুভ (मग्र माध्वाम হ্যদে প্রভু-গ্রণে (5)—ধরি' নিজরূপ রাম-কভাব-মহিমা গায়। অভীব ভক্তি সনে ভুলিয়া কপটতার 🛭 অরাতির দৃত বলি' তথন কপিরা জানে। সুগ্রীব করে শুন যতেক বানরগণ। সুগ্রীব-বাণী শুনি' বানর সকল ধায়। কভই প্রকারে ভা'রে বানরে করে প্রহার। বক্ষ: তখন বলে নাসিকা কিবা প্রবণ। ইচা শুনি' লক্ষণ সবারে ডাকা'য়ে পাশে। ক'ন ভা'রে রাবণের হাতে দিও এ লিখন।

আর ব'লো কক্ষণের বারতা কর পঠন। ৪ সেই মৃঢ়-পাশে মিল' রাম সনে

বারতা মম উদার। উদিত কাল ভোমার ॥ ৫২

(5)- ছরা লক্ষ্ণ-পদে শির অবনত করি'। গাভিতে গাভিতে রাম-যশ ফিরে লক্ষায়।

(मा-व'ला वाहनिक সীতা অপিয়া

> রাম-গুণ বর্ণিয়া চলিল সে দৃত ফিরি'॥ নমিত করে সে শির তখন রাবণ-পায়॥ ১

আপন কুশল শুক নাহি কহ কি কারণ।।

দুভের রাবণকে উপদেশ ও লক্ষাণের লিপি দাম

হাসিয়া রাবণ করে জিজ্ঞাসা বিবরণ। ভা'র পর সমাগত মরণ শিয়রে যা'র। লয়া ত্যজিল মৃঢ় প্রভূতা করি' দলিত। পরে কহ কপি ভালু-সেনাদের সমাচার। याहारमञ्जूषीवरनत वक्की मिवमहम्। ডা'র পর কহ মোরে ডাপসবয়ের কথা।

সেই বিভীষণ-কথা গোচর কর আমার॥ ২ এখন ষবের কীট• হ'বে সেই ভাগ্যহত।। কালের প্রেরিভ হ'য়ে আসে যা'রা ছ্রাচার।। ৩ তথ্ই কোমল প্রোণ সাগরের পরে রয়।। বড়ই আমার ভর যা'দের পরাণে গাঁধা।। ৪

দো-পে'য়েছিস্ দেখা কেন না কচিস্

অথবা কিরে'ছে অরি-ডেজ বল

শুনি' কাণে যল মোর। চকিত জনয় ভো'র। ৫৩

[•] বেমন কৰেৰ সহিত কীটও নিম্পেৰিত হয়, সেই মত বানৰ-সেনাৰ সহিত বিভীংগও মৃত্যুমুখে পতিত হইৰে।

(5)—সৃত কৰে কুপা কৰি' শুধাইলে বেইমত। ক্ৰোধ ড্যাঞ্জি' নিবেদন শুন প্ৰাভু দেই মন্ড ॥ যেমনি অনুক্ত তব মিলিলা রামের সনে। तावरणत पृष्ठ चामि खावरण यथा शिका। নাদিকা ভাবণ মম কঠনে উন্নত শুধাই'ছ প্রান্ত্র প্রাম্বাহিনীর বল কত। विविध वद्रम क्लि अटक्ट्रेंद्र (मनाभग। এ পুরী দহিল যেব। বধিল ভোমার স্থতে। क्छविध नाम-धर कुलनी त्रा क्यान।

(प)-विविध प्रशम मधिम्य मर्ठ

বিকট-ৰদন কেশরী নিশঠ

(5)--- এপৰ বানৱে বল স্থ গ্রীব-সম ধরে। ভা'দের অভুল বল রামের করুণা-বলে। ওনে'ছি আপন কাণে ওহে প্রভু দশানন। एक व्यं विश्व विष्य অতি বোষ-ভরে করে করে-করে মর্দ্ধন। ক্রে মীন অহি সহ শুবিব সারা সাগর। নিপীড়িয়া দশাননে মিশাইব ধুলি সনে। ৰভাবে নিডর ভারে। গর্জে ডর্জে হেন।

শো-স্বাভাবিত বীব

কোটি কালে ভা'রা

ৰূপি ভালু সব প্ৰভু লয়াপতি

(চী—রামের প্রভাপ বল বৃদ্ধির বিপুল্ডা। লক্ষ্ম এক শৱে শুষিতে শত সাগৰ। ভ্রাতার বচন শুনি' পারাবার-সন্ধ্রিধানে। দুভের বচন ও নি' হেদে' উঠে দশানন। সহজ-ভীকুরঃ কথা করিয়া সে সপ্রমাণ। রে মুচ বড়াই রুখ। কি করিস্ভা'র আরে। কাপুক্ৰ বিভীৰণ যা'ৰ মন্ত্ৰণাদাতা। রাবণ-বচন শুনি' বাড়িল দুডের জেনধ। করে রামার্থ এই পত্র করিলা দান। হাস্ত করি' বাম করে লইল লিপি রাবণ।

দিলেন রাম শ্রীটীকা ভালে তাঁর দেইক্ষণে ! ১ বানরে বাঁধিয়া মোরে যাতনা কতট দিল ॥ রামের শপথ দিজে হইল তবে বির্ভ ॥ ২ কহিতে না পারে মুধ হইলেও কোটিশত ॥ বিক্ট-বদন ভা'রা স্থবিশাল ও ভীষণ ॥ ৩ সে-ই হেরি ফীণবল সকল কপির হ'তে # অগণিত করী-বল শরীর অভি বিশাল # & व्यक्त नम नीम ।

कायवान् वननीन ॥ ৫8

এইমত কোটি কোটি গণনা বা কেবা করে॥ তৃণ-সম জ্ঞান করে ত্রিভুবন-মণ্ড: । ১ অষ্টাদশ পদা কপি গণনে সেনানীগণ॥ সমরে যে নাহি পারে তোমারে করিতে জয় ॥ ২ এখনো না করি' লাভ রামের অনুমোদন ॥ করিব ভরাট নহে লইয়া বড় পাধব 🛭 🗷 এইমত কথা কচে যতেক বান্তগণে # অভিনাষ ধরে মনে লহা গ্রাসিতে যেন # 8

পুন: রাম শিরোপরে।

রণে জিনিবারে পারে। ৫৫ শতকোটি শেষ নারে কহিবারে সেই কথা ॥ ত্বাপি অন্তল-পাশে শুধা'ন নীতি-নাগর ॥ ১ গমনের পথ চা'ন এমনি করুণা মনে ॥ এই বৃদ্ধি তাই লয় বানর-পদে শরণ॥ ২ পারাবার সনে হঠ আচরিল অল্ল-জান ঃ অরাতির বল মতি বৃঝিয়াছি এইবার 🛚 👁 বিজয় বিভৃতি ভা'র জগত-মাঝারে কোখা ॥ পত্র বাহির করে যথা-কাল করি' বোধ ॥ ৪ পাঠ করাইয়া প্রভু শীতল কবত প্রাণ।

সচিবে ডাকা'য়ে পাঠ করাইল আরম্ভন ॥ ৫

[•] विकीयन ।

এীরামচরিত মানস

मरनदत्र वृक्षा देश কুলনাশ নাহি কর'। বে –কেবল কথাতে রাম-জোহী নাহি ত্রিমৃত্তি-শরণে পড়'॥ ৫৬ (₮) ৰাঁচিবে যদিও হয় ভাজি' মান হ' প্রভু-চরণ-ভুঙ্গ। অমুজ-সমান হ' কুল-সহ প্তঙ্গ ৷ ৫৬ (খ) অথবা রে খল রাম-কোপানলে

(5) -- निलि अनि' ভীত মন মুখে ওক হাসি আনি'। সবাবে ওনা'য়ে কহে দশানন এই বানী। ধরার পড়িয়া যথা ধরিতে চাহে আকাশ। দুত কহে ঠিক প্ৰভু বচন লিখিত যথা। ধরত বচন মম পরিহার করি' কোধ। যদিও 🕮 রাম হ'ন সকল ভুবনপতি। করিলেই সাক্ষাৎ প্রভু কুপা করিবেন। রামেরে জনক-মুতা কর' প্রতি-অর্পণ। সীতা-অর্পণ-কথা যথা দৃত মুখে নিল। শে-ও ভবে পদে তা'র নমিত করিয়া শির। প্রশাম করিয়া পদে জানাইল নিবেদন। অগন্তামনির শাপে শিব ক'ন হে ভবানি। রামের চরণতলে প্রণমিয়া বার বার।

লঘু-ভাপদের
ভথা এতেন কথা-বিলাস ॥ ১ মানের স্বভাব ত্যঞ্চি' বুঝহ সকল কথা। রামের সহিত ত্যাগ কর প্রভু এ বিরোধ 🛚 ২ তথাপি স্বভাব তিনি ধরেন কোমল অভি ॥ হৃদি-মাঝে অপরাধ কিছু নাহি রাখিবেন ॥ ৩ এই অমুরোধ প্রভু আমার কর গ্রহণ ॥ অমনি ভাহারে মৃঢ় পদাঘাত প্রহারিল # 8 চলিল যথায় র'ন কুপানিধি রঘুবীর॥ রাম-করুণায় পেল' মুনির গতি যেমন ॥ ৫ রাক্স হ'য়েছিল নতুবা সে মুনি জানী। আঞ্জম পানে মুনি গেল চলি' আপনার ॥ ७

সমুজের উপর রামের জোগ; ও সমুজের শুব

(पा-(रथा जिनमिन হইল অভীত সাগর কথা না মানে। জ্ঞয়ের বিহনে প্রীতি না আসিবে মনে ৷ ৫৭ কোপে রাম ক'ন

(5)-मन्त्रा न'त्य अन त्यात मंत्र मंत्रानन। মিনতি মুঢ়ের পাশে কুটিলের সনে শ্রীতি। মমতা-জড়িত জনে জ্ঞানের যত বচন। শাস্তি ক্রোধীর কাছে কামী-আগে হরি-কথা। এত বলি' রঘুপতি জ্যা দিলেন শরাসনে। প্রভু' হানিলেন শর করাল অভি ভীবণ। মকর উরগ মীন ব্যাকুলিড অভিশয়। কনক-খালায় ভরি' নানা মণি-উপহার।

व्यक्ति भाग्रदक कति मागरत এर व स्भायन ॥ অভাব-কুপণ পাশে কথা উদারতা-নীতি 🛚 ১ অভিশয় লোভী-আগে বৈরাগ্যের বিবরণ । উষর ভূমিতে বীজ-বপন বিফল যথা। ২ এ উপায় অভি ভাল লাগে लक्ष्य-মনে । উপজিত পারাবার-জদয়মাঝে দহন 🏽 ৩ জলনিধি যবে জানে প্রাণীরা দহিত হয়। মান ছাড়ি' আলে নিধি ধরিয়া ছিজ-আকার । ঃ

দো-কোটি যত্নে কেহ বিনয়েছে বশ

(मैठ्क कमनी হয় নাক' নীচ

কাটিলেই ফল ধরে। পথে আসে ভিরক্ষারে । ৫৮

🤇 🕳 আস ভরে প্রভূপদ অভ্যেইয়া পারাবার। বলে প্রভুক্ষা কর অপরাধ যা আমার॥ গগন সলিল ধরা পবন ও ভ্তাশন। তব প্রেরণায় মায়া সৃষ্টির কাল-তরে। যাহার উপরে প্রভু-আদেশ যেমন হয়। ৰল্যাণ হ'ল শিক্ষা করিলে হে প্রভু দান। তবু ঢোল মৃঢ় শৃদ্র পশু নারাগণ আর । প্ৰভূব প্ৰতাপে যা'ব শুকাইয়া নিশ্চয়। व्यम्बर्ग व्यापम एव (व्यम्ट इंश्वे क्य्रा

অভাবত: অড়-প্রায় ইহাদের আচরণ ॥ ১ ইহাদের বির্চিল শাল্রে এ গান করে॥ সেভাবে থাকায় ভা'রা পরাণেতে হুথ পায়॥ ২ জীবের শ্বভাব যত যদিও ভোমারি দান।। ইহারা ভাড়িত হ'তে ধরে শুধু অধিকার॥ 🕫 পারে যাবে সেন। ইহা মোর মহিমায় নয়॥ করহ ভাহাই দ্বা যাহা অভিকৃতি হয় ॥ ৪

দো—ভনি' অভিশয়

বিনীত বচন

শ্মিতহুখে রাম ক'ন।

কহ সে উপায়

যাহে ডাভ কপি-সেনা হয় উত্রণ॥ ৫৯

C5)—নাথ নলনীল নামে রহে তুই সহোদর। বালক-বয়সকালে লাভল মুনির বর ॥ ভাহার। পরশে যদি গিরি অতি গুরুভার। আমিও হাদয়ে ধরি' ভোমার প্রভাপ-বল। এই ভাবে পারাবারে করাইলে বন্ধন। এই শর হানি' মম উত্তর-ভটবাদী। কুপাল শুনিয়া ভবে সাগরের মন-খেদ। রামের পৌরুষ বল করি' নিধি দর্শন। পাপীদের সব কথা বিবরিয়া শুনাইল।

ভোমার প্রভাপ-বলে সাগরে দিবে সাঁভার॥ ১ হইৰ সহায় তব আমার যেমন বল ॥ ত্রিলোকে ভোমার যশ হ'বে প্রভু অভুলন ॥ ২ হনন করহ যভ খল নর পাপ-রাশি। করেন স্বরিতে রাম ভাহাদের উচ্ছেদ ॥ ৩ হইল পলক-মাঝে মহামুখে নিমগন। भए-वन्त्रना कति' मागत हिम्सा (शम ॥ 8

এরানগুণ-নাহাত্য্য

| ছ—সাগর ভবন | করিল গমন | রমুপতি হ'ন হরষ মনে। |
|---------------------|---------------|---------------------------|
| এ চরিত-বর | কলিমল-হর | যথা মতি দাস তুলসী ভণে ৷ |
| স্থার সদন | বিধার শমন | विवाप-प्रमा युराग-त्राम । |
| ওরে মৃঢ় মন | শো'ন্ কীৰ্ত্ন | কর্সদা ভ্যকি'সকল আশা |
| দো —সব মঙ্গল | চির বিধায়ক | রছুপত্তি-গুণ গান। |
| শুনিশে আদরে | ভরিবে ভবেরে | निवि विना कलयान ॥ ७० |

কলিষ্ণের সমস্ত পাপধ্বংসকারী জ্রীরামচরিত-মানদের এই পঞ্ম সোপান সমাপ্ত হইল ॥

(অন্মরকাও সমাও)

शिश्रामात्र मनः

श्रीकानकी बहुएकत कर

শ্রীরাম্চরিত মান্স

ষ্ট সোপান

লকাকাণ্ড

সৌক-কামারি-সেবিত রাম

যোগীখন-জ্ঞানগম্য
মায়াতীন স্থরেখন
পদ্মাক্ত জলদ-ভত্ন
শব্ধ-উন্দু-নিভ আভা
করাল কালের সম
কাশীখন যম তৃমি
প্রধাম গিরিজাপত্তি

किवना-भाष्ट्रन(७) यिनि

দো—কণ ও নিমেষ

নাভজিস্মন

আর খলে দওদাতা

ভব-ভয় দুরকারী
অক্সেয় গুণের নিধি
ভৎপর নিধন ছপ্ট
নপ-রূপ পরমেশ
অভীব ফুন্দর তফু
ব্যাল-ভূষণ-ধর
কলির কলুয-চয়ে
গুণনিধি ভব পারে

ককন সে শিবশস্তু যুগ পরমাণু

তেমন রামেরে

অভীব হুৰ্ল্ড যাহা

মন্ত করী কালের কেশরা
গুণের অতীত নির্কিকার।
একমাত্র ছিল রক্ষাকারী
বলি আমি চরণ তোমার ॥ ১
ব্যাজ-চর্ম্ম কটি-আভরণ
স্থরধুনী শশী-প্রিয় দেব।
কল্যাণের কঃক্রম সম

কল্প বর্ষ শর চণ্ড। বাঁহার কাল কোদণ্ড॥

মোর 'পরে বিস্তার কল্যাণ । ৩

माधुनरा करत्रन द्याना ।

সেতু-বন্ধন

লো—সিন্ধু-বাণী গুনি' তবে

বিলম্বে কি কাজ এবে শুনহ ভপনকুল-কেতৃ ভব নাম(ই) প্রভু ভব-সেতৃ- সচিবে ডাকিয়া প্রভু ক'ন। কর' সেতু বাহিনী-কারণ॥ জাখবান্ কহে জুড়ি' কর। যা'ডে জব-পারে যায় নর॥

(5)—এডটুকু এ সাগর শুষিতে লাগে কি কণ। প্রায়ুর প্রতিপে অভি ভীষণ বাড়বানল।

মাক্ততি কহিল পুন: শুনিয়া হেন বচন ॥ শুষিয়াছিল প্রেথম মহা-পয়োধির জল ॥ ১ অরাতি-রমণীগণ-রোদনের জলধারে। হতুর রহস্য ভরা বচন করি' প্রবণ। জামবান আবাহন করি' তবে নীল নলে। শ্রীরাম-প্রতাপ মনে রাখি' চির জাগরিত। তখন বানরদলে করি' কাছে আবাহন। রাম পদ-শতদল রাখ'নিজ নিজ মনে। ধাও সবে ভীমকায় মহাবীর ক্রিগ্ণ। শুনিতেই ধায় কপি ভালু করি' হুঙ্কার।

লবণ-সাগর হ'য়ে আবার গিয়াছে ড'রে 🏻 রম্বপত্তি-পানে চেয়ে কপিগণ প্রীত মন 🛚 ২ ভাহাদের সব কথা যতনে ব্ঝা'য়ে বলে। নির্মাণ কর সেতৃ প্রম নাহি কিছু ডাত॥ ৩ বলে সবে মিলি' ভন মোর কিছু নিবেদন ॥ এক খেলা খেল' সবে মিলি' কপি ভালুগণে 18 আন'ডক ধরাধর করি'করি' উৎপাটন। জীরামের প্রভাপের করি' জয়জয়কার॥ ৫

দো—অতি উত্তৰ আনিয়া তা' সবে

टेमन भागभ দেয় নল নীল হেলায় উপাড়ি' লয়। রচে সেতু কলাময় # ১

ঞ্জীরাম কর্তৃক রামেশবের প্রতিষ্ঠা

(b)—বিশাল-আকার গিরি করে কপি আনয়ন। কন্দুক-প্রায় নল নীল করে তা' গ্রহণ ॥ নয়নের অভিরাম সেতুর হেরি' রচন। অতি রমণীয় এই উকর মহীতল। এইস্থানে করিবারে মহাদেব প্রাভিন্তি। ইহা শুনি' কপিরাজ বহু দৃত পাঠাইল। লিক-স্থাপন করি' যথাবিধি পূঞা হয়। শিব-জ্রোহিজন যদি আমাব ভক্তি করে। মহেশ-বিমুখ যদি ভক্তি চাহে আমার।

হাসিয়া করুণানিধি কহেন ভবে বচন 🛚 ১ অসীম সহিমা এর কহিতে বাণী বিকল। পরম এ অভিলাষ মনোমাঝে সম্দিত॥ ২ মুনিবর সকলেরে যতন করি' আনিল। রাম ক'ন হর সম কেহ মম প্রিয়ন্য ॥ ৩ কথনো না পায় মোরে অপনেও ছেন নরে। সে নারকী মৃঢ় আর অভি লঘু মতি তার ॥৪

নে—হরের ভক্ত এমন মানব

জোহ মোর ²পরে , কল্ল ধরি' ছোর

শিব-জোহী মম দাস। নরকে করে নিবাস ॥ ২

চৌ-রামেশ্বর মহাদেব বে করিবে দরশন। ত্মরধুনী-বারি আনি' ঢালিবে ইহায় যেই। কামনা-অভীত হ'য়ে যে সেবিবে ছাডি' ছল। আমার রচিত দেতু দরশন যে করিবে। রামের বচন লাগে অতি প্রিয় সবাকার। হর ক'ন হে ভবানি জীরামের এই রীডি। বাঁধিল সাগর দোঁছে নল নীল মুচতুর। বে উৎপদ নিজে ডুবে অপরে ডুবার যাহা। সাগর-মহিমা ইহা নাহি হ'ল বর্ণিত।

সে পা'বে আমার ধাম তকু করি' বরজন ॥ সায়জ্য করিবে লাভ পুণ্যবান নর সেই॥ ১ দিবেন মতেশ তা'রে মোর ভক্তি অবিচল । আয়াস বিহনে ভব-মহাবারি সে ভরিবে ! ২ আপ্রমে যা'ন ফিরে' মুনিগণ যে যাঁহার । প্রণত জনের 'পরে সদাই তাঁহার প্রীতি॥ ৩ রামের কুপায় যশে হ'ল ধরা ভরপুর ॥ ভরণী-সমান ভাসে ভাসায় অপরে ভারা 🛚 ৪ লৈলের গুণ নহে নহেক কপির যাড় 🛚 🕏

বো—গ্রীরগ্নাথের মন্দমতি সেই অমিড প্রভাপে অপর প্রভুরে

সাগরে ভাসে পাবাণ। যেবা ভজে ভাজি'রাম॥৩

সাগর উত্তরণ

(চী — অভিশয় দৃঢ দেতু করা হ'ল বিরচন।
চলিতে লাগিল দেনা বর্ণনা হ'বে কত।
কুপাময় রঘ্নাথ দেতু-তটে আরোহিয়া।
পরম করুণা-মূল প্রভুব দরশ-তরে।
মকর হাঙ্গর নানা মীন জ্বাতি আর ব্যাল।
আদিল এমন জীব তা'দের(ও) যাহারা খায়।
প্রভু-পানে চাহি' রহে স্বাইলে নাহি সরে।
তা'দের কারণে জল চ'পে দেখা নাহি যায়।
প্রভুর আদেশ লভি' বাহিনী গমন করে।

কুপানিধি মনে প্রীত করি' তাহা দরশন ॥
অবিরত গর্জন করে কপি-বীর যত ॥ ১
রছিলেন অখুর প্রসার পানে চাহিয়া ॥
জলচর প্রাণী যত আদিল সলিলোপরে ॥ ২
যোজন যোজন শত দেহ যা'র স্থবিশাল ॥
কাহারো কাহারো ডরে তাহারাও ভয় পায় ॥ ৩
পরাণে হরষ ভরা ভাসে সবে মুথ সরে ॥
হরি রূপ হেরে তা'রা প্রেমের মগনতায ॥ ৪
কিপিদল কি বিপুল কে তাহা কহিতে পারে ॥৫

দো—সেতু 'পরে ভীড় জলচরগণ- অভিশয় কপি 'পরে আরোহিয়া আকাশে উডিয়া চলে। কতক বাহিনী চলে॥ ৪

অবেল পর্কতে অবস্থান; রাবণের ব্যাকুলভা

(5) — এইমত কোতৃক করি' দোঁতে দরশন।
বাহিনী সহিত হ'ন লকায় উভরিত।
শিবির স্থাপিলা প্রভু সাগরের পরপারে।
যাও সবে খাও ফল মূল অভি স্থমধুর।
রামের হিতের ভরে ভরেগণ ফলবান্।
খায় স্থমধুর ফল নাড়া দেয বিটপীরে।
যেশানে করিতে দেখে রাক্ষসে বিচরণ।
কামড়িয়া কেটে লয় নাসিকা প্রবণহয়।
এ ভাবে যে নিশাচর হয় নাসা কাণ হারা।
সাগর ফেলে'ছে বেঁথে' একথা প্রবণে শুনে'।

হাসিয়া চলেন কুপাময় রাম লক্ষণ॥
কড যে সেনানী সেনা সে আর কহিব কড॥১
আদেশ বানরগণে দেন রাম একেবারে॥
শুনিতেই ধায় কপি ভালু স্থেখ ভরপুর॥২
সময় কি অসময় সে সবের নাহি জান॥
পাহাডের চূড়া ভাঙ্গি লহার পানে ছুঁড়ে॥ ৩
সকলে বেরিয়া ভা'রে করে নানা আলাভন॥
ছেডে' দেয় যবে প্রেডু-গুণগান মুখে কয়॥৪
রাবণ-সমীপে গিয়া সব কথা বলে ভা'রা॥
রাবণ বলিয়া উঠে অভীব আকুল প্রাণে॥ ৫

ডো—সভ্য কি বেঁণেছৈ ভোয়-অধিপতি সলিলাধিপতি নীর-অধিবর জলধি সিন্ধু বারীশ। উদৰি পয়োধি ঈশ॥ ৫

त्रावरणब् अकि मरन्यापत्रीत छेशरमम

(b) — আপনার আকুলতা আপনি করি' বিচার। ডর ড্য'জ' দশানন গৃতে যায় আপনার॥ কাণে যবে মন্দোদরী শুনে প্রেভু আসিলেন। ধেলা-ছলে উত্তাল পারাবারে বাঁধিলেন॥ ১ তথন ধরিয়া করে পতিরে ভবনে আনি'।
চরণে নমিয়া শির অঞ্চল প্রসারিয়া।
হে প্রভু তাহারি সনে বিরোধ করা উচিত।
তোমার ও রাম-মাঝে অন্তর সেইমত।
সীমাহীন বল মধুকৈটভে যেবা মারে।
বলিরে বাঁধিল কার্তবীর্য্যে যে বিনাশিল।
তাঁর সনে বৈরতা করিও না প্রাণনাধ।

কহেন ভাহারে অভি মন-বিমোহন বানী।
ক'ন নাথ শুন কথা হুদি-রোম বরজিয়া। ২
বুদ্ধি বলে যা'র সনে ভোমার হইবে জিভ।
জোনাকী ও দিবাকরে প্রভেদ র'য়েছে যভ। ৩
বীরগণ-অগ্রগণ্য দিভিমতে সংহারে॥
ধরা-ভার হরিবারে সেই আসি' উভরিদ। ৪
কর্ম কাল জীব সব(ই) র'য়েছে বাহার হাত। ৫

পৌ—রামেরে প্রদান তনয়েরে দিয়া করি' জানকীরে রাজাসন বনে

চরণে নমিয়া মাথ। গিয়া ভক্ত রঘুনাথ। •

(b) — দীনজনে অভি দয়া-পরবশ রশ্বায়।
ভোমার কামনা যত সবি ত' হ'ল পুরণ।
সাধুগণ এই নীতি ক'য়েছেন মহারাজ।
ভথায় ভজনা স্বামি করহ চরণ তাঁর।
তিনিই সে রঘুনাথ প্রণতের হিতকারী।
বাঁহারে লভিতে মুনি করেন কত যতন।
তিনিই যে কোশলের অধিপতি প্রভু রাম।
যদি ওতে প্রাণপতি মান' মম এ বচন।

শরণে আসিলে পরে শার্দ্গ(৩) নাই খায় ॥
স্থাস্থর চরাচর পরশে তব চরণ ॥ ১
জরায় কানন মাঝে যাওয়াই নৃপের কাজ ॥
সংজ্ঞান পালেন যিনি করেন বিনাশ আর ॥ ২
ভক্ষ তাঁহারে নাথ সব মায়া পরিহরি'॥
বিরাগী হয়েন নূপ ভ্যাগ করি' রাজাসন ॥ ৩
ভোমারে করিতে কুপা উপনীত গুণধাম ॥
অতি পৃত যশে তব ভ'রে যা'বে ত্রিভুবল ॥ ৪

দো—এত কহি' ভরি' কলে হ'বে তব ছ নয়নে নীর ভাগ্য অচল **ক**ম্পিতা ধরি' পায়। ভজারাম রমুরায়॥ ৭

(5)—রাবণ করিয়া ময়-সূহিতায় উস্তোলন।
কহে প্রিয়া শুন বলি বুখা তব মনে ভয়।
কুবের বরণ কিবা পবন শমন কাল।
দকুল অমর নর মোর বলে সবে রয়।
নানাবিধি ময়-সূতা রাবণেরে বৃথাইল।
বৃষ্ধিল হুদয়-মাঝে ময়-সূতা পরিশেৰে।

করিতে লাগিল নিজ প্রভুতার বর্ণন ।
আমার সমান বীর জগমাঝে কেবা রয় ॥ ১
বিজিত এ ভুজবলে যত সব দিক্পাল ॥
কি কারণে তব মনে উপজিল এই ভয় ॥ ২
রাবণ দভায় গিয়া আবার আসন নিল ॥
কাল-কবলিত তা'ই প্রাণে অভিমান আসে ॥ ৩

রাবণ প্রহন্ত সংবাদ

সঞ্জায় ফিরিয়া করে সচিবেরে সম্বোধন। সচিব ভাষাতে কহে স'য়ে এই কথা ছার। বলুন ড', কিবা হেন ছালি-মাঝে মহাডর। কহ অরাতির সনে কি ভাবে হইবে রগ । হে প্রভুরাক্ষসপতি কি ওধা'ন বারবার ॥ ৪ আহার ড' আমাদের কপি ভালু আর নর ॥ ৫ **লো**—সবার বচন নীত্তি-অপলাপ ভূনি' প্রহন্ত

করকোড় করি' কর। মন্ত্রী মৃঢ় অভিশয় ॥ ৮

(চ)—চাটুকার-বাণী কহে মূর্থ সাচবগণ।
তথ্ এক কপি এ'ল বারি লজ্বন করি'।
তথন কি কা'রো নাহি ছিল ক্ষ্থা-ছতাশন।
সচিবেরা যে মন্ত্রণা শুনাইল বিধিমতে।
হেলায় বাঁথিল যেবা উত্তাল পারাবার।
বলুন ত'নর কি সে করিব যা'রে আহার।
হে তাত বচন মম আদরে কর শ্রবণ।
শ্রবণের মুখকর প্রিয় কথা যা'রা বলে।
শুনিতে কঠোর বটে পরম হিত্ত-বচন।
প্রথমে পাঠাও দৃত শুন কথা ভরা নীতি।

এ ভাবে না হ'বে কাঞ্চ-উদ্ধার কদাচন ॥
আব্দো আছে ভা'র কথা স্বাকার মন্ ভরি'॥ >
নগর দহিতে কেন না করিল ভক্ষণ ॥
এখন শুনিতে ভাল ত্থ আছে পশ্চাতে ॥ ২
ম্বলে গিরিতে যেবা আনিল বাহিনী আর ॥
বড়াই করিয়া সবে বচন কহে অসার ॥ ৩
মোরে যেন কাপুরুষ করিও না বিবেচন ॥
হেন চাটু-কথা পটু বহু রহে মহীতলে ॥ ৪
থেবা শুনে আর বলে বিরল এমন জন ॥
সীভারে ফিরা'য়ে দিয়া কর ভা'র সনে শ্রীভি॥৫

(দা—বনিভারে পে'য়ে নহিলে সম্থ- যদি কিংর' যায় সমরেতে ভাত বাড়া'য়ো না ঝশ্বাট। ক'রো পুব মারকাট॥ ৯

(5)—বচন আমার প্রাকু যদি তব মনে লয়।
কুপিত হইয়া কহে স্কৃত-প্রাত দশানন।
এখনি-ই সন্দেহ হাদে হয় জ্ঞাগরিত।
শুনিয়া পিতার বাণী পরুষণ অভীব ঘোর।
কাল-কবলিত জনে ঔষধ যেই মত।
প্রদোষ আগত হেরি' লঙ্কাধিপ দশানন।
বিরাজে তবন এক লঙ্কা-শিশ্বর 'পর।
সে তবনে উপনীত হ'য়ে বলে দশানন।
বাজি'তে মুরজ বাজে করতাল আর বীণা।

উভয় প্রকারে যশ হ'বে ভবে নিশ্চয়।

হেন মতি ভো'রে মৃঢ় প্রাণানিল কোন্ জন॥ ১

বেণ্-মুলে কু-বিটপী সম তুই সমূদিত॥

আলয়ে চলিল ফিরে' বচন কহি' কঠোর॥ ২
ভোমার লাগে না ভাল হিত কথা সেইমত॥
গৃহে যায় নিজ বিংশ-ভূজ করি' দরশন॥ ৩

অভি বিচিত্র রক্ষ-ভবন মানল হর॥

স্থাক করে ভাতিগান যভ কিল্লবগণ॥ ৪

অক্ষরগণ নাচে নর্ভন-মুপ্রবীণা॥ ৫

জ্বো—শত পুরন্দর-অভীব প্রবল সমান নিয়ত শিয়রে অরাতি রাবণ করে বিলাস। ডবু নাহি শোচ আস॥ ১০

ম্বৰেল পৰ্বতে চন্দ্ৰোদয় বৰ্ণন

ক্রে—এদিকে স্থবেল গিরি 'পরে রাম রমুরায়। উত্তরেন সহ সেনা সাগর-শহর প্রায়। উচ্চ শিখর তাহে করি' এক দরশন। সমতল শুদ্র অতি আর প্রাণ-বিমোহন। ১

[•] शांतरमध्यम् शूखः। वे सहः।

তক হ'তে কিশলয় লইয়া কুসুম দল। উপরে রুচির এক মস্থ মুগছাল-। স্থগ্রীব-ক্রোড় 'পরে স্থাপিত প্রভুর শির। যুগল কমল-করে শর হয সংস্কার। অতি মহা ভাগ্যবান্ অঙ্গদ বায়ু-সুত। বীরাসনে বসি' প্রভু-পশ্চাতে লক্ষ্মণ।

বিছা'লেন লক্ষণ সহ নিজ পাণি' জল । আসনে বিরাজনান জীরাম মহা কুপাল।। ২ দক্ষিণ বামপাশে রচে কাম্মুক ভীর। কাণে কাণে মন্ত্রণা করে বিভীষণ আর ॥ ৩ কত-ভাবে সে চরণ-শতদল সেবা-রত । কটিতে তৃণীর বাঁধা করে শর শরাসন। ৪

| দো—এই ভাবে কুপা | ক্লপ-গুণ-ধাম | প্রভু রাম সমাসীন। |
|-----------------|---------------|------------------------|
| ধশ্য সেই নর | এ রূপ-ধেয়ানে | যেবা রহে লোলীন। ১১ (ক) |
| পুরবে চাহিয়া | হোরদেন প্রভু | সমুদিত শশধর। |
| ক্তেন স্বারে | (प्रथ ममधरत | কেশরী-সম নিডর 🛭 ১১ (খ) |

(5)—প্রাচী-দিশি-বিরাজিত শৈলের গুহাবাসী। পরম প্রভাপ তেজ ও বিপুল বলরাশি॥ মন্ত বারণ-ভম:-শির করি' বিদারণ। আকাশে ছড়ান' তারা মুকুতা সকলে যেন। প্রভু ক'ন কহ দেখি' মনেতে বিচার ক'রে। সুগ্রাব করে প্রভু মোর মতি-অনুসারে। আঘাত করিল রাজ টাদেরে কেহ বা কয়। কেহ বলে রতি-মুখ বিধাতা গড়েন যবে। ছিড়া দে আজে। রহে ইন্দুর ওই বুকে। প্রভুক'ন হলাহল ইন্দুর প্রিয ভাই। হলাহল-সিঞ্জি নিশিত কর-প্রসারি'।

সিংহ-সম শশী করে নভ:-বনে বিচরণ ॥ > নিশীথিনী-কামিনীর কম শৃঙ্গার-হেন॥ কিবা ওই শ্রামলিমা বিরাজিত শশধরে॥ ২ ধরণীর ভায়। রহে নিশাকর-কলেবরে ॥ ভাগারি ও শ্রামলিমা সারা দেহে ছে'য়ে রয়॥৩ শশী হ'তে সার ভাগ হরিয়া নিশেন তবে। সে-পরে নভের কাল ছাযা পড়ে সব-চ'থে ॥ ৪ আপন বুকেতে তা'রে আদরে রাখিলা ডাই॥ দতে সে বিরহ-যুক্ত যাবতীয় নবনারী॥ ৫

| ছো—হনুমান কলে | শুন প্রজু তব | শশধর প্রিয় দাস। |
|---------------|-------------------------|----------------------------|
| তোমার ম্রভি | বুকে গাঁ থা তা'র | ভা'তেই শ্রাম-আভাষ ॥ ১২ (ক) |
| পবন-স্থতেব | বচন শ্রবণে | হাসেন রাম স্কান। |
| দক্ষিণ-পাৰে | অবলোকি' প্ৰভূ | কছেন কুপা-নিধান ॥ ১২ (খ) |

(5) -- (मथ (मथ विडीयन मकिन मिक्-भारत। मध्त मध्त किवा चन करत शतकन। বিভীষণ কহে তবে শুন প্রভু কুপাময়। লছা-শিখর 'পরে বিলাদের নিকেতন। জলদ-বরণ শিরে ছত্র করে বাহার। ময়-ছহিতার কাণে আভরণ বিমোহন।

জলদ-নিবিভূ ছা'য় দামিনী কেমন হালে। হয় ভ' করকা কোপা হইতেছে বর্ষণ॥ ১ নহেক ভড়িৎ উহা জলধর(ও) উহা নয়। নৃত্যগীত উপভোগ করে তথা দশানন॥ ২ খন-খ্রাম খনখটা-ছটা করে অসুকার। श्रामिनी-समक सम हमकि'रइ असू-'अन ॥ ७

বাজিতেছে অনুপম করতাল পাথোয়াজ : ঈবৎ হাদেন রাম হেরি' তা'র অভিমান। মধুর গরজ সেই শুন সুরকুল-রাজ ॥ ধন্তুতে চড়া'য়ে জ্যা হানিলেন এক বাণ ॥ ৪

(स्रा—हत मुक्छ কৰ্মিড এক বাণে। শ্রুতি-আন্তরণ পড়ে মহীতলে মৰ্ঘ কেহ না জানে॥ ১৩ (ক) স্বাকার আগে ক্রীড়া সমাপিয়া পশিল পুন: নিষ্ক্ । রামের শায়ক রাবণ-সভায় সচকিত সবে হেরি' মহা রস-ভঙ্গ। ১৩ (খ)

(5)—নাহি কাঁপে বসুমতী উতল না বহে বায়। অথবা আয়ুধ কোন নয়নে না দেখা যায়॥ আপন আপন মনে সকলে করে বিচার। ত্রাদে অভিমৃত সভা অবলোকি' দশানন। শির অর্পণে যা'র শুভ হয় নিরম্ভর। শয়ন করছ এবে নিজ নিজ বাসে গিয়া। খসিতেই ধরাতলে সোণার কাণের ফুল।

অশুভ নিদর্শন উদিত হ'ল অপার॥ ১ যুক্তির যোগে হাসি' কহিল হেন বচন। মুকুট-খালনে ভা'র অশুভ কেন এ ডর ॥ ২ যায় সবে গ্রহে ফিরে' পদে ডা'র প্রণমিয়া॥ ময়-স্থুতা মনে হ'ল চিন্তা স্থুদুঢ়-মূল ॥ ৩

মন্দোদরীর রাবণকে পুনর্বার উপদেশ ও রাম-মহিমা কীর্ত্তম

সঞ্জ-নয়নে কভে করি' তুই কর যোড়। প্রিয়তম রাম-সনে এ বিরোধ পরিহর'।

বেশ-বিশ্বরূপ রাম

অবয়বে বাঁ'র

রম্বুজ-মণি কতই ভূবন

শুন শুন প্রাণপতি কাতর মিনতি মোর।। মানুষ ভাবিয়া হঠ মন-মাঝে নাহি ধর'॥ ৪

> মান' মোর এ কথার। विदारक (वरम ध भाग ॥ ১५

চৌ—পাভাল চরণ যাঁ'র শিরে বিধিলোক রয়। জ্ৰকুটি-বিশাস কাল করাল সে ভয়ন্বর। নাসিক। হইরা রহে অশ্বিনীর হু' কুমার। 🛎 ভি দশ দিক্ যাহা নিগম কহে বাখানি'। বাঁহার অধর লোভ দশন যম করাল। মৃথ যাঁ র হুতাশন রসনা সলিলপতি। अष्टोषभ वनन्भिष्ठ य भंदीरत रतामावनी। সাগর উপর অধ:- অঙ্গ নিরয় যত।

বো-অহকার হর মানব-আকারে

বৃদ্ধি, চারিমুখ বিশ্বরূপ সেই

গণনা-অভীত ধাম রাজে কলেবরময়॥ व्यमका क्रमम-क्षाम व्याचि गाँउ मिराकद्र ॥ ১ আঁখির নিমেব যেন দিবস রজনী হাঁ'র॥ निश्राम वात्र व्यात ठाति (वन याँ त वानी॥ २ মায়া হাসি ভুৰগণ যত সব দিকপাল। স্থন পালন লয় যাঁ'র ৩ধু ক্রিয়া-পতি॥ ৩ অক্টি ভূধর শিরা ধমনী সরিতাবলী॥ ব্দগময় প্রাভুরূপ-কল্পনা হ'বে কভ ॥ ৪

> विकृ हिक भनी भन। রমুকুল-বিভূষণ ॥ ১৫ (ক)

এীরামচরিত মানস

এ বিচার করি' আমার সোচাগ শুন প্রাণপত্তি যাহাতে না যায়

ভ্যক' বাদ প্ৰভু-সনে। প্রীতি কর' সে চরণে ॥ ১৫ (খ)

চৌ—রাবণ হাসিল ভানি বনিভার এ বয়ান। রমণীর স্বভাবেতে সত্যই সবে কয়। সাহস ও মায়াজাল চপলতা মিখ্যাচার। অরাতির রূপ যাহ। করিলে ভা' বর্ণন। সে অস ড' প্রিয়তমে আমারি রহে অধান। তব চতুরতা যত বুঝিয়াছি স্থলোচনা। রহত্তে পুরিভ অতি মুগ-আঁখি ভব বাণী। রক্ষঃ-রাণী মনোমাঝে এ দৃঢ প্রভীতি এল।

কহিল মোহের ওহে৷ মহিমা কি বলবান II অষ্ট-প্রকার দোষ চিরদিন ছে'য়ে রয়॥ ১ অপুততা অবিবেক নিঠরতা ভয় আর॥ অতীব দারুণ ভয় করা'লে মোরে ঋবণ 🛚 ২ তোমারি কুপার ভরে বঝে'ছে তব এ দীন ॥ এ ভাবে প্রভাপ মোর নিয়ত কর রটন। ॥ ৩ বুঝিলে হুখদ হয় প্রবণেতে ভয়-হানি ॥ কাল-কবলিত পতি তা'ই ভ্ৰষ্ট মতি হ'ল ॥ ৪

(দা—এ ভাবে বিনোদ স্বভাব-নিডর অমৃত খন না মৃঢ়ে চেডনা

করিতে অনেক লঙ্কা-অধিপ वत्रय यमिख মিলিলেও গুরু যামিনী পোচা'য়ে এল! সভায় চলিয়া' গেল॥ ১৬ (ক) বেডদে ধরে না ফুল। ত্রকার সমতুল ॥ ১৬ (খ)

व्यवद्यत्र मचा शंमम

(5)-এ দিকে প্রভাত কালে জাগিলেন রঘুরায়। শুধা'লেন অভিমত আহ্বানি' স্বাকায়। ক'ন কছ ছরা করি' কি উপায় করা যা'বে। अनर मर्वछ अङ्ग मवात्र समग्र-वामि। মন্ত্রণা কহি এই নিজ মতি অরুগারে । যুক্তি অতীব শ্রেয়ঃ বলি' সবে করে জ্ঞান। বল মতি গুণধাম হে বীর বালির স্থাত। ভোমারে অধিক ক'রে বঝা'য়ে কি ক'ব আর। অরি-সনে সেই ভাবে ক'রো কথা-বিনিময়।

সো—প্রভুর আদেশ ধরি' শির करह श्रुगमिधि धीत्र আপনি সফল সব কাৰ এ কথা ভাবিয়া ব্বরাজ

(চ)---বন্দি' চরণে প্রাণে ধরিয়া প্রভাপ ভা'র। সকলে নমিয়া চলে বালির প্রিয়-কুমার & नमत्र-निभूग योज जनम निर्कत् ॥ ১ রামের প্রভাপে প্রাণ সহজ বিগত-ভয়।

ৰাম্বান পদে শিৱ নোয়া'য়ে কহিল তবে॥ ১ বৃদ্ধি বল পরাক্রম ধর্ম ও গুণ-রাশি॥ পাঠাও দুভের রূপে বীর বালি-সুকুমারে ॥ ২ অঙ্গদ-প্রতি ভবে কহেন রূপানিধান ॥ লভায় যাও এবে আমার কাকেতে ভাত॥ ৩ পর্ম চতুর তুমি জানা আছে তা' আমার ॥ যাহে মোর কাজ আর কল্যাণ ভা'র হয় ॥ ৪ বালি-স্থন্ড উঠে পদে নমি'। কুপা রাম যা'রে কর তুমি । ১৭(ক) প্রভু মোরে শুধু দেন মান মূল-কায় পুলকিড-প্রাণ । ১৭(খ)

করিতে প্রবেশ পুরে রাবণ-তনয়ে পায়।
কথায় কথায় বাড়ে মলিনজা ছুঁছ মনে।
অঙ্গল-প্রতি করে নিজ পদ উডোলন।
রাক্ষসগণ হেরি' হেন ভয়ানক বীরে।
এ উহার পাশে কিছু প্রকৃত কথা না কয়।
নগর-ভিতরে শেবে কোলাহল সমুদিত।
অভি ভয়ে ভীত হ'য়ে সকলে করে বিচার।
কোন কথা না শুধা'য়ে দেয় পথ দেখাইয়া।

পুনীর সমুখে বেবা নিরত ছিল খেলার ॥
বীরতার অতুলন তাহে বুবা হুই জনে ॥ ২
ধরি' তা' ভুরা'য়ে কপি ধরার করে পাতন ॥
ছুটে যে যেদিকে পার গোল করিতেও নারে ॥৩
কুমারের প্রাণ-নাশ ভির জানি' চুপ রয় ॥
যে কপি দহিল পুরা সে পুন: হ'ল আগত ॥ ৪
কে জানে বিধির মনে কিবা আছে এইবার ॥
যে-ই দেখে সে-ই যেন ভয়ে যায় শুকাইয়।॥৫

রাবণ-অঞ্চল লংবাদ

দো—সভার ভোরণে হেরে চারিদিক উপনীত শেষে বীরকুল-চূড়া রামের চরণ শ্বরি'। সিংহ-ধীরভা ধরি'॥ ১৮

চৌ—ছরিতে অঙ্গদ এক রাক্ষ্যে পাঠাইল।
তা' শুনি' হাসিয়া কহে লঙ্কেশ দশানন।
আদেশ করিয়া লাভ অনেক দৃতেরা ধায়।
অঙ্গদ দশাননে করে হেন দরশন।
ভূজ মহীরুহ শির ভূধর-শিধর-প্রায়।
বদন নাসিকা কিবা নয়ন শ্রুবণ আর।
অভি বিক্রম-যুত রণ-বীর বালি-স্ত।
অঙ্গদে হেরি' সবে আসন চাডিয়া উঠে।

রাবণেরে সমাচার দিতে তা'রে ব'লে দিল ॥
কোথাকার সে বানর তেকে আন'কোন জন ॥১
কপি-কুঞ্জরে তাকি' সভায় লইয়া যায় ॥
কজ্জল-গিরি যেন সজাব সহ চেতন ॥ ২
লোমাবলী লে শরীরে যেন লতা সমুদায় ॥
গিরি-কল্পরে খাদে যেন করে অমুকার ॥ ৩
সভায় দাঁড়া'য়ে মনে তিল নহে বিশ্বিত ॥
রাবণের মনোমাঝে নিদারণ ক্রোধ জুটে ॥ ৪

জে। নাম-বল ভণা রাম-বল যুপের মাঝারে শ্বরি' বদে অভি- কেশরী চলিয়া যায়। বাদন করি সভায়॥ ১৯

(চ)—শুধাইল দশানন কে তুই ওরে বানর।
পিতায় তোমায় ছিল হাছতা অতিশয়।
উত্তম কুল-জাত পুলস্তা মুনির নাতি।
করিয়াছ বরলাভ সকল বাসনা যত।
নূপ-অভিমানবশে অথবা মোহের ভূলে।
শ্রাবণ করহ,এবে এই মোর হিড-বানী।
দশনে ধরহ ভূণ কণ্ঠ পিরে কুঠার।
আদরে সীতারে ল'য়ে স্বাকার প্রোভাগে।

আমি শ্রীরামের দৃত এল তা'র উত্তর ॥
তোমার হিতের তরে তা'ই আসা মহাশয় ॥ ১
বিধাতা মহেশে তুমি আরাধিলে বহুভাঁতি,॥
লোকপাল নুপগণ সবে তব পদানত ॥ ২
সারা ভগতের মাতা ভানকী হরিছা নিলে॥
সব অপরাধ তব ক্ষমিবেন রখুমণি॥ ৩
আপন বনিতা সহ সহ নিজ পরিবার ॥
ভাজিয়া সকল ভব্ন যাও শ্রীরামের আলে॥ ৪

জীরামচরিত মানস

লো—প্রণত-শরণ কাতর বচন রযুক্লমণি শুনিলেই প্রভু ত্রাহি ত্রাহি এবে মোরে। অভয় দিবেন ভো'রে॥ ২•

(5)—রে কপির পুৎ মুখে ক'স্কথা সংযত।
বলু তো'র নিজ নাম আর তো'র জনকের।
আঙ্গদ নাম মোর কপীশ বালি-তনয়।
আঙ্গদ-বাণী শুনি' কুঞিত দশানন।
বালির তনর তুই আঙ্গদ নাম তো'র।
জঠেরে মরণ কেন নাহি হ'ল মিছে এলি।
বালির কুশল বল্ কোথা দে থাকে এখন।
দিন দশ গত হ'লে নিজে গিয়ে বালি-কাছে।
রাম জোহ-প্রতিফলে যেমন কুশল হয়।
শোন্মৃত ভেদ-নীতি তা'রি মনে পায় স্থান।

দেবতার অরি আমি না জানিস্ভাগাহত ॥

কি ছলে হুছাতা-দাবী করিস্ এ লক্ষেশের ॥ >
কথনো কি তাঁর সনে হ'য়েছিল পরিচয় ॥

বলে জানি বালি-নামে ছিল কপি একজন ॥ >
৩বে কুল-বিনাশক বেণুর অনল ঘোর ॥
নিজ মুখে তাপসের দৃত পরিচয় দিলি ॥ ৩
তানি' অলদ হাসি' বলে তবে এ বচন ॥
স্থারে জড়া'য়ে বুকে শুখা'যো কেমন আছে ॥ ৪
সব সে শুনা'বে ভোমা ভাহাতে নাহিক ভ্য ॥
অদয়ে না ধরে খেবা রঘুবীর ভগবান্॥ ৫

(দা--- সত্য কুল-নাশ। অন্ধ মুক নাহি আমি আর তুমি কহে হেন বাণী পালক-কুল স্বজান। বিশ তব আঁখি কাণ॥২১

(চ)—বিধাত। মহেশ দেব মুনিগণ আর যত।
তাঁ'র দৃত হ'য়ে আমি কুল-বিনাশক হ'ব।
তানিয়া কঠোর ভাষা অলদ-মুখ হ'তে।
বে পাপি ধরম-নীতি সব অবগত মোর।
কপি কহে জ্ঞাত আছি তব ধর্ম-আচরণ।
দেখে'ছি কেমন তুমি দৃতগণে রক্ষাকারী।
নির্ধিয়া সহোদরা বিগত নাসা শ্রবণ।
ধর্মশীলতা তব জানে সারা সংসার।

যাঁ'র চরণের দাস হ'তে সবে লালায়িত॥
হেন মতি তবু হিয়া দীর্ণ না হয় তব॥ ১
লক্ষেণ কহে তবে চাহি' বঞ্জ-নয়নেতে॥
তা'ই সহি আমি এই রুচ বাণী যত তো'র॥ ২
পরের রমণী চুরি করা এহে দশানন॥
তুবিয়ানামর' কেন ওহে ধর্ম-ত্রতধারিশ॥ ৩
ধর্ম ভেবে'ই ক্ষমা ক'বেছ ত হে বাজান্॥
তব দবশন লাভ বড ভাগা এ আমার॥ ৪

বেশি—কথা বলা বৃথা
 কোকপাল্-বল পুন: নভ:-সরে
মরাল সমান

ব্দড়-পশু কপি চাঁদেরে গ্রাসিতে দেখ্ এই মোর বাছ।
এরা যেন সব রাছ । ২২ (ক)
কমলে করিয়া বাস।

এ কর নিকর-শোভিলা ঈশান

সহ তাঁ'র কৈলাস ৷ ২২ (খ)

GD — বল্ দেখি অঞ্চদ ভো'দের সেনার মাঝে। আমারে ভেটিবে রণে কে এমন বীর আছে। তো'র ড' বে প্রাডু নারী-বিরহে সে বলহীন। আর যে অঞ্চল সেও তা'র হুখে বিমলিন। তৃই আর সূত্রীব ক্ল-ক্রমঞ্চ তৃইজন।
জাম্বান্ মন্ত্রী আছে তবে সে স্থবির অভি।
শিল্প-করম শুধু অবগত নল নীল।
সব-আগে হেখা আসি' নগরীরে যে দহিল।
সত্য করিয়া বল লক্ষাপতি দশানন।
রাবণের পুরী দাহ ক্রম্ম এক কপি করে।
যা'রে মহাবীর বলি' ৰাখানিলে রক্ষ:বর।
গতি-বেগ অভি ভা'র তবে সে নহেক বীর।

আর আছে ভ্রাতা মোর মহা ভীক বিভীষণ। রণে উন্নত হ'বে কোথা তা'র সে শক্তি॥ ২ আছে বটে এক কপি যেবা মহা বলশীল॥ রাবণ-বচনে বালি-কুমার উত্তর দিল॥ ৩ সত্যই কি দে বানর করিল পুরী দহন॥ সত্য বলিযা কেবা এ কথা প্রতীত করে॥ ৪ মুগ্রীবের বার্ত্তাবহ সে ত' এক কুজত্তর॥ বাবতা লইতে তা'ই পাঠা'লেন রঘ্বীর॥ ৫

| | ~ |
|-----------------|---|
| বিনা অহুমতি | দহিল পুরী ভোমার। |
| লুকা'য়ে নাকিরে | স্থগ্রীব-পাশে আর॥ ২৩ (ক) |
| সৰ দশ-গ্ৰীৰ | নাহি মোর এতে ক্রোধ। |
| মোদের কটকে | কেহ নাহি হেন যোধ। ২৩ (৩) |
| সমানে সমানে | করিতে র'য়েছে নীতি। |
| ভেকেরে বিনাশে | হ'বে কি ভাহাতে খ্যাতি॥ ২৬(গ) |
| বধিলে রামের | লমুভা ও বড়দোষ। |
| অভি দশানন | ক্ষত্ৰ-জাতির রোষ॥॥ ২৩ (ঘ) |
| ধ্যুকের শরে | मट्ट किं श्विति-हिया। |
| আযুধ রাবণ | যেন আনে বাহিরিয়া॥ ২৩ (ঙ) |
| কহে বড গুণ | রহে এক কপিদের। |
| করে উপকারে | এরা প্রতিপালকের॥ ২৩ (চ) |
| | লুকা'য়ে না ক্লিরে সব দশ-গ্রীব মোদের কটকে সমানে সমানে ডেকেরে বিনাশে বধিলে রামের অভি দখানন ধহুকের শরে আযুধ রাবণ কহে বড গুণ |

(5)—ধক্ত বানবের। যা'রা সাধিতে প্রভুর কাজ। যথায় তথায় নাচে পরিহার করি' লাজ ॥ নেচে'-কুদে দর্শকের মনে এনে' ফুলভা। প্রাচু-হিত করা ভার ধর্মের মিপুণভা॥ ১ রে অঙ্গদ প্রাভুত্তক অতীব ভো'দের স্থাতি। কেন গান না করিবি প্রভু-গুণ এই ভাঁতি। অতি গুণ-গ্রাহী আমি রস-বোদ্ধা সবিশেষ। এ কারণে কটভাবে না করি অভিনিবেশ ॥ ২ অঙ্গদ কতে তব বস্বোধ-গুণ যত। সত্য প্ৰন-স্থত কহিল ভা' কভম্ভ ॥ ভবু ভোষ। হ'ভে ভা'র কোন অপকার নহে॥ ৩ व्यागिक-कानन नार्भ वर्ध छएछ भूदी परह । ভোমার সে মনোরম প্রকৃতি করি' বিচার। বুইডা করা হ'ল দশানন এ আমার। यां किছ कहिन रस-जां रे रहिनाम निर्देश। रखामारत विताश नास किया ताय ना वितार ॥ হেন মতি ভা'ই থে'লি পিডারে মৃঢ আপুন। এতেক বচন কৃছি' ছেলে' উঠে দুশানন । ্ পিতারে বে'য়েছি—হ'তে তুমিও উদরসাথ। এক কথা মনোমাঝে সমূদিল অকস্মাথ॥ ৫

[•] নদীকটের বৃক্ষ।

জনক বালিরে পুত যশের ভাজন জানি'। বল্ড' রাবণ রহে কত জন এই ভবে। বলিরে জিনিতে এক রাবণ পাতালে গেল। থেলিত বাসক আরে করিত ভা'রে প্রভার। অম্ব রাবণে এক সহস্রবান্ত নেহারে। কৌতৃক-ভারে রাখে ভবনেতে আপনার।

ভোরে নাহি করি বধ রে অধম অভিমানি ! শুনেছি যা'দের কথা নিজ কাণে শোন ভবে ॥৬ বাজিশালে বালকেরা ভা'রে বেঁধে রেখে'ছিল ॥ করণার বশে বলি মুক্তি দিল ভাহার॥ ৭ জন্ধ-বিশেষ যেন এ ভাবে ভাহারে ধরে। তাহার পুলস্ত্য মুনি সাধিলেন উদ্ধার। ৮

দো-তৃতীয়ের কথা এ সব রাবণ-

বলিতে বাধিছে মাঝে তুমি কোন বালির বগলে ছিল। সভ্য না রেগে' বল'। ২৪

চৌ — শান মূঢ এইজন দে—রাবণ বলবান্। যা'র ভুজ-লীলা জানে হর-গিরি স্মহান্ ॥ মহেশ-ভবানী জ্ঞাত যে জনার বীরপণা। অগণন কডবার পুঞ্জিয়াছি ধৃৰ্জ্জটী। এই বুক কি কঠোর-দিক-হাতা ভাহা জানে। বর্থনি ভেটে'ছি রণে হঠে ভাহাদের সনে। ভাগ্রাদের যে দশন অটুট অশনি-প্রায়। যাত্রাদের গভি-ভারে বন্ধমতী টলে হেন। সেই দশানন আমি জগত-খ্যাত প্রভাব।

করিল যে তাঁহাদের শির-ফুলে অর্চনা॥ ১ এ শির-সরোজ নি**ল** কর-যোগে উৎপাটি⁹। এ ভুজের কি বিক্রম জানে ভাহা দিক্পাল। আল(৪) যা'র প্রাণে মৃঢ় বি ধে আছে ছখ-শাল ॥২ এর সংঘাতে ভাহা মূলা-সম ভেকে' যায়॥ ৩ লম্ম ভরণীর 'পরে মন্ত বারণ যেন। অলীক-প্রলাপি কাণে পশেনি মম প্রভাপ & ৪

লো—সেই রাবণেরে বর্কর খল

তুচ্ছ করিয়া শৰ্ক বানর

করিস নরে বাধান। বুঝিয়াছি তো'র জ্ঞান॥ ২৫

(5)—(हन क्रिन व्यक्रम कहिल मरकाश वानी। मध्यक हं रत्न वल रत व्यथम व्यक्तिमानि ॥ সহস্রবাহর বাহু-সদৃশ বন অপার। পর্ল-সাগরতলে যাঁ'র মহা ধর-ধার। সেই ভার্গব-মদ যাঁ'রে হেরে' বিদুরিত। त्त अख्डान मन-शर्वित मानव कि त्रशूमि। কল্ল-পাদপ তক্ত কপিলারে পশু কয়। বিনতা-ভনয় পাৰী অহি কি সহস্ৰানন। रेवकृष्ठे कि लाक छरव अस्त अस्ति मन्त्रमणि।

দহনে অনল সম করাল কুঠার যাঁ'র॥ ১ মঞ্জিত চিরতরে কত রূপ বছবার 🎚 সে কি রে মানব হায় দশানন ভাগ্যহত॥ ২ মনোজ कि श्रम्भाती नहीं कि (व श्रुत्रध्नी ॥ অল্পান দান কি রে অমিয় কি রস হয় ॥ ৩ विनिवि कि विश्वामिन क्षारत स्नानम ॥ দেকিলাভ হ'লে লাভ অচলা রামের প্রীতি 18

দো-উভাড়ি' অশোক ভো'ৰ স্থতে বধি'

আলাইয়া পুরী যে গেল ফিরিয়া

স-সেনা দলিয়া মান। कि कि त्म रुष्ट्रभान्। २७

C61-ত্র দশানন -করি' কপটভা পরিহার। কেন নাহি ভক্" সেই করুণার পারাবার ॥ त्त थल कतिम् यपि भव्यक्त श्रीतारमत् ।

বাঁচা'তে শক্তি নাই ধাতার কি মহেলের 🛭 ১

বৃথাই করা ও মূখে শুরভার আফালন। মস্তক যত তব কপি-আগে ধরাতলে। তখন ও শির যত কন্দকের মত ক'রে। রণ-প্রাঙ্গণে কোপ করিবেন প্রভু যবে। চলিবে কি ভবে হেন শুরভার আফালন। म्मानन खर्म' छेर्छ व रहन वहन स्ट्रन'।

রামের জোহের ফলে হইবে দশা এমন ॥ রামের শরের খায় লুটা'বে অচির-কালে ॥ ২ খেলিবে বানর ভালু মহা-উল্লাস ভরে। করাল শায়ক বহু ধাবিত হইবে ভবে ॥ ৩ এ বিচার করি' রঘুনায়কে কর' ভঙ্গন ॥ ঘুভাহতি পড়ে যেন বহিংমানু হতাশনে। ৪

(मो-कुछकर्ग-(रम মোর বিক্রম

ভ্ৰাতা বিখ্যাত পশে নাই কাণে তনয় বাসব-জয়ী। **ठताठत कश-कशो ॥ २** १

(b) —কপি সমবেত করি'—সহায়তা লভি' তা'র। সাগরে বাঁধিল সেতু ইহাই প্রভুতা তা'র ॥ বিচগ ড' পারাবার পার হয় অগণন। মম ভূজ-পারাবার বল-জলে ভরপুর। বিংশ পয়োধি হেন অতল নাহিক পার। দিক-পালগণে দিয়ে আমি ভরা'লাম জন। ভো'র প্রভু যদি হয় সংগ্রামে ধুরন্ধর। তবে দে কি কাজে দুত করিল হেপা প্রেরণ। কৈলাস মথে যেই ভাগ সেই বাত মোর।

তা'রা ড' না বীর হয় শোন্কপি এ বচন॥ ১ যাহাতে ভূবিল বহু সুর নর আর শুর॥ কে আছে এমন বীন্ন এ'তে যে হইবে পার।। ২ শুধু এক কৃপ-যশ আমারে শুনাস্ ধল।। করিস্ যাহার যশ-গাণা গান নিরস্কর ॥ ৩ অরি-সনে প্রীতি-ভাবে লাজে নাহি ভরে মন॥ তথাপি বাধান মৃঢ় কারস প্রভুর তো'র ॥ ৪

দো--রাবণ-সমান বহুবার দিল

কেবা আছে বীর আছতি হরধে

স্বকরে শির যে কাটি'। সাকী ভা'র ধূৰ্বভটী॥ ২৮

(5)-যখন পুড়িতেছিল শির মোর হুতাশনে। মরণ নরের করে এ গিপি করি' পঠন। ক'রেও স্মরণ তা'য় ত্রাদ নাছি মোর মনে। রে মৃত ভ্যক্তিয়া লাজ আর আপনার মান। অঙ্গৰ কহে লাজ তব সম দলানন। লক্ষাশীলতা তব স্বভাবে দেখিতে পাই। শির আর গিরি-কথা ইহাতে ভরা হাদয়। জনতে গোপন ক'রে রে'খেছ বাছর বীর্ঘা। শোন ওরে মন্দমতি ঢের হ'ল মনে হয়। याष्ट्रकरत्र कष्ट्र क्ट क्ट क्ट ना छ' महावीता।

विधित लिथन निक ननाएँ जन नगरन ॥ विधि-लिनि मिছा कानि' शिनिनाम मत्न मन ॥) শ্ববির বিধাত। ইহা শিখিয়াছে মন-জ্রমে॥ অক্স বীরের বল করিস্ মোরে বাধান॥ ২ জগত-মাঝারে আর ধরে না কেছ এমন।। নিজমূপে নিজগুণ কা'রো কাছে বলা নাই ॥ ৩ তা'তে বার-কুড়ি হ'বে সে কাহিনী বা'র হয়॥ या' नित्य जिनियाहित्न वनि आत कार्खवीया ॥8 निक भाषा कार्षिताहै अमनि कि वीत इस्र॥ যদিও আপন হাতে কাটে সে সারা শরীর॥ ৫

বো-পুড়ে পতঙ্গ বুৰে' ভাৰ মৃত

মোহের কারণে না কহে ভাদের

গৰ্দ্ধভ বহে ভার। বীর কেছ একবার ৷ ২৯ (b)—ছাই অধিক আর বুথা বাদ নাহি কর'।
দশানন দৃত হ'রে হেথা আসি নাই আমি।
বার বার এই কথা কহিলেন কুপাময়।
প্রভুর এ কথা রাখি' স্মরণেতে অনিবার।
নহে বিকৃত করি' ছার ও তব বদন।
রে অধম জানা আছে তো'র বল অমরারি।
নিশাচর-রাজা তুই মুরতি সে গর্কের।
রাম-অপমান-ডর যদি নাহি রাখিতাম।

আমার বচন মান মদ-তম: পরিহর ॥

এ বিচার করি মোরে পাঠা লৈন রলুবামী ॥ ১

শৃগালে বধিলে যশ কেশরীর নাহি হয় ॥
কঠোর বচন মৃচ সহিয়াছি বার বার ॥ ২

শহয়া যে তাম সীতা করি বল প্রদর্শন ॥

শৃশু পথেতে হরি আনিলি পরের নারী ॥ ৬

আমি ত শুধুই দৃত রলুপতি-সেবকের ॥

দেখিতে দেখিতে এই কোতুক করিতাম ॥ ৪

দো—ভূমিতে আছাড়ি' যুবতী বনিতা- সেনা হত করি**'** গণ সহ শঠ মধিয়া নগর গ্রাম। সীতা ল'য়ে যাইতাম॥ ০•

(চ) — করিলেও এইমত গৌরব কিছু নাই। কুপণ যে অতি মৃঢ় কদাচারী কামবশ। সদা রোগ-পরায়ণ যেজন নিয়ত ক্রোধী। দেহই যাহার দব নিস্কুক পাপে ভরা। এ বিচার করি 'শুধু তো'রে বধ নাহি করি। শুনিয়া ক্রোধের ভরে কহিল রাক্ষদ-নাথ। রে নীচ বানর এবে মরিতে বাদনা তো'র। যাহার বলেতে কটু-ভাষা মুথে বাহিরায়।

মৃতেরে করিলে বধ কা'র হয় কি বড়াই ॥
দরিজ নিরভিশয় স্থবির ভরা কুষশ ॥ ১
বিফু-বিমুখ বেদ সম্থাগণ-বিরোধী ॥
জীবন কালেই হয় মৃতের সমান তা'রা ॥ ২
রাগত আমারে আর না করিস্ স্থর-অরি ॥
দশনে অধর কাটি' হাতে নিশীড়িয়া হাত ॥ ৩
এ কারণে ছোট মূখে বড় কথা এত জোর ॥
বৃদ্ধি প্রতাপ বল তেজ কিছুনাই তা'র ॥ ১

দো—অ-গুণ অ-মান বুঝেই ত' তা'রে সহে তা'র হুখ যুবতী-বিরহ যাহার বলের অহন্ধার তো'র রক্ষ: কড শড করিছে আহার পিতা দিল বনবাস।
দিবানিশি মম আস ॥ ৩১(ক)
হেন নরে দিনরাত।
বোঝা ছাড়ি' পক্ষপাত॥ ৩১(খ)

Cb)—রাম-নিন্দাবাণী যবে উচ্চারিল দশানন।
হরি-হরনিন্দা যেবা প্রাবণ করে প্রবণে।
কট্কট্ খোর রব করিল বানর-বর।
কম্পিডা বস্থমতী সভাসদ প'ড়ে যায়।
পড়িতে সামালি' উঠে লন্ধার প্রধিপতি।
কডক রাবণ শিরে বসায় পুন: যডনে।
মুকুট উড়িয়া আসে হেরিয়া কপিরা ধার।
অথবা প্রেরিল রোধে বাবণ প্রশনি চারি।

কোধ-যুত অতিশয় হ'ল অঞ্চদ-মন।
গো-হনন সম পাপ লাভ করে সেই জনে॥ >
ছই বাছদণ্ড বলে প্রহারিল ধয়া 'পর॥
ভয়-ভূভগ্রন্থ হ'য়ে এদিকে-ওদিকে ধায়॥ ২
ভূমে গড়াগড়ি যায় মুকুট ফুল্ফর অভি॥
কতক ছুড়িয়া দেয় অঞ্চদ প্রভূ-পানে॥ ৩
ভাবে উবা দিনমানে এ কেমন বিধি হায়॥
ভীম কোপে আসে যাহা কিছুই বুবিতে নারি॥
৪

হাসি' তবে প্রভু ক'ন না করিও মনে ভয়। ও গুলি মুকুট দশানন-শির-আভরণ।

উহা অশনি কেডু কিমারাছ কিছুনয়। অক্স নিকেপিল করিতেছে আগমন ॥ ৫

| (म)-नक पिया रस | ধরি' সে সকলে | এনে' রাখে প্রভু-পাশ। |
|----------------|--------------|------------------------|
| কৌভূকে হেরে | ভাপুকে বানরে | তপন-সম প্রকাশ । ৩২ (ক) |
| ওদিকে ক্রোধিড | मभानन करह | চণ্ড ভাষায় সবে। |
| ধর' ধ'রে মার | ওই বানরেরে | অঙ্গদ হাসে ভবে॥ ৩২ (খ) |

চৌ-বলে এরে বধ করি' যত বীর বেগে যাও। খাও ভালু কপিলের যেখানে দেখিতে পাও। মর্কট তীন কর ধরাতল সবে গিয়ে। শুনি' রোবে অঙ্গদ ক'রে উঠে গর্জ্জন। আত্মঘাতী হ'য়ে মর রে নিলাক কুলঘাতি। ওরে ওরে নারী-চোর ওরে ওরে কদাচারি। সন্মিপাত রোগ বলে প্রলাপ কি ক'স আর। এর যথোচিত ফল আছে ধরা ভবিষাতে। রাম নর ও বদনে আনিতে এ হেন বাণী। সংশয় নাহি এতে খসিবেই বিভ তো'র।

জীবন্ত আন ধ'রে তাপস সে ছই ভা'য়ে ॥ ১ লক্ষা আসে না ডো'র করিবারে আফালন ॥ হেরিয়াও মোর বল ফাটে না ক' ডো'র ছাতি ৷২ ওরে খল পাপ-রাশি মন্দমতি ব্যাভিচারি॥ কাল-কবলিত তই রে রাক্ষ্স মহী-ভার। ৩ পা'বি ভাহা বানরের দারুণ চপেটাঘাতে॥ খিসিয়া পড়ে না ভো'র রসনা রে অভিমানি ॥৪ মুগু সহিত তবে রণ-প্রাঙ্গণে ঘোর॥ ৫

| বো-নর তিনি যিনি | বধেন বালিরে | একই শায়কাঘাতে। |
|---------------------------|--------------------|---------------------------|
| বিশ লোচনেও | অন্ধ রেজ ড় | ধিক্ ভব জনমেতে। ৩৩ (ক) |
| ভো ³ র শোণিভের | পিয়াসে পিয়াসী | রামের শর-নিকর। |
| ভাহারি কারণে | ত্যঞ্জিলাম তো'রে | বুধা-ভাষি নিশাচর ॥ ৩৩ (খ) |

এত রোষ জাগে হাদে মুখ তো'র চুর্ণ করি'। ভুমুর-সমান তো'র অতি কুন্ত এই লকা। অঙ্গদ-ভাষে এ'ল রাবণের মুধে হাসি। বালি ড' কহিত না—ক' বচন এত অগার। अकुछ्हे भिथावामी ह'व विश्म वाह-शाति। রাম-বল করি' মনে ক্রোধারিত যুবরাজ। ক্রে-যদি কেই পদ করিছে পারে হেলন। म्मानन कर्ट-क्रिं म्रायायन तकः वीरतः। रेलिकि जापि हिन यह नव बनवान । মারে টান সংহত করি' বল প্রাণপণে।

(5)-পারি চুর্ণ করিবারে ও দশন-রে অধম। আদেশ নাহিক দিলা মোরে দে পুরুষোত্তম। লকা উঠা হৈ দিই সাগরে মঞ্জিত করি'॥ ১ কীট-সম ভো'রা ভাহে রহিস বিগত শহা ॥ ল্পাড়িতে বানর আমি কল বে'তে কিবা ক্ষতি। কেবল আদেশ মোরে না দিলেন সীতাপতি॥ ২ কতে শিক্ষা কোথা হ'তে এ অলীক ভাষা-রাশি। ভাপসের সাথে থেকে' শেখা এই মিথ্যাচার ॥ ৩ তো'র ওই দশ জিভ যদি না ছি ডিতে পারি ॥ দত্তে চরণ স্থাপি' দাঁডা'ল সভার মাঝ । ৪ তারিলাম সীভা রাম যা'বেন না করি' রণ ॥ পা ধরিয়া আছাডিয়া ফেল' ও বানরটারে ॥ ৫ বীরেরা আসন ভ্যক্তি' উঠে অতি ফুল্ল প্রাণ 🛭 নডে লা চরণ বদে নত শিরে নিজাসনে ॥ ৬

আবার উঠিয়া টানে চরণ অমর-অরি। भारहत्र विषेत्री यथा कथरना क्-रयांनी सन।

অ-নড় কপির পদ জেমনি হে উরগারি। হৃদয় হইতে নারে করিবারে উৎপাটন॥ ৭

| দো-মেখনাদ-সম | বীর কোটিজন | উঠে হ'য়ে হরষিত। |
|------------------|----------------------|----------------------------|
| টানে নাহি নড়ে | ৰূপি-পদ পুনঃ | বঙ্গে করি' শির নত ॥ ৩৪ (ক) |
| ক্ষিতি হ'তে তা'র | উঠে না চরণ | হেরি' অরি-মদ যায়। |
| কোটি-বিশ্বতেও | শাধু-মন হ' তে | যথা নীতি নাহি যায়॥ ৩৪ (খ) |
| | | |

টৌ-বানরের বল হেরি মনে সবে মানে হার। আপনি রাবণ উঠে শুনি কপি-ধিকার ॥ ধরিতে যাইতে পদ বালির তন্ম কয়। রামের চরণ কেন না ধরিস ছেন গিয়া। তেজ-হত মুখ তা'র দ্রী সকলি অপগত। আনত করিয়া শির বসে গিয়া রাজাসনে। ব্দগতের আত্মা যিনি সর্ব-প্রাণপতি রাম। জ্রকুটি-বিলাস ভরে হে ভবানি যে রামের। করেন তৃণেরে বাজ বাজে পুন: তৃণদল। আবার বুঝায় কপি নীতি-কথা নানামত। রিপু-মা করি' চুর গাহি' প্রস্তু-গুণগান। থেলা'য়ে খেলা'য়ে যদি না মারি সমরে,ভো'রে । প্রথম হ'তেই তবে কি বড়াই করি জোরে ॥ व्यवस्मरेक व्यक्त व'स्थर छन्द्र छा'त। বীর অঙ্গদ-পণ শুনি' রক্ষের দল।

ধরিলে আমার পায়ে রক্ষা হ'বার নয় ৷ ১ শুনিয়া রাবণ ফিরে ল'য়ে কুঞ্চিত হিয়া। মধ্য-দিবস্ভাগে শশধর যেইম্ড 🛚 ২ শত-সম্পদ যেন হেন ক্রি**ছ-ভাব মনে** ॥ ভাঁহাতে বিমুখ যেবা পাইবে কিসে বিরাম॥ ৩ উপজে অথও ভব পুন: নাশ হয় এর॥ তাঁহার দুভের পণ কেমনে হ'বে বিফল॥ ৪ মানিল না ডা' রাবণ সে তখন কাল-গত ॥ বালির ভনয় করে ইহা বলি' প্রস্থান ॥ ৫ এ শুনিয়া দশানন ছবিত হ'ল অপার॥ ৬ অতি নিদারুণ ভয়ে হইল সবে বিকল। ৭

(मा-मिथ' अति-वन পুলক-শরীরে

হর্ষিয়া কপি বালি-হুত বল-পুঞ্চ। ধরে রাম-পদ-কঞ্চ ॥ ৩৫ (ক) मक्न नग्रत

রাবণকে মন্দোষরীর পুন: উপদেশ দান

বুঝি' দশানন ভবনে গেল উদাস। প্রদোষ আগত কহি' নীতি-যুক্ত ভাষ ॥ ৩৫ (৭) ময়-মুতা বহু ব্ঝায় রাবণে

(5)-মনেতে বিচারি'নাথ ভ্যঞ্ব এই কৃটমন্ডি। রম্বুপতি সনে তব রণ অশোন্তন অভি॥ রামের অহুত্ব এক রেখা যে টানিয়া দিল। বাহার দুভের এক এইমড ক্রিয়াবলী। খেলার তেলায় **এ'ল লভিষয়া পারা**বার।

ভাহারেও লভিষতে শক্তি না তব ছিল। ১ প্রিয়তম ভারে রণে জিনিতে এত আকুলি ॥ वानत-रक्मती थाए एत-रम्भ नाहि या'त ॥ २

[•] गठांद चानिशद भूटर्सरे ।

व्यव्हीरत यथ कति' छेकाछ कतिम वन। দাহ করি' সারা পুরী ক'রে গেল ভস্ম-শেব। ৰুণা কথা-আড়ম্বর এবে নাহি শোভা পায়। হে প্রভু-রামেরে যেন ভেবো না মানুষ ব'লে। শারকের কি প্রভাপ মারীচ বিদিত ছিল। জনক-সভায় ছিল অগণিত নরপাল। হর-কাম্ম ভাঙ্গি যবে লভে জানকীরে। ৰাসব-তনয় কিছু জানে বল হে রাজন্। নয়নে হে'রেছ সূর্পণধার কি দখা হ'ল।

অক্ষয়ে আঁখি-আগে করিয়া গেল নিধন ম কোথায় আছিল বল-গৰ্বব তব এ অশেষ। ৩ व्यामात्र मिनिष्ठ करम धत्र' त्रकः-कूल ताग्र ॥ চরাচর-পতি ডিনি অতুলিড ডেক্সে বলে। ৪ ভাহার নিষেধ তব মনে ভাল না লাগিল। তুমিও তথায় ছিলে অতুল বলে বিশাল ॥ € তখন সমর করি? জিনিলে না কেন ডা'রে॥ রাখেন জীবিত করি' এক আঁখি উৎপাটন ॥৬ তথাপি ভোমার মনে বিশেষ না লাক্ত এ'ল।।৭

(म)-विश्वा विद्राध এক শরে বধ

ॳत्र-ছ्यर्भरत করে যে বালিরে

मध नगती

ভিজি' প্রিয়ভম

কবন্ধে বধে হেলায়। বুঝ' তা'র মহিমায়॥ ৩৬

চৌ—পার-হীন পারাবার বাঁধিল যেবা হেলায়। উতরিলা যেই প্রভু সেনা সহ সুবেলায়। সেই কারুণিক প্রত্তু দিনকর-কুল কেতু। সভার মাঝারে যেবা মথিল তোমার বল। অঙ্গ হতুমান্যে প্রভুর অনুচর। তাঁহারে হে প্রিয়তম নর বল' বারবার। হা প্রস্থু রামের সনে টানিয়া নিলে বিরোধ। দশু ধরিয়া কাল কাহারেও নাহি মারে। নিকটে যাহার প্রভু কাল হয় সমাগত।

প্রেরণ করিলা দৃত ডোমারি হিতের হেতু॥ ১ করী-যুধ মাঝে যথা মৃগপতি মহাবল। রণ-স্থানিপুণ বীর অতি মহা বলধর ॥ ২ র্বাই বেড়াও বহি' মাবা মান মদ-ভার॥ কাল-কৰ্বলিত-প্ৰাণে উপজে না শুভ বোধ॥ ৩ বিচারের ধর্মমতি শুধু সে হরণ করে॥

দো—হই স্ত হত কুপানিধি রামে সমাপ্ত করিয়া দাও। স্থবিমল যশ পাও॥ ৩৭

(D)-ভীক্ষ শায়ক-সম ভনি' বনিভার বাণী। অতি অভিমান-বশে ভয় ত্রাদ সব ভূলি'।

প্রভাত হ'তেই সভা মাঝে যায় রক্ষ:মণি ॥ সিংহাসন 'পরে গিয়া বসে মনে মনে ফুলি'॥ ১

ভ্রম ঘনাইয়া আসে ভাহার ভোমারি মভ ॥ ৪

व्राय-जनम-সংবাদ

এখানে ডাকা'ন বীর অঙ্গদে রখুনাথ। অভীব আদরে পাশে করা'য়ে উপবেশন। হে বীর বালির মৃত জ্ঞাদে জাগে কৃত্হল। त्रोकनकुन-हृषा महावीत (य त्रावन। চারি উষ্ণীৰ ভা'র করিলে হেথা প্রেরণ। ভনহ দর্বজ প্রভু প্রণতের সুধকর।

আসি' পদ-শতদলে নোয়া'য় আপন মাধ। কুপাল ধরারি হাসি' কহেন ডবে বচন 🛭 ২ ভিজ্ঞাসা করি ডোমা সভ্য করিয়া বল'। যা'র ভূজবলে ধরা গুণগান-পরায়ণ ॥ ৩ কহ ডাভ कि প্রকারে হইল ডাহা ঘটন। नरहरू पूज्रे छैहां ठांत्रि श्रेश त्रयुवत ॥ 8

সাম দান ভেদ দণ্ড এই চারি গুণচন্ন। নীভি-ধরমের এই চারি পদ বিমোহন। রহে নুপতির ছাদে বেদে প্রভু এই কয়। এ কারণে প্রভূ-পদে করে প্রভি-আগমন। ৫

ব্যো—ধর্মহীন প্রস্তু- পদে মতিহীন নিশাচর কাল-গ্রাসে।

সে কারণে ওরা • ডোমার চরণে ডা'রে ডাঞ্জ' ফিরে আসে ॥৩৮(ক)

চতুরতা ভরা বচন শুনিয়া হাসেন প্রভু উদার।

পরে সমাচার ফুর্সের যত কহেন বালি-কুমার ॥ ৩৮(ব)

যুদ্ধারভ

চৌ—অরাতির ভেদ সব যবে হ'ল উদ্ঘাটন।
লক্ষার রহে চারি ছুর্বার পুর্বার।
তখন স্থ্রীব আর জাম্বান বিভীষণ।
মন্ত্রণা স্থির করি' বিচারের সহযোগে।
'যোগ্য সেনা-নায়কেরে করা হ'ল নিয়োজিত।
প্রভুর প্রতাপ-কথা তা'দিগে সব ব্ঝায়।
হর্ষিত মনে রাম-চরণে নমিয়া শির।
গর্জে তর্জে যত ভালু আর কণীশ্র।
যদিও জানিত গড় ছুর্জেয় সবমতে।
জলদ-জালের মত চারি দিক হ'তে ঘেরি'।

জয় কপিনাথ গরজে ঋক

সচিবগণেরে রাম করিলেন আবাহন॥
কি ভাবে বা হানা দিবে সকলে কর বিচার॥
দিনকর-কুল কেডু জ্রীরামের করি অরণ॥
বিভাগ করিল কপি-বাহিনীরে চারি ভাগে॥ ২ তখন সেনানীগণ হ'ল সবে একত্রিত॥
গর্জন করি যত বানর তখন ধায়॥ ৩
গিরি-চ্ডা করে ল'য়ে ধায় যত মহাবীর॥
বলে জয় রঘুবীর কোশলের অধীখর॥ ৪
প্রান্তুর প্রতাপে যায় সকলে নিডর চিতে॥
মুখেই বাজা'তে থাকে ছ-কুভি আর ভেরী॥ ৫

জার জায় লক্ষণ। অতিভীম পরাক্রম॥ ৩৯

চৌ—লক্ষা-ভিতরে উঠে কোলাহল অভিশয়।
কহে দেখ দেশ সবে বানরের স্পর্কা কত।
কালের প্রোরভ হ'য়ে আদিল বানরগণ।
এ কথা কহিয়া মৃঢ় করে মহা অট্টহাস।
ভহে মহাবীরগণ সবে চারিদিকে যাও।
হর ক'ন উমা হেন রাবণের মদ হায়।
আভ্যা-কামনা করি' চলে নিশাচরগণ।
ভোমরণ মুদার ভীম পরশু প্রথর-ধার।
লোহিত উপল§ দল যথা করি' দরশন।
চক্তু-ভালার ক্রেশ মনেতে মা আনে হায়।

দো-জয় রঘুপতি

ভীমনাদে কপি

করিল প্রবণ কাপে দশানন মদ-ময়॥
হাসি আহ্বান করে রক্ষ:-বাহিনী যত॥ >
রাক্ষদগণ সবে কুধার সহে ডাড়ন ॥
কহে ধাডা আনি' দিলা গৃহেতে ভোজন-রাশ ॥২
ধরি' ধরি' কপি ভালু সকলে মিলিয়া খাও।
টিট্টিভ উদ্ধ-পদ হইয়া যথা শুমায়॥ ৩
ভিন্দিপাল ধর শেল করেতে করি' গ্রহণ॥
কুপাণ পরিষ্ট শূল প্রস্তর ধরি' আর॥ ৪
মাংস-আহারকারী ধায় মৃঢ় ধগগণ॥
ভেমনি অবুঝ যত নিশাচর খেরে যায়॥ ৫

পৈ-কভই আয়ুধ গৃহ-চূড়া 'পরে শর-চাপ-ধর করে আরোহণ নিশাচর মহাবীর। কোটি কোটি রণধীর ॥ ৪০

চৌ-প্রাসাদ-উপরে চ্ড়া সেইমত শোভা পার। মেরু-চুড়া 'পরে যথা জনদ বিভাঁ বাড়ার । বাজে ছুন্দুভি ঢোল সমর-দামামা বাজে। তুরী ভেরী নিনাদিত হইতেছে অগণন। স্থবিশাল-কলেবর কপি ভালু বীরদল। হেরি' কপি ভালু ধায় উঁচু নীচু নাহি জ্ঞান। কট্কট্রব করে—করে বীর গর্জন। এ দিকে রামের জয় ও দিকে দশাননের। রাক্ষ্য গিরি-চূড়া বলে নিক্ষেপ করে।

রবে উৎসাহ ভাগে বীরগণ-মনোমাঝে ॥ ১ যাহা ভনে' ফেটে' যায় কাপুরুষগণ-মন ॥ গিয়া নয়নেতে হেরে নিশাচর-দলবল ॥ ২ পর্বত ভেদি' করে বন্ধের নির্মাণ। দশনে অধর কাটে করে খোর ভর্জন॥ ৩ জয়জয়কার সনে স্থক্ষ হয় সমরের 🏾 লক্ষে ধরিয়া কপি ভা'দেরি উপরে মারে॥ ৪

ছ--ভূধর-পণ্ড थित व्यक्त ভূমিতে আছাড়ি' রক্ষ:-পদ ধরি' যুবা-কপিদল অতি চঞ্চল---প্রবেশি' মহলে **ৰ**হাকুত্হলে

মর্কট ভালু ছর্গে মারে। লাজ দেয় পরিহাসের ভরে॥ লক্ষিয়া ডেকে আরোহি' গড়। জয় রাম-রবে তুলিছে ঋড়॥

বে—এক এক করি' উপরে আপনি

নিশাচরে ধরি' রাক্ষদে নীচে

পলায় বানর দল। রাখি' পড়ে ধরাতল ॥ ৪১

(5)-রামের প্রভাপ-বলে বলী শাখা-মুগ বীর। মধিতেছে নিশাচর-বীরগণে রশধীর ॥ চারিদিকে বানরের। হানা দেয় গড় 'পরে। নিশাচর-সেনাদল পলাইয়া যায় হেন। পুরী-মাঝে হাহাকার উঠিল নিরভিশয়। नकरल मिलिया शालि प्रमा नहा-व्यक्षिरशदा। পশিল বাবণ-কাণে বিচল আপন দল। রণে কেছ পলাইল যদি গুনে মোর কাণ। খাইল পরিল আর ভুঞ্জিল তুথ বত। উঞা বচন শুনি' সবে প্রাণে ভর পে'ল। সমরে মরণ বিনা বীরের কি শোভা হ'বে।

দিয়া জয় রঘুবীর প্রতাপের দিনকরে॥ ১ প্রবল প্রন-যোগে জলদ-পটল যেন ঃ বালক রমণী রোগী-রোদন নগরীময়॥ ২ রাজ্য করিতে যেবা ডেকে আনে মরণেরে । ভা'দের ফিরা'য়ে কহে হ্রদে কোপ-দাবানল॥৩ করাল কুপাণে এই যাইবে ভাহার প্রাণ 🛚 সমর-ভূমিতে এবে প্রাণ প্রিয় হ'ল এত ॥ ৪ লাজ পে'য়ে ক্রোধ ভরে বীরেরা যুঝিতে গেল। তথন করিল ভ্যাগ প্রাণের মমভা সবে॥ ৫

বে বহু প্রহরণ ধরি' বীরগণ কপি ভালগণে করে বিচলিত मस्य द्रार्थ (मर्फ वाम । পরিষ ত্রিশূল-ঘার॥ ৪২

क्ट वर्रण क्वाचा रुष्ट्र काचा वा वालि-छनग्र। वलवान् नल नील विविष वा काचा त्रम्र॥ ১

চৌ—ভয়েতে আতুর কপি কুরু করে পলাইতে। যদিও ভবানে তা'রা জয়ী হ'বে ভবিষ্যতে।

হমুমান-কাণে এ'ল বিকল আপন দল। ডা'র সনে মেঘনাদ করিতেছিল সমর। প্রন-ভনয়-মনে উপজে দারুণ ক্রোধ। লঙ্কার গড়-চূড়ে লাকে হন্তু আরোহিল। চূর্ণ করিল রথ বিনাশিল সার্থিরে। অফ্র সার্থী তবে হেরিয়া বিকল ভা'রে।

পশ্চিম ছারে যবে ছিল সেই মহার্যল # কঠিন সে ধার ভেদ করা অভি চ্ছর ॥ ২ গৰ্জন করে যেন কাল-সম ভীম যোধ॥ পর্বত করে ধরি' মেঘনাদে ধে'য়ে গেল । ৩ করে ভীম পদাঘাত মেঘনাদ-বক্ষোপরে ॥ আলয়ে আনিল দ্বরা চডা'য়ে রথের 'পরে॥ ৪

(मा--- अनम-कारन রণ-স্থুনিপুণ

গেল হতুমান বালির ভনয়

একাকী পশে'ছে গডে। হেলায় ভাহাতে চডে ॥ ৪০

(5)—অরাতি-বিরোধী ফ্রোধ-যুক্ত কপি তুইজন। রামের প্রতাপ-বল জনয়ে করি' স্মরণ। আরোহণ করে গিয়া রাবণ-মহল 'পরে। কলদ সহিত করে রাবণ-পুরীর ক্ষতি। রুমণী-নিকর করে বক্ষেতে করাঘাত। বানরেরা খেলা-ছলে করে ভয় প্রদর্শন। তখন ধারণ করি' হেমময় স্তম্ভ সব। অরাতি-কটক মাঝে গর্জিয়া পড়ে গিয়া। কাহারেও পদাখাত চপেট কা'রে বা মারে।

কোশলের অধিপতি রামের দোহাই করে। ১ হেরি' মনে পায় ডর রাক্ষ্সপতি অভি। বহে হায় এবে এল বানরের উৎপাত।। ২ গান করে রঘুবীর-গুণগান অমু'খণ॥ वनावनि करत्र अन कता या'क् छेशखव ॥ ० অতি ভীম ভুজবুগে কেলিতে থাকে মথিয়া॥ বলে রামে না ভজার ফল ভাগ এইবারে॥৪

(पा-ठीकार्वेक करत রাবণের আগে

একে আর সনে গিয়া পড়ে যেন हिँ एए' दूएए' तमग्र पूछ। ভগ্ন দধির কুণ্ড।। ৪৪

বিভীষণ ব'লে দেন তাহাদের কি কি নাম। ব্ৰাহ্মণ-মাংস ভোজী খল মতি নিশাচরে। ভবানি কোমল-প্রাণ প্রীরাম করুণাকর। এ ভাবি' পরমাগতি রক্ষাগণে করুণায়। সে প্রভু এমন তুনি' যে না ভজে ভাজি' ভ্রম। ভাগ্যহীন কুটমতি পরম সে নরাধম ॥ ৩ রাম ক'ন অঞ্চল আর বীর হতুমান। লহা-মথনে তুই বীর শোভে সেইমত।

চৌ—মহামহা দেনানীরে যদি ধরিবারে পারে। পা'ধরি' টানিয়া ফেলি' দেয় প্রভু-পালে ভা'রে। व्यमान करतन ताम छा' नवादत निक्रधाम ॥ > যোগি-বাঞ্চিত যেই গতি তাহা লাভ করে॥ ভাবেন ভাবে ত' মোরে অরি-ভাবে নিশাচর ॥২ দেন উমা কুপাময় কেবা যথা রম্বরায় ॥ প্রবেশ করিল গড় মাঝে ছই বলবান ॥ मन्द्रत-यूर्ग (यन त्रिक्-मथ्दन त्रक ॥ 8

(मा-जुल-वरन जित्र লাক মারি' এম

कतिया नगन করি' বিদুরিত

ছেরি' দিবা অবসান। व्यारम यथा छशवान ॥ ८৫ \



লক্ষণের সহিত ইঞ্জিতের যুদ্ধ

(ठो---अफ्-अनं मंडनन माथाग्र करत थात्रन। कक्रणा कतिया साँदि मृष्टि करतन मान। व्यक्त रुपू किरत' शिशा ह वृक्षिश मर्रम। প্রদোষ আসিলে সব রাক্ষ্স বল পায়। রাক্ষ্য সেনা হেরি' পুন: ফিরে কপিদল। ছ' দিক্ই বলবান্ করি' তা'রা আস্ফালন। রাক্ষ মহাবার অসিত বরণ সবে। महावन प्रहेनन जमवन (याधरान) বর্ষার শরতের তুই খন জলধর। অৰুপ্ৰন অভিকায় এই ছুই সেনাপতি। নিমেব-ভিডরে হয় অতি ঘোর আঁধিয়ার।

মহাবীর ঘয়ে ছেবি' ফুল রামের মন। अभि সব অপগভ স্থ-সরে ভূবে প্রাণ ॥ ১ সমর হইতে কিরে কপি ভালু-বীর গণে। গাহি' রাবণের জয় কপিদল-পিছে ধায়॥ ২ চারি দিকে কট্কট্রব করে অবির**ল** ॥ করে রণ পরাজয় নাছি মানে কোনজন # ৩ বিবিধ বরণ কপি সুবিশাল অবয়বে ॥ কৌতৃক ভরে যুঝে হ'য়ে ক্রোধ-পরায়ণ। 8 প্রন-প্রেরিড হ'য়ে করিছে যেন সমর ॥ সেনা বিচলিত হেরি' প্রকাশিল মায়া অভি ॥ ৫ वदर्य ऋषित-भिना छन्त्र मृबल-शांत ॥ ७

(मी-नममिरक (हति' কেহ কাহারেও ঘোর আধিয়ার পায় না দেখিতে

ত্রস্ত কপির দল। চীৎকারে অবিরল। ৪৬

(5) -- এর ভেদ রঘুনাথ বুঝিলেন মনে মনে। করিলেন আবাহন অঙ্গদে হতুমানে ॥ সব কহি বুঝা'লেন সমাচার রখুবর। তখন হাসিয়া রাম তুলিলেন শরাসন। অমনি আলোক জাগে তম: আর নাহি লেশ। জ্ঞানোদয়ে সংশয় ষেইমত হয় শেষ॥ ২ আলোক পাইয়া ভালু বানর-বাহিনীপণ। अक्रम रुष्ट्रमान् करत त्ररण शक्कन। ভূমিতে আছাড়ে নিশাচরে পলায়ন-পর। পদে ধরি' ভাহাদের সাগর-জ্ঞালে চ্বায়।

শুনিতেই ছুটে' গেল ফ্রোধে কপি-কুঞ্জর॥ ১ আত ক্রত হানিলেন অগ্নিবাণ স্থভীষণ ॥ হরবিত মনে ধায় অপগত ভয় ঋম। ছকার ওনি' ভয়ে পলায় রাক্ষসগণ॥ ৩ দেখায় কৌশল কপি ভালু অম্ভুডভর 🛭 মকর উরগ মাছে ধরিরা ধরিয়া খায়॥ ৪

বে—ানহত কতক राम अद्रिमान

কতক আহভ বিচলিত করি'

গড়ে বা কেচ পলায়। কপি-ভালু গৰ্জায় । ৪৭

मानाउपादमञ्ज ज्ञायनदक खेलदमम मान

চৌ--রজনীর আগমনে চারি কপি-অনীকিনী। ফিরিয়া আসিল যথা র'ন রাম রভুমণি। বীরাম করণা-ব'নে চাহিলেন সব-পানে। ও मिटक महिवशान जाकादैन मनानन। कटर वर्ष वनीकिनी करत क्लि मरहात। স্থ্যির রাক্ষস এক নাম ছিল মাল্যবান। কহিল বচন পুত নীতিভন্ন সবিলেব।

ইইশ বিগত-আম বানরেরা সেইক্ষণে ঃ ১ নিহত বীরের কথা করে সবে বর্ণন 🛚 বলহ উপায় দরা কি করা যা'বে এবার ৷ ২ রাবণের মাতামহে বৃক্তি করিত দান। শুনহ এখন ভাত কিছু মম উপদেশ। ।

ভানকী হরণ করি' আনিলে যেদিন হ'তে। বেদ ও পুরাণে যাঁ'র গুণ-গান সদা গায়।

কড যে অন্তভ হয় কেবা পারে বর্ণিতে 🛭 সে রামে বিমুধ হ'লে কেছ সুধ নাছি পায় ॥ ৪

| দো—হিবণ্যাক্ষ সহ | निष गरहां पत्र | মধুকৈটভ আর। |
|------------------|----------------|------------------------------|
| যে বধিলা সেই | কুপানিধি প্রভূ | ধ'রেছেন অবতার॥ ৪৮ (ক) |
| কাল-ক্লপ ধল- | গ্ৰন-দহন | জ্ঞান-ঘন গুণধাম। |
| শিব চারিমুখ | সেবেন যাঁহারে | তাঁ'র 'পরে তুমি বাম ॥ ৪৮ (খ) |

(5)-বিরোধ করিয়া শেব স্থানকীরে ফিরে' দাও। প্রেমময় বুপানিধি রাম-গুণ স্থা গাও। মাল্যবান্-বাণী লাগে খেল সম হৃদয়েতে। বধিতাম ডো'রে ভবে এখন হ'লি প্রাচীন। এ কথায় মাল্যবান করে এই অফুমান।

ৰহে পোডা-মুখ ল'য়ে চলে' যা' এখানহ'তে ॥১ আমার সমূথে আর না আসিস কোনদিন। ইহারে এবার স্থির বধিবেন ভগবান ॥ ২

नक्मन-द्रमध्याप मुक

চ'লে গেল মাল্যবান্ রাবণেরে গালি দিয়া। কালি প্রাতে দরশন ক'রো মোর গুণপনা। পুত্র-বচন শুনি' হাদয়ে ভরসা এ'ল। ভাবিতে ভাবিতে নিশা হ'য়ে এ'ল অবসান। ছুর্গম গড়ে খেরে কপিরা ক্রোধের ভরে। বিবিধ আয়ুধ ল'য়ে রাক্ষসগণ ধায়।

কহে তবে মেঘনাদ কোপেতে দহিত হিয়া। করিব যে কভবিধ হইবে কি বর্ণনা॥ ৩ স্লেহের সহিত ভা'রে নিজ কোলে বসাইল। চারি ঘারে পুন: কপি হানা দিতে আগুয়ান 18 কোলাহল হয় যোর লঙ্কাপুরী-ভিতরে u ছৰ্গ-উপর হ'তে গিরিচ্ড়া ছুড়ে' দেয়॥ ৫

| ছ—ছুড়ে' মারে কোটি | পাহাড়ের চূড়া | বিবিধ প্রকার গোলক ধায়। |
|--------------------|-----------------|-----------------------------------|
| করে গরজন | অশনি যেমন | व्यमस्त्रत स्थम वाष्ट्रम हा रेग्र |
| হয় সমবেড | ভীম কপি যত | ভমুজর-জর তবুনাফিরে। |
| ভূলিয়া পাথর | মারে গড়'পর | যথা তথা কত রক: মরে ৷ |
| দো—মেখনাদ শুনি' | হানা দে'ছে পুনঃ | ছর্গের পুরোভাগে। |
| গড় হ'তে বীর | নামিয়া চলিল | বান্ত সহিত আগে। ৪৯ |

চৌ—বলে কোথাকোশলের অধিপতি হুই ভাই। বাণ-চালনায় যা'র জগতে তুলনা নাই # কোথায় বা নল নীল স্বগ্ৰীব সে বিবিদ। निक मरशामत-त्याशी काषाग्र रम विकीय। এ বলিয়া শরাসনে চড়া'ল কঠিন বাণ। ছাড়িতে লাগিল যত নিশিত শায়ক-চয়। ছেখা গেল বৰা তথা কুমিতে প'ড়ে বানর।

অঙ্গ হন্তুমানু মহাবল রণবিদ্য ১ স্বারে আজিকে ঠিক করিব বলে নিধন ৷ দারুণ কোপেতে দিল ভাবণ অবধি টান ৷ ২ পক্ষ-যুক্ত অহি সম ছুটিল আকাশময় 🛭 সমূপে আসিতে কেহ নারে সেই অবসর 🛭 ৬ এ দিকে ও দিকে কণি পলায় ভালুক-দল। সমর-ভূমিতে হেন কণি দেখা নাহি যায়। বিগত সমর-সাধ অপেক্ষত সব বল ॥ তথুপ্রাণ অবশেব যা'দের না হ'ল হার ॥ ৪

কেশরীর নাদে

মারে সকলেরে গর্জে ভীষণ ভূমে পড়ে কপিবার। মেখনাদ বলী ধীর । ৫০

(5) —ব্যাকুল বাহিনী করি' হন্নুমান্ দরশন।
মহা গিরিবর এক উপাড়িল দ্বরা করি'।
গিরি পড়িডেছে হেরি' আকাশে উঠি' পলায়।
ধিকার দেয় ভা'রে হন্নুমান বার বার।
অবশেষে মেদ্বনাদ রামের নিকটে যায়।
বিবিধ আয়ুধ করে ভাঁহার 'পরে ক্ষেপণ।
প্রভাপ হেরিয়া মৃঢ় অভিশয় লাজ-ভরে।
যেন অহি-শিশু এক করেডে করি' প্রহণ।

কাল-সম ক্রোধভরে ধাবিত হ'ল তথন ॥
মহা রোঘে নিক্লেপিল তাহে মেঘনাদোপরি ॥>
সারথি ও রথ বাজী চূর্ণিত হ'য়ে যায় ॥
নিকটে না আসে তবু মর্ম্ম জানে ইহার ॥ ২
নানাবিধ কটুবাণী তাঁহারে পাশী শুনায় ॥
হেলায় করেন প্রাভু দে সকলে নিবারণ ॥ ৩
তাঁহার উপরে মারা ব্যাপিতে প্রয়াস করে ॥
গক্তেড় দেখা'তে ভয় সাধ করে কোনজন ॥ ৪

দৌ—মহেশ বিধাতা তাঁহারে ভুলা'ডে ছোট বড় সব আপন মায়ায়

মোহিত মায়ায় বাঁ'র। চাহে রাক্ষস ছার॥ ৫১

চৌ-করে দে আকাশে উঠে বরষণ অঙ্গার।
কতই বিবিধ ভাঁতি পিণাচিনী ও পিণাচ।
মল পুর কেশ অন্থি রুধিরের ধারা আর।
ধূলি বরষণ করি' আধার স্থান করে।
মারা দরশন করি' কপিরা অতি নিকল।
কৌতৃক হেরি' হালি ঈষৎ হাদিলা রাম।
কাটিলেন এক শরে দব রাক্ষদ-মায়া।
কপি-ভালু পানে কুপা-চ'শে চা'ন রম্মুরায়।

ধরাওল হ'তে উঠে বিপুল জলের ধার ॥
মার্-কাট্ ধ্বনি করি' করে কডবিধ নাচ ॥ ১
কথনো বরষা শিলা হ'তে থাকে বারবার ॥
দেখিতে না পাওয়া যায় প্রসারিত নিজ করে ॥
স্বারি মরণ লেখা আছে ভাবে অবিকল ॥
ভয়-ভীত সব কপি বু'রলেন গুণধাম ॥ ০
দিনকর-করে যেন কাটে আঁধারের ছায়া ॥
দারুণ হইল রণ রোধিলে না রোধা যায় ॥ ৪

পো —আদেশ যাচিয়া মহা ফোধ-ভরে

রামের চরণে যান লক্ষ্মণ অঙ্গদাদি কপি সাধ। শর-শরাসন হাত । ৫২

(5)— মরণ নয়ন বৃগ উর ভুক স্থবিশাল।

এ দিকে রাক্ষসপতি পাঠাইল বীরগণে।

পর্বত নথ পাদপেরে করি' প্রহরণ।

রাক্ষস-বানরেতে জোড়া-জোড়া রণ করে।

মৃষ্টিকা পদাখাত দাতে করে দংশন।

মার্ মার্ ধর্ ধর্ ধরিয়া কর্নিছত।

হিমণিরি-নিভ তমু তচ্পরে আভা লাল ম ধায় ডা'রা কতবিধ ভীম প্রহরণ সনে ॥ ১ জয়জয় রাম রবে ধায় কপি-বীরগণ ॥ জয়-সাধ ছ' দলের কম নহে জ্বলি-'পরে ॥ ২ বিজ্ঞাী কপিরা বধে করে ভর প্রদর্শন ॥ শির চুর্প করি' কর্ ভুজ্মুগ উৎপাটিভ ॥ ৩ नग्न लाक पूर्व थाक्क अहे यहा क्वांनाहरण। অত্বরে করে ত্বর কৌতুক দরশন।

প্ৰচণ্ড দেছ কড ৰখা তথা ছুটে বলে॥ क्थरना विधारम चूर्य क्थरना मगन मन ॥ 8

দো—খাদেতে শোণিত-অঙ্গার-রাশি-

উপরে উড়িয়া উপরেতে যেন

ধূলি-রাশি জমাহয়। ভন্ম ছাইয়া রয় ৷ ৫৩

লক্ষাণের শক্তিশেল

চৌ—কুত্মতি কিংগুক-তক্ষ শোভা যথা হয়। সেইমত শোভিতেছে মৃত বীর সমুদর। मक्तरा-त्यवनाम त्रवीत हुई अन । কাহারো-অপরে জয় করিতে নাহি শক্তি। কোপেতে অধীর তবে হইলেন লক্ষণ। প্রহার বিবিধ ভাবে করিছে থাকেন শেষ *। তখন রাবণ-ক্বত করে মনে অনুমান। শক্তি বীর-বিঘাতিনী এত ভাবি' ক্লেপ করে। ভীষণ তাহার ঘার লক্ষণের ভ্রান যায়।

মহারোষে এ উ হারে করিলেন আক্রমণ ॥ ১ ছল বল রাক্ষ্য করি'ছে রণে অ-নীতি। চূর্ণ করেন স্বরা সার্থী ও স্তম্পন। ২ ভাহে রাক্ষস হ'ল শুধু প্রোণ-অবলেষ। সঙ্কট হ'ল অরি ল'বে এবে মোর প্রাণ॥ ৩ ভেজোময়ী শক্তি লাগে লক্ষণ হৃদি-'পরে॥ তখন নিডর হ'য়ে তাঁহার নিকটে যায়॥ ৪

ব্যো-মেঘনাদ-সম জগৎ-আধার

শতকোটি বীরে শেষে কি তুলিবে

তুলিতে প্রয়াস-করে। লজ্জিত হ'য়ে ফিরে॥ ৫৪

ब्यूमारन्य कृट्यन देवहरू कामप्रम

তাঁহারে সমরে কহ জিনিতে শক্তি কা'র। 🕮 রামের কুপা-আঁথি যাহার উপরে হয়। अमिष व्यागं इंग किरत भूनः इंहे मल। ব্যাপক ত্রহ্ম যিনি অঞ্চেয় ভূবনেশ্বর। এমন সময়ে হয়ু লক্ষণে ল'য়ে আসে। আম্বান্ বলে রহে স্থাবণ ভিষক্-রাজ। হতুমান গেল তথা লঘু কলেবর ধরি'।

(b) — ७ न महारमवि (यह बनख-रकाशानरन। ठाति-मग रनाक शारत महन कतिराख शरन॥ স্থুর নর চরাচর সদা দেবা করে বাঁ'র॥ ১ এ লীলার গৃঢ় ভেদ তা'রি শুধু জানা রয়। আপন আপন অনী সামালে সেনানীদল ॥ ২ লক্ষণ কোথা বলি' শুধা'ন করুণাকর। অমুকে নির্ধি' প্রভু-দ্রদি অতি হথে ভাসে। ৩ কে আনিভে যায় ভা'রে লক্ষাপুরীর মাঝ॥ আলয় সহিত ডা'রে আনে অডি দ্বা করি'। ৪

(मी—नाटमन • ठन्न •

শতদলে আসি

হইল স্থায়েণ নত। গিয়া আন' বায়্-স্ত ॥ ৫৫

কৃষ্টি' নাম গিরি-ভেষজের কহে

कालद्रमि-त्रावन मश्वाक

(5)--त्राम-शन-मत्रिक कनत्य कत्रि' शात्रा । ও দিকে খনেক দৃত রাবণে বারতা দিল।

আখাস-বাণী সনে করিল হয় গমন # কালনেমি-পুরে আসি' রাবণ উদ্বিভ হ'ল ॥ ১ সবিশেষ ভেদ-কথা দশানন কহে তা'ৱে। ভোষারি সমূথে বেবা করিল পুরী দহন। নিজ হিড কর' করি' রখুপতি বন্দনা। নীল-শতদল ভন্ন, অতি কমনীয় খ্যাম। আমি তিনি মোর ত্যাগ কর তব এ মৃঢ়তা। মহা মোহ-যামিনীর ত্যক' নিজা-বিকলতা॥ কাল-রূপী বার্ভুক্ যাঁ'র পালে পায় ক্ষয়।

শুনি' কালনেমি শির ঠুকে ভূমে বারে বারে ॥ তা'র গতিরোধ করে আছে হেন কোন্ধন ॥ ২ ष्टाफ्' तत्कम द्रशा **खर এ**हे कक्षना ॥ স্থাদয়ে ধরহ রূপ নয়নের অভিরাম ॥ ৩ কড়ু কি তাঁহারে রণে স্থপনেও হয় জয়॥ ৪

(प)-छनि' प्रभानन রাম-দুক্ত-করে কোপ-যুত অভি মরি সেও ভাল

কালনেমি মনে করে। ডুবে পাপী পাপ-সরে॥ ৫৬

মকরী-উদ্ধার

চৌ—এত ভাবি' পথে যেতে প্রপঞ্চ করে সঞ্জন। নির্ম্মাণ করে সর মন্দির উপবন॥ হত্নান্ হেরে এক পুত মুনি-আশ্রম। রাক্ষ্স রহে তথা তাপদের ছন্মবেশে। চরণে প্রণাম করে তথা গিয়া হতুমান। কহে হয় মহারণ বীরামে ও দশাননে। হেথায় থাকিয়া আমি সকলি দেখিতে পাই। বারি যাচে হতুমান্ দিল নিজ কমগুল। রক্ষ: কহে স্বরা এস করি' সরে মতজন।

ভাবে করি জল পান করিবারে দূর আম। ১ মায়াপতি-দৃতে চাহে ভুলাইতে মায়াবলে॥ সুরু করে কালনেমি জীরামের গুণগান॥ ২ ব্রীরামের ক্ষয়ে মোর সংশয় নাহি মনে॥ জ্ঞান-দরশন-বল আমার বড়ই ভাই 🖁 ৩ কপি কহে বেণি নাই রহে অভি অল্প स দীক্ষা-দান করি ভোমা জ্ঞান হ'বে এইক্ষণ ॥ **৪**

দো-ধরিল চরণ বধিতে ভাহারে

আকুলি মকরী দেব-দেহ ধরি' সলিলে যেমনি নামে। **हिन्म अंतर्ग-शास्त्र ॥ ৫**१

চৌ—ভোমার দরশে কপি হইলাম নিম্পাপ। মকরী কহিল মুনি নছেক এ নিশাচর।

এখন খুচিল ভাত মুনিবর-ছোর শাপ। প্রকৃত আমার কথা ধব' নিজ হৃদি 'পর # # ১

কালনেমি-উদ্ধার

যেমনি অব্দরা গেল হয়ুরে এ কথা বলি'। হসুমান্কহে মূনি আগে দক্ষিণা লহ।

রাক্ষস-পাশে হতু তথনি আসিল চলি'॥ ভা'র পর তব মন্ত্র-উপদেশ মোরে দেহ ৮২

বকরী ও কালনেরি ইলস্কার শাপ্তরে অপ্রয়া ও গছর্ম। একদিন তাহাদের নৃত্যকীতে ইল্লেক্ডা যুধ; কিভ তথার উপৰিষ্ট বহর্ষি ভূকাসা কোন আংশংসা করিলেন না। ইহাতে সংবিকে নৃত্যুসীত বিবহে অঞ্জনে করিৱা ভাহার অবজ্ঞার হাসি হাসিবাছিল ; কলে তাঁলারা অভিসম্পাতে অব্দারা মকরী ও গছর্ক কালনেধি রূপে পৃথিবীতে নিপজিত। উহাব। বহর্ষির চরণে দাপ-দুক্তির জন্ত প্রার্থনা করিলে, বহুর্বি চুর্বনাগা আদেশ করেন যে, ত্রে চাবুগে বধন ভাৰান্ ৰাষ্টল পৃথিবীতে আনিবেন, তথন ভাঁহাৰ হুত হছুমানেৰ চৰণ-পাৰ্থে মকৰীৰ, ও ডাহাৰ হুতে নিহত হুইলে कांगरनवित्र छेश्वाच स्टेरन ! अहे अन्तर-प्रधान सकती सम्बाग्नीरक बांगता विवाहित ।

এ বলি' ভাহার শির লাঙ্গুলে জড়াইয়া। রাম রাম রাম বলি' ছাড়িল আপন প্রাণ।

আছাডিল মরে রক্ষ: নিজ তত্ত প্রকাশিয়া ভা' শুনি' হরব-ভারে চলে পুনঃ হরুমান ॥ ৩

ভরতের শরে হনুমানের যুক্ত্র

হেরে হতু পর্বতে ভেষতে চিনিতে নারে। গিরি ল'থে নিশাযোগে নভে বাযু-বেগে ধায়। অযোধ্যা-উপর দিয়া বানর উড়িয়া যায়। ৪

তখন সহসা কপি উপাড়ি' লইল তা'রে ॥

দো-অতীব বিশাল ফলক-বিচীন

নেহারি' ভরত হানেন শায়ক

রাক্ষদ অমুমানি'। প্রবণ অবধি টানি'। ৫৮

ভরত-ইমুমান সংবাদ

চৌ-মূরছি' ধরায় পড়ে ভীষণ শরের বায়। মূথে জপ করি' নাম রাম রম্বরায়॥ ভরত চলেন ছটে প্রিয়-নাম গুনি' কাণে। কাডর হেরিয়া ল'ন হমুমানে বুকে ক'রে। শুকায় ভরত-মুখ ছুখে বিচলিত মন। যে বিধি জীরাম-পদে বিমুখ আমারে করে। কার মন বচনের সভিতে আমার যদি। রখুপতি মোর 'পরে যদি র'ন অফুকুল। কহিতেই এই কথা জয় জয় রহুপতি।

(সা---ল'ন ডা'রে হুদি 'পরে करन उद्यम नाहि श्रुत

আকুল-পরাণে যা'ন বানরের সন্মিধানে॥ ১ উপায় করেন বহু জ্ঞান নাহি আদে ফিরে'॥ সক্ষ্য-নয়নে তবে ভরত বচন ক'ন॥ ১ এই নিদারুণ তথ আঞ্চি মোর ভারি ভরে॥ রাম পদে অকপট রহে প্রীতি নিরব্ধি॥ ৩ তবে যেন হয় কপি অপগত শ্রম-শঙ্গ ॥ বলিয়া উঠিল বসি' হহুমান ক্রতগতি ॥ ৪

পুলকিত তমু লোচনে জল। শ্বরি' রাম রবুকুল-কমল। ৫৯

(5)-ক'ন ডাড স্থনিধি রামের কহ কুশল। সহিত অমুদ্ধ মাডা জানকীর মঞ্চল। गः(ऋर्भ इस मव विविद्यल ममाठात्र। ক'ন হার দৈব কেন আমার জনম হ'ল। (अरलज नमज नम्र वृत्वि' मरन ध्रति' धीत। হে তাত বিশম্ব বড হইবে তোমার যে'তে। পর্বত-সনে মোর শরে কর আরোহণ। শুনি' হয়ুমান-মনে উপবিল অভিমান। 🖲রাম-প্রভাপ-কথা বিচারিয়া হৃদি 'পরে।

শুনি' অরুতাপ প্রাণে মনে খেদ অতি আর ॥১ व्यक्रत कानरे कारक अ व्यथम ना नाशिन ॥ হমুমান প্রতি বাণী কহিলেন বল-বীর। ২ প্রভাত হইয়া গেলে কার্য্য নাশ হ'বে তা'তে # প্রেরণ ডোমারে করি যথা কুপা-নিকেডন 🕽 😕 মোর ভার বহিতে কি সক্ষম হ'বে বাণ। বন্দি' চরণ কপি কহে করি' জোডকরে ॥ ৪

(দ)—ভোমার প্রভাপ এত বলি' লডি' ভরতের শীল বারবার মনে

क्राप्त ताचि नाथ ভরত-আদেশ গুণ বাহ-বল করিয়া বাধান

দরা যা'ব প্রভ-পায়। নমি' হতুমান যায় ॥ ৬ • (ক) প্ৰভুতে প্ৰেম অপার। যাই'ছে বায়্-কুমার ৷ ৬০(খ)

ঞ্জিরাদের বিলাপ

(ট)--ও দিকে জানকীমাধ হেরি' অনুজের পানে। ক্ষেম বচন যথা ক্ষে স্ব নরগণে॥ অর্থ-রাতি অভিক্রেম কপি না আসিল কিরে'। নিলেন অনুজে রাম আপন ব্রেকর পারে ॥ ১ পারিতে না কভু ভাই হেরিতে মোরে বিক্ষ। সদাই আছিল তব বভাব অতি কোমণ। আমারি হিতের তরে বর্জিলে পিতামাতা। ভোমার সে অমুরাগ রহিল কোথা এখন। যদি আনিতাম বনে ভোমারে হারা'তে হ'বে। পিভার বচন নাহি পাদিভাম বড়ু ছবে। ৩ ভনয় বিভব নারী ভবন ও পরিবার। কিন্তু জগত মাঝে ভাই আর মিলে না ত'। পক্ষ বিহনে খগ বেমন অভীব দীন। তেমনি জীবন মম ভাই ভোমা হারাইয়ে। জায়া-উদ্ধার হেতৃ হারাইয়া অমুজেরে। সেও ভাল অপ্যান সহিতাম জগময়। এবে ঘোর অপয়শ আর শোক তব তরে ৷ তব জননীর তুমি একমাত্র স্থকুমার। ধরিয়া ডোমার হাত করিলেন সমর্পণ। কি উত্তর দিব তাঁরে কিরে গিয়ে অযোধায়। চিন্তা কতই তাঁ'র যিনি চিন্তা-বিমোচন। উমা এক খণ্ডহীন প্রভুরাম সনাতন।

সহিলে কাননে হিম তাপ বায়ু সদা ভাতা॥ ২ আকুলভা-ভরা কথা ওনিয়া না উঠ কেন। আসে যায় এরা সবে এ জগতে বারবার 🛚 এ বিচার করি' মনে হও ভাত জাগরিত # 8 কর বিনা করী আর ফণী হ'লে মণি-হীন। कड़ देवर यनि जार्थ भारत जार वाहाहरम ॥ द कान् मूच न'रत्र श्रनः व्यायाशात्र या'व किरत्र' ॥ বনিভারে হারাইলে ভাহে ক্ষভি বেশী নয়। ৬ কঠোর হিয়ারে হ'বে অনিবার সহিবারে **॥** তুমিই কেবল ভাত ভাঁহার জীবনাধার॥ ৭ সব বিধি হিতকর স্থাদ করি' গণন # উঠি' মোরে কেন নাহি শিখাইয়া দাও হায় ॥৮ বয়যে আসার তুই রাজীব-দল লোচন। ভৰতে কুপায় তাঁ'র নরলীলা আচরণ 🛚 ৯

रम्मारमन बाजार्वेसम

সো-প্রভুর বিলাপ শুনি' কাণ হেন কালে আসে হনুমান

ভিষক দ্বিত ভবে সমাপিল প্রতিকার। करतन खपरत थति असूर अध्य आपत । যেভাবে ভিষকে হয় ক'রেছিল আনয়ন। किशासित स्थार्य मोक्स वारकः। वीववम यथा कद्मन-भारक ॥ ७১

চৌ-পুলকিত হ'রে রাম মিলিলেন হন্নমানে। পরম স্থলন প্রভু কৃতজ্ঞতা-ভরা প্রাণে ॥ পুলকিত লক্ষ্মণ বসেন উঠি' আবার ॥ ১ খক কপির দলে স্থাধের বহে লছর ॥ আবার সেভাবে ডা'রে লইল পুনঃ ভবন। ২

কুম্বকর্বের জাগরণ

এ বারতা প্রত্তিল গিয়া দখানন-কাণে। ব্যাকুল হইয়া যায় কুম্ভকরণ-পালে। উঠে' বলে নিশাচর ভাহারে দেখায় ছেন। क्थादेश बावरंगरव निमान्त्र ८ए ब्राप्स ।

অ**তী**ৰ বিষাদে শিষে বারবার কর হানে । বিবিধ যতনে ভা'র খুমের ঋডভা নাশে ৷ ৩ শরীর ধরিয়া কাল উঠিয়া ব'সেছে যেন 🖁 ওছ বদন ভব ছেরি এবে কি কারণ। ৪

সব কথা কছে ভবে মহামানী দশানন। কহে তাত বানরেরা ব'থেছে রাক্ষসগণে। চুম্প স্থররিপু নরাহারী যতক্র। মহোদর আদি যত আমাদের ছিল বীর।

যে প্রকারে জানকীরে আনিল করি' হরণ ॥ মহা মহাবীরগণে নিধন ক'রেছে রণে ॥ ৫ মহা বিক্রম বীর অভিকায় অকম্পান 🛚 নিপড়িভ সংগ্রামে সেই সব রশ্ধীর ॥ ৬

কুম্বকর্বের রাবণকে উপদেশ দান

(पा-प्रभानन-वानी

জগত-মাতারে

শুনিয়া কুন্থ

मर्थरम करह वहन।

হরি' জানি এবে

কল্যাণ চাহে মন। ৬২

(ही-छेखम कांच देश ना कब्रिटन दर बांचन्। এখন-ও পরিত্যাগ করি' ওই অভিমান। रुस्मान् मान नम करत याँ त शाम नि । হায় হায় ভাই তুমি কুকাজ ক'রেছ ঘোর। বিধাত। মহেশ স্বে প্রভৃতি সেবক বাঁ'র। **(मवर्षि कहिला भारत शृ**ष्ट्र रथ **कान-व**हन। এখন আমারে তাত দাও গাঢ় আলিঙ্গন। ত্রিভাপ-মোচনকারী নির্মি গিয়া নয়নে।

এখন আসিয়া মোরে জাগাইলে কি কারণ # রামের ভঞ্জনা কর হ'বে তব কল্যাণ॥১ সে রামে কি নর মনে ভাব' নিশাচরপতি ॥ আসি' কহিলে না কেন প্রথমেই কাছে মোর ॥২ বিরোধ এনেছ টেনে' সে পরম দেবতার ॥ কহিভাম ডোমা তা'ই কিন্তু এবে অকারণ # ৩ গিয়া দরশনে করি সফল নিজ লোচন। স্থাম-তন্তু সরসিজ-নয়ন জীবন-ধনে ॥ ৪

ব্যো--রাম-রূপ গুণ পরেতে বাচিল করিয়া স্মরণ স্থরা কোটি ঘট নিমেষ ভরে বিশীন। মহিষ গণনাহীন ॥ ৬৩

विचेवन-कृष्णकर्ग गरवाप

(5)—মহিষ আহার করি' মদিরা ঢালি' গলায়। পরে সিংহনাদ করে বজ্ঞাঘাত-রব যা'য়॥ মত্ত সমর-মদে মদিরায় লৌলীন। ডা' দেখিয়া বিভীষণ আগুয়ান হ'য়ে এ'ল। অমুদ্ধে তুলিয়া বুকে করে তা'য় আলিকন। বিজীষণ কৰে ডাত হিত-বাণী কহা-দোবে। আসিয়াছি সে গ্লানির কারণে প্রভুর কাছে। **७**न छाडे अरव कान-करनिष्ठ मर्भानन। ধক্ত রে বিভীষণ ডো'রে বলিহারী যাই। হে জ্রাড: তৃমিই কুল করিলে যশে উজল।

তুৰ্গ ভ্যজিয়া চলে একাকী সেনা-বিহীন ॥ ১ চরণে পতিত হ'য়ে নিজ নাম **গু**নাই**ল**। শ্রীরাম-ভকত জানি' ডা'র 'পরে শ্রীত মন॥ ২ পদাঘাত দশানন ক'রেছিল মোরে রোবে॥ দীন হেরি' দাস **ভা'র প্রস**রতা লভিয়াছে ॥৩ পরা-শিক্ষা আর কড় লইবে কি সে এখন। त्रकः कुल-विकृषण श'रत्र हिन् जूरे छारे॥ 8 खिला सूर्यत्र निधि ताम-शप-अखपन ॥ €

(प)-कांत्र वाक् मतन কাল-বশ আমি

কণটভা ছাড়ি' নিক পর জান-

ভ'লো রাম রণধীর। বিশ্বত যাও বীর । ৬৪

কুম্বকর্বের যুদ্ধ

টৌ—ভাতার বচন ওনি' ফিরে আগে বিভীষণ। উপনীত যথা প্রভু তিনলোক-বিভূষণ। क्टर नाथ ध्राधत-मृत्र मंत्रीत-ध्रत । ज कथा अवदाग यदन किमिता करत अवन। 'कृलिया लहेल करत विष्ठेशीमल कृथत । কপি আর ভালু বীরগণ একএক বারে। মন তা'র অবিচল কলেবর নাহি হেলে। তথন পবন-স্থত মৃষ্টি করে প্রহার। উঠিয়া সে নিশাচর মারে পুন: হতুমানে। ডা'র পর নল নীলে আছাডে ধরণী 'পর। বানর-বাহিনী দুরে ছুটিয়া পলায় ত্রাসে।

দো—স্ত্ৰীৰ সহ अजन-वानि চলে মহাবীর স্থগ্রীবে চাপি'

(5) — হর ক'ন দেবি নরলীলা করি'ছেন রাম। অহিগণ সনে মিলি' যথা থেলে হরি-যানণ॥ জ্রকৃটি-বিলাসে যিনি করেন কালে সংহারে। করি'ছেন বিস্তার কীর্স্তি জগ-পুতকরী। মুৰ্জ্য অভীত হ'ল হতুমান পে'ল জ্ঞান। হারা-জ্ঞান স্থগ্রীব আবার ফিরিয়া পে'ল। জ্ঞান পেয়ে নাসা কাণ কেটে' নিয়ে দংশনে। সুগ্রীবে পদে ধরি' রক্ষ: আছাড় মারে। ভা'র পর প্রভু-পাশে ফিরি' সুঞীব কয়। অভিশয় গ্রানি মনে দেখে' কাটা নাক কাণ। স্বভাবে ভীষণ-কাম্ব তাহে নাসা শ্রুতি-হারা।

(मा-व्य व्य त्रव-একযোগে ডা'র

চৌ-রণমদে মাতি কুম্ব ক্রোবিত কিরে এমন। মহা ক্রোধ-ভরে কাল কিরিয়া আলে বেমন॥ কোটি কোটি বানরেরে ধরিয়া ধরিয়া খায়। কোটি অপরেরে ধরি' ঘর্ষে খেছের সনে। रमन खर्वन नामा-नथ मित्रा कनिम्हल ।

কুলমণি হাঁকি'

(मरह दूर्फ्' यादा

আসিডেছে কুম্বকর্ণ ধীর রণ-ধুরদ্ধর॥ ১ করিয়া হরষ-রব ধায় বত বীরগণ ॥ কট্কট্রব করি' ছুড়ে ভা'র দেছ 'পর॥ ২ কোটি কোটি গিরি-চুড়া ভাহারে প্রহার করে। অর্ক ফলের ঘায় করী যথা নাহি টলে।। ৩ মাথা ঠকে' ধরা 'পরে পতন হইল ভ'ার ॥ ঘূর্ণিত ধরা 'পরে পড়ে হনু সেইক্ষণে॥ ৪ यथात्र उथात्र कृत्म (कर्ण वीत-धुरुकत ॥ অতি ভয়ে ভীত সবে কেহ না নিকটে আসে ॥৫

> কপি মূর্চিছত করি'। আপন ককে পুরি'॥ ৬৫

তাঁহার কি শোভে কড়ু সংগ্রাম এ প্রকার। ১ তরিবে মানব ভবে যাহে কীর্ত্তন করি'॥ স্থ্রীব কোথা বলি' করে তার সন্ধান॥ ২ মুত ভাবি' কুকি হ'তে নিশাচর ফেলে'ছিল। গর্ভিলে নভে তবে কুম্ভ-করণ জানে।। ৩ স্থাীব ঝেডে' উঠে' মারে প্রতি-উদ্ধরে ॥ জয়তি জয়তি কুপানিধানের জয় জয়॥ ৪ মহা ক্রেম্ব-ভরে ফিরে নিশাচর বলবান ॥ হেরিয়া বানরদল দারুণ ত্রাসেতে সারা॥ ৫

> ছুটে বানরের দল। বিটপী গিরি সকল। ৬৬

পঙ্গপাল বেন গিরি-গুহায় ঢুকিয়া যায় 🎚 ১ ধরণীর ধূলি সহ নিস্পেশিল কোটজনে। व्यावात्र वाहित्र इ'एउ थाटक मटन मटन ॥ २

[•] বাধার। 🕈 গরুড়।

হেন রণমদে মত্ত গবিবত নিশাচর। দুরে খাড়া বীরগণ ফিরিয়াও নাহি কিরে। কপি-সেনা ছারখার কুম্ব-করণ করে। ছেরিলেন রঘুমণি আপন সেনা বিকল।

ধাতা যেন দিলা বিশ্ব ভরিতে পোড়া উদর। কাণে না ভানতে পায় নয়নে নাহিক হেরে। ৬ তা' শুনি' রাক্ষ্য-অনী ছুটে উল্লাসভবে ॥ অরাতি-বাহিনী আদে গণনা-অভীত দল ॥ ৪

দো-তন।বভীষণ দেখি সেনা আর স্থ্যীৰ লক্ষ্মণ कुरहेन वन

রক্ষা কর সেনাগণ। রাজীব-লোচন ক'ন # ৬৭

(6)-কটিতে বাঁধিয়া তৃণ শাঙ্গ লইয়া হাত। অরাতি দলন তরে চলিলেন রভুনার ॥ আগে টকার দেন নিজ ধহুকের গুণে। সভ্যদন্ধ প্রভু শর ভ্যন্তিলেন একলক। চারি।দকে ধায় যত গণনাতীত নারাচ। কাটে পদ বিধে বুক খি ছৈ শির ভুক দণ্ড। কড বীর-কলেবর হ'য়ে গেল শত থণ্ড। ঘূর্ণিত হ'য়ে পড়ে আহত ধরণী 'পরে। লাগিতে শায়ক করে মেঘ-সম গর্জন। চণ্ড বিশাল দেহ মুণ্ড বিহনে ধায়।

বধির অরির দল হইল সে রব শুনে'॥ ১ কাল অহি যেন চলে আকাশে ধরিয়া পক্ষ ॥ নিহত হইল তাহে বিষট কত পিশাচ ৷ ২ সম্বরি' উঠি' পুন: সুবীরেরা যুদ্ধ করে 🛭 ৩ স্থকঠোর শর হেরি বছ করে পলায়ন॥ ধর্ধর মার্মার খোর রবে গর্জায় ॥ ৪

(पा-कन-माख कडू-পুनदाय **७**।'द

শায়ক নিকর জুণীর-ভিতরে বধে পিশাচের প্রাণ। অবেশে সকল বাণ। ৬৮

(b)-- कुछकर्ण मत्न (मिन-विठात कति'। অতিশয় কোপ যুত হ'ল মহাবলী ধীর। ক্রোধভরে পর্বত উপাড়ি' লইল করে। প্রবাত আসে হেরি সংখ্যায় অগণন ! ভা'রপর ক্রোধ-ভরে আপনার ধন্ন টানি'। শ্রীরে প্রবেশ করি' বাহিরিয়া যায় শর। অ্সিড ব্যানে শোভে শোণিতের ধারা হেন। কজ্জল গিরি হ'তে গেরু ধারা ছুটে যেন।

ক্ষণ-মাৰো নিশাচর-বাহিনী নাশিকা হরি । করিলা কেশরী-নাদ অতি গুরু-গন্ধীর ॥ ১ মহা কপিবীরগণ-পানে নিক্ষেপ করে। भर-खार्श धृलि-मम करदेन क्यू **उपन** ॥ २ করাল শায়ক বছ হানিলেন রঘুমণি ॥ लुकां इ हशना यथा कनश्र अ मध्य ॥ ७ ব্যাকুল নির খ' তা'রে কপি ভালু ধেয়ে' আলে। নিকটে আসিলে পরে অমনি আবার হাসে ॥৪

(मा-विश्रम भातारव গল্পাল সম

গৰ্জন করে ভূমিতে আহাড়ে

কোটি বানরেরে ধরি'। রাৰণ-শপথ করি' ॥ ৬৯

(5)—বানর ভালুক দেনা ত্রাদে পলাইয়া যায়। বুকে# বেরিয়া যেন মেষ্পাল ভরে ধার । অভীৰ ব্যাকুল হ'য়ে আর্ত্তনাদের সনে। ডেমনি ভবানি ভঙ্গ দেয় রাক্ষস-রণে ॥ ১ কৰে এই নিশাচর আকালেব রূপ ধ'রে।
রাধ হে শরণাগত-তৃঃধ বিভঞ্জন।
সকরণ আর্ত্তনাদ শুনিডেই ভগবান্।
আপনার সেনাগণে পশ্চাতে রাঝি রাম।
কর্ষিয়া শরাসন হানেন শতেক শর।
শরীরে বি বিতে বাণ ক্রোধ-ভরে লোড়ায়।
উপাড়ি লইল এক পর্বত ল'য়ে বায়।
কথ্যিত ভূই বাহু ভা'রে হেরে মনে হয়।
উগ্র নয়নে প্রভু পানে করে দরশন।

আদিল বানররপী অভাগা প্রদেশ 'পরে ॥
কুপা-জলধর বাম ধর রক্ষ: বিনাশন ॥ ২
চলেন ধরিয়া করে শবাসন আর বাণ ॥
কোপ-ভরে মহাবার নিজে হ'ন আগুযান ॥ ৩
বেগে প্রধাবিত হ'য়ে ভেদ করে কলেবর ॥
ধরাধর কম্পিভ বস্তমতী হেলে ভা'য় ॥ ৪
সে কর রাঘববর কাটিলেন একেবারে ॥
ভা'রেও কেলেন ভূ'ম কাটিযা শারর ঘায় ॥ ৫
পক্ষ-বিহীন গিরি মন্দর যেন রয় ॥
যেন গ্রাদ করিবারে চাতে পাণী বিভ্বন ॥ ৬

পো—চীংকার করি' গগনে ত্রাসিভ অতি ভয়**ং**র সিক্ত **অ**মর ব্যাদিত বদনে ছুটে। হাহাকার করি' উঠে॥ ৭০

(চ)—মনে বৃঝিলেন প্রস্থান অমরগণ।
জনে বদন তা'র হানিয়া শর নিকর।
বাণ-ভরা মুখ ল'য়ে সন্মুণ পানে ধায়।
তখন ক্রোধেতে প্রতু লইয়া নিনিত্ত শর।
শের গীন ভীম দেহ তখন চুটিয়া যায়।
নভঃ হ'তে গিরি সম পতিত হইল বলে।
ভা'র আত্মার তেজ পশিল প্রভু-বদনে।
হরমে বাজায় দেব ত্নুভি অম্বরে।
মিনভির শেবে যত অমর ফিরিয়া যায়।
করিলেন অম্বরে থাকি' হহিত্তণ গান।
ভরায় বধহ খনে বলি' চলি' যা'ন মনি।

শ্বৰণ অবধি ধন্ধ করি' বলে কর্ষণ ॥
তথাপি সে মহাবল না পড়ে ধর্মী 'পর ॥ ১
কালরূপী প্রাণবান্ তৃণ যেন দৌড়ায় ॥
শরীর হইতে শির কাটিলেন দ্বরাপর ॥ ২
মণি-হারা ফ্লী সম বিকল হইল হুখে ॥
ক্লিপতা ধরা প্রাভু কাটেন দ্বিভাগে তা'য় ॥ ৩
রাক্ষস কপি ভালু প্রোধিত করিয়া তলে ॥
ত্বর মুনি সকলেই বিস্ময় গণে মনে ॥ ॥ ৪
বর্ষে প্রস্ন-রা'ল সেবে স্ত'তগান করে ॥
সমাগত দেব-ঝাষ রাম-পাশে সে সময় ॥ ৫
বীররস-ভরা শুভি শুনি' শ্রীত প্রস্কু-প্রাণ ॥
শোভায় করেন রাম আলোকিত রণভূমি॥ ৬

ছ — ঘোর রণস্থল
মূথে শ্রমঞ্জল
ছ' করে ধারণ
ভূপদী না পারে

ডো—নিশাচর যেবা **অভি নী**চ মত্তি করেন উঞ্জ আধি-শ্ভদল শর শরাসন শোভা কচিবারে

নীচ মলাগার শে নর ভবানি অতুলিত বল কোশল-রায়। লোহিত শোণিত বয়ানে ভা'য়॥ চারিদিকে ঘিরে ভালু বানর॥ হারে শেষ বহু আনন-ধর॥

> ডা'বে দেন নিজধ'ম। যেবা নাহি ডকে রাম। ৭১

(मध्मारणत्र मुक्ष ; ७ 🕮 त्रारचत्र मांगशाम

চৌ--দিবস অতীত হ'ল চলিল ফিরে' ছ'লল। আজিকার রণে এখেন বীরেরা অতি বিকল। শ্রীরামের করুণায় বাড়ে কপিদল-বল। দিবারাতি রাক্ষ্যের সেইমত বল-হ্রাস। রাবণ বিলাপ বছ করি'ছে গভীর ছথে। বুকে করাঘাত করি' রমণী রোদন করে। হেন কালে মেঘনাদ করে তথা আগমন। ক্ষতে মোর বীরপণা দেখ' কালিকার রণে। রথ বল লভিলাম যাহা ইষ্ট্রেৰ হ'তে। ৰচন-বিলাসে হেন হ'য়ে গেল নিশি ভোর। এ দিকে বানর ভালু কাল-সম মহাবীর। करत त्रव वीत्रवंग निक निक करा-राष्ट्र ।

তৃণ পেয়ে আরো তেজ যথা হয় মহানল । ১ কহিলে আপন মুখে পুণ্য যথা পায় নাশ। সহোদর-শির তুলে' বারবার ধরে বুকে ॥ ২ তাহার বিপুল বল ভেঞ্জের বাধান ক'রে। কহিয়া অনেক কথা জনকের তোবে মন। ৩ অধিক বডাই ভা'র কি করিব ও চরণে।। পরিচয় না দিলাম ভা'র তব সাক্ষাতে ॥ ৪ আবার বানর হানা চারিছারে দিল ঘোর॥ ও দিকে রজনীচর অতি ভীম রণধীর। ৫ সে সমর-বর্ণন কি করিব খগ-কেতু। ৬

বো-মায়াময় রথে অট হাসিয়া

করি' আরোহণ গরজে বানর-

মেঘনাদ নভে ্যায়। সেনা মাঝে ভয় ছা'য়॥ ৭২

(চী---শক্তি শুল ভরবারি কুপাণ আয়ুধচয়। পর্ভ পরিঘ শিলা হানিতে থাকে কেবল। আবৃত দশদিক নিশিত শায়ক-জালে। ধর্ধর মার্মার এই কাণে ওনা যায়। ভক্ত গিরি ধরি' নভে বানরের দল ধায়। তুর্গম খাটি পথ যত গিরি কন্দর। কোপায় যাইবে ভাবি' বানর অভি ব্যাকুল। নল নীল অঙ্গদ বায়ু-সুক্ত হনুমানে ডা'র পর লক্ষ্মণ স্থগ্রীব বিভীষণ। অবশেষে আক্রেমণ করিল দে রঘুবরে। নাগ পাশ-কবলিত হইলেন ধর-অরি। নানাবিধ আচরণ করেন নট-সমান। সমর-শোভার তরে ঘটা'লেন বন্ধন।

বছ্র-আদি প্রেররণ সবে মহা ভেজোময়॥ বর্ষণ শর-ধার। করে ভূমে অবিরল ॥ ১ মখার ভারায় যেন বর্ষার জল ঢালে। যে মারে ভাহার কেহ সন্ধান নাহি পায়। ২ ছঃখে ফিরিয়া আসে দেখিতে না ভা'রে পায়॥ মায়া-বলে মেঘনাদ বাণে রচে পিঞ্জর 🛭 ৩ বাসবের বন্দী যেন হইল ভূধরকুল। মহা বলবান বীরে আকুল করিল প্রাণে॥ ৪ শ্র-খায় জর্জর-দেহ হ'ন স্ব জন ॥ বর্ষিত শর সব লাগে নাগ-রূপ ধরে। ৫ খ-বশ অনস্ত যিনি অখণ্ড ও অবিকারী॥ সদা আপনার বশ অছিতীয় ভগবান্ ॥ ৬ নাগপাশ ছেব্লি' ত্রাস পা'ন যত দেবগণ। ৭

(मा-किश्रा गाँशव বন্ধন-মাধ্যে

নাম মুনিগণ কড় কি আসেন

কাটেন ভবের পাশ। উমা সে জগ-নিবাস # ৭০

চৌ--রামের দশুণ-লীলা ভবানি মহিমাময়। বুজি কি ভাষা-বলে ওর্ক না করা যায়॥ এ বিচার করি' যত জ্ঞানী ও বিরাগী জন।

त्रारमत खब्दना करत कर्क कति' वर्षक्रन ॥ ১

ব্যাকুল করি' ছিল সেনাগণে মেখনাছ।
আখবান কহে থল থাকু কণ সংযত।
কহে বৃদ্ধ ভাবি' মনে মৃঢ় ছাডিলাম ভো'রে।
এ বলি' ত্রিশূল হানে অভি থর ডা'র প্রতি।
মেখনাদ বক্ষেতে দারুণ প্রহার করে।
ধরিয়া চরণ পুন: ক্রোধ ভরে ঘুরাইল।
বরলাভ করা-ফলে মারিলেও নাহি মরে।
করেন নারদ হেথা বিনতা-মুতে প্রেরণ।

আবার প্রকাশ হ'য়ে কছে বন্ধ কটুবাদ ॥

এ শুনি' ভাহার ক্রোধ হ'ল অভি বন্ধিত ॥ ২
আবার দেখাস্ ভয় রে অধম তুই মোরে ॥
ভাহাই ধরিয়া ধা'য় জাত্ববান্ ক্রেভগভি ॥ ৩
ঘ্ণিত হ'য়ে পড়ে সুরারি ধরণী 'পরে ॥
ধরায় আছাড় মারি' নিজবল দেখাইল ॥ ৪
ভখন চরণ ধরি' পুরী-মাঝে ফেলে ভা'রে ॥
হরায় জীরাম-পালে করিল দে আগমন ॥ ৫

| দো—অহি-অরি সব | করিল ভোজন | মায়া-অহি ছিল যত। |
|---------------|--------------|--------------------------|
| পুদকে ভাসিল | ৰানর নিক্র | হ'য়ে মায়া-অপগত ॥ ৭৪(ক) |
| পাদপ পাণর | নথ গিরি ধরি' | কুন্দ বানর ধায়। |
| অভি ত্রাস-ভরে | যভ নিশাচরে | দুগ উপরে পলায়॥ ৭৪(খ) |

म्बिनारकत गल्ड-स्वरम ७ (मधमाप वध

(5)—ইম্রজিতের যবে মৃক্ত্র হ'ল ভিরোহিত।

ছরিতে করিল গতি গিরির গুহার পানে।

এ দিকে যুক্তি করি' নিরূপণ বিভীষণ।

ছষ্ট মায়াবী সেই স্থার-অরি ইম্রজিত।

এ যজ্ঞ পূর্ণ হ'তে বদি অবকাল পায়।

কবন করিয়া অতি প্রীত রামের মন।

ক'ন লক্ষ্মণ-সাথে সবে মিলি' যাও ভাই।

তুমি তা'রে সংগ্রামে ক'রো বধ লক্ষ্মণ।

বৃদ্ধি বলের যোগে ভাহারে ক'রো বিনাল।

জাম্বান্ স্থ্রীব আর প্রিয় বিভীষণ।

আদেশ প্রদান যবে করিলেন রঘুবীর।

প্রাত্তর প্রতাপ-কথা ক্রদয়ে করি' স্থরণ।

আজে যদি তা'রে বধ না করিয়া আসি কিরে'।

শত ধুক্ষিটী যদি দহায় হয়েন তা'র।

জনকৈ হেরিয়া লাজে হ'ল অভি অভিভূত॥
আজেয় হ'বার যাগ করিতে বাসনা মনে ॥ ১
কহিল শুনহ প্রভূ বলধর অভূলন ॥
আচরণ করিতেছে যাগ এক গহিত ॥ ২
ভাহ'লে বিজয় পে'তে হ'বে প্রভূ মহাদায় ॥
অঙ্গদ-আদি সবে কবিলেন আবাহন ॥ ০
যাগ যাতে পশু হয় উপায় করহ ডা'ই ॥
দেবভার ছম্ম হেরে' অভি ছম্মী মোর মন ॥ ৪
যাহে নিশাচর দল সম্বর পায় নাশ ॥
ভোমরা নিকটে পেক' সেনা সহ ভিনজন ॥ ৫
কটিতে ভূশীর বাঁধি' করে ল'য়ে ধয়ু ভীর ॥
জলদ-গন্তীর স্মরে কহিলেন লক্ষ্মণ ॥ ৬
ভবে রমুপ্তি-দাস আর না কহিব মোরে ॥
রামের দোহাই ভা'র বধে বারে সাধ্য কা'র ॥৭

বো-রবুমণি-পদে করিয়া প্রণাম লক্ষ্মণ ছরা যা'ন।
অঙ্গদ নীল নল মহন্দ সহ বীর হন্ত্মান্। ৭৫
বি)-উপনীত হ'রে তথা সকলে দেখিতে পান। মহিষে রুখিরে যাগে হ'তেছে আহতি দান।
ধ্বংস করিল যাগ মিলি' কপিগণ যত। তথনো উঠে না যবে প্রশাসা করিল কত॥ ১

ভথাপি অনভ হেরি' করি' কেশ কর্ষণ।

ক্রিশুল লইয়া থায় কলি করে পলায়ন।

অতি ক্রোথ-কবলিত হ'য়ে আলে নিশাচর।

ক্রোথিত পরনম্বত অঙ্গল দৌভায়।

হানে সে বিপুল শূল প্রভু লক্ষ্মণ প্রতি।

অঙ্গল আর হলু উঠি' ক্রোথে পুনরায়।

ক্রিলে দ্ব'বীর অনি মারিলেও নাহি মরে।

হেরিয়া আলি'ছে থে'য়ে ক্রুদ্ধ কালের প্রায়।

বিষ্ণি আকার থরি' ভখন সমর করে।

অংশ্যে হেরিয়া অরি কলিরা ভয়ে কান্তর।

তথন মনেতে ক্রির করিলেন লক্ষ্মণ।

রামের প্রতাপ-কথা হাণ্যে করি' স্বরণ।

এড়িতেই শর লাগে ভাহার বুকের মাঝে।

পদাখাত করি করি সবে করে পলায়ন ॥
আসি উপনীত হয় লক্ষণ যথা র'ন ॥ ২
গর্জিয়া বারবার করে রব ভয়ন্তর ॥
ধরার পাতিত করে বক্ষে তিশুল-ঘায় ॥ ৩
দ্বি-ভাগ করেন শৃশে শর হানি সম্প্রতি ॥
আক্রমে তা'বে তাও ব্যর্থ হইয়া যায় ॥৪
রাক্ষণ তবে ধায় নিদাকণ চীৎকারে ॥
হানিলেন লক্ষণ করাল শায়ক তা'র ॥ ৫
করিল ছরিতগতি আপনারে সক্ষোপন ॥
কখনো প্রকট কভু লুকাইয়া আপনারে ॥ ৬
লক্ষণ হ'ন মহাকোশে ভরা কলেবর ॥
পাপীব সহিত ধেলা করা হ'ল বভ্কণ ॥ ৭
বীরমদে এক শর হানিলেন লক্ষণ ॥
মরণের কালে ছল কপট সকলি তাজে ॥ ৮

বেশি—রামান্ত্র কোথা ধক্ত ধক্ত ভব কোথায় শ্ৰীবাম মাভা বলি' উঠে এ বলি' ভাজিল প্ৰাণ। অক্লেক্সমান॥ ৭৬

(চ) — বিনা পরিশ্রম তা'রে হরুমান্ উঠাইল।
তাহার মরণ শুনি' সুর গদ্ধবিগণ।
কুস্ম বরষা করি' হৃন্দু জ করে রব।
বলে শ্বয় হে অনন্ত শ্বয় হে জগদাধার।
স্থিতি করি' দেব সিদ্ধ নিক্র নিশ্ব ধামে যায়।
তনয় নিধন কথা শুনিতেই দশানন।

লক্ষা-ভোবণ 'পরে রাধিয়া কিরে' আসিল ।
সকলে আসিল করি' বিমানেতে আবেচিণ ॥ ১
বিমল রামের যশ গাহিতে লাগিল সব॥
তে প্রভু তুমিই কর দেবগণে নিস্তার ॥ ২
ফিরেন লক্ষ্মণ ভবে কুপা নিধানের পায়।
ভোনহারা হ'য়ে হয় ধরণী 'পরে পতন ॥ ৩

রাবণের যুদ্ধ বাজা

কত কাঁদে ময়-স্থতা বৰ্ণনা নাছি হয়। শোকে নিমগন হয় নগর-নিবাদিগণ। করাঘাত বুকে বস্তু আর্তনাদ থেদময়।
দুখাননে নীচ বৃদ্ধ গালি দেয় সব জন। ও

কো—দশানন ভবে বলে নিজ মনে রমনীগণেরে দেখ বিচারিয়া বুঝাইল নানাভাবে। নশ্ব সব ভবে॥ ৭৭

(5)—জ্ঞান-উপদেশ সবে দেয় ভাল দশানন। নিজে নাচ বটে ডা'র বচন গুভ পাবন।
পারে উপদেশ দিতে অনেকে অভি নিপুণ। সে ভাবে করিতে কাজ কত জন ধরে গুণ। ১

রক্ষনী অতীত্ত হ'ল দিবসের আলো আসে। যোজাগণেরে ডাকি' ব'লে দিল দশানন। ডাহার পলা'য়ে য'ওয়া প্রথমেই প্রেয়কর। বাড়া'য়েছি এ বিরোধ নিজ ভূজে করি' ভর। এতেক কহিয়া বায়ু গামী রথ সাজাইল। চলিল সমরে বীর কলবান্ অতুলন। অশুভ শকুন বহু হ'ডেছিল সেই কালে। কণি ভালু চারি বাবে হানা দিতে পুন: আসে ॥
আরির সমুখে রণে যাহার টলিবে মন ॥ ২
সমরে বিমুখ হ'লে ফল নহে শুভকর ॥
আরাতি আসিলে দিব নিজে তা'রে উত্তর ॥ ৩
বাজিতে লাগিল রণ বাছ সব বত ছিল ॥
মহাবেগে ধায় যেন কাজলের প্রভেঞ্জন ॥ ৪
কিছু না গণিল এত মদ নিজ বাছবলে॥ ৫

| ছ—না গণে ভভ কি | অভভ শকুন | হাত হ'তে খদে আয়ুধচয়। |
|-----------------------|--------------|-----------------------------|
| বীর রধহ'ডে | পড়ে ধরণীতে | যুথ ছাড়ি' বাজি গজেরা ধায়॥ |
| শিবা গৃঞ্জ-শ্ব | ভাকে ভয়ম্বর | কুৰুর ডাকে বিকট রবে। |
| পেঁচা ভাকে হেন | যমদুত যেন | রবে ভর পায় পরাণে সবে ॥ |
| (पा-कोव-त्यात्री विवा | কাম-বশ মোহে | আৰ্জিড বিমুখ রাম। |
| স্থপনেও কি সে | সম্পদ আর | মনেতে ল'ভে বিরাম ॥ ৭৮ |

(5) — অদীম রাক্ষণ দেনা সমরে করে গমন।
আরোহী কভই বিধ কত রথ কত যান।
অগণিত মদমত্ত বারণ বেগেতে ধায়।
সমর-কুশলী বীর বহুবিধ মায়া কানে।
বিচিত্র বাহিনী অতি শোভা পায় অতুলন।
চলিতে লাগিস চনু নিক্ করিদল দোলে।
ধূলি-আলে আবৃত হ'য়ে গেল দিবাকর।
ভয়াবহ নির্ঘেষে বাজি'ছে নাগাড়া ঢোল।
তৃনী ভেরী নিনাদি'ছে অমুক্ষণ অগণন।
বীর্দল অবিরল করিতেছে ছভার।
দশানন কছে তবে শুন বীর সমুদয়।
আমি নিজে বিনাশিব নুণতি-মুত ছ'টারে।
এ বারতা বানরের অবংণ পশে যখন।

চতুরক্স অনীকিনী নাহি হয় বর্ণন ॥
বিবিধ বরণ কত পতাকা ধ্বক্সা নিশান ॥ ১
প্রার্ট্ কলদজালে পবন যেন পাঠায় ॥
নানা রং অন্ধর অমিত সাহস প্রাণে ॥ ২
বীর বসন্ত যেন সেনা করে বিরচন ॥
পারবার ক্ষ্ হয়-ধ্রাধরগণ হেলে ॥ ৩
মরং স্থাতি হল ধর্মী অতি কাতর ॥
প্রলয়ের ক্লাধ্র বৃষ্ধি বা তুলি'ছে রোল ॥ ৪
বার সুধ্প্রদ মারু রাগ হয় আলাপন ॥
শ্বতার আশ্ফালন কায়েতেছে যে যাহার ॥ ৫
মহিয়া দলিয়া ধ্বল কপি ভালু যত রয় ॥
চেন বলি' নিক্লে সেনা অত্যে চালিত করে ॥ ৬
হাঁকিয়া রামের ক্ষ্ম থেগে করে আক্রেমণ ॥ ৭

রাক্ষস-বাদরে যুদ্ধ

| ছ—ছুটিল বিশাল | ক্পিরা ক্রাশ | কাল সম ভালু ছুটি'ছে রণে। |
|---------------|--------------|--------------------------|
| বেন পক্ষযুত | উ'ড়ছে অধৃত | विविध वत्रण कृथत्रगरण ॥ |
| গিরি নথ হদ | মহাক্রমায়্ধ | মহাবদী আগে রাখে না ভর। |
| গাহে মত-করী- | রাবণের অস্থি | শর্জয় রাম কেশগ্নী-বর। |

ু বি ক্রিক্স নাদ একে রাম অস্থে করি' ছই দল রাবণে বাখানি' দশী বাছি' আপন। সমরে লাগে তখন॥ ৭৯

(b) — রথার চু দশানন রথহীন রঘুবীর।
প্রীতির অধিকভায় সংশয় প্রাণে আসে।
স্থান্দন নাহি প্রস্তু না কবচ পদত্রাণ।
অবধান কর সথা কহিলেন কুপাময়।
সেরথের ছই চক্র শুরভা ধীরভা আর।
পরহিত দম বল বিবেক তুরগচয়।
বিভূর ভজনা ভাহে সারধী জ্ঞান-আধার।
পরশু ভাহার দান বুজি শক্তি স্কুভীষণ।
অমল অচল মন ত্নীরের করে কাজ।
বাক্ষণ শুরু-পূজা অভেত্ত কবচ যত।
হেন ধর্মময় রথ সমরে থাকে যাহার।

হেরি' বিভীষণ-প্রাণ হইল অতি অধীর ॥
বিদ্দি' চরণবৃগে করেন প্রশেষ-ভাবে ॥ ১
কেমনে পা'বেন জয় অরি অতি বলবান্॥
সেরথ নহেক-এই যে রথে বিজয় হয় ॥ ২
পতাকা নিশান দৃঢ় সত্য আর সদাচার ॥
ক্ষমা কুপা ও সমতা-পাশ যোগে বাঁধা রয় ॥ ৩
ঢাল বিরাগ আর সস্থোষ তরবার ॥
জ্ঞেষ্ঠ অনুভব-জ্ঞান অতি দৃঢ় শরাসন ॥ ৪
নিজ্প-বশ মন শৌচ নিয়ম নানা নারাচ ॥
বিতীয় উপায় নাই জয়লাভে এর মত ॥ ৫
জীবনে কোধাও রিপু ভাহার থাকে না আর ॥৬

জো—হেন স্থান্দন দৃঢ় হয় যা'র

এ মহা-অজেয় সংসার-রিপু
প্রেক্ত্র বচন শুনি' বিভীষণ
এ ভাবে কুপায় ওছে দয়াময়
ও দিকে রাবণ ধিকারে হেথা
যুধে নিশাচর শ্বক বানর

শুন সখা মতিধীর।

ভিনিতে সে পারে বীর ॥ ৮০(ক)

হরষে চরণ ধরে।

উপদেশ দিলে মোরে ॥ ৮০ (খ)

অঞ্চল হয়ুমান্।

করি' প্রভু-শুণ গান ॥ ৮০(গ)

Gb — নানা সিদ্ধ মূনি ঋষি অমর চতুরানন।
আমিও তাঁ'দের সনে পুলকে উমা তখন।
হু'পক্ষের(ই) মহাবীর রণ-রসে মাতোরারা।
একে অক্স সনে যুঝে এ উহারে ধিকারে।
মারি'ছে কাটি'ছে কছু মারি'ছে ধরি' আছাড়।
উদর বিদার করে বাছ করে উৎপাটন।
রাক্ষস-বীরে ভালু প্রোখিত করে ধরায়।
অরি 'পরে ক্রোধযুত সমরে বানরগণ।

আকাশে বিমানে চড়ি' দেখেন দারুণ রণ ॥
রামের সমর-লীলা করিয়াছি দরশন ॥ ১
জয় লভে কপিদল রাম-বলে বলী যা'রা ॥
একেরে অপরে দলি' কেলে ধরণীর 'পরে ॥ ২
মুগু কাটিয়া পুম: ডা' দিয়া করে প্রহার ॥
ভূমিডে আছাড়ে বীরে চরণে করি' ধারণ ॥ ৩
ডাহার উপরে বালু প্রচুর ঢালিয়া দেয় ॥
মনে হয় ক্লুক কাল করিডেছে মহারণ ॥ ৪

ছ-কপিরা কুপিত , শমন বেমন
মধে নিশাচর- জনী-বীরবর
দংশে প্রহারে ডিরক্ষার-ভরে
সবে চাৎকারে ছল-বল করে

শোণিতের ধারা শরীরে করে।
বলী ঘন-সম গরক করে।
গদাঘাতে করে রেপুর প্রায়।
ছটের। যাতে বিনাশ পায়। ১



मति' शांण पूर्व চিৰে' ফেলে বুক অন্তে দোলায় গলেতে মালা। নানা ভছু ধরি' ষেন নর-ছরি भारत करतन विविध (धना। মার্কাট্ ধর্ এ বোর রবে। ভরা অত্বর আর চরাচর জয় রাম যিনি ममनित्र जुग करतन ज्या । २ कृरगद्ध व्यथनि **(ए)**—निष वाश्नीत বিচলন হেরি' मम बसू विभ करत्र। थति' त्रदथ थाम দশানন হাঁকি' কের' ফের' দন্ত ভরে ॥ ৮১

नक्तर्न-त्रायर्भन युक्त

(5)—मार्क्स कृतिक श्रुरत दृष्टिएक म्मानन । পাদপ ভূধর শিনা করেতে গ্রহণ ক'রে। বন্ধ-কঠোর তা'র দেহে হ'য়ে প্রভিহত। নিদায়েণ ফ্রোখ ডারে রগমন্ত রক্ষঃপতি। সীমাহীন ক্রোধভরে করিছে থাকে দলন। রকাকর' রকাকর' অঙ্গদ হনুমান্। বলে প্রভুরকাকর' রক্ষাকর' রবুবর। হেরিল রাবণ যায় পলাইয়া কপিগণ।

হয়ার সনে ধায় আগুসরি' কপিগণ॥ সকলে রাবণ 'পরে ফেলিডেছে একেবারে॥ ১ p्रिंक ह'रम क्लाउं याम रेमन-मिना यक ॥ নিশ্চল রহে রথে করিয়া স্থগিত-গতি ৷ ২ হেথা হোথা ভীরবেগে করি' কাপ আক্রমণ ॥ ৰলি' পলাইতে থাকে ভালু ৰূপি ভীত প্ৰাণ ॥৩ কাল সম বধ কৰে এই ধল নিশাচর ॥ मर्ग नेत्रांगरन खरव करत नेत्र व्यवस्थ ॥ ८

অহি সম উড়ে' লাগিছে গায়। ছ-করি' সন্ধান ছাড়ে ধর বাণ यत्री व्यथत রহে ভরি' শর কোথা বা বানর পলাবৈ হায় ॥ কপি ভালুদল অতীব বিকল কহে কাডরে। মহা কোলাহল বিপদ-ভারণ রক্ষ হরে ॥ করুণা-সাগর প্রাকু রঘুবর বিচলিত তুণ (प)-एति' निक परन কৃষি' শরাসন করে। নমি' লক্ষণ চলিলেন কোপভরে॥ ৮২ রামের চরণে

(b)-e कि त्र थल विश्व वानत छालूकगरा। রাবণ কহিল ওরে পুত্রখাতি কৃটমতি।

ভাখ এই কাল ভোর এবার আদিল স্থান। বিনাশ করিয়া ভোরে আজি জুড়াইব ছাভি ৷ ১

त्रावर्णत मृष्ट्री, त्रावर्णत यख-ध्वरम्

এতেক কহিয়া ছাড়ে শায়ক অভীব চণ্ড। কোটি কোটি প্রহরণ রাবণ করে ক্ষেপণ। আবার আপন বাবে করেন ডা'রে প্রহার। মারিলেন দশশিরে শত্শত ধর শর। **পুনরার শক্ত শর মারেন জনর 'পরে।** कान (न' शूनवाद नवरन छेर्छ वादन।

করিলেন লক্ষণ সে শায়ক শতথও # জিল জিল করি' কাটি করিলেন নিবারণ 🛭 ২ সার্থি নিহও ভাতে জ্ঞান চুর্মার। গিরির শিশরে বেন প্রবেশি ছৈ ফণধর। ৩ রাবণ হারা'য়ে জ্ঞান পড়িল ধরণী 'পরে 🛭 मक्ति टाहात करत विधि-स्वत्रा टाह्त्र ॥ ॥

300

এরামচরিত মানস

| ছ—লাগে ৰক্ষ'পর | শক্তি ভর্ত্বর | বিধাতা প্রদান করিলা যা'রে। |
|--------------------|-----------------|--------------------------------|
| পড়েন সন্মণ | উঠায় রাবণ | অতুল বলের মহিমা হারে। |
| ব্ৰহ্মাণ্ড-ভবন | রহে অফু'শণ | এক(ই) শিরে বাঁ'র রেণুব প্রায়। |
| তাঁহাৱে তুলিতে | সাধ মুঢ়-চিত্তে | ত্রিলোক-পতিরে চিনে না হায়॥ |
| দৌ—দেধিয়া মাক্ৰডি | ধার ভীম গতি | কঠোর কহি° বচন। |
| আসিডেই ভা'রে | মৃষ্টিকা মারে | দশানন সুজীবণ ॥ ৮৩ |

চৌ-কামু ভর করি' হমু পড়া হ'তে রক্ষাপায়। সম্বরণ করি' উঠে কোপেতে জনয় ছায় ॥ তবে মৃষ্টিকা এক রাবণে মারুতি মারে। মৃক্তিত নিশাচর পরে পে'ল হারা-ক্ষান। বীরভায় ধিক্মোর ধিক্মোরে কপি কয়। এত কহি' লক্ষণে রাম-পালে হয়ু জানে। রাম ক'ন জাদি-মাঝে বুঝ ভাই লক্ষ্ণ। বচন গুনিয়া উঠি' বসিলেন কুপাময়। পুন: লক্ষ্ণ করে ধরি' শর শরাসন।

ভূখর ঢলিয়া যেন অশনি-আখাতে পড়ে । ১ कशित विश्वन वरण खबन करद वांचान ॥ সুর-জ্রোচি এততেও ভোর দেহে প্রাণ রয় ॥ ২ **(रित्रि' विश्वय खिक मार्ग मभानन-गरन ॥** কালের ভক্ষক ভূমি দেবদল-রক্ষণ॥ ৩ শক্তি তথন যায় নভে ফিরে' পুনরায় । অরির সমূখে পরা করিলেন আগমন॥ ৪

| ছ—পুন: দ্বা করি' | রথ চূর্ণ করি' | করেন সার্থি মারি' আকুল। |
|------------------|---------------|----------------------------|
| অধিক বিকল | পড়ে ধরাভশ | রক্ষ:-বুকে বাজে শতেক শূল 🛭 |
| ' সৃত অস্তুত্বন | রথেতে স্থাপন | করিয়া রাবণে পুরীতে যায়। |
| রখুকুল-বীর | রামাত্র ধীর | কিরিয়া প্রভুর নমেন পায়। |
| দো—চোধা দশানন | শভিষা চেতন | आरम्बन करत यार्थ। |
| মূঢ় শঠ হঠে | রাম-সনে জোহ | क्तिया विकास भारत ॥ ७८ |

(b)-এদিকে বারতা সব লাভ করি' বিভীবণ। ছরায় করেন ভাগা প্রভূ পদে নিবেদন ॥ क'न प्रमानन करत अक यांश-व्यारशंबन। দ্বায় পাঠাও প্রান্থ মহাবীর কপিগণে। প্রভাতেই পাঠা'লেন প্রভু বীর সমুদায়। লছা-উপর চড়ে ডা'রা কৌতুক ভরে। যেমন ভারারে যাগ করিতে দেখিতে পায়। কতে ভা'রে লাক্ষহীন সমরে পলা'রে এলে। এড ব'ল' অঙ্গদ এক পদাঘাত করে।

পূর্ব যদি হয় ডবে ডাহার নাহি মরণ ৪ ১ বিশ্ব করুক যাগে আফুক রাবণ রণে 🛚 হয়ুমান্ অঞ্জ আদি সবে মিলি' ধায় ৷ ২ প্রবেশে নিডর হ'য়ে রাবণ-পুরী ভিতরে । সব বানরের মনে নিদারুণ ক্রোব ছায়। ৩ ব্রের সমান ধ্যান করিস্ এখানে ব'সে । वार्थ-छता मन मर्ठ कितियां समि छात्र ॥ 8

ছ-চাহन ना लिथे কেশ-কর্যণে

বানরেরা রুখি क्षी वाहित्त्र जात्म

পদাখাতে আর দংশে ভা'রে। **अकि मीना हरत्र त्याक्त करत ।**

| | 141410 | |
|------------------------|-------------------|------------------------|
| উঠে দশানন সেই অবসংয | শমন বেমন | ধরি' পদ কেলে রানরগণে। |
| ८गर जापगरम | यख्ड माण (रुरत्र' | রাবণ নিরাশ হইল মনে ৷ |
| | রাম-রাবণের যুদ | i |
| কো-বন্ধ-নাশ করি' | কুশলে সকল | ক্ষিরে রম্বুপত্তি-পাশ। |
| শঙি ক্রোধচরে | নিশাচর চলে | ভাজি জীবনের আগ ঃ ৮৫ |

(চ)—গমনের কালে হয় কু-শকুন ভয়য়র।
সে তখন কাল-প্রাসে কিছু মনে নাহি মানে।
আগণিত রক্ষা দেনা চলিল সমর তরে।
প্রেমুর সমুখ-দেশে আসে সবে সেইমত।
এদিকে দেবভাগণ মিনভি জানায় তাঁণরে।
এবে এর সনে রাম খেলা করা ঠিক নয়।
দেবের মিনভি শুনি' প্রাভু মুখে ক্ষীণ হাসি'।

উড়িয়া শকুনি বসে ভাহার মাধার 'পর

আদেশিল রণ-ডবা বাজাতে গভীর অনে ॥

বহু পদাভিক গজ রখ তুরঙ্গম 'পরে

অনলের মুখে ধায় যেমন পত্তগ যত ॥ ২
নিদারণ চুখ দিল এই খল দেবতারে ॥

দেবী আনকীর তুখ যেন দেব মনে রয় ॥ ৩
উঠিয়া শাণিত করি' লইলেন শররাশি ॥

রূপ-বর্ণলা

দৃঢ়ভাবে জটাজুট শিরোপরে বাঁধা রয়। নরন অরুণ-আভা তফুজলধর শ্রাম। কটিতটে পরিকর শরাধার আঁটা ভা'য়।

মাঝে মাঝে করে শোভা ভাগতে কুসুমচয় ॥ ৪ অধিল ভুবনবাসী-নয়নের অভিরাম ॥ করে শাক্ষ বহু সুভীষণ শোভা পায় ॥ ৫

| ছি—করেতে শাঙ্গ | বর-নিবঞ্চ | শায়ক-আধার কটিতে রয়। |
|---------------------------|----------------|-----------------------------|
| ञ्चम्य भीन | আহত উরসে | বিপ্ৰপদ আঁকা কি শোভামর ॥ |
| কহিছে তুলদী | যেমনি চর্ষি' | ফিরান শায়ক ধনুরে করে। |
| मिक्कत्रो चहि | কুৰ্ম নিধি মহী | ত্রিভূবন কাঁশে ত্রাপের ভরে। |
| বো —দে শোভা নির্থি | দেবভা হর্ষি' | বর্ষে কৃল অপার। |
| क्य क्य क्य | হে করুণাময় | শোভা বল গুণাধার ॥ ৮৬ |

চৌ—এই সময়ের মাখে রাবণের মহাবল।
সেরিয়া বানর বীর আগুরান হ'য়ে ধার।
চমকি'ছে ডরবারি ব'কিছে বহু কুপাণ।
গব্দ রথ ত্রগেরা চীৎকারে ভয়ন্তর।
বিপুল-আকার কপি-লালুল নভে ছার।
উঠিতেছে ধূলি-রাশি মনে হর বল-ধার।
ধরি' ধরি' ধরাধর ছ'ধল করে প্রহার।
রোবভরে রখুরীর করি' লর-বর্ষণ।

আসিয়া পড়িল তথ; অধীর সেনার দল ম প্রলয় কালের যেন জলদ-পটল যায় ॥ ১ দামিনী দমকে যেন দশদিকে অবিরাম ॥ মনে হয় গর্জন করিতেছে জলধর ॥ ২ ইস্রাধন্যর মত অন্বরে শোভা পায় ॥ বাণরূপী জল-কণা বর্ষিত অনিবার ॥ ৩ বন্ধ পড়ন যেন হইতেছে বারবার ॥ আহত করেন বৃত ছিল রক্ষ:-বীরগণ ॥ ৪ যেমন শায়ক' লাগে উঠে চীৎকার ক'রে। গিরি হ'ডে নিঝ'র-ধারা যেন বাহিরায়। খুঁরে খুঁরে পড়ে তা'রা যথা তথা ভূমি 'পরে ॥ সে ক্ষধির-ধারা হেরি' কাপুরুষ ভয় পায়॥ ৫

| ছকাপুরুষ-হিয়া | ত্রাসেতে ভরিদ্বা | অপুডা ক্রধির-ভটিনী বর। |
|---------------------------|------------------|---------------------------|
| ভট ছই দল | রণ ৰালুদল | চক্রে মহ লাগে পরাণে ভয় ঃ |
| জল জীব-রাজি | গন্ধ সেনা বান্ধি | বিবিধ বাছন গণনা-বা'র। |
| অহি যেন শর | শক্তি ভোমর | চর্ম কুর্ম ধরু লহর ডার। |
| বো —প'ড়েছে বীরেরা | ভটে ভক্ন যেন | মঞ্চা বহে ফেণাকারে। |
| ডা' হেরিয়া কাপে | ভীকর ক্রয় | বার-মন স্থাপ ভারে ॥ ৮৭ |

(চ)—মান করে তাহে ভ্ত পিশাচদল বৈতাল।
কাক চিল মুখে ক'রে হাত ল'য়ে উড়ে' যায়।
কেহ কহে ওরে মূঢ় এ সব প্রচ্র এত।
অর্দ্ধমৃত বীরদল তটে প'ড়ে চীৎকারে।
শক্নি ধরিয়া নাড়ী টানি'ছে তটের হ'তে।
কত বীর ভেলে' যায় পাখী বলে ভছপরে।
বোগিনীয়া সঞ্চয়ে ভরি' ভরি' ধর্পর।
চামুগুারা গান গায় বীরের ল'য়ে কপাল।
শক্নিয়া শব কাটে কট্কট্রব ক'রে।
মুগুহীন কোটি দেহ ভ্রমিতেছে চারিধারে।

শ্বিত কেশধারী প্রমধ অতি করাল ।

একের নিকট হ'তে কাড়িয়া অপরে খায় । ১

দারিন্তা ডোমার নহে এডডেও অপগত ।

অর্ধজ্ঞলে অন্তর্জনী-ভরে যেন বহে প'ড়ে ॥ ২

ছিপ ল'য়ে মাছ যেন ধরে সমাহিত চিতে ।

নদীতে ভরণী-যোগে সবে যেন খেলা করে ॥ ৩
প্রেডিনী পিশাচ-বধু নাচে অন্তর 'পর ॥

মহানন্দে কভ ভাবে বাজাইয়া করভাল । ৪

খায় ভাকে কালা-রবে তৃত্তি এলে অক্তে মারে ॥

ধরার পড়িয়া মুগু জয় জয় রব করে ॥ ৫

| ছ—কাটা মৃত কয় | क्य क्य क्य | শিরহীন ধায় বিরাট রুও। |
|-------------------|----------------|-----------------------------|
| ধর্গ র-ডরে | পাখী ল'ড়ে মরে | একে অক্স বীরে করি'ছে ছম্ব ॥ |
| কপি নিশাচরে | मर्फिङ करत्र | রাম-বলে বলী সকলে ভা'রা। |
| ছে'য়ে রণাঙ্গন | 😙 হৈয় বীরগণ | রাম-শরে হ'রে জীবন-হারা। |
| দো—ভাবিল রাবণ | হুৰুৱে আপন | রাক্ষস হ'ল নাশ। |
| তথু আমি বাকী | অগণিত কপি | করিব মায়া-প্রকাশ। ৮৮ |

(b) — অমবেরা হেরিলেন প্রাভু রাম রখ-হীন।
স্থরপতি নিজ রথ পাঠা'ন প্রভুর পাশে।
মহা জ্যোভির্মময় রথ দিব্য ও অমূপম।
চঞ্চল চারি হয় মন-বিমোহন অভি।
বানরেরা করি' রামে রথাক্কচ় দরশন।
বানরবাণের হানা সভিতে না পারা বাছ।

সম্দিত মহাক্ষোভে তাঁকের জ্বার দীন ।
ছরিতে পুলকে রখ মাডলি লইরা আলে । ১
হর্ষি কোশলপতি করিলেন আরোহণ ।
জ্বার অমর তাঁরা মন-সম ক্রেডগতি । ২
ছুটিল প্রবল বেগে পে'য়ে বল বিলক্ষণ ।
বিহোরে যায়া ভবে দশানন রক্ষরায় । ৩

স্থাবণ-স্নচিত মায়া প্রাভু ⁹পরে না লাগিল। স্থাক্ষস-সেনা মারে নেহারে বানরগণ। ব পি সহ সন্ধাণের প্রাকৃত্ত মনে হ'ল। র'য়েছেন বহু রাম সহ আতা সন্ধাণ ॥ ৪

ত্বি কাকা-মভ রামে দরশন
পটে কাঁকা-মভ হেরে অবিরভ
চকিত বাহিনী হেরি' রঘুমণি
হরি মায়া হ'রে পলক-ভিতরে

করি' ভালু কপি ত্রাসিড-প্রাণে।
দাঁড়া'রে রামের অন্তল্প সনে।
হাসি' ধমু-শর ধারণ করি'।
কপি-প্রাণ দেন পুলকে ভরি'।

বো—ডখন শ্রীরাম শ্রান্ত ডোমা সবে

সব-পানে চাহি' স্বন্ধ-রণ এবে ক'ন বাণী গণ্ডীর। দরশন কর বীর॥ ৮৯

তৌ—এ বলিয়া বিপ্রাপদ-পদ্ধক্তে নমি' লির।
তা' হেরি' লক্তেশ-প্রোণে নিদারুণ ক্রোধ ছা'য়।
কহে রে তাপস তুই জিনেছিস্ রণে যা'রে।
রাবণ আমার নাম জ্ঞাত-যুগ জগময়।
বিরাধ দূষণ পরে তুই ব'ধেছিস্ রণে।
রাক্ষ্য বীরগণে রণে করেছিস্ হত।
সে সবের(ই) প্রতিশোধ করিব এবে গ্রাহণ।
আজিকে কালের কোলে ক'রে দিব সমর্পণ।
তার হুর্বচন শুনি' কাল-বশ করি' জ্ঞান।
যা' কহিলে সে প্রভুডা প্রভুড সব ডোমার।

চালা'ন আপন রথ রক্ষ: পানে রছবীর ॥
ভজ্জিয়া গাজ্জয়া সম্মুধ পানে ধায় ॥ ১
ভাহার সমান কড়ু মনে না ভাবিস্ মোরে ॥
লোকপালাবধি যা'র কারাগারে প'ড়ে রয় ॥ ২
ব্যাধ সম সে বেচারী বালিরে বধিলি প্রাণে ॥
কুন্তুকরণ মেঘনাদ এই রণে গড় ॥ ৩
রণ হ'ডে যদি রাজা না করিস্ পলায়ন ॥
কঠিন রাবণ-করে এখন তব পতন ॥ ৪
হাসিয়া বচন ক'ন তখন কুপানিদান ॥
বুধা গর্বব ছাড়ি দাও প্রিচয় বীর্ভার ॥ ৫

| ছ—বুণা ভাষে নিজ | স্থুয়শ নেশ'না | নীতি শুন এই আমারে ক্ষম'। |
|------------------------|-----------------|----------------------------|
| সংসার মাঝে | ত্ৰিবিধ মানব | গোলাপ আদ্ৰ পন্স সম 🛊 🏽 |
| একে সুল ছ'য়ে | ফল ফুল আর | তৃতীয়েতে শুধু ফলই কলে। |
| একে বলে ছ'য়ে | বলে করে আর | ভৃতীয়েতে করে মুখে না বলে॥ |
| বো —রামের বচন | শুনি' হাসি' কৰে | আমারে শিশাস্ জ্ঞান। |
| তখন বিরোধে | লাগেনি ক' ভর | এবে প্রিয় লাগে প্রাণ। ১০ |

টৌ-কহি' এই কটুবাণী ক্রোধযুত দশানন। বিবিধ আকার কত নিশিত শারক ধার। অগ্নিবাণ সন্ধান করিলেন রঘুবীর। শক্তি হানিল তবে শক্তিত দশানন। কুলিশ সমান শর স্থার করে বরষণ ॥
ধরণী গগন দিক্ বিদিক্ সকলি ছা'র ॥ ১
নিমেষ ডিডরে দতে যড নিশাচর-ডীর ॥
বাণের স্মাঘাতে ফিরে পাঠা লেন নারায়ণ ॥২

চক্র ত্রিশূল কোটি করে পুন: সন্ধান।
খলের কু-অভিপ্রায় বেমন বিফল হয়।
ডখন সার্থি 'পরে প্রহারিল শত বাণ।
করুণা করিয়া রাম তুলিলেন মাতলিরে।

তিলেক প্রয়াস বিনা মিবারেন সব রাম ॥
তেমনি বিকল হয় রাবণ-আয়্ধ্চয়॥ ৩
মাতলি ধরায় পড়ে মুখে বলি' জয় রাম ॥
তথন প্রভুৱ হিয়া দারুণ ফোধেতে ভরে॥ ৪

| ছ – অরাতি-শমন | জানকী-রমণ | তৃণ হ'তে বাণ দইলা বরা। |
|--------------------------|---------------|----------------------------|
| कामर छत्र श्वनि | রক্ষেরা শুনি' | হয় সবে ঘোর ক্রাসেতে ভরা ৪ |
| মন্দোদরী-হৃদি | কাঁপে নিরবধি | ভূধর কুর্ম কাঁপে সাগর। |
| দাঁতে ধর। ধরি' | ডাকে দিক্-করী | কৌতুক হৈরি' হাদে অমর । |
| (मो—ध्ध तन व्यवधि | টানিয়া 🗐রাম | ছাড়েন বাণ করাল। |
| া রাম-শরদল | ছুটিছে সকল | . লহরিত যেন ব্যাল॥ ৯১ |

চৌ—পক্ষযুত অহি মত শায়ক ছুটিয়া যায়।
চূৰ্ণ করিয়া রথ পতাকারে ছিল্ল করে।
লক্ষিত হ'য়ে অহারথে করে আরোহণ।
সকলি বিফল হয় ডা'র উন্ধান যত।
তথন রাবণ দশ শূল করে সন্ধান।
তূরগে তুলিয়া তবে সকোপে রঘুনায়ক।
রক্ষাশের-শতদল-কাননচারী করাল।
আতি দশ শিরে লাগি' দশ দশ ধর বাণ।
বহি'ছে ক্ষিন-ধারা ছুটে মহা বলধর।
রঘুবীর-চাপ হ'তে আগিয়া ত্রিংশ শর।
কাটিতেই পুনরায় নুহন হ'ল আবার।
বহুবার কাটিলেন শির আর ভুদ্ধর।
জীরাম কোশলপতি কৌতুকা অভিশয়।
চেকে' রয় অহার মন্তক আর বাছ।

সূত্ত আর বাজিচয় প্রথমেই নাশ পায়॥
ভীষণ গরজে রক্ষ: হুদয়ে তরাস-ভরে॥ >
সন্ধান করে পরে নানাবিধ প্রেছরণ॥
পর-জোহরত নর-মন হয় যেই মঙ ॥ ২
ধরায় পাতিত করে চারি হয় বলবান॥
কর্ষণ করি' ধয়ু হানেন ধর শায়ক॥ ৩
ছুটিল ভ্রমর-রূপী জীরামের শর-জাল॥
ভেদ করি' যায় বহে ক্ষিরের ধর বাণ॥ ৪
পুনরায় ধয়ু হ'তে হানিলেন প্রভু শর॥
বাহর সহিত শির পাড়ে ধরণীর 'পর॥ ৫
জীরাম সে ভুজ শির কাটিলেন আর নার॥
যেমনি কাটেন পুন: ঝটিতি নৃতন হয়॥
যবেরার হাটি'ছেন শির ভুজ সমুদয়॥
মনে হয় জগণত যেন কেডু আর রাছ॥ ৭

| ছ—শোণিত করণ | ক্রিয়া ভ্রমিছে | যেন নভে বহু রাছ ও কেতৃ। |
|--------------------------|-----------------|---------------------------|
| না পারে ভূমিতে | আসিয়া পড়িডে | ভীম রাম-শর লাগার হেতু। |
| এক(ই) শরে সব | শির ভেদ ক'রে | নভে উড়ে শোভা করে এমন। |
| प्रिनकत्र कर्थ *● | রাভ্রে ময়ুখেণ | যথাতথা গাঁথে সূতে যেমনঞ 🛊 |

রেবাবিত হইবা। † সূর্বা-কিবণ। ‡ বাবের এক এক বাণে রাবণের উল্পত হৃতি কৃত হাবা তেল কবিছা।
 আকাশে উড়াকে এবন শেভো হইবাছে, বেন বাগত হইবা সূর্ব্য-কিবণ ববাতবা বাহুগণকে বিবিছা বাধিছাছে।

(पी-स्यमनि खीराम বিষয় সেবিলে

কাটিছেন শির যথা নিড কাম

(क्यनि शका'रम् फेर्ट । নৃতন নৃতন জুটে। ১২

টে -কাটা শির গলাই'ছে এ হেরিয়া দশাদন। অতি মহা ক্রোধ্যুত ভূলিয়া নিজ মরণ ॥ মহা অভিমান সনে করে মৃত গরঞ্ব। নিশারণ কোপযুক্ত হুশানন-শর-ছায়। দণ্ডেক ভরে রথ হয় না আছি-গোচর। করিয়া উঠিল যবে হাহাকার স্তর্বল। নিবারণ করি' শর কাটেন অরির শির। কর্ত্তিত শির যত আকাশে উত্তিয়া যায়। লক্ষণ সুগ্রীব কোপায় বানররাজ।

ভীম বেগে খে'রে যার টানি' দল শরাসন ! ১ রামের ত্রিশিব রথ নিমেবে চাকিয়া বায় : কুহেলি মাঝারে যেন পুকাইল দিনকর ॥ ২ লইলেন ক্রোধে প্রাড় কাম্মুক করডল # ঢাকেন ধরণী নভে সেই সিরে রণধীর 🛭 🕹 बद्रक्य त्रव कति' व्यार्थ खग्न खेलकात्र । কোথায় বা রখুবীর কোশলের মহারাজ ॥ ৪

ছ-কোণা রঘুনীর হাসি' ধতু টানি' শিরের মালিকা শোণিতের সরে

इट्डे क्लि खरा नना'रा इटन। বলি' সব শির রম্বুলমণি त्म भिरतरत भरत वि^{*}रधन बरण ॥ ল'য়ে অগণিত মিলে ভথার। করেতে কালিকা যেন স্থান ক'রে সংগ্রাম-বটে পুঞ্জিতে যায় ।

বিভাষণের প্রতি রাবণের শক্তি-ক্ষেপ

মো—আবার ভীবণ ধায় হেন বেগে

कार्ण मणानन বিভ বণ-আগে

मिक शास्त्र क्षात्म । যেন বা ব্যের দণ্ড ॥ ৯৩

টে —হেরি' বিভাষণ পানে আসিছে শক্তি ছোর। ভাবি' প্রণতের তথ দূর করা পণ মোর ॥ ভারবেগে বিভাষণে করি' নিজ পশ্চাতে। সেই শেল রগুবর লইলেন বুক পেতে। ১ छा'त करण खान किছू इहेग अश्रामन। व्यञ्ज अ मौना (इति' विव्निष्ठ (नवश्र) ॥

রাবণ-বিভীষণের যুদ্ধ

প্রভুর লাগিল ক্লেশ ইহা দরশন করি'। ক্রেন রে হভ্ডাগা রে শঠ রে মন্দম্ভি। মছাদেবে সমাদরে ক রলি লিরে থারণ। ভাগার কারণে ধল এখনো আছিস বেঁ:5'। त्राध्यत्र विष्य श्राप मण्यम माथ करत् ।

ৰে'য়ে যা'ন বিভীষণ জেলাখভরে গলা ধরি' # ২ স্থর নর মুনি নাগে করিলি বিরোধ অভি॥ একের বদলে কোটি পে'য়েছিস সে কারণ ॥ ৩ এইবার কাল ডোর মাথার উপরে নাচে ॥ এ বলিয়া ভীম গদা মারিলেন বন্দোপরে 🛙 ৪

₩ -- ব্ৰের উপরে দশ মুখ হ'তে মল্ল-জাগুৰে वनी श्राम-वरन

গদার প্রহারে ক্ষরিছে ক্রথির नार्भ हुरेष कर्ब বিভীবণ দলে

ধরণী' পরে পড়িল পুটে'। मञ्जि छैठि व्यक्तास्थर इति । মহাবীর একে অপরে মারে। कुगार्नि शक्त ना श्रंटम का²त्त्र ॥ (मा-जावरणव मिरक সেও যুখে আজ কৰনো চাহিতে শমন-সমান

পারিত কি বিভীষণ। রামের প্রভাব ছেন ॥ ৯৪

त्रांवन-स्कूमारम्ब युक्त ; त्रांवरनंत्र मात्रा-एष्टि

চৌ-বিভীবণে রণে অতি আন্ত করি' দরশন। ছুটিল পবন-স্থত ভূধর করি' ধারণ। তুরগ সার্থি রথ নিমেষে করে নিপাত। बारण काष्ट्रारय तथ एक कारण चन चन। তথন রাবণ মারে হনুমানে গালি দিয়া। রাবণ ধরিতে পুল্ছ হতুর সহিত উড়ে। আকাশ-মাঝারে বীর ছই সম-বলবান্। আকাশে সে কি বাহার করে বহু ছল বল। বৃদ্ধি বলেতে রক্ষে পেরে'ও হারা'তে নারে। তথন করিল হমু স্মরণ জীরস্থবীরে ॥ ৪

দশানন-বন্ধো-মাঝে করে ভীম পদাঘাত ৷ ১ জনগণ-ত্রাতা যথা তথা যা'ন বিভীষণ। যায় সে গগন-পথে লাঙ্গুল প্রসারিয়া । ২ আবার সে মহাবলী রাবণ-উপরে পড়ে। প্রহারে অপরে একে ক্রোধে হ'য়ে কম্পমান ॥৩ স্থ্যেকর সনে বেন যুখে গিরি কচ্ছল।

ছ-শ্বরি' রবুবীর হতু রণ-ধীর थिकात पित्रा तरकः भारतः। পুন: উঠি' লড়ে ধরা 'পরে পড়ে **जग्रज**ग्र त्रव (मवख) करत्र ॥ হমুর বিপদ হেরি' কপি বত ভালু ক্রোধাতুর হইয়া ধায়। অরি-বীরগণে মথি'বলে করেরেপুর প্রায় । मख मनानटन **লো**—তখন রামের ধিকার শুনি' ছুটে কপিদল চণ্ড। হেরি' মায়াবল অরিরে প্রবল প্রকাশ করে পাষ্ও॥ ৯৫

চৌ—মুহুর্ত্তের ভরে হ'ল নিশাচর অন্তর্হিত। যেখানে বানর ভালু-অনীকিনী যত রয়। দরশন করে কপি অগণিত দশানন। পলায়ন করে কপি বারিলে না ধরে ধীর। দশদিকে ছুটিভেছে কোটি কোটি দশানন। প্লা'ডে প্লা'ডে বলে ত্রস্ত দেবতা সবে। এক রাবণেই জয় ক'রেছিল দেবগণে। ছিলেন তথায় হর বিধাতা ও জ্ঞানী মূনি।

পরেই অনেক ব্লপ করে থল প্রকটিত 🛭 সেখানেই রহে ডত দশানন ছুরাশয় 🛭 🗅 যথা-তথা পলাইতে থাকে কপি ভালুগণ ॥ বলে রাধ' রাধ' প্রাস্থ লক্ষণ রঘুবীর ॥ ২ অতি ভয়াবহ তমু করে ঘোর গরজন॥ বিজয় লাভের আশা বর্জন কর এবে ॥ ৩ এখন ভ অগণিত রহ এবে গিরি-কোণে # বাঁহারা বিদিত কিছু রামের গুণ-কাহিনী॥ ৪

| ছ-ভরহীন তা'রা | জানেন বাঁহারা |
|-------------------|---------------|
| ইহারি কারণে | বলে সেনাগণে |
| মহা বলবান্ | নল হতুমান্ ` |
| ধনা উদগত | অঙ্কুর মত |
| (प)(रुवि' खुब्रमन | ৰানর বিকল |
| শালের এক | শায়কের যায় |

ভালু বানরেরা প্রকৃত গণে। কুপামর রাখ' ত্রাসিড জনে 🛭 व्यक्षम नीम वीरत्रत्रा भिरम'। कां मित्रा प्रभानदनदत्र परण **।** শ্রীমূপ হাসিতে ভরে। भक्न जावन भट्ड । ३७

८5ी—कहिर्देशन मृत প্রভু ক্ষণমাঝে সব মায়া। ভপন উদয়ে যথা দূর হয় ভম-ছায়া। একই রাবণ হেরি' অমর পুলকারুল। বাছ উর্বোলন করি' বানরে প্রভু ফির'ান। লভিমা প্রভুর বল কপি ভালু এবে ধার। স্বিতি-রম্ভ দেবগণে হেরি' ভাবে দশানন। হাঁকি' কয় মোর বধা সবাই ভ মূঢ় ওরে। হাহাকার রব করি' অমর পলা'য়ে যায়। (मरवरत वाकुम दहति' मोड़ाग्र अन्नम।

कित्रिया व्यक्त 'भारत दत्राय व्यक्त क्ला। > ত্তখন অপরে একে করিতে গাকে আহ্বান। লাক দিয়া রণভূমে যোগ দেয় পুনরায়॥ ২ ইহারা ভাবিল মনে একাকী আমি এখন। এড কহি' মহাকোপে ধেয়ে' যায় নভোপরে ॥৩ রক্ষ: কহে মোর আগে কোথা থল বা'ৰি হায় # ভূমিতে রাবণে ফেলে লক্ষে আঘাতি' পদ॥ ৪

| ছ—ধরাশায়ী করি' | চরণে প্রহারি' |
|-----------------|---------------|
| উঠিয়া কঠোর | গৰ্জন ঘোর |

অঙ্গদ গেল প্রভুর পায়। দশানন করে ত্রাসি' ধরায় ॥

বোর বৃষ্ণ; রাবণের বৃচ্ছণ

| করি' ভীম দাপ | ভরি' দল চাপ# | व्यक्तं भरतत वत्रवा करत । |
|----------------|----------------|---------------------------|
| हय वीवकून | আহত ব্যাকুণ | নিজ বল হেরি' হরষে ভরে। |
| দো—প্রিরাম তথন | রাবণের শির | বাহুচয় শর চাপ। |
| কাটেন বিপুল | বাড়ে পুন: যেন | তীর্থেতে কৃত পাপ ॥ ৯৭ |

চৌ--অরাতির শির ভুক্ক আবার বাড়িতে হেরি'। ভালু বানরের হিয়া রোখেতে উঠিল ভরি'। কাটিলেও বাহু শির এ পাণী না মরে হায়। অঙ্গদ বালিমুক্ত স্থগ্রীব হনুমান। বিটপী ভূধর ল'য়ে রাবণে করে প্রহার। কল্পেক বানর তা'রে নধরে করে বিদার। ডা'র পর নল নীল উঠিয়া মাধার 'পরে। ক্রধির ক্ষরিভে হেরি' প্রদরে বিষাদ অভি। ধরিতে নাহিক পারে ক্ষিরে কপি কর 'পরে। व्यवस्थिय थरत छ्'रत्र माक विद्रा द्वार्थछरत । व्यावात महत्राह्य कहत गत्र प्रभ भेतामन । হনুমান আদি যভ বানরে মূর্টিছত করি'। দর্শন করি' যত কপি বীরে হডজান। শক্ষের বত ভালু ভা'রা ভক্ল উঠাইরা। কুপিত ইহাতে অভি বলবান্ দশানন।

ক্রোধন্তরে ভালু কপি-বীরগণ দৌড়ায়॥ ১ महावीत नम नीम विविधापि वनवान्॥ সেই গিরি তরু ল'য়ে কপিরে মারে আবার ॥ ২ কেহ বা পলা'য়ে যায় চরণ করি' প্রহার ॥ বিদারিতে নখাঘাত ললাট-উপরে করে॥ ৩ ধরিবার ভরে কর প্রসারে ভা'দের প্রভি 🛭 ক্ষল-কাননে যেন ছুইটি ভ্রমর চরে। ৪ আছাড় মারার কালে ধায় নিপীড়িয়া করে॥ করিল শরের ঘায় আহত বানরগণ । e হরবিত-প্রাণ হয় প্রদোষ আগত হেরি'॥ ধেয়ে যায় মহাবেগে রণধীর জান্থবান 🛭 🕭 মারিডে রাকণে ফুরু করে ধিকার দিয়া 🛭 আছাড়ি' চরণ ধরি' মারে নানা বীরগণ 🛚 ৭

হেরি' আপনার অনী বিনাশিত ঋকনাথ। ক্রোধে রাবণের বুকে করে ভীম পদাঘাত ॥ ৮

| ছ-বাঞে হৃদয়েতে | ভীম পদাখাত | রথ হ'তে পড়ে বিকল-প্রায়। |
|---------------------|---------------|-------------------------------------|
| श्रुत विश्व करत | বিশ ঋক্ষ বীরে | বেন পদ্মে অলি বদে নিশায়। |
| মূৰ্জিভ হেরি' | পদাঘাত করি' | জাত্ব যায় প্রভূ-পাশে আবার। |
| নিশা আদে জানি' | সার্থি অমনি | র থে তুলি' সেবা ক রে ভাহার ম |
| (দে!—জ্ঞান লাভ করি' | ভালুক পি যত | আদিল প্রভূর পাশ। |
| রাবণে খিরিয়া | রহে রক্ষ:গণ | স্তদরে অভি ভরাস। ৯৮ |

क्रिक्टा-मोडा मरबार

(5)—দেই রাতে জানকী m নিকটে করি' গমন। ত্রিঞ্চা সকল কথা করে তাঁকে বরণন ॥ অবংতির শির বাস্ত গজায় প্রবণ করি'। মলিন কমল-মুখ অতীব ভাবনা মনে। ব্যামৰ লাহাক মাথা কাটিয়াও নাচি মরে। আমারি কুভাগা যেন ভাগারে পুন: বাঁচায়। কপ্ট কনক-মুগ স্ঞান কারল যেই। ছেভাবে তু-সর তুখ সে আমারে সহাইল। 🗃 রাম-'বরগ-বিষ-শায়ক তানি' আমায়। এমন দৰেও যেবা হাথে প্রাণ অভাগীর। বারহার তেন করি' করুণানিদানে মনে। ব্রিকটা তখন বলে শুন রাজ-মুকুমারি। क कारा क्ष का ते करम नी शासन वान।

সীভার ক্রাম বাস সীমাহীন উ:ঠ ভরি'॥ ১ জনক-তৃতিতা কথা কছেন ত্রিজটা সনে॥ कि इ'र्य भा छात्रा द'रल त'रश्रह किन नीतर्य। किमरन मतिरय खब-छ्थनाछ। व्यार्ग छरव ॥ २ বিপরীত লীলা সব এ যে মা বিধাতা করে॥ হরি-পাদপদ্ম হ'তে দুরে যা' রাখিল হায়॥ ৩ এথনো বিরূপ দেখি মোর প্রতি বিধি সেই॥ লক্ষণ-প্রতি মোরে কু-বচন কলাইন ॥ ৪ বারবার লক্ষ্য করি' আঘাতিল ডা'র ঘায় ॥ সেই বিধাতাই তা'রে বাঁচায় বৃষিত্ব স্থির । ৫ कानकी विलाभ वह करतन (शामत मत्न ॥ জনে লাগিলেই শর মরিবে অমর-অরি ॥ ৬ त्म कृषि भाषादा य भा कानकी विवासभान ॥ १

| ছ এর ছিয়া-মাধো | জানকী বিরা জে | জানকীর হৃদে জামার বাস। |
|-------------------------|--------------------------|-------------------------|
| উদরে আমার | ভূবন অপার | শর-খায় চ'বে সবার নাশ 🖁 |
| হর-,খদ ভা'য় | এ কেন কথায় | कति' मरभन किक्ठी क्या। |
| এভ'বে এখন | চইবে মরণ | বরাননে শুন তাজহ ভয়ঃ |
| (দ্বাবারবণর শি র | কাটায় বিকল | হ'লে যা'বে ভব-ধ্যান। |
| ভখন রাবণে | জদয়ে আম্বাড | করিবেন ভগবান্। ৯৯ |

हो- এ বংশ করিয়া তাঁকৈ নানাভাবে বুঝাইল। ত্রিকটা তথন নিজ আলয়ে চলিয়া গেল। উত্তল বিয়ত্ত-ভারে অভীব কাতর হন। ১ कारक कछाव श्रीषा इमाय कवि गारत।

রক্সনীতে শশধরে নিন্দেন কড মত। রামের বিরহ-চুৰে জ্ঞানক-স্থতা কাডের। অভীব বিরহ-দাহে দঃছত যবে ফ্রদয়। শুভদ শকুন বুবি' মনেতে ধরেন ধীর। ক'ন যুগ-সম রাভি নাতি হয় অপগত। বিলাপ আপন মংন করি'ছেন নির্ভর ॥ ২ বাম আঁথি আর বাভ স্পাদ্তে সুকু হয়॥ বুয়োন পা'বেন পুনঃ কুপাল সে «ঘুবার॥ ৩

রাবণ-বধ

এ দিকে আধেক-রাডে রাবণ লভিল জ্ঞান।
কহিল সমর-ভূমি ত্যাগ করাইলি মোরে।
সারথি চরণে ধরি অনেক ভাবে বৃঝায়।
ভূমিয়া সমর-ভূমে রাবণের জ্বাসমন।
যথাতথা হ'তে ল'য়ে উপাড়িয়া পর্বাহ।

ছ— চুটে মর্কট ঋক্ষ বিকট অতি কোপভরে ভূধর প্রচারে বিচলিত করি' অনীকিনী অরি চারি দিক্ হ'তে চপেট-আবাতে স্ত-প্রতি হানে র চ্বচ নর খর বাণ ॥
মন্দম'তে রে অধম শত বিক্থাক্ তোরে ॥ ৪
প্রভাতেই রথে উঠে' হুটে রণে পুনরায় ॥
প'তে গেল কপি-ম'ঝে অ'ডশয় বিচলন ॥ ৫
কট্কট্রতে ক্রোধে ধায় কপিবীর যতু॥ ৬

লইয়া করাল ধরণীধরক।
পলাইয়া চলে রঞ্জনীচরণ ॥
বলী কপি লয় রাবণে ঘিরে'।
নধে দেহ ভি°ড়ে' কাতর করে॥

ডো—হেরি' কপিদল হইযা গোপন

অভীব প্রবল নিমেষ মাঝারে রাবণ করি' বিচার।

করিল মায়া প্রচার ॥ ১০০

ছ-বেমনি করিল মায়া-প্রকাশ।
বেতাল যতেক ভূত পিশাচ।
বোগিনারা অদি ধরিয়া করে।
করিয়া সছ-শোণিত পান।
ধর মার রব সখনে করে।
ব্যাদিত বদনে গ্রাসিতে ধায়।
যে দিকেই কপি পলা'য়ে চলে।
অতীব বিকল বানর ভালু।
যথাতথা ক'প বিকল করি'।
লক্ষণ কপিপতি সংমত।
বলিয়া হা রাম হা রজুনাখ।
এ ভাবে বিবল করিয়া সবে।
বহু হলুমান্ করে স্থানন।
সবে খিরে পিয়া রামেতে তা'য়া।

ভয়াল জীবের হ'ল বিকাশ ॥
ধরি' ধ'র' করে ধমু নাবাচ এ১
মানব-কপাল অপরে ধ'রে ॥
নাচে আর করে কডই পান ॥ ২
দিক্চয় সেই আরাবে ভরে ॥
তেরিয়া বানর ভয়ে পলায় ॥ ৩
সে দিকেই দে/খ আগুন জলে য়
তথন ভা 'পরে বর্ষে হালুয় ৭
উঠে দশানন গরছ করি' ॥
সকল বীরেরা হ'ল অচেড ॥ ৫
কপি বীরগণ নিপীতে হাত ॥
অপর ছলনা ক'রল ভবে ॥ ৬
ধায় যা'রা শিলা করি গ্রহণ ॥
চারিদিকে কহি' সেনার কালা ॥ ৭

[•] नक्षाः । वाक्याः

মার্ধর্ যেন নাহি পলায়। দশদিকে করে হতু বিরাজ। লালুল তুলি' কট্কটার ॥ তাহাদের মাধে কোললরাজ ॥ ৮

| गणागटक कटम रहा। | प्राचा शरा | दनम नाद्व दकानानामाच्य ॥ ज |
|------------------|-----------------|-----------------------------|
| ছ—ফুন্দর খ্যাম | তমু অভিরাম | শোভি'ছেন বস্ত হতুর মাঝে। |
| তুক তমালে | খেরি' বেড়াবালে | ইন্তৰ্যসূবত যেন বারাজে। |
| হেরিয়া প্রাভূরে | वर्ष-८४म ख्टा | জয়জয় রব দেবত। গা'য়। |
| ক্রোধে রখুবীর | হানি' এক(ই) ভীর | ছরিলা নিষেবে সেই মারায়। ১ |
| মায়া অপগত | কপি হয়ৰিড | ভক্ন গিরি বহি' সকলে কিরে। |
| বছ শর হানি' | কাটেন রুমণি | পুনঃ রাবণের বাত ও শিরে। |
| শ্রীরাম-রাবণ- | সমর-কথন | ब्ह कड़ बति विज्ञ शाहा। |
| . শত অহিপতি | বেদ কি ভারতী | ভবুডার পার কভুনা পায়। |
| দো—দে গুণের কিছু | করে বর্ণন | ব্দড় এ তুলসীদাস। |
| মক্ষিকা যেন | নিজ-বল মত | উড়িয়া কিরে আকাশ। ১০১(ব) |
| কাটিলেন শিরে | ভূজ বছবার | রাবণ তবু না মরে। |
| খেলি'ছেন প্ৰভু | ব্যাকুল সকলে | ঠা'র ক্লেশ মনে ক'রে॥ ১০১(খ) |

C5 -প্রতি লাভ-শেষে যথা লোভ আর(e) বেড়ে যায়। কাটিলেই দেইমত বাড়ে শির পুনরায়।

মরে না অরাতি শুম হইল নিরভিশয়।
কালের(ও) মরণ হয় উমা ইচ্ছায় যাঁ'র।
বিভীষণ ক'ন শুন হে প্রাস্তু অন্তর্যামি।
অমিয়-ভাণ্ডার রহে নাজিদেশে রাবণের।
বিভীষণ-বাণী এই প্রবণ করি' কুপাল।
তথন অশুভ নানা হ'তে থাকে চারিধারে।
লগত-অশুভ ঘোষি' পক্ষী করে আরাব।
অগ্নিকাণ্ড হ'তে থাকে অভিশয় চারিধারে।
ময়-স্থুডা-ছাদিতল কেঁপে' উঠে বার্ষার।

বিভীবণ-পানে ভবে চাহিলেন কুপাময়॥ ১
ভকত-প্রাণের প্রেম এ শুধু পরীক্ষা তাঁর॥
প্রাণতের ছুখহারি স্থর-নর-মূনি-স্থামি॥ ২
ভাহারি বলেভে নাথ প্রাণ রহে অধ্যের॥
হরবে নিলেন করে শায়ক অভি করাল॥ ৩
কুকুর গর্মভ শিবা রোদনের হব করে॥
বধাতথা ধুমকেত্ নভে হয় আবির্ভাব॥ ৪
ভিথি-ব্যভিরেকে রাহু প্রাস করে দিবাকরে॥
নয়ন-ক্ষাসার বহু প্রাধি-পথে প্রভিমার॥ ৫

| ছ—প্রতিমা-রোদন | অশনি-পত্ৰ | অনল-দহন কম্প-মহী। |
|------------------------|------------------|------------------------------------|
| वद्रद्य कल्प | কেশ রক্ত ধৃলি | কে পারে অণ্ড ফুরা' তে কহি'। |
| উৎপাত নভে | বছ হেরি' সবে | শরশং করে ভীত অমর। |
| হেরিয়া ত্রাসিড | বৃন্দারক বড | ৰন্থতে শ্ৰীরাম চড়া'ন শর। |
| ডো —হানিলেন ধহু | আ-শ্রুভি টানিয়া | থর একত্রিশ শর। |
| রাদের শান্তক | ছুটিয়া চলিল | (यन कोण-कन्धन ॥ ১०२ |

(5)—নাভি-ভাণার এক শায়ক করে শোবণ। मित्र वास करिं में तथा वाश वास करित । **5७-८वरण कुछ हु** है ध्रती श्वनिश याग्र । কোণা রাম ধিকার দিয়া রণে মারি ভারে। যেমনি পড়িল ভূমে কাঁপিয়া উঠিল ক্ষিতি। শরীরের ছুই ভাগ কপি ভালু-বীরদলে। त्रापी मत्त्वापत्री-व्यात्भ त्रावरणत्र वाष्ट्र भित्र । আবার তৃশীর মাঝে ভাহার। প্রবেশ করে। প্রবেশ ভাহার ভেঞ্চ করিল প্রভূ-বদনে। জয় জয় জয় রবে ভ'রে গেল ব্রহ্মাণ্ড। वर्षिन स्वापन मूनि-अञ्जाति दुन्छ।

77.5

कांत्र रख यान भित्र यास करत वर्षम ह भित्र पुष्क शैन (मह नाहिएक चारक करत ।) বিভাগ করেন ভবে ভা'রে ৫ ভূ শর খায় ॥ এ বলি মরণ কালে খোর গংজন করে ॥ ২ **क्कुक श्रंती नहीं फिक्-क्जी वाजिलिंड ह** প্রোধিত করিয়া সবে পড়িল ধরণীতলে। ৩ কেলিয়া শায়ক ফিরে যথা ৫ছু বসুবীর। হেরি' হুম্মুভি-নাদ করে সুর অহরে॥ ৪ ভা' হেরি' হরষ ভডি বিধাভা মহেশ-প্রাণে॥ জয় রম্বুবীর জয় অভি বল ভুক্তদণ্ড॥ ৫ গান জয় হে কুপাল জয়তি জয় মুকুন্দ॥ ৬

| ছ—জয় কুপাকন্দ | वष-र मूक्न | শরণাগতের স্থদ গ্রভু। |
|----------------------|--------------------|-----------------------------|
| चन-विमात्रग | পরম কারণ | মহাকাকণিক সভত বিভূ॥ |
| | রূপ-বর্ণনা | |
| বর্ষে শুমন | শ্রীভ দেবগণ | इम्मृভि वास्य कछहे इस्य । |
| রণভূমি 'পরে | রাম-কলেবরে | বছ অনঙ্গ-মাধুরী ভঙ্গে দ ১ |
| শিরে অটাজুট | জ টার মৃকুট | মাৰে মাৰে ফুল কি দেয় শোভা। |
| নীলগিরি-শিরে | চপলার সনে | ভারারাজি যেন বিভরে আজা। |
| ভূজ-দণ্ডে শর | কোদণ্ড-প্রবর | ডমু ভরি' কণ-রুধির রাজে। |
| তমালের 'পরে | অভি স্থ-ভরে | লাশমন# বছ (যন বিরাজে॥ ২ |
| দো –প্রভু কুপাদৃষ্টি | করি' লাভ বৃষ্টি | নির্ভয় শ্বরুদ্দ। |
| কপি ভালুগণ | হর্ষে মগন | গায় জয় হে মুকুন্দ । ১০৩ |

নন্দোদরীর বিলাপ: রাবণের অভ্যেষ্টি ক্রিয়া

(5)—তেরিভেট রক্ষ:রাণী দয়িভের শির কর। আকুলি' হারা'রে জ্ঞান পড়েন ধরণী 'পর II কাঁদিতে কাঁদিতে ছটে' যতেক রমনীগণ। হেরিয়া পতির দশা আর্তনাদ-বাণী মুখে। করের প্রহার বুকে করেন সহ রোদন। ভোমার এডাপে নাৰ টলমানুছ'ড বরা। কুৰ্ম ৰাস্থকী ৰা'র সচিতে নারিড ভার।

ভাঁহারে রাবণ-পাশে শইয়া করে গমন। ১ এলায়িড কেশদাম বশহীন দেহ ভূখে। करत्रन क्रायण-दश वहस्राटि वर्णन ॥ २ ছিল শন্ম ছড়াখন দিবাকর ডেজ-হারা ঃ ধূলি-ধুসরিভ হ'য়ে প'ড়ে রচে দেহ ছা'র ॥ ৩

[•] भूगः 🕇 त्याक्ष करवः। 🕽 मानवन भाषीः।

- 🛪 १ कृष्टत वासु विश्वा (ववताक वीत । বাহুবলে পরাজিলে তুমি প্রভু যমে কালে। ভোমার এভাপ-কথা ধরাতলে সুবিদিত। রামের বিমুখ ত'য়ে চইল দশা এমন। ধাতার স্ক্রন যত সব ওব পদানত। এখন সে শির ভুজ * বুনি-ভঠরে যায়। कान-वम इ'रम् नाथ मानित्न ना क्वित्रता ।

ভোমার সমুখে রণে কেহ না রহিত স্থির 🛭 দে তুমি অনাথ-প্রায় আজি প'ড়ে ভাষ*ড*লে ॥৪ সুত আত্মীয়-বল মুখে ক'য়ে ক'ব কত ! রহিল না কেচ তব তরে যে করে রোদন । ৫ নোয়া'ত চরণে শির ভয়ে দিক্পাল যত 🛚 द्राप्त-(काड-सर्क देहा कहे कि इन्हा हास । क অগ-জগ-নাথে নর করিলে হেন গণন ॥ ৭

| ছ—দম্ল-কানন | দহন পাবক | হরিরে ভাবিলে মানব সম। |
|------------------------|---------------|-----------------------------|
| नरमन वाँशास | ধাতা হর স্থার | ভজিলে না তা'রে হে কিয়তম। |
| শ্ব হ'তে নিভ | পর-জোহরড | পীপময় ভতু ভোষার স্থামি। |
| ভোমারেও রাম | দিশা নিজ ধাম | সেই ব্রহ্ম রামে ক্রণমি আমি॥ |
| দো —আহা আহা নাথ | রখুনাথ সম | কুপানিধি নাহি আনু। |
| যোগী-হল্ল ভ | সেই পরাগতি | দিলা ভোমা ভগবান্ # :- ৪ |

মহেশ চতুরানন দেব-ঋষি শনকাদি। নয়ন ভরিয়া করি' রখুপতি দরশন। রোদন করিতে কেরি' যতেক রমণীগণে। হেরি' অগ্রজ-দশা করেন তথ প্রকাশ। প্রবোধ অনেক মতে লক্ষণ দেন তা'রে। কুপা-আঁথিযোগে প্রাক্ত তাঁ'র পানে চাহিলেন। শোক পরিহরি' শেষ-াক্রয়া তরে কচিলেন 🛭 দেশকাল-অনুরূপ উর্ন-দেহ ক্রিয়া যত।

(B) — রাণী মন্দোদরী-বাণী প্রবণ করিয়া কাণে। সুর মুনি সিত্ত সবে মহাসুধ পা'ন প্রাণে u (य नकल प्रनिवत भ्रतमार्थ-एकवाली ॥ ১ অতি মুখ পে'য়ে হ'ন পরাপ্রেমে নিম্পন ৷ বিভীষণ যাঃ তথা অতীব কাতর মনে ॥ ২ আদেশ অমুক্তে তবে দিলেন সীতা-নিবাস ম "पराभार विकीयन क्षणु-भाग या'न किर्दर ॥ ७ সাধিলেন বিভীষণ প্রভুব আদেশ মত ॥ ৪

(प-मामानती कानि গেলেন ছবনে

সকলে রাবণে মনে মনে রাম-

ভিল-অঞ্চল দিয়া। গুণগ্রাম বর্গিয়া # ২০৫

বিভীৰণের রাজ্যাভিবেক

ভোষা সবে অজন কপিরাজ নল নীল। সকলে মিলিয়া যাও লছা অধিপত্তি সাধ। পালিতে পিডার সভা নগরে নাতিক যা'ব।

(5)—আসি'পুন: বিভীষণ চরণে নোয়া'ন শির। অমুক্তে অস্থান তবে করিলেন রম্বুবীর ॥ बायवान श्रुपान वानि वीत नी कि-नेन ! > ताय-विका ममालन कत क'न तचुनाव ॥ আশন সমান কপি ক্যুক্তরে পাঠ ইব ঃ ২

[•] চৰাচৰ পতি।

ক্ষেত্রগতি যায় কপি শুনিয়া প্রাকু বচন। म्यामस्य विভीषत् वमाहेम बाकामस्य । ख्यां कदि' भागिङ्ग मत्व मित्र नक करत्। তখন জীরলুবীর কপিগণে আহ্বানি'।

করিল তথার গিয়া রাজ-টিকা আয়োজন ॥ ডিলক-প্রদান শেষে স্থাতি করে সব জনে 🛙 ৩ भारत विखीयन मह ध्यक्-भारत कारत किरत' ! করিলেন সুখী সবে কহি' শ্রুতি-সুখ বাণী ॥ ৪

| ভ্— সুধামা ধা বাণী | ক'ন রখুমণি | ভোমাদেরি বলে মরিল অরি। |
|----------------------------------|---------------|------------------------------|
| পা'ন বিভীবণ | রাজ-সিংগ্রাসন | ভব বশে র'বে ত্রিলোক ভরি'। |
| মোর সনে ভব | আচরণ-শুভ | অভি গ্রীভিভরে নিত বে গা'বে। |
| ভব পারাবার | অগাধ অপার | ু অনায়াদে পার সে জন পা'বে 🛭 |
| দো—প্রভুর বচন | করিয়া শ্রাবণ | ভৃত্তি আদে না মনে। |
| নমে বারে বারে | সবে করে ধরে | শতদশ সে চরপে 🛙 ১০৬ |

ৰত্মানের সীভা-সমাপে গমন

চৌ—ভা'রপর হনুমানে করা'লেন আহ্বান। কানকীরে সমাচার শুনাও গিয়া সকল। তখন নগ্র-মাঝে মহাবীর হতু যায়। বিবিধ প্রকারে পুরু। ক'রল সবে ভাহারে। प्त शंख असूमान् ध्वामिन सानकीरत । কহিলেন কহ ভাত প্রস্কুপা-নিকেতন। কুশল সকল বিধি শ্রীরামের চমুক্র। বিভ ষণ অ'বচল রাজা পা'ন অবশেষে।

লক্ষায় যাও ডা'রে কহিলেন ভগবান ॥ চ'লে এদ পুনরায় ভাহার ল'য়ে কুনল ॥ ১ নিশাচর নিশাচরী সে কথা শুনিয়া ধায় 🛭 (मथारेब्रा मिन शुनः सानकी(मवो-नीजादत ॥ २ রঘুপতি দৃত বলি' চিনিলেন সীতা ভা'রে॥ অহুত্ব বা'হনী দ'ন কুশলে ত সবে র'ন॥ ৩ क्रमि तावरण तरण क'त्ररधम क्षेष्ठ क्षय ॥ কপির বচন শুনি' ভরে প্রাণ পরিভে'ষে। ৪

| ছ—মন চর্ষিত | ভমু পুগকিত | क'न वातवात मसम ह'रथ । |
|---------------|------------------------|---------------------------|
| এ বারতা-ভরে | कि मिव .खामादब | কিবা আছে দিতে এ ডিন লোকে। |
| হমুক্তে বাণী | ও ন গো ●ননি | পাইড়াছি স্থির অধিল-রাজ। |
| সমর-বি্জিভ | অমুক সহিত | অনাময় রামে নির্পি' আজা |
| বো—খত কহি শুন | সব শুভ গুণ | करम त'रव रुष्ट्रमान्। |
| वस्त्र मरम | সদা অমুকৃস | রকিবেন ভগৰান্ ॥ ১০৭ |
| | | |

সীভার আগমন: অগ্নি-পরীকা

(5)-এখন ছ'রত গ'ত কর ত'ত দে উপায়। নয়নে নির্ধি যাতে দে শ্রামল কম-কায়। হরুমান করে শ্বর শ্রীরাম-পাশে গমন। ভ মুকুল-বিভূষণ ব্যৱতা করি প্রবণ। ক্হিলেন যাও তুমি হয়ুমানে সাথে ক'রে।

কুশল-বারতা তাঁ'র পদে করে নিবেদন 🛊 🕽 যুবরাল বিভীষণে করিলেন আবাহন # (मधी कानकीरत रहवा जान नमामत छरत । २ সকলে ছবিত যা'ন যথায় বহেন সীতা।
নিশাচরীগণে সব বুঝা'কেন বিভাষণ।
বসন ভূষণ কত পরায় যতন ভরে।
হরষ-পুবিত মনে ভত্নপরে আবোহণ।
বেত্র করে রক্ষক শিবিকার চারিপালে।
দর্শন-তরে আসে ক্ষক্ষ বানরগণ।
কহিলেন রঘুবীর কথা মোর জ্বদে ধর।
দেশুক বানরগণ মাতারে দেখে যেমন।
ভূমিয়া প্রভূর বাণী কপি ভালু হর্ষতি ।
সীতারে অনল-মাঝে রাধিয়াছিলেন আগে।

সেবা করে নিশাচরী তাঁহারে অতি বিদীতা।
বছভাবে করাইল সীতারে অবগাহন। ৩
শিবিকা সালা'য়ে আনে যা' হেরিয়া মন হরে।
করিলেন বৈদেহী শ্রীরামে করি' অরণ। ৪
চলে সবে মিলি' মন ভাসে মহা উল্লাসে।
রক্ষকগণ কোধে করে সবে নিবারণ। ৫
জানকীরে পদত্রক্ষে স্থা আনয়ন কর।
হাসি-ভরা মুখে এই কহিলেন নারায়ণ। ৬
নভ হ'তে দেবদল কুমুম বর্ষে কভ।
প্রকাশ করিতে এবে জদয়ে বাসনা জাগে। ৭

বেষাদে ভরিল বে কথা ভনিয়া

বিষাদে ভরিল বে কথা ভনিয়া

(চী— গ্রুল রচণ শিরে ধারণ করিয়া সীঙা। কলিয়ে

ধর্মের সহায়ক হও মম লক্ষণ। আয়ো

বিরহ বিবেক ধর্ম নীতি-রসে সিঞ্জিত। লক্ষণ

ছ'নয়নে জল ভরে ভোড় করি' ছই পাণি। রহেন
রাম-মনোভাব বুবি' ধাইলেন লক্ষণ। করেন

করিয়া অনল সীভা প্রকলিত দরশন।

ক'ন যদি কায় মন জ্বদয়ে কিবা বচনে। ভবে ভ্ভাশন যিনি জানেন স্বার মন। াদান ক'ন কিছু কু-বচন।
তিনিয়া নিশাচরীগণ-মন ॥ ১০৮
কহিলেন কারমন-বচনে অতি পুণিতা ॥
আয়োজন কর ৎরা জালিবারে হুতাশন ॥ ১
লক্ষণ সীতা-বাণী শুনি' অতি বিষাদিত ॥
রহেন প্রস্তুরে কিছু কহিতে সরে না বাণী ॥ ২
করেন স্থাপিরা বহিন সংগ্রহ ইন্ধন ॥
ফাদরে না ভর নাহি হরবের লক্ষণ ॥ ৩
রঘুণতি বিনা মতি নাহি রহে অক্সজনে ॥
শীতল মলয়-প্রায় মোর তরে তিনি হ'ন ॥ ৪

| ছমিবিলা-কুমারী | গ্রভূ-পদ শ্মরি' | পশিলা পাবকে মলহ-প্রায়। |
|-----------------------|-----------------|-------------------------------|
| জয় কেশেলেশ | প্ৰিড মহেশ | পুত সীতা-মন যে পদে ভার। |
| ছায়া-কায়া আর | লোক-অপবাদ | প্রবল পাবক-মাঝারে দছে। |
| এ প্রাস্তু-চরিত | কেহ না জানিল | নভে শ্বর মূনি চাহিয়া রহে ॥ ১ |
| धति' (मह शर् ख | ধরি' বৈশ্বানর | বেদ ধরা-খ্যাত প্রকৃত-সাতা। |
| क्रि कारमत करत | দেন প্রীতি ভরে | পয়োধি রমারে দিলেন যথা।। |
| জিরামের বামে | कमनीय ठारम | বিরাজেন সীভা রুচির সাজে। |
| वय नीत्नारशन- | পাশে শ্ববিমল | কনক কমল-কালকা রাজে 🛭 ২ |
| (प)-वरत्व स्थमक | শ্ৰীভ দেবগণ | নাগাড়া বাজিছে নভে। |
| क्तिज्ञत भाव | वानात्रा नारह | বিমানে উঠিয়া সবে॥ ১০১ (ক) |

জনক-ডুকিডা-হেরি' ভালু কপি সাথেতে প্রভুর হর্ষে ধ্বনি'ছে

অগাধ শোভা অপার। জয় রাম তুথ-সার॥ ১০৯ (খ)

দেৰগণের শ্বৰ ; ইডের শ্বধা বর্ষণ

८५)—त्राध्मत व्यारमभ-वागी ७४न माथाग्र शति' আসে সদা-স্বার্থরত দেবদল অভ:পর। কহে সবে দীননাথ কুপাময় রখুপতি। চরাচর-জ্রোহরত এই ছুষ্ট আর কামী। তুমি সম-রূপ প্রভু ব্রহ্ম তুমি অবিনাশী। অখণ্ড অঞ্চণ অঞ্চ অ-কলুব অবিকার। তুমি মীন কৃশ্ম-রূপ বরাহ নর-কেশরী। यथनि यथनि नाथ छ्थ लाग्न (एवराग)। এই मन्ममि थन (पर-त्यार नर्ग मन। অধনের শিরোমণি ভবু ভব পদ পায়। হ'য়েও দেবতা মোরা উত্তম-অধিকারী। ভবের প্রবাহ মাঝে পডিত পুরুষোত্তম।

माखनि कितिशा (शन हत्रात व्यनाम कति ॥ এমন বচন কছে যেন প্রমার্থ-প্র॥ ১ করিলেন অতি দয়া দেবতাগণের প্রতি ॥ আপন পাপের ফলে মরিল কু-পথগামী॥ ২ সদা এক-ভাবময় আত্মরত ও উদাসী●॥ অব্যে অমোঘ-বল প্রভু রাম কুপাধার ॥ ৩ ৰামন পরওরামে আস' ভীম বপু ধরি'॥ তুমিই বিনাশ' নানা শরীর করি' ধারণ ॥ ৪ কাম লোভ মদ-রত অতি ক্রোধ-পরায়ণ॥ বিশ্বয় এই প্রাক্ত আমাদের প্রাণে ছা'য়॥ ৫ তবু সার্থ-বিৰুদ্ধিত ভকতি-রীতি পাশরি'॥ শরণে পতিভগণে রাখ' ভব-নিবারণ ॥ ৬

জন্মার স্তব

বে — মিনতি জানা'য়ে করিলেন স্বতি

সিদ্ধ স্থুর রহে সপ্রেমে বিধাতা যথাতথা জোড়করে । রোমাঞ্চিত কলেবরে ॥ ১১০

🌉 — क्य बाग जना ज्य-थाम इति। **खब-वाद्रग-माक्रग गिरह व्यञ्ज ।** বছ কাম-সমান ওছু:অভূপ ছবি। यम भारत छव अंग बारग-मारग। জন-রঞ্জন ভঞ্জন শোক জীতি। অবতার উদার ভূমি অপার গুণ। অজ ব্যাপক এক অনাদি তুমি। त्रचुरः न-विकृषण पृष्णशक्ति । श्वन स्नान-व्यक्तिमि व्यन्मान व्यक्तः। **ज्यमध-व्यकारम जूबि म्थनमी।**

রখুনায়ক কাম্মুক শায়ক-ধারি॥ ঞ্গ-সাগর নাগর নাথ বিভূ॥ ১ গুণ কীর্দ্তিত সুরগণ মুনীশ কবি ॥ গরুড়-সমান আস করিলে রাগে॥ ২ গত-ক্ৰোধ সদা তব জ্ঞানেতে পিছতি 🛭 মহীভার-বিভঞ্জন জ্ঞান-খন ॥ ৩ করুণাকর প্রভু রাম ভোমারে নমি। कुछ कुश विक्रीयरंग ७-शमहात्री ॥ 8 নিত নম্য হে বিভুরাম বিগত-রজা। थनदम्म निभारक मना महाकूमनी ॥ ৫ বিনা কারণে দীনের প্রাভি ময়া হিত-ধাম। শোভা-আধার প্রাণমি রমা সহিত জীরাম । তুমি কার্য্য-কারণ-পরে ভবের ভারণ। মন-সম্ভব নিদারুণ দোব-নাশন । ৬

[•] शक्कि रोतः।

শর কাম্মুক মনোহর ভূণীরধারি। ञ्चथ-मन्मित ञ्चन्द्र कानकी-त्रम्। অনবন্ধ অভীব্রিয় শগুবিহীন। যত বেদ এ ভণে নহে দম্ভ-কথা#। কৃতকৃত্য শাখামৃগ সকলে প্ৰভু। শত ধিকার দেব দেহে জীবনে হরি। এবে দীন-দয়াল এই করুণা করি'। थन-मर्फन त्रक्षन त्रमा स्त्रा। নূপ-নায়ক দেহ প্রভু এই বরদান।

অজ্ঞ-অরুণ-আঁখি ছ্রিডহারি॥ মোহ কাম অহং বুখা মোহের শমন ॥ ৭ সব-রূপ তথাপি কভু নহ তাহে শীন । রবি দীরি পৃথক পুনঃ অভেদ যথা। ৮ সাদরে নিরখে তব আনন বিভু ॥ তব ভক্তি বিহীন মজে বিষয়ে জরি'॥ ৯ সেই বৃদ্ধি বিভেদ-করী হর হে হরি। যাহে কর্ম হা' বিপরীত করি আচরণ। ভাহে পার-হীন স্থুখ ভাবি' রহি নিমগন। >• পদ-পদ্ম স-শিব উমা সেবন-পরা ॥ চরণামুকে যেন প্রেম রহে অবিরাম ॥ ১১

দো—করেন মিনতি শোভা-পারাবারে শতদল-যোনি হেরিয়াও আঁখি

প্রেম-পুলকিত কার। তৃপ্তি নাহিক পায়। ১১১

एमत्र्राचेत्र जाशंवन

(5)—সেই কালে দশরথ আসিলেন সেইখানে। তনয়ে নেহারি অস ভরে তাঁর চুনয়মে ॥ অমুক্ষের সনে প্রস্তু করিলেন প্রণিপাত। রাম ক'ন ভাত তব পুণ্য-প্রভাবে আজ। ভনয়-বচন শুনি' প্রেম অতি বেড়ে' যায়। জীবিত-কালের প্রীতি শ্বরণ করিয়া রাম। ভেদ-ভক্তি নুপতির জীবনে কামনা ছিল। সগুণ-ভক্ত যা'রা মোক্ষ কভু না চায়। বারবার প্রভু-পদে জানা'য়ে নিজ প্রণাম।

ডনয় বুগলে পিতা করিলেন আশীর্কাদ॥ ১ বিজয় ক'রেছি লাভ দশানন রক্ষ:-রাজ। সলিলে নয়ন ভরে রোমাঞ্চিত হয় কায়। ২ হেরিয়া পিভায় প্রতি বিভরেন দৃঢ়-জ্ঞান ॥ এ কারণে মোক্ষলান্ত ভাঁহার নাহিক হ'ল॥ ৩ নিজ-ভক্তি শ্রীরামের নিকটে ভাহারা পায় 🛭 হর্ষিড-প্রাণ যা'ন দশর্প স্থর্থাম ॥ ৪

रेटल इ स्व

ছো-লন্ধণ সীতা-সে শোভা হেরিয়া সঙ্গেতে প্রভু হর্ষি 5 মনে

কুশলী কোশলপতি। বাসব করেন স্থাতি ॥ ১১২

ছ -- জর রাম শোভাধার। ধৃত তৃণ শর চাপ। खत्र अत पृष्णाति। বধিলে খলেরে নাধ।

প্রণতের স্থাগার। প্রবল ভূক-প্রভাপ । > রক্ষঃ মথনকারি 🛭 করিলে দেবে সনাথ 🛚 ২

[•] বিখ্যা স্বৰা 1

| ধরাভার-হারি জন্ন। | অপার মহিমাময়। |
|-----------------------|-------------------------------|
| त्रकः नि-मृनकाति । | ছে কুপাল রাবণারি॥ ৩ |
| লক্ষেশ বল-গঠেব। | परण स्त्र शक्कर्यर्थ ॥ |
| সিদ্ধ মূলি নাগ নরে। | হঠে অপকার করে॥ ৪ |
| পর-জ্বোহ রভ হুষ্ট। | পেল' ফল পাপ-পুষ্ট 🛭 |
| चन (र मीन-मग्राम । | অল-আঁখি সুবিশাল ॥ ৫ |
| ছिन खरन चिमान। | কেহ নহে মো' সমান 🛊 |
| এবে হেরি' প্রস্তু-পদ। | গত মান ছখ-প্ৰদ ॥ ৬ |
| কেহ অন্ধে ধ্যান করে। | বেদে নেভি কছে বাঁ'রে॥ |
| মোর প্রেম রাম রূপে। | স-গুণ কোশলভূপে ঃ ৭ |
| ল'য়ে দীভা-লক্ষণে। | রহ জাদ-নিকেতনে॥ |
| ভেবে' মোরে নিজ দাস। | ভক্তি দেহ 🖺 নিবাস 🛙 ৮ |
| | |

| ছ—:দহ হে ভকতি | জানকী-নিবাস | ত্রাস-হারি স্থুখ শরণাগতে। |
|-------------------|------------------|---------------------------|
| ख्य-धाम त्राम | ভোমারে প্রণাম | বহুকাম-ছবি কোশলপতে। |
| স্থ রগণানন্দ | বিনাশন দশ্ব | নর-রূপধর অভুল বল। |
| এক্ষাদি মহেশ | সেবিড অশেষ | নমি রাম ওতে কুপা-কোমল। |
| দো-এবে কুপ'দৃষ্টি | করি' মোর 'পরে | আদেশ দেহ কুপাল। |
| কি সেবা করিব | ত নি' প্রিয়বাণী | কতেন দীন-দয়াল ॥ ১১৩ |

(5) -- রাম ক'ন স্বপত্তি মোর কপি ভালু যত। প'ড়ে আছে নিবাচরগণ-করে হ'য়ে হত ॥ আমার হিতের ভরে ইহারা ভাঙ্কিল প্রাণ। তান পগরাজ অভি গুঢ় এই প্রভূ বাণী। ব্ৰিলোচ কৰিয়া নাশ পাৰেন প্ৰভূ বাঁচা হৈ। সুধা-ধারে করিলেন কপি ভালু সঞ্চাবিত। সুধার বরষা হ'ল উভর দলের 'পর। ताम-मन्न इ'रब्रहिन तर्ग तकरमत मन। प्तर-वर्ष र एक बाङ अक वानव मृद्य । व्राध्यत अनुभ दकता मीरन क्रिक अन्नात्रण। ধল পাপাগার কামী রাবণ রাক্ষ্যপতি।

ख्यान ख्रम का छेशास्त्र श्राण मान ॥ ১ মশা ইহার শুধু বিদিত খুনিরা জ্ঞানী॥ ध उर् डाहात नौना वामरव लोतव मिर्ड ॥ २ উঠি' হর যিয়া হয় প্রভু প্রে উপনাত ॥ কপি ভালুবাঁতে, শুধু নংচক রঞ্জীচর 🖁 ৩ मित्रिश स्माठन नर्छ चूर्ठ छव-वक्षन ॥ ताम-देखात्र कारे नृहन कौरन श:छ ॥ 8 क्रिलिन मुक्ति मान त्रकः भाग विख्या । মুনিও নাপান তাহা দে লভিগ যেই গতি 🕸

महोदमदनम् सन

(पी —कृष्य वत्रवि'

দেব বায় চড়ি হেরি' প্রভূ-পাশে

দিব্য বিমান-বর। वामित्मन मिशवत ॥ ১১৪ (क)

নয়নে ভরিয়া বারি। মহা প্রেমভরে করবুগ জুড়ে' কহেন ত্রিপুর-অরি 🛭 ১১৪ (খ) পুলকিত ভন্নু গদগদ ভাবে

(5)—त्राथ' त्राथ' (मारत त्राम त्राधव-कृतनाग्रक। करत थता वत-ठाल मानम-इत भाग्रक ॥ মোহরপী মহাঘন-জলদ-প্রভেজন। गः भग्न-वनानम् (प्रवर्गन-तक्षन ॥) व्यक्षण मराग राष्ट्रभाव विषय ভ্রম-ভ্রমে অভি বল ভেজ ভূমি দিবাকর ॥ কাম ক্রোধ মোহ মদ আদি রিপু-কুঞ্বরে। কেশরী সমান মন-থাক' জন-কাস্তারে॥ ২ বিষয়-কামনারূপী কমল-কানন ভরে। প্রবল ভূষার ভূমি উদার মনের(ও) পরে । ভব-নিধি-মন্দর কর দুর ছোর ভয়। ছুন্তর যাওয়া-আসা কর রোধ কুপাময়॥ ৩ শ্রামল স্থ-কলেবর রাজীব-নরনধারি। वकु मौत्नत वित्र व्यन्ति इश्हाति॥ অমুক্ত দয়িতা সীতা সহিত নিরম্ভর। वाम कत ताका ताम मम शाम-व्यक्त ॥ 8 मूनि-तक्षन मही-मध्य मधन। कुमनी मारमत व्यक्त जान-विख्यन ॥ ৫

বো-কোশল পুরীতে কুপা-পারাবার

হে প্ৰভু যখন আসিব তথ্ম

ভিলক হ'বে ভোমার। হেরিতে লীলা উদার ॥ ১১৫

বিভীষণের প্রার্থনা

(চ)—মিনভি আনা'য়ে হর করিলা যবে গমন। প্রভার সদনে হন উপনীত বিভীষণ ॥ চরণে নমিয়া শির কহিলেন মুত্বাণী। বধিলে রাবণে সহ কুল আর দলবল। অতি দীন বিমলিন নীচমতি হীন লাতি। এবে ভৰুতের গৃহ করহ প্রভু পাবন। मण्यम मन्द्रिय थन कति प्रवासन । সব বিধি মোরে নাথ ক'রে লও আপনার। এ হেন মুহল বাণী পশিতে প্রভুর কাণে।

মিনতি আমার প্রভু শুন হে শাঙ্গ পাণি ॥ ১ পাবন যশেতে তব ত্রিভুবন ঝলমল। আমার 'পরেও কুপা করিয়াছ বহু ভাঁতি ॥ ২ মজ্জন করি' রগ-শ্রম কর বিদূরণ॥ দেহ কুপাময় করি' কপিগণে বিভরণ ॥ ৩ ল'য়ে চল সাথে ক'রে কোশলপুরী ভোমার॥ कांथि-कन छ'रत्र अन श्रुविभाग छ'नग्रस्न ॥ 8

| দো—শুন ভাই তব | গৃহ ধন যত | সভ্য মম স্কল। |
|------------------|-------------------------|--------------------------|
| ভরতের দশ। | মনে করি' মোর | যুগ সম লাগে পল 🛚 ১১৬ (ক) |
| ভাপদের বেশ | কুশ-কলেবর | মম নাম অবির্ভ। |
| শ্রা হেরি যেন | কর দে উপায় | এই অমুরোধ ভাত:। ১১৬ (४) |
| গেলে গণা-দিন | পুরিবার পরে | জীবিভ পা'ব না ভা'রে। |
| ভরতের প্রেম | ম্মরিয়া শ্রেভুর | পুলকন কলেবরে ৷ ১১৬ (গ) |
| কল ধরি' প্রাক্তা | করহ শাসন | শ্ব'র মোরে নিরস্তর। |
| শেষে মমধাম | ' পাইবে যথায় | যা'ন যত সাধুবর ৷ ∙১৬ (য) |

লহা কাণ্ড

विकोषटनक वासक्रानटक वक्त-क्षत्रकात विकाल

(5)—বিভীষণ শুনি' কাণে পুডবাণী 🕮 রামের। হরবে পড়েন পায়ে সেই কুপা-নিদানের 🛭 বানর ভালুরা সবে পুলকে অধীর প্রাণ। আবার কিরিয়া গুহে আসিলেন বিভীষণ। করেন পূষ্পক ল'য়ে প্রভুর আগে স্থাপনা। উঠিয়া বিমান 'পরে তুন স্থা বিভীষণ। গগন-উপরে ভবে আরোহিয়া বিভাষণ। সে লয় কুড়ায়ৈ ভাষা ভাল লাগে যা' বাহার। কৌতৃক করি' রাম সীতা সহ লক্ষণ।

চরণ ধারণ করি' করে প্রভু-গুণগান ॥ ১ বিমানে ভরিয়া ল'ন মাণিক বসন ধন ! করেন হাসিয়া রাম বচন হেন বচনা ৷ ২ কর বাস অলঙ্কার নভঃ হ'তে বরবণ। করেন বদন মণি উর্জ হ'তে বরবণ॥ ৩ মুখে দিয়া মণি কপি বাহিরে কেলে আবার ! হাসেন কৌতুক ময় মহা কুপানিকেডন ॥ ৪

| দো—ধানে মুনি বাঁ'রে | না পা'ন ভাবিয়া | নেভি নেভি বেদ করে। |
|---------------------|---------------------|------------------------------|
| সেই কুপাময় | কপি সনে খেলা | करत्रन व्यरमान खरत् ॥ ১১৭(क) |
| উমা যোগ জপ | দান তপ নানা | यस्क निश्रम जरक। |
| রামের করুণা | ভত নাহি হয় | যত অবিচল শ্রীতে। ১১৭(খ) |

(5)--খক বানরগণ বসন ভূষণ পায়। অগণিত ভাতি কপি করি' রাম দরশন। করিলেন দয়া-বৃষ্টি চাহিয়া সবার পানে। ভোমাদেরি বলে আমি রাবণে করি নিধন। আপন আপন বাসে এখন কর গমন। এ কথা ভনিয়া প্রেমে আকুল হ'ল বানর। যা' কিছু বলহ প্রভু সকলি শোভে ভোমারে। ত্রিভুবন-নাপ তুমি দীননাপ রমুনাথ। প্রভুর বচন শুনি' সবে মরি শঙ্জায়। প্রীরামের পানে চাহি' ঋক বানর যত।

পরিধান করি' সবে আসে জ্রীরামের পায় 🛭 করিতে অক্ষম প্রেডু হ'ন হাসি-সত্বরণ॥ ১ কহিলেন রখুরায় কোমল বচন সনে। তা'রপর বিভীষণে বসা'য়েছি রাজাসন ॥ ২ কা'রেও ক'র না ভয় আমারে ক'র মারণ। আদরে জানায় পদে সবে করি' জোড়কর ॥ ৩ তব এ কথায় মোহ লাগে আমা-স্বাকারে॥ দীন বুৰিয়াই কপি-সকলে কর সনাথ॥ ৪ করিতে গরুড-হিত মশকে পারে কো**থা**য়॥ গৃহ-পানে নাহি মন প্রেমে অভিভূত এত 🛚 ৫

| বো—প্রভুর আদেশে | ঋক বানর | রাম-রূপ হৃদে ধরি'। |
|-----------------|-----------------|---------------------------|
| হরষ-বিষাদ- | ভরা প্রাণে যায় | অনেক মিনতি করি' ৷ ১১৮(ক) |
| স্থাীৰ নীপ- | নল আহ্বান্ | व्यक्तप रुष्ट्रमान् । |
| সহ বিভীৰণ | আর যা'রা কপি- | সেনাপতি বলবান্ ৷ ১১৮(খ) |
| না পারে করিতে | শ্ৰেম-বশে কিছু | জলেতে নয়ন ভবে। |
| সম্মুখে চাহি' | রহে রাম-পানে | পলক চ'ৰে না পড়ে 🛭 ১১৮(গ) |

त्राम श्रीका मुक्कारभव करमानाव श्रमम

চৌ-ভাহাদের অভি-প্রেম করি' রাম দরশন। স্বারে বিমান 'পরে করা'লেন আরোহণ। মনে মনে বিপ্রের চরণে নোয়া'ন শির। (यमनि विमान हर्ण छेर्छ (चात कामाहन। রথ-মাঝে রাজাসন উচ্চ মানসূত র। দয়িতা সহিত রাম-রূপে দেই মত শোন্তা। क्रिक विमानवत्र विद्वाद-दवर्श शाय । পরম স্থদ বচে তিনবিধ সমীরণ। হ'তে থাকে লক্ষণ স্থান্দর চারিধার। এই দেখ রণস্থল সীতারে স্রীরাম ক'ন। অঙ্গদ ও হথুর দারুণ আঘাড-ফলে। व्यमत मूनित इ:ध-माठा छाटे हुई खन।

উত্তর দিকে রথ চালা'লেন রস্থবীর। ১ জয় রখুবীর রব করিল মিলি' সকল ॥ জানকী-সহিত প্রান্ত বসিলেন ভতুপর 🛊 ২ সুমের-শিখরে ঘন মেঘে যেন ক্ষণপ্রভা ! কুমুম-বরষা করে অমর পুলক-কায় ॥ ৩ নির্মাল নীরে ভরে পারাবার নদীগণ # নির্মাণ নভঃ দিক প্রীত মত স্বাকার॥ ৪ এথানে করিলা বধ মেঘনাদে হক্ষণ ৷ বড় বড় রাক্ষদ ঐ প'ড়ে ভূমিভলে ॥ ৫ এইখানে হত হ'ল কুম্বুকর্ণ ও রাবণ॥ ৬

| দো —হেণা সেতু হ'ল | গুভিষ্ঠিত আর | মতেখর সুখ-ধাম। |
|--------------------------|--------------|----------------------------|
| জানকী সহিত | করেন 🕮 গ্লাম | মহেশ-প্রতি প্রণাম ॥ ১১৯(ক) |
| যেখানে যেখানে | করিলেন প্রভূ | বনে বাস বিশ্রাম। |
| त्म नव (नथा'स्त्र | (मवी बानकीरत | वरमन भवाति नाम ॥ ১১৯(४) |

টো-অনভি কালেতে রব চ'লে এল স্থানে নেই। অভি মহা রমণীয় দশুক বন বেই। অগস্তা প্রভৃতি তথা যত মহামূলিবর। সকল ঋষির কাছে লভিয়া ওভ-আশীৰ। ভথা সন্তোষ করি' যত মহামূনিগণে। অবশেষে দেখা'লেন জানকীরে রখুমণি। পুণাতোয়া গঙ্গা হ'ল পরেতে আঁখি-গোচর। এর পরে দেখা পা'বে প্রয়াগ ভীরখ-রামু। দেখিবে ভাহার পরে মহা পুত সঙ্গম। **भारत व्यायाधात भूती भूगिङ नित्र**िक्षित्र ।

সবাকার আশ্রমে যা'ন রঘু-কুলেখর ॥ ১ চিত্রকৃটে ভা'রপর আসিলেন জগদীশ। চলিল পুষ্পরথ ভীষণ বেগের সনে ॥ ২ যমুনা কলির যত কলুষ মলহারিণী 🛭 প্রণাম করত সীতা কহিলেন রম্বর ॥ ৩ দেখা মাত্রেতে যা'র কোটি কোটি পাপ যায় ॥ শোক-হর পরাধাম দিতে যা' সোপান সম 18 সববিধ ভাপ ভব-রোগ যথা দুর চয়॥ ৫

| দো—সীভার সহিত | অযোধ্যাপুরীয়ে | র নমিলেন কুপাধার। |
|-----------------------------|----------------|--------------------------------------|
| নয়নেতে জ্বল | শরীরে পুলক | শিহরেন বারবার ১২০(ক) |
| ডা'রপর প্রভূ | ত্রিবেশীতে আ | াদি' হরবে করেন স্নান। |
| কপিগণ সনে | বিপ্রগণেরে | দিলেন বিবিধ দান 🛚 ১২০(খ) |
| চৌ-বুৰাইয়া প্রভু রাম কহিলে | ান হকুমানে। এং | ক্ষচারী-ক্লপ ধরি' যাও অযোধ্যার ধামে। |
| আমার কণল-কথা ভরতেরে ৩ | nibe: si | াচার বারতা ল'যে আবার ফিরে' আসিও। ১ |

শ্বরাগতি প্রশ্বান করে তবে হয়ুমান্।
বিবিধ বিধানে পূজা করিলেন মুনিবর।
মুনির চরণ পূজি' যুক্ত করিয়া কর।
প্রেডু শাসিলেন ইহা নিষাদ শুনিল থবে।
সেই অবসরে রথ সুরধুনী উত্তরি'।
ডখন জনক-সুভা পূজি' মাতা গল্লায়।
হর্ষে আশীষ দেন হয়-শির বিহারিশী।
উত্তরণ-কথা শুনি' প্রেমাকুল কহ ধায়।
করিরা তাঁহার সনে জানকীরে দরশন।
ভাহার পরম প্রেম নির্থিয়া রশ্বনাধ।

ভরমান্দ মুনি-পাশে তখন শ্রীরাম যা'ন ॥
আশীব দিলেন তাঁ'রে শুভি করিবার পর ॥ ২
বিমান আরোছি' পুন: আগে যা'ন রম্মুবর ॥
ভরী কোথা ভরী কোথা বলি' ডাকাইল সবে ॥৩
করিল অবভরণ প্রেছুর আদেশ ধরি' ॥
আনেক বিধানে পুন: পড়েন তাঁহার পার ॥ ৪
সোহাগ অচল ভব রহিবে বর-বদনি ॥
পুলক-বিভোর প্রাণে প্রভুর নিকটে যার ॥ ৫
পড়িল ধরণী 'পরে দেহ-বোধ বিসরণ ॥
পুলকে ধরেন চাপি' আপন বুকের সাব ॥ ৩

| ऍ—জানী-শির-ধন | ন্দ্রিরমা-রমণ | আলিঙ্গনে ল'ন বুকেতে করি'। |
|------------------|----------------------|------------------------------|
| পাৰ্শ্বে বদা'য়ে | ত্ধা'ন কুশল | কতে গুহ ভাবে মিন্ডি ভরি'॥ |
| হেরিয়া চরণ | কুশল এখন | যে পদ সেবেন বিধাতা হর। |
| কুখ ধাম রাম | পরিপূর্ণ কাম | নমি নমি ভব চরণ 'পর ॥ ১ |
| नियम्म (य जन | চরম অধ্য | হুদে ল'ন হরি ভরত-প্রায়। |
| হীন-অভিলায | রে তুলসীদাস | মোহে দে প্রভুরে ভুলিলি হার 🛭 |
| রাবণ-গলন- | চরিভ পাবন | রাম-পদে রতি করছে দান। |
| কামনাদি-হর | শুদ্ধ জ্ঞান কর | স্থ্য সিদ্ধ মূনি করেন গান। ২ |
| | | |

এরাম-লীলা মাহান্ত্য

| দোসমব-বিজয়ী | রঘুপতি-সীলা | ভনে যেই জ্ঞানবান্। |
|-----------------|-------------|--------------------------|
| বিজ্ঞয় বিবেক | বিভৃতি সভত | দেন ভা'রে ভগবান্॥ ১২১(ক) |
| এই কলিকাল | মলাগার মন | দেশহ করি' বিচার। |
| ভ্যকি' এখড় রাম | চির পুড নাম | নাহিক কোন আধার 🛭 ১২১(খ) |

কলিবুগের সমস্ত পাপধ্বংসকারী জ্ঞীরামচরিত-মানসের এই বর্চ সোপান সমাপ্ত হইল ৷

(লছাকাও লমাও)

द्येश्वर्णमात्र नयः

শ্রীকানকীবল্লভের জয়

শ্রীরামচরিত মানস

সপ্তন সোপান

উত্তরকাণ্ড

দেবভার অগ্রাগণ্য নলিন যুগল আঁখি

| (| শাভাগার-পীতবাস |
|---|----------------|
| 5 | াপ নারাচপাণি |

শ্লোক-ময়ুরকণ্ঠ-আভা

নমি হে পরম বিছু কোশলেশ ও চরণ চিম্বকের মন-ভূক্স-শহ্ম কুন্দ বিধু-

করুণার আয়তন

কপিদল-বেষ্টিভ ভানকীর পতি রাম মঞ্কঞ্জ যেন मनी पिरानिणि मति গৌর স্থল্য কায়

ভূষিত ভৃগু-পদদিহ্ন মুরতি সদা স্থপ্রসন্ম। সেব্যমান অমুক্ত চরণ পুল্পক-আরুড় ভগবন্ ॥ ১ সুকোমল অজ লিব-বন্দিত। ব্দানকী-সরোজ-কর-দেবিত। ২ অম্বিকার পতি সিদ্ধিদাতা। শহর মকরকৈতৃ-ত্রাভা। ৩

ভরত-বিরহ ও হমুমান-ভরত মিলন

ক্মল-লোচনে নমি

| লো—ভ ধু এক দিন | রহে বাকী আর |
|-----------------------|-------------------|
| এ কথাই 😎ধু | নক্সনাত্রী-মুদ্ধে |
| শুভ-লক্ষণ | হেরি' চারিদিকে |
| প্ৰভূ-আগমন | যেন বা জানায় |
| হর্ষ অপার | বহি'ছে এমন |
| যেন কাণে পশে | আসিলেন প্রভু |
| ভরঙ-্নয়ন | দক্ষিণ ভূজ |
| শুভ-লক্ষণ | জানি' প্ৰীত মন |

ব্যাকুলিত পুরজন। বিরহে কাতর মন॥ পুলকিত নরনারী। त्रभगेत्र लाल भूतो ॥ রাম-মাতাদের প্রাণে। वर्ष ७ व्यक्त गत्न ॥ স্পন্দিত বারেবার। করেন ভবে বিচার॥

Cbl-প্রাণাধার গণাদিনেশ একদিন বাকী আর । এ কথা পড়িয়া মনে বিবাদ জাগে অপার B কি কারণে প্রভু ফিরে' না আসিলা এডদিন। কপট কুটিল বলি' ভ্যক্ত কি দীনহীন॥ ১

মন

शक्ष । । । वाद्यव किविवाद **अवशक्तिक विद्या**व ।

অনুজগণের মাঝে লক্ষন বড় ভাগী।
কপট কুটিল বলি' আমারে বুঝেন নাথ।
মোর আচরণ যদি হুদি মাঝে ভাবা যায়।
শুধু আশা ভকতের দোষ না দেখেন কড়।
সেই হেড়ু প্রোণে মম দৃঢ় আশা অভিশয়।
কিন্ধু যদি গণাদিন-পরে মোর রহে প্রাণ।

(5)-হরষিত হতুমান করি' ছবি দরশন। অপার পুলক-সরে মঞ্জিত মন তাঁর। বাঁহার বিরহে প্রাণ জ্ঞালিছে রজনা দিন। সেই রম্বুলমণি সক্ষন-সুধদাতা। সমরে জিনিয়া অরি সহ সীডা সম্মণ। ভরত ভূলেন খেদ বারতা করি' প্রবণ। হে ভাত কে তুমি কহ আগমন কোথা হ'তে। হে কুপানিধান গুন প্রন-ভনয় আমি। দীনের সহায় রাম রত্মপতি-কিন্ধর। মিলন-পুলক প্রেম জদয়েতে নাহি ধরে। ডোমার দরশে ছখ-নিশি আৰু হ'ল ভোর। কুশল শুধা'ন ভা'রে কডই বিবিধ মডে। এ অধ্বণ-ভূধাকর সম কথা মোর কাছে। ডোমার এ-ঋণ কড় পরিশোধ নাহি হয়। তখন প্রন-স্থুত চরণে নমিয়া মাথা। কহ কপি রখুমণি মহাকুপা পরায়ণ।

এ হেতু সে রাম-পদ-সরসিক্তে অফুরারী।
করিলেন অস্থীকার তাইতে লইতে সাধ। ২
শতকোটি কল্পেও নিস্তার নাহি হার।
দীননাথ কুপানিধি কোমল-পরাণ প্রভু॥ ৩
ফিরে' পা'ব তাঁরে যেন লক্ষণ কাণে কয়॥
ডবে এ জগত মাঝে নীচ কে মম সমান॥ ৪

মগ্ন ভরত-প্রাণ।
উত্তরিলা হমুমান্। ১ (ক)
কটার মুকুট মাথে।
প্রেম-বারি নয়নেতে॥ ১ (খ)

রোমাঞ্চিত কলেবর সঞ্চল হ'ল লোচন 🎚 বলেন স-প্রেম বাণী ভাবণ-সুধ আধার॥ ১ অবিরল যাঁ'র নাম রটনায় লৌলীন। কুশলে আসেন কিরি' দেব মুনিজন-ত্রাভা॥ ২ আসি'ছেন ওই শুন জয় গা'ন দেবগণ॥ অমিয় লভিল যেন ব্যাকুল ভৃষিত জন ॥ ৩ অবশের সুধাসম প্রিয় কথা শুনাইডে। হনুমান্নাম মম কপি-জাতি রখুমণি॥৪ শুনিয়া ধরিত উঠি' ভরত মিলে সাদর ॥ শিহরিত কলেবর প্রেম-নীর চ'থে বারে। ৫ ভব দরশনে যেন পাইলাম রামে মোর॥ ক'ন কহ কিবা দিব এ ৰারভা সম্মানিতে। ৬ ধরণী মাঝারে বল স্থমধুর কিবা আছে॥ এখন প্রভুর কথা কহ মোরে সমুদয় ॥ ৭ বিস্তার করি' বলে জীরামের গুণ-গাথা ৪ কখনো কি দাস-ভাবে করিলা মোরে স্মরণ ম ৮

ছ—নিজ দাস বলি'
ভরতের গুনি'
ভাবে রঘ্বীর
সে যদি না হ'বে

কধনো কি প্রাভূ বিনীত বচন শ্রীমূধে আপন সব-গুণাধার

রযুকুলপতি শ্বরিলা মোরে। পুলকিত কপি চরণে পড়ে। বাঁ'র গুণ-গাখা সভত গা'ন। কে হ'বে বিনীত শু-গুণবান। বো-ভূমি নাথ রাম-**ও**নি' বারবার

প্রাণের সমান আদরে ভরত

সভ্য এ কথা মোর। নয়নে প্রেমের লোর॥ ২ (क)

সো-ভরত-চরণে করি' নতি কুশল-শ্রবণে প্রীত মতি

ফিরে হতুমান রাম-পায়। विभारन উঠেन त्रचुतात्र ॥ २ (४)

টৌ—আসিলা কোশলপুরী ভরত মোদিত মন। সব কথা গুরু-পদে করিলেন নিবেদন। রাণী-বাস মাঝে এই বারতা প্রকাশ পায়। এ কথা পশিতে কাণে ছুটেন জননী যত। পুরবাসী সমাচার করিয়া সবে প্রবণ। पूर्वा पथि शास्त्राघन नानाविध कुन कन। কনক থালার ভরি' বত সব সোহাগিনী। যে যেমন ছিল উঠি' সেই ভাবে দৌড়ায়। যে'ডে যে'ডে এ উহারে করে এই সম্ভাষণ। অ্যোধ্যাপুরীতে ফিরে' আসি'ছেন প্রভু জানি'। ধরে বিমোহন রূপ পূর্ণ শোভার খনি। বহিতে লাগিল মৃত্যন্দ সুরভি বায়।

কুশলে আসেন ফিরি' কোশলেভে রখুরায় 🛭 ১ ভরত কুশল তাঁ'র নিবেদিলা কডমত। নরনারীগণ-প্রাণ পুলকেতে নিমগন ॥ ২ সকল ওভের মূল নবীন তুলসী-দল ॥ মঙ্গল-গান গাছি' চলিল গল-গামিনী ॥ ৩ **(इ.स.)** व्याप्त नारक प्राप्त विश्व वार्य । দেখে হৈ কি ভূমি ভাই রখুকুল-বিভূষণ ॥ ৪ সর্যু বিমল পুত সলিলে ভরিল কার ॥ ৫

| দো —হর্বিত গুরু | পরিজন বভ | व्यञ्क क्-न्युत्रवृत्म । . |
|-----------------------------------|----------------|----------------------------|
| ভরতের সনে | ক্রেম-ভরে যা'ন | ভেটিতে করণাকন্দ 🛚 🗢 (ক) |
| গৃহ-চুড়ে চড়ি' | কত শত জন | গগনে বিমান ছেরে 🛭 |
| अमिरक विभारन | দেব কলভানে | মঙ্গল-গান করে॥৩ (৭) |
| রাকা শশী রাম | করি' দরশন | পুরী-সিদ্ধু হরষিত। |
| কোলাহল করি' | উদ্বেশ যেন | রমণী শহরী-মত 🛊 । ৩ (গ) |

চৌ-এদিকে তপনকুল-তপনের দিবাকর। অঙ্গদ সুঞীব শুন লছার পতি। यपि देवकुर्श्वाम-महिमात विवत्र। সেও নহে প্রিয় এই কোশলপুরীর প্রায়। আমার জনমভূমি এই পুরী চাক্ল কারা। অভিশয় মোর প্রিয় হেথাকার অধিবাসী। বচন শুনিয়া কপি হর্ষিত অভি ফুখে।

কপিরে দেখা'ন তাঁ'র নিজ পুরী মনোহর॥ পুণিত নগরী এই এদেশ পাবন অভি ৷ ১ পুরাণ বেদেতে গীভ জানে তা জগত জন। অতীব বিরল জন এর গুঢ় জেদ পায় ॥ ২ উত্তরদিকে বহে সমযু পাবন-ভোয়া॥ যা'র জলে অবগাহি' নিমেবে বিনা আয়াস। আমার সমীপে জীব লাভ করে চিরবাস ॥ ৩ ममशाम-व्यवाग्रिनी अ नगती स्थतानि॥ थश नगरी व्यक्त वाशासन निक्रमूर्य ॥ 8

উবেল কইবা উঠিবাকে। নারীবা সেই সাধবের ভবজের অভ

শ্রীরামচরিত মানস

এরাম-ভরতাদি মিলন

| দৌ—অযোধ্যাবাদীরে | আসিতে হেরিলা | কুপানিধি ভগবান্। |
|------------------|-----------------|---------------------------|
| নগর-নিকটে | প্রভূ প্রেরণাতে | নামিশ ক্ষিভি বিমান 🛚 ৪(ক) |
| উত্তরি' ধরণী | পুষ্পকে ক'ন | যাও কুবেরের পুরী। |
| পুষ্পক কিরে | মিশিত হর্ষ- | বিরহের ভাপ ধরি' ॥ ৪ (খ) |

টৌ--ভরতের সনে আসে পুরবাসী যত লোকে। কৃশ-তমু ঞ্জীরামের বিরহ-জনিত শোকে। বামদেব মুনিপত্তি বশিষ্ঠে আসিতে দেখি'। ধাইয়া পড়েন মুনি-চরণ কমল 'পরে। কুশল শুধা'ন মূনি তুলি' করি' আলিজন। সমাগত ছিজ-পদে অবনত করি' শির। ধরেন ভরত আসি' সেই পদ-পদ্ধকে। তুলিলে না যায় ভোলা পতিত ধরণী 'পরে। কম খ্রাম-কলেবরে রোমাঞ্চ দপ্তায়মান।

অমুজ-সহিত শর শরাসন ভূমে রাখি'॥ ১ পুলকে অবশ প্রাণ শিহর গ্রীকলেবরে ॥ কুশল কয়ণা তব হে প্রভু শ্রীরাম ক'ন। ২ নমেন ধরম-রভ রাম রত্তুক্ল-বীর॥ যে পদে নমিত হর সুর মুনি আর অভে॥৩ कुशांत्र निधान वरण धरत्रन छपरत्र छ। रत ॥ ন্বীন নলিন-চ'খে প্রেম-ভলে বহে বাণ॥ ৪

| ছ-রাজীব-নয়নে | জল-ধারা মরি | পুলকিত দেহে লাবণী কিবা। |
|-----------------|-----------------|----------------------------------|
| আলিঙ্গন-পাশে | অমুজের সনে | বাঁধা ০০ছু ক'ব কিবাদে বিভা॥ |
| সে স্থ-মিলন | শোভার সদন | বরণিতে কা'র শক্তি রয়। |
| শৃঙ্গার-সনে | ভন্থরি' যেন | প্রণয় মিলিয়াস্থমালয় ॥ ১ |
| কুশল শুধা'ন | বিপুল পুলকে | ভরতের মুখে কথা না আসে। |
| যে পায় সে জান্ | ভাষা মনাতীত | যে স্থ-সাগরে ভরত ভাসে॥ |
| এখন কুশল | ব্যাকুল নির্শি' | দিলে যবে প্রভু দরশ দান। |
| বিরহ-অতলে | ছিলাম ডুবিয়া | হাত ধরি' তুলি' বাঁচা'লে প্রাণ॥ ২ |
| দো—অনস্তর প্রভূ | শত্রুংস্কর সনে | করিলেন আলিঙ্গন। |
| লক্ষণ মিলেন | ভরতের সনে | ফুল মন ছইজন॥ ৫ |

(5)--লক্ষ্মণ মিলিলেন ভরত-অমুব্দে পরে। ব্দানকী-চরণতলে ভরত অমুক্ত সনে। व्यक्र-भारन नित्रविद्या व्यरमाषिक भूत्रवानी । প্রাণরে বিকল সবে করি' প্রান্থ দরশন। গণনা-অভীত রূপ তখন করি' ধারণ। कृशायत्र कृशाः व्यापि वत्रवंग मत्व कति'।

छ-मह विद्रश्-कांख छः ४ ७४न श्रुत ॥ भित्र व्यवनक कति' विकृ युव भा'न महन ॥ ১॥ বিরহ-জনিত খেদ খুচি' মূখে ফুটে হাসি॥ पिया को ठूक अक कता'र जन **पत्रभन** ॥ २ य रयमन खथा खाँदा रमन त्राम मतमन । স্বার বিপুদ খেদ নিমেষে হরিলা হরি ॥ ৩

এ ভাবে নিমেশ-মাঝে সব-সনে ভগবান্-। এক্সপে সবারে মুখ বিভরণ করি' রাম। কৌশল্যা-আদি মাভা ছটেন ব্যাকুল চিভ। মিলনের ভেদ উমা কেহ নাহি টের পা'ন॥ আগুদার পুরী-পানে হ'ন ভবে গুণধাম॥ ৪ বংস ভরে বংস-হারা গাভী ধায় যেইমভ॥ ৫

| ছ-পর-বশে যথা | চরিতে কাননে | ধে তু যায় ফেলি' বংসে খরে। |
|----------------|-----------------|-----------------------------------|
| ভ্ৰার করি' | দিবা-অবসানে | গৃতে কিরে ত্থ স্তনেতে করে। |
| অভি প্রেম-ভরে | মাভাগণ-সনে | মিলি' বছ মৃত্বচন ক'ন। |
| বিয়োগ-ব্যসন | সব অবসান | স্থধ-সরে এবে মগন মন॥ |
| বে –রামের চরণে | মতি জানি' স্থতে | স্থমিত। মিলেন স্থা |
| রামেরে মিলিতে | मध्बारह खारम | কেকয়ীর স্থাদি হথে ॥ ৬ (ক) |
| মিলেন লক্ষণ | সব জননীর | আশীন ধরি' মাথায়। |
| কৈকেয়ী-পদে | নমি' বারবার | হৃদি-জ্ঞালা নাহি যায়॥ ৬ (খ) |

(5) — স্থানকী মিলেন যত শ্বশ্ধগণের সনে।
কুশল গুধা'রে সবে ক'ন গুভাশিস্বাণী।
রঘুপতি-মুখশশী সবে করে দরশন।
লইয়া কনক থাল আরতি করেন উা'র।
রত্ন ধন নানাবিধ বিলা'ন কত প্রচুর।
কৌশল্যার হু' নয়ন হৃপ্তি নাহিক মানে।
চাহিয়া শ্রীমুখ-পানে অবিরত মনে হয়।
আমার এ ছইজন অতি বড় স্কুকুমার।

তাঁপের চবংগ নমি' অতি অুখ পা'ন মনে ॥
চির সোভাগ্যবতী হও আমি-সোহাগিনী ॥ ১
শুভ-অবদর ভানি' করে আঁথি সম্বরণ ॥
প্রেজুর প্রীঅঙ্গ পানে নিরখে'ন বারবার ॥ ২ ॥
পরম বিলাদ-রদ জনয়েতে ভরপূর ॥
হেরেন ভ্ষিত চ'থে বাববার বাম-পানে ॥ ৩ ॥
কেমনে ফু'জনে করে রাবণেরে পরাজয় ॥
দে রাক্ষদ তুর্জয় অতি বলশালী আরে ॥ ৪

(দা—লন্মণ আর সীতার সহিত পুলকে শরীর বারবার তাঁ'র প্রস্থ-পানে মাডা চা'ন। সুখ-সরে ডুবে প্রাণ॥ ৭

চৌ—লক্ষার অধিপত্তি কপিপত্তি নল নীল।
হন্মনান্ আদি করি' কপি-বীর সব বতঃ
ভা'রা সবে ভরতের ত্যাগ শীল প্রায়েরে।
মোহিত নিরশি' যত নগরবালার রীতি।
তথন স্থারে সব তাকিয়া কাছে শীরান।
ইনি পূজা কুলগুক বলিষ্ঠ মহর্ষিবর।
অংধান মুনিরাজ এঁরা সব স্থা মোর।
জীবন আছ্ডি দিলা আমার হিতের ভরে।
প্রভুর বচন শুনি' সকলে মোদিত মন।

জাখবান্ বালি-স্ত অঙ্গল শুভলীল।
ধারণ করিলা সবে আকার নরের মত।। ১
বর্ণন করে অভি প্রণায়ে আদর ভরে।।
প্রভুর চরণে কত বাধানে তা'দের প্রীতি।। ২
শিধা'ন মুনির পদে করিতে সবে প্রণাম।।
ই'হারি কুপার বলে রগে হত নিশাচর।। ৩
হ'লেন তরণী-সম সমর-সাগরে ঘোর।।
ভরত হ'তেও সবে প্রিয়তর লাগে মোরে।। ৪
এইবিধি পলে পলে নব সুধে নিমগন।। ৫

এীরামচরিত মানস

| বো —কৌশল্যা মাভার | চরণে তখন | করেন সবে প্রণাম। |
|--------------------------|------------|------------------------|
| হরষি' আশীষ | দেন রাম-সম | হও মদ অভিরাম ॥ ৮ (ক) |
| কৃত্বম-বৃষ্টি- | সঙ্কুল নভঃ | গৃহে যা'ন স্থ-কন্দ। |
| গৃহ-চুড়া হ'তে | করে দরশন | পूत-नत्रनातीयन ॥ ৮ (४) |

চৌ—বিচিত্র মণির সাজে সাজা'য়ে সোণার ঘট। যতনে রাখেন সবে নিজনিক বার-ভট । সহিত তোরণ-মালা ক্ষচির পতাকা কেতু। সুরভি সেচন করে নগরের পথে পথে। সজ্জিত চারুপুরী নানা মঙ্গল-সাজে। यथा ज्था नाती करत मिंग सन विजता। সাৰা হৈ আর্ডি হেম-থালে স্থলোচনাগণ। আর্ত্তি-হরণ যিনি ভাঁচার আর্তি করে। নগরীর শোভা যত বিভব কি কল্যাণ। এঁরাও অ-বাক যবে কহিতে গুণ অগাধ।

সালায় ভবন নিজ মঞ্লাচার-হেতু। ১ দেয় বহু আলিপন গল-মোভি দিয়া ভা²ভে ॥ · विश्रुल इत्रव ভत्त विविध वाक्षन वाटक ॥ २ শুভাশিস দান করে হর্ষে হ'য়ে মগন ॥ মঙ্গল-গান গায় পরম পুলক-মন 🛚 ৩ রমুকুল-শতদল-বিশিনের দিনকরে॥ আগম কি শেষ বাণী করিতে নারে বাধান ॥ ৪ **७** थन नदत्र हो । कह किया व्यथनाथ ॥ ६

| দো —অযোধ্যা সরসী | नात्री क्यूपिनी | রামের বিরহ সূর্য্য। |
|-------------------------|-----------------------|----------------------------|
| অস্ত গতে পুন: | কৃটিডেছে হেরি' | রাকেশ রাম-মাধ্ব্য≉ ॥ ৯ (ক) |
| ওড়-গঙ্গ ণ | হয় অগণন | নাগারা বাব্দে আকাশে। |
| নরনারীগণে | সনাপ করিয়া | ভগবান যা'ন বাসে॥ ৯ (খ) |

করিয়া প্রবোধ দান মহা স্থুখী করি' ভাঁয়। কুপাধাম আসিলেন নিজ মন্দিরে যবে।

(চী—হে ভবানি প্রভু জানি' কৈকেয়ী লক্ষিতা। সবাকার আগে তাই গমন করেন তথা ॥ আপন মহলে তবে যা'ন রাম রম্বরায় ॥ ১ পুর-নরনারী মনে অতি স্থুপ পায় তবে ॥

ৰাষের রাজ্যাভিষেক

বিজ সকলেরে ডাকি' তথন বলিষ্ঠ ক'ন। দেহ ত্রাহ্মণগণ হর্ষে অফুশাসন। বশিষ্ঠ মুনির কথা অতি শ্রুতি-সুধকর। তথন বচন মৃত কংহন বিজ অনেক। কাল ক্ষয় নাহি কর এ পরম শুভকালে। मत(है) बाब बाडि शां किया मिन किया करा ॥२ আক্রই কক্রন রাম রাক্ষাসন আরোহণ। প্রবণে মোদিত অতি যত সব বিজ্ঞবর ॥ ৩ ব্দগ-আনন্দ দাতা জীরামের অভিবেক। এখনি ভিগক-জিয়া কর শেষ মহারাজে । ৪

বো-বাজ-গুরু ভবে

সচিবে কছেন বাজি গল-আদি

শুনি' যা'ন প্রীত মন। দ্বার সাজা'য়ে ল'ন ঃ ১০(ক)

चारवाद्या (वन महावद, नावीशन कृष्णिनी, बाद वायहास्त्र विवृश्हे (वन पूर्व); (महे वाम विवृश्यक्त पद्धविक इडेबा बाबहुत्यक्रमी भूर्वप्रत्यव बाबुर्वा (पथिवा खाहादा (दन खाताव विक्रमिक हरें एक्टर ।

চারিদিকে দুত পাঠা'য়ে আনা'য়ে মাঙ্গলিক সমন্য। মুনির চরণময় । ১০(খ) পুলকের ভরে ফিরি' পরশে'ন

(5)—মনোহর সাজে সবে সাজায় কোশলপুরী। জলের প্রপাত-ধারে ঢালে ফুল অম্বরারি॥ ক্রেন জ্রীরাম ভবে ডাকিয়া সেবকগণ। এদিকে-ওদিকে ধায় বাণী ক্ষমি দাসগণ। ডা'র পর ভরতেরে আবাহন করি' হরি। ভকত-বংসল রাম কুপাময় ভা'র পরে। ভরতের ভাগা আর তাঁ'র জদি-কোমলতা। म्बद्धार व्यापन करे। श्रुमित्मन श्रुप्शम। স্নান-শেষে স্থানোভিত হ'লেন ভূষণে সাৰে।

করাও স্থার স্ব আগে স্থান স্মাপন ॥ ১ স্থ্রীবাদিরে দরা করায় অবগাহন ॥ निक करत जां'त कहा मिलन त्याहन कति ॥ २ ভ্রাতা তিনজনে স্থান করা'ন যতন ভরে ॥ শত কোটি শেষ নারে কহিবারে সেই কথা ॥৩ গুরুর আদেশ বাচি' স্নান সমাপেন রাম ॥ তমু-শোভা হেরি' শত অতমু মূরছে লাজে॥ ৪

| বো—খঙ্গা রা আদরে | ল'য়ে জানকীরে | স্নান করাইয়া খরা। |
|-------------------------|---------------|---------------------------|
| সাজা'ন দিব্য | বসন ভূষণে | প্রতি অংশ মনোহরা ॥ ১১(ক) |
| শ্রীরামের বামে | শোভেন অপার | রমা রূপ- গুণখ নি। |
| হেরি' মাতাগণ | হরবে মগন | জনম সকল জানি' ॥ ১১(খ) |
| শুন প্রারাজ | এই অবসরে | निव विधि भूनिवृन्म । |
| আরোহি' বিমান | আসে দেবগণ | হেরিবারে স্থ-কন্দ ॥ ১১(গ) |

চৌ-প্রভুরে নির্ধি ভবে অনুরাগে মূনি-মন। করা'ন ছরিত দিব্য রাজাসন আনয়ন। রবি-সম ভেজ ভা'র বর্ণিতে ভাষা হারে। क्षनक-ष्टृष्टिला जरन द्वारम क्रि प्रतमन। (यममञ्ज উচ্চারণ করে विक नमुनाय। विश्रि पिलान निष्क क्षथम जिनक-मान। প্রাণের তুলালে হেরি' অতি স্থা মন মা'র। विविध विधारन मान विकाश अमानिना। রাজ-সিংহাসন 'পরে হেরি' ত্রিভূবন-পতি।

প্রীরাম বসেন ভাহে ছিলেরে প্রণতি ক'রে॥ ১ অভীব মগন-মন যত সব মুনিগণ ॥ জয়তি জয়তি জয় নভে: সুর মুনি গা'র ॥ ২ আদেশ সভিয়া পরে বিপ্রগণ আগুয়ান। প্রেম-স্থাথ বারবার আর্ডি করেন **তাঁ**'র ॥ ৩ याहकशार्गात हित्र-व्ययाहक क्रताहेगा । বাজা'ন নাগারা সবে অমর হরব-মডি # 8

| ড়—নভেঃ হৃন্দুভি | বাজি'ছে বিপুল | ত্রিদিব-গারক গাহি'ছে গান। |
|------------------|-------------------|-------------------------------|
| অকারা নাচে | পরমান ন্দে | মজ্জিত মূনি দেবতা-প্রাণ। |
| বিভীষণ হতু | কপিগণ যত | ভরতাদি রাম-অ মুক্ তয়। |
| বিরাজেন ধরি' | চামর ছত্র | ব্যক্ষনী কুপাণ আয়ুধ্চয় 🕽 🤇 |
| রমা সনে রবি- | বংশ-ভূষণ | বছ কাম-সম শোভা অমুপ। |
| 22 9842- | वदन कार्य | শীভবাদে ভব-কুলান' রূপ 🛚 |

শ্ৰীরাষচরিত মানস

| মুকুটাঙ্গদ | ভূষণ কতই | প্রতি অঙ্গে মরি কি শোভা হায়। |
|------------------------------------|----------------|-------------------------------|
| অস্তোজ-আঁথি≉ | বিশাল বকঃ | ভূজ ধশ্য যেবাদরশ পায়। ২ |
| দো দে শোভা সমা ৰ | আর সেই সুধ | খগেশ কহা না যায়। |
| শ্ৰুতি শেষ বাণী | বাধানে সে রস | মহেশ জানেন তা'য় 🛭 ১২(ক) |
| | চারিবেদের গুৰ | |
| পৃথক্ পৃথক্ | শ্বতি করি' দেব | যান নিজ নিজ ধাম। |
| | | আগত যথা শ্রীরাম ॥ ১২(খ) |
| চারি বেদ ভবে | চারণৈর বেশে | |
| দৰ্ব-জ্ঞানী প্ৰভূ | করিলেন অডি | আদর কুপানিদান। |
| কেহ না ব্ৰিল | মরম ইহার | আরম্ভিল গুণ-গান 🛙 ১২ (গ) |
| ছ—অহুপম রূপ | ভূপ-শিরোমণি | স-গুণ অ-গুণ স্বরূপ জয়। |
| দশ-শির আদি - | খল নিশাচর | ভুক্কবলে তুমি করিলে জয় ! |
| নর-অবভার | সংসার-ভার | ভঞ্জিয়া তৃথ করিলে ভস্ম। |
| হে প্রণত-পাল | জয় হে কুপাল | শক্তির সহ তুমি নমস্ত॥ ১ |
| ভোমারি মায়ায় | নর সমুদায় | স্রাম্র নর অচর চর। |
| খুরে দিনে রাতে | খোর ভব-পথে | ক্রিয়া কাল গুণে করিয়া ভর । |
| কুপা-আঁখিপাত | কর' যা'রে নাথ | ছংখ ত্রিবিধ হ'তে সে ভরে। |
| রক্ষ ভব-পাশ- | (इनन-मन्क | প্রণতি ভোমার চরণ 'পরে 🛚 ২ |
| জ্ঞান-মদে যেবা | হ'য়ে প্ৰমন্ত | পরা-ভক্তি তব ঠেলে হেলায়। |
| দেব-হল্ল'ভ | লাভয়াও পদ | দেশ। যায় চ্যুত ছইতে তা'য়। |
| ড) জি ' সব আশ | হ'য়ে তব দাস | যেবা রছে আশ ডোমায় করি'। |
| ভৱে বিনাশ্রম | জপি' ভব নাম | এমন ভোমারে প্রণাম করি।। ৩ |
| পূজ্য শিব অজ | বে চরণ-রজ | যা' পরশি' ভরে মুনির নারী। |
| या'त्र नथ इ'८७ | निक्ति सनम | মূনি-বন্দিভা পাবন বারি॥ |
| ধ্বজ্বজাকুশ- | ক মল-অহ | ষে পদে বিপিনে কীলক সূটে। |
| যে চরণযুগে | হে রমেশ রাম | এ মানস-অলি সভত লুটে # ৪ |
| বাক্যাতীতণ-মূল | অনাদি পাদপ | पक् ठादिए (उन चानम क्यू । |
| ক্ষ ছয়§ শাখা | পঞ্চ-বিশ বছ | ঘন পল্লব কৃত্বসময়॥ |
| ভিক্ত মধুর | ছই কণা ডা'হে | বলনী এক জড়া'য়ে রহে। |
| প্লবিত নব | পুষ্পিত নিত | সংসার-ক্রম ¶ প্রেণমামহে ॥ ৫ |
| | | |

পছচকু। বিষয়ক ; আছেতি। ই চাহিবেছ। ই বছ্ছপন। ই পাপ ও পুরা। বি মলোব-বুকরণী বিষয়প।

হৈছতীন মন-অতীত ব্ৰহ্ম অমুভব-জের অঙ্গে যে বল। বলুক ডেমনি যেমন সে জানে অমিড' হে গা'ব সগুণ-যশ 🛭 কক্লপার ধনি প্রভু গুণাকর এই বর দাস চরণে চায়। কায় বাক মন বিকার ভ্যঞ্জিয়া অসুরাগ যেন পদেই রয় ॥ ৬ ठातिर्यम এই উদার মিনতি করি'। দো-স্বার স্কালে ব্রহ্মলোক-সরাসরি । ১৩(क) অন্তর হ'য়ে করিলা প্রয়াণ শুন বিহুগেশ মহেশ ভধন আদি' জীরামের পাল। করিলেন স্তব পুলক-শরীর প্রেম-গদগদ ভাষ ॥ ১৩(৭)

महारमध्वत्र त्राम-खब

ভব-তাপ-ভয়াকুল ত্রাহি খনং। **তি—জ**য় রাম রমা-রমণং শমনং। শরণাগত প্রার্থিত ত্রাহি প্রস্তু॥ ১ অবধেশ সুরেশ রমেশ বিভু। प्रभागीय-विभागन विश्मवाद्य । অপদারক মহা মহী-ছঃখ-রাছ 🛭 ब्र**क्षनी**हत्र-निकत्र-প**ष्ठत्र क्षां**त्रि'। শর দীপ্ত হুতাশনে দশ্ধকারী। ২ মহীমণ্ডল-বিভূষণ চাক্রতর। ধুত শায়ক চাপ নিয়ঙ্গবর ॥ তম পুঞ্জে দিবাকর-ডেজ-অনী॥ ৩ মদ মোহ-মহা-মমভা-রজনী। गुग-लाक-श्रम्पय शिनि' निभाष करत् ॥ মন-জাভ কিরাত কুভোগ-শরে। যত পামর বিষয়-বন-ভ্রান্ত কনে ॥ ৪ বধি' নাথ রাধহ দেব অনাথগণে। বস্থ রোগ বিয়োগ-তুপগ্রস্ত রহে। **७व চরণ-নিরাদর-শাস্তি সহে ॥** ভব-সিন্ধু অতল মাঝে মহুজ পড়ে भम भक्रक (श्रेम ना (य कां**डारत ॥ ६** অতি দীন মশিন নিত ছংখে মরে। নাহি প্রীতি যাহার পদ-সরোজ 'পরে ॥ প্রিয় সাধু পরম-ঈশ ডা'র সকনে 🛚 🖢 অবলম্ব ভোমার কথা যা'র জীবনে। মদ রাগ লোভ কি মান বাকে না কদা। সম বিপদ বিভব-মুখ ভাহার সদা # মুনি ডুবেন সেবার নিত স্থধ-সর্সে॥ ৭ যোগ-ভরদা ভালিয়া ভাই মন-হর্ষে। ধরি' প্রেম নিরম্ভর নিয়ম ক'রে। পদ-পদ্ম সেবেন সদা শুদ্ধিভরে 🛭 সব সন্ত ভামেন মহী ফুল প্রোণে॥ ৮ গণি' আদর নিরাদর সমান মনে। মুনি-মানগ-কমল-অলি ভোমারে ভলি। রঘুনায়ক সমর-ধীর অক্ষেরে পুলি। ছপি ও নাম তোমার নমি ডোমারে হরি। মহা জন্ম-মরণ-রোগ মান-অরি॥ ৯ ভূমি স্থ-গুণ বিনয় কুপা পরম নিধান। আমি প্রণমি ভোমারে নিত 💐 নভিরাম। আঁখি-কোশায় ভূপতি হের এ দীনজনে॥১০ त्रवू-नन्य नि-मूर्ग कत्र पन्य पत्न । স-প্রীতি দেহ 🗐রজ। যাচি হে চরণে দো—বারবার বর मना माधूकन-मन । >8 (क) ৰচলা ভক্তি ७ भग-गावात

বাধানি' মহেশ রাম-গুণাবলী হুৰে কৈলাশ যা'ন। প্ৰভু ভবে কপি-গণেরে করা'ন স্থ-ভরা বাস দান । ১৪ (খ)

চৌ--হে বিহগরাজ শুন স্থ-পাবন এই কথা। নাশ করে ভিন ভাপ জন্ম-মরণ-ব্যথা। ক্তনি' কল্যাণময় গাথা-রাম-অভিষেক। স্থির লাভ করে নরে বিরাগ তথা বিবেক ॥ ১ কামনার ভাব ল'যে যেবা ওনে যেবা গা'য়। সুখ সমূদ সেইখন নানা ভাঁতি পায়। দেব-ত্রন্থ সুখ হেপা করি' উপভোগ। শেষে গিয়া বাস করে শ্রীরঘুপডির লোক 🛚 ২ যেবা ওনে কি বিষয়ী মুক্ত জীব কি উদাসী। মুক্তি ভক্তি পায় নবীন বিভব রাশি। কহিলাম রাম-কণা যেইমত নিজ জ্ঞান। জন্ম মরণ ভয় ত্থ যাহা করে ত্রাণ। ৩ বিরাগ বিবেক আর ভক্তিরে দৃঢ় করে। এ ভরণী যোগে মোহ-নদীতে মানব ভরে॥ কোশলপুরীতে নিত্য নব সমারোহ হয়। জনগণ সব বিধি হর্ষিত প্রাণে রয় ॥ ৪ প্রণত যে বাঙা পায় সদাশিব মুনি অজে ! নিত্য নব অমুরাগ রাম-পদ-পদ্ধদে। যাচকে লভিল বহু আভরণ ও বসন। दिनिध व्यकात मान मरछन कु-यूत्रश्रा । व

বানরগণ ও শুহককে বিদায় দান

(দা-বন্ধ-সুথে লীন প্রভুর চরণে মন। বানর সকল জানে না কেমনে দিন কেটে'যায় বর্ষ-আধ গেল হেন। ১৫

(5)--विष्यु शृह-कथा अश्रत्म नाहि मत्न । श्रत-हानि-कथा यथा नाहि शाधु-मन क्लार ॥ ডাকা'ন ঐীরঘুনাথ খেষে স্থা সকলেরে। পরম শ্রীতির মনে বসা'ন কাছে আপন। ভোমরা সকলে যত করিলে সেবা আমার। করিলে আমার তরে গৃহ-সুধ বর্জন। রাজ্য অনুজগণ কি জানকী কি বিভব। ভোমাদের সম প্রিয় কিছুই নাহিক মম। সবারি সেবক বিশ্র এ রীতি জগতময়।

আসিয়া আদর ভরে চরণে প্রণাম করে ॥ ১ ভকত-মুখদ মৃত্ভাষে মধু-কথা ক'ন ॥ সমুখে কেমনে করি মহিমা বাখান ভা'র ॥ ২ ভোমা-সবে প্রিয় অতি লাগে মোর সে কারণ **ঃ** আপন শরীর ধাম কুটুম্ব স্থা যেসব॥ ৩ প্রকৃত এ কথা সভ্য নাহি করি অভিক্রম । মোর ভ' দাসের 'পরে শ্রীভি নিরভিশয় ॥ ৪

গৃহে ফিরে' যাও (ए)-- मथागण मत्व দুঢ়-ব্ৰডে ভব্ধ মোরে। সৰ্ব্ব-হিত জানি' সর্ব-গভ সদ। বেঁধ' মহা প্রেম-ডোরে ॥ ১৬

(5)—শুনিয়া প্রভুর বাণী প্রেমে ভাসে সব জন। কে আমি আছি বা কোথা দেহ-জ্ঞান বিশারণ। পলক না পড়ে চ'বে করজোড়ে রহে আগে। কহিছে না আগে বাণী অভি-প্রেম অমুরাগে ॥ ১ ভা'দের পরম গ্রীতি করি' গ্রভু দরশন। করিলেন অমুভব-জ্ঞান বহু বর্ণন 🛭 প্রভুর সমূপে কিবা কহিবে নাহিক জানে। বারবার চাহে ওধু কমল-চরণ পানে ৷ ২

७१न जाना'न প্রভু বেশ ভূষা ফুন্দর। প্রথমেই স্থগ্রীবে ভরত আপন করে। প্রভুর প্রেরণাবশে বিভীবণে লক্ষণ। व्यक्तम निकामत्न विमिश्ना व्यवन-श्राय ।

नाना दर नानाविध अञ्चलम महनाइद ॥ रमन कृरण यात्र माका'न व्यक्तिकार ॥ 8 नाका'न नित्रथि' कृद र'न खैतारपत मन॥ অফুরাগ হেরি' ডা'রে না ডাকেন রম্বরায় ঃ ৪

| (मी-नीन बाद्यान् | আদি সকলেরে | সাজা'লেন রঘুবীর । |
|------------------|------------------|-------------------------|
| রাম-ক্লপ হৃদে | রাখিয়া চলিল | চরণে নমিয়া শির॥ ১৭ (क) |
| অঙ্গদ ভবে | ্ উঠিয়া প্রণমি' | জ্বোড় করি' পাশিষয়। |
| অভি বিনম্ৰ | ক্ৰেম-মাৰা বাণী | সম্বল নয়নে কয়॥ ১৭ (খ) |

চৌ—শুন হে সর্বজ মহা কুণা-মুখনিকু। व्यामात्र व्यनक वानि (माद्र शत्रमाचान । অনাথ শবণ ওহে ভকতের হিতকারি ৷ বল' মহারাজ বল' ভূমিই বিচার করি'। হে নাথ বালক আমি জ্ঞান মতি বল হীন। নীচ হ'তে নীচ সেব। করিব প্রহের যত।

मीनव्यत्न मग्रामग्र व्या**र्छत वक्**ष মরণে ভোমারি কোলে ক'রেছেন অর্পণ # > আমারে ঠেলো'না পায়ে আপনার পণ শ্বরি'॥ তুমি শুকু পিতা মাতা তুমিই আমার স্বামী। ও পদ-কমল ছাড়ি কোথা আর যা'ব আমি॥২ গৃহে মোর কিবা কাজ প্রভু ভোমা পরিহরি^{*}। রাথ হে শরণে তব ডোমার সেবক দীন 🛚 🛎 নির্ধি' কমল-পদ হ'ব ভব-উভরিত। হে প্রস্থৃ রাধহ মোরে যাইতে ব'লো না ঘরে। এ বলি' পড়িল গিয়া রামের চরণ 'পরে ॥ ৪

| দো—শুনি' অঙ্গদ- | বিনীত বচন |
|-----------------|-----------------|
| উঠাইয়া প্রভূ | स्टत्रन काम्ट्र |
| নিজ গল-হার | রভন ভূষণে |
| দিলেন বিদায় | শেষে ভগবান্ |

কুপা-সীম। রখুনাথ। সঞ্জল নয়ন-পাত॥ ১৮ (ক) সাজা'ন বালির স্থতে। বুঝাইয়া নানা মতে ॥ ১৮ (খ)

(b)-छत्र वन्त्र चति-शृपत वहेश गार्थ। অঙ্গদ-হূদে ভরা ভক্তি সামাক্ত নয়। रात वात पर मम मुठारिय व्यवाम करत । রামের চাহনি-ভঙ্গি চলন কথা-ভঙ্গিমা। চাহিয়া জীরাম-পানে অনেক মিনতি করি'। অভীব আদরে সব বানরে বিদায় ক'রে। ভারে পর হয়ুমান ধরি' স্থাীব-পায়। मिय आदा मिन मम त्यवि शम त्रधुशि । পুণ্য-निमन्न रस् পবন-ডনর তৃমি। এন্ড বলি' চলে সব বানর স্বরিভ গভি।

ভকতের সেবা শ্বরি' চলেন বিদায় দিতে ॥ ফিরে' ফিরে' বারবার 🕮রামের পানে চার 🛊 ১ মন যেন চায় রাম থাকিতে বলেন ভা'রে॥ সহাস মিলন-রীতি 'অরি' নাহি ছখ-সীমা॥ ২ हिन्न कार्य मार्च कमन-हत्र श्रवि ॥ ভরত অমুক্ত সনে আবার আসেন কিরে⁹॥ ৩ মিনতি অনেক রীতি প্রকাশ করিল ডা'য় ৷ ভোমার চরণ তলে আবার করিব গভি ॥ ৪ যাও দেবা কর রাম কুপাধাম গুণমণি 🛭 অলদ ভবে এই বলে হয়ুমান-প্রতি। ৫

| দো—শুন হনুমান্ | করছোড়ে কই | দশুবৎ 🏙 রামেরে। |
|----------------|--------------|----------------------------|
| ভানা'য়ে। আমার | উা'রে বারবার | শ্বরণ করা সে। মোরে॥ ১৯ (ক) |
| এড় বলি' চলে | বালির তনর | আসি' কিরে' হনুমান্। |
| প্ৰভূ-পাশে বলে | ভা'র অনুরাগ | প্রেম-মপ্ত ভগবান্ ॥ ১৯ (খ) |
| কঠোর কুলিশ | হ'তে রাম-চিড | কোমল কুন্থম হ'তে। |
| বল' পগরাক | কাহার শক্তি | এ লীলার ভল পে'ছে॥ ১৯ (গ) |

টো—অবশেষে কুপাময় ডাকিয়া নিযাদরাক। প্রীভিন্তরে করিলেন প্রদান বসন সাক্ত । গ্রহে যাও রহ মোর শ্বরণেতে নিমগন। ভরত-সমান তুমি ভাই মণ তুমি সধা। এ का कि वार के शिक्ष के के विशेष নিলন-চরণ হৃদে রাখি' গুহ গুহে যায়। প্রভূ-আচরণ কথা ওনি' কাণে পুরবাসী।

কায় বাক মন সনে ধর্ম কর আচরণ॥ ১ এ পুরীতে যাভায়াত রাখিয়া করিও দেখা।। নয়ন ছাপিয়া পড়ে চরণ-উপরে বারি ॥ ২ প্রভুর চরিত-কথা পরিজন-পাশে গায়॥ বারবার বলে ধন্য ধন্ত রাম সুধ্রাশি॥ ৩

वाध-वाका-वर्धम

রাম রাজ-অভিষেক শেষ হ'লে তিন লোক। বিরোধ নাহিক করে কেহ আর কা'রো সনে।

> বরণান্তসরি' অপগত ভয়

বিলাসে পুরিভ হ'ল বিদূরিভ সব শোক। ভেদ-ভাব দুরে গেল রামের প্রতাপ-গুণে ॥ ৪

> বেদবিধি-রভ লোক। নাহি রোগ নাহি শোক॥২॰

চৌ—দৈহিক দৈবিকণ ভৌতিক# তাপ তিন। রাম-রাজ্য-মাঝে কা'রো নাহি লাগে কোনদিন ॥ সকল মানবে করে এ উহার সনে প্রীতি। পূর্ব চারি ধর্ম-পদ সভ্য শৌচ দয়া দান। রাম-ভক্তিতে রভ যত সব নরনারী। অকাল মরণ নাহি নাহিক পীড়ার ভোগ। কাঙাল নাহিক কেহ নাহি কেহ তুৰী দীন। দম্ভ রহিত সবে পুত-প্রাণ ধর্মরত। গুণজ্ঞ পণ্ডিত সবে সবাই তথায় জ্ঞানী।

স্ব-ধরম রভ হ'য়ে চলে মানি' বেদ-নীতি॥ ১ স্বপনেও জগমাঝে নাহিক পাপের নাম॥ সকলেই পরাগতি পাইবার অধিকারী॥ ২ সবে कुन्मत्रकाग्र मतीत्र विशेन दाश ॥ মূর্থ নাহিক কোনো ওছ-লক্ষণহীন॥ ৩ নরনারী সকলেই স্থচতুর গুণ-যুত। নাহি কৃতম্বতা নাহি ধুর্ততা-ভরা প্রাণী॥ 8

(पा-नडर्गम अन

দো-নিজ আশ্রম

मना स्ट्रांच त्रग्र

রাম-রাজ মাঝে

চরাচর জগময়।

কৰ্ম কাল কিবা

স্বভাবৰ গুণ

ष्ट्य का'रवा नाहि वय । २>

চৌ-সন্ত-সাগর যা'র মেধলা এছেন কিজি। এক-ছত্র রাজা ভা'র গুণাগার রমুপতি। তাঁ'র এ প্রভাপ কিছু নহেক নির্ভিশয় ॥ ১ কডই ভূবন বাঁ'র প্রতি লোমকুপে রয়।

[•] শাৰীৰিক। † দেবভাৰ কুড়। 🕽 প্ৰাকুভিক।

অপার মতিমা জাঁ'র বলি জনে গাঁথা রয়। তথাপি খলেদ যেবা জানিল মহিমা তাঁর। ইল্রিয়-রোধকারী ক'ন মহামনি সব। যে বিভব আর যত ত্রপ রাম-রাজ্যে রয়। সকলে উদার আর সবে পর-উপকারী। এক জায়ারত নর তেমতি সব বনিতা।

তেন বিষয়ণে ভবে চীনভাই কয়া হয়॥ মহাপ্রেমে প্রাণ ডা'র ডিজা থাকে অনিবার । ২ মহিমা জানিলে ভবে হয় লীলা অনুভব # বাস্থুকি কি বীণাপাণি কহিতে পারগ নয় 🛚 ৩ বিপ্র-চরণে মতি যত সব নরনারী ॥ কায় বাক মনে নিজ পতি-ছিত-আচরিতা ॥ ৪

বো-নাহি অরি নাহি দণ্ড যত্তি-করে

অপরাথী তথা নট-পাশে ভেদ অমুকুল সবে রয়। মনের জয়েতে কয় । ২২

পশু পাৰী পাশরিয়া হল্ম প্রকৃতিগত। মধুরে কৃজনে পাখী পশুগণ নানাজাতি। শীতল সুর্ভি বার বহে সদা মৃত্যুদ্দ। বিটপী লভিকা হ'তে চাহিতেই মধ ঋরে। শক্তে পরিত ধরা হিত প্রতি নিয়ত। জগদাত্মা ভগবান জগতের ভূপ জানি'। শীতল সধার স্বাদ পরাণ শীতলকারী। সাগর রহিত নিত নিজ মর্যাদা ভরে। কমলে কমলে ভরা যত সব জলাশয়।

(5)—বিউপী কানন ভরা ফলে ফুলে বার' মাস। কেশরীর সনে করী প্রীভিভরে করে বাস। এ উহার সনে থাকে পরম প্রণয় যুত।। ১ সকলে বিগত-ভয় বিচরে পুলকে মাতি'॥ গুলুরি' চলে অলি আংরিয়া মকরন্দ ॥ ২ রসনার তপ্তিকর পয়: দান ধেমু করে। রেভায় হটল যেন সভা প্রতি-আগত ॥ ৩ প্রকাশ করিল গিরি বিবিধ মণির খনি ॥ বহিত সকল নদী প্রবিমল বর-বারি॥ ৪ রতন ছড়া'ত তটে নরে আহরণ ভরে॥ সকল বিদিক দিক মোদিত নির্ভিশয়। ৫

ভো—বিধু ভরে ধরা যাচিতে জলদ

ময়ুখে তপন অমনি বরুষে

প্রয়োজন মত ভাপ। <u>শীরখনাথ প্রতাপ ॥ ২০</u>

(5)—কোটি অখনেধ প্রভু করিলেন সমাপন। আশার অভীত ধন লভিলেন দ্বিজগণ ॥ (वम-भथ त्रकाकाती धर्मात ध्रक्कत ।

গুণের অভীত আর ভোগে সম পুরন্দর॥ ১

সীভার রাম-দেবা

পতিপদ-অমুগামী অভি কুকুমারী সীতা। বিদিতা করণানিধি 🕮 রাম-মহিমা যত।

বিমল কেমের খনি সুশীলা অতি বিনীতা॥ সেবেন চরণযুগ প্রাণ মনে অবিরভ ॥ ২

[🍨] ৰাজ্য পালনে সাম, লান, ভেল ও লও এই চারি প্রকার নীতি অবলখিত হইয়া থাকে। 🌣 ভাষ-বাজ্যে चांव चनवांबोरक वर्ध विरष्ठ व्य जां, कांवा अवन "वक्ती"व (अहांजीव) वार्क निवा केंद्रेवारकः नवरनहे चयुक्त, ভাই ভেৰ-ভাৰ উঠিয়া গিয়া এখন ভাষা নতিক-সনাজে (সময়, ভেৰ, অৰ্থাৎ ভাল-বাধাৰ) সীমাৰত ছইয়াছে ; আৰু ভৰ कविराय गत्म नारे, कारे अपन बनार बच करारे अक्यात कांच ।

বদিও সম্ভত গৃহ সেবক-দাসীতে ভরা। ভবু নিম্ম করে করি' গৃহ-সেবা সমাপন। কুপানিধি-মনোমাঝে যাহাতে হরব আসে। (कामल-इंडिज-आिन खरन बाक्जीशरन। শিব ক'ন মহাদেবি ধাতাদি পুঞ্জিতা রমা।

সববিধি সেবা-কাজে সদা অনিপুণ তা'রা 🛔 শ্রীরাম-আদেশ সীতা করেন অন্তসরণ। ৩ সেবা-বিচক্ষণা শ্রীর ভাহাতেই মন বাসে। সেবেন স্বারে কিছু মদ মান নাতি মনে॥ ৪ জগত-জননী সদা অনবভা অনুপ্রাঃ ৫

(मा-वां द क्रा-वां वि-সে-সভাব তাজি'

লালায়িত দেব রহেন চাহিয়া

নিমেষ-তরে না পা'ন। রাম-পদে অবিরাম ৷ ১৪

চৌ—অমুকৃল অমুক্তাতগণ সেবা-পরায়ণ। কখন কুপাল কা'রে করেন আদেশ কিবা। রামের হৃদয় মাঝে অমুক-উপরে প্রীতি। পুলক-মগন যত রহে সব পুরবাসী। मियानिम विधि-शास्त्र व्यार्थना करत वत ।

শ্রীরাম-চরণযুগে রত স্বাকার মন ॥ এ আশায় মুধ পা'নে চেয়ে র'ন নিশিদিবা ॥ ১ নিয়ত কডই মতে শিখা'ন তাঁ'দের নীতি ॥ উপভোগ করে স্থর-ছন্নভ ভোগরাশি ॥ ২ থাকে যেন অন্তরাগ জ্রীরাম-চরণ 'পর ॥

সন্তান-জন্ম; অবোধ্যার রমণীরভা

লব-কুল স্থকুমাব কুমার জানকী পা'ন। ছ'য়ে অগ্রাগণ্য বীর বিনয়ী স্থ-গুণাকর। প্রতি ভাই লভিলেন হুইছুই সুকুমার।

যাঁ'দের চরিত করে বেদ পুরাণেতে গান ॥ ৩ যেন শ্রীহরির ছুই প্রতিরূপ মনোহর। তাঁরাও সকলে শীল গুণ আর রূপাধার॥ ৪

দো-জান মতি বাণী সৎ চিৎ শ্ৰথ-

ইম্প্রিয়াতীত ঘন বিভু উা'র

অ-জ মন গুণ পা'র। মানব-লীলা অপার॥ ২৫

(5)—সর্যু-ধলিলে করি' প্রভাতে অবগাহন। সভায় বসেন রাম সহ বিজ সাধুজন ॥ (वन भूतांगानि-कथा क'न मुनिभुक्रव। ভোজন করেন সব অনুজগণের সনে। অমুদ্ধ ভরত রিপু-সুদন দোঁতে মিলিয়া। বসিয়া শুধা'ন রাম-গুণ কথা প্রাণারাম। ওনিয়া বিমল গুণ অতি স্থাধে নিমগ্ন। সবারি আলয়ে হয় পুরাণাদি কীর্ত্তিত। সকল রমণী নর রাম-গুণই গান করে।

ওনেন শ্রীরাম তাহা যদিও জানেন সব। ১ নির্বিয়া ভরে স্থ জননীগণের মনে ॥ সহিত প্রন-মৃত উপ্রন মাঝে গিয়া 🛚 ২ সুমতি-সলিলে ডুব দিয়া কহে হয়ুমান । করা'ন মিনতি করি' বারবার কীর্ত্তন ॥ ৩ অথবা অনেক বিধি জীৱাম-কথা পুণিত # নাহি জানে দিন রাত অতীত কেমন ক'রে॥ ৪

বো—শত শেষ হারে বিরাজিত যথা

কহিছে প্রজার নিজে ভগবান

সম্পদ স্থধ-গ্রাম। নুপতির রূপে রাম । ২৬ (5)--नात्रम अमक-आपि भूनि-अधिशिष्णा । অভিদিন সমাগত সকলে কোনলপুরী। মণি হেমময় যত প্রাসাদ মানসহরা। भूतौ-कोमिरक विशः शकु चकि मरनाश्त । নয় গ্রহ একযোগে সাঞ্চা'য়ে বাহিনীচয়। রভনের বন্ত চাক্র চন্দর পথ-মাঝে। थवन প্রাসাদ-চূড়া অম্বরে যায় মিশি'। মণিতে খচিত বস্তু বাডায়ন শোভা পায়।

কোশল-অধিপ রামে করিবারে দরশন ম विजाग जुलिया या'न निज्ञिया तम नगजी । > কিবা চছর ঢালু বিধিধ রঙ্গভরা। ভাহাতে রচিত চুড়া রঙ্গ রঞ্গ বর ॥ ২ অমরাবভীরে যেন চারিদিকে ঘিরে' রয় ॥ নির্থিয়া যা'র শোভা মুনির মানস নাচে ॥ ৩ কলস-আভায় যেন নিন্দি'ছে রবিশশী॥ বরেষরে মণিময় প্রদীপ শোভা বাড়ায় ॥ ৪

ছ--চিত্রশালা চাক্র 🗃 রাম-চরিত

প্রত্যেক গৃহে या' निव्रिषि' मनि- আঁকা আছে দেসবায়। মানস(৩) হারা'য়ে যায় ॥ ২৭

(5)—কু থুম-বাটিকা চারু নিজনিজ ঘরে ঘরে। রচিল কডই বিধ অভীব যতন ভরে॥ ললিত লতিকা বচ্চ জাতির মানসহর। মধকর মনোহর রবে করে আলাপন। বালকেরা পালে কভ বিহঙ্গ নানাজাতি। মরাল সারস শিখী-আদি করি' পারাবত। যথায় তথায় হেরি' প্রতিক্রপ আপনার। শুক ও শারিকা দলে শিখায় যত বালক। নুপতি-দুয়ার তথা সববিধি মনোহর।

মধুঋতু-সম শোভা দেয় অতি স্থুম্পর । ১ শীতল সুর্ভি মৃত্ বহে সদা সমীরণ। কিবা শোভা করি' উড়ে কুঙ্গে শ্বমধুর অভি॥২ ভবন-উপরে থাকি' বাড়ায় বা শোভা কত # সুমধুর করে কৃষ্ণে নাচে ভা'রা কভ আর॥ ৩ বল' রাম রঘুপতি সকল জন-পালক ॥ বীপি কি বিপণি চারু চৌমাপা স্থানর ॥ ৪

| ছ—াবপাণ ক্লাচর | वज्ञान ना वाग्र |
|-----------------------|-----------------|
| নুপতি ষ্ণায়- | 🕮 রমা-নিবাস |
| বদন-অর্থ- | বণিক কডই |
| किया नव नावी | বৃদ্ধ বালক |
| দো—উত্ত র দিকে | সরযু বহিছে |
| নিশ্মিত ঘাট | তথা মনোহর |

विना-मूल उथा विकाश भना। কে ক'বে বিভব কভ যে ধগ্য ॥ कृरवरत्रत्र व्याग्र विभूल-विश्व। श्रुम्पत्र श्रुची मध्दत्रित ॥ বিমল-জল গভীর। প্ত-বিহীন ভীর ॥ ১৮

(5)- পুরেতে পৃথক এক ঘাট ছিল অধিষ্ঠান। জল-আহরণে নানা ছিল ঘাট মনোরম। রাজ-ঘাট সব হ'তে শ্রেষ্ঠ ও মনোহর। ভটিনীর কুলে কুলে মন্দির অগণন। কোথাও নদীর তীরে অগত গৃহ-উদাস। তুলসী গণনাহীন সংযুৱ ভীরে ভীরে।

গল-বাজিদল কল করিত তথায় পান # স্নান তথা না করিত পুরীর পুরুষগণ॥ ১ ব্যবহার করিত হা' সব-বর্ণের নর । ঘেরি' তা'র চারিদিক সুন্দর উপবন॥ ২ छान-পরায়ণ মুনি উদাসী করেন বাস ॥ রোপণ করিলা যাহা কড শভ মুনিবরে ॥ ৩ নগরীর শোভা কিছু নাহি আর কহিবার। পুরী-দরশনে হয় অধিল পাপের কয়। নগর-উপাস্ত-শোভা ভাহারে। অতি বাহার। বন উপবন আর বাপীডট জ্বলাশর। ৪

| ছ—অমুপম বাপী | তড়াগ অমূপ | মনোহর কৃপ বিশালায়তম। |
|--------------------------|------------------|----------------------------|
| সোপানের সারি | স্থবিমল বারি | হেরি' স্থর মুনি বিমোহে মন। |
| বিবিধ বরণ | সর <i>সিজ</i> গণ | মধুপ গুলে পাৰীরা হাঁকে। |
| চাক্ল উপবনে | কোকিল-কৃজন | পথিকেরে যেন আদরে ডাকে । |
| দো – যথা রমাপত্তি | নৃপতি দে পুরী | কণ্ডন কন্তু কি যায়। |
| অণিমাদি সূপ- | मञ्जान मना | কোশলেতে রহে ছা'য়॥২৯ |

চৌ—যথায় তথায় নর রঘুণতি-গুণ গায়।
ভক্ত প্রণত-পাল রঘুকুলপতি রাম।
দেই সরসিজ-আঁথি শ্রাম ব লেবরধারী।
ধৃত শর স্থানর কার্মুক আর তুণ।
কাল-করাল ব্যাল-কাল সে ধংগাশেরেও।
লোভ মোহ-মুগদল-কিরাতে কর প্রণাম।
সংশয় শোক-রূপ নিবিড় ডমের ভায়ু।
জনক-মুতার সনে ভবভয়-ভঞ্জন।
মনের বাসনা বহু নাশকারী হিমরাশি।
মুনিমন-রঞ্জন গঞ্জন মহীভারে।

ব'সে ব'সে এ উহারে এক শুধু এ শিথার ॥
সেই এক রূপ শীল শোভাধার গুণধান ॥ ১
পলক-দিঠিতে সেই ভকতের ত্রাণকারী ॥
সন্ত-কমল-রবি ধীর রণ-স্নিপুণ ॥ ॥ ২
অকাম-প্রণামে শুধু মমতা যেজন হরে ॥
মনসিজ্প-করী হরি ভকতের প্রাণারামণ ॥ ৩
দম্জ্প-গহন খন-দহনকারী কৃশাদ্ধঃ ॥
শীরাম-চরণতলে কেন না সঁপহ মন ॥ ৪
সভত যে এক রস অ-জনম অবিনাশী ॥
তুলসী দাসের প্রভু মহান অতি উদারে ॥ ৫

দৌ—এইমত যত অনুস্কুল র'ন পুর-নরনারী সবাকার 'পরে করে রাম-গুণ গান। শ্রীরাম কুপানিধান॥ ৩০

(চ)— যখন হইছে রাম-প্রভাপ-বিহগরব।

তবে হ'তে সে প্রভাপ প্রকাশে ত্রিলোকময়।
পে'ল সন্তাপ যা'রা কহি সব পরকাশি'।
লুকাইল যথাতথা কলুষ-পেচক যত।
বাঁধনে অড়ায় যত কর্ম গুণ ও অভাব।
অহকার মোহ মান আর মদ-তক্ষরের।
জ্ঞান অমুভব-জ্ঞান ধর্ম-তড়াগ সাঝে।
সম্ভোষ ত্থ আর বিবেক-আদি বিরাগ।

উদিত হইল বথা সুপ্রথর দিনকর ॥
বছজন সুখী এতে আর বছ তুখা রয় ॥ ১
প্রথমে ত ভোর হ'ল অবিগ্রা-ভামসী নিলি ॥
কাম-ক্রোধ-কুমুদ সেরবি-তেজে কুঞ্চিত ॥ ২
সে সব চকোর-মনে ঘটিল সুখ-অভাব ॥
পূর্ণ অচল হ'ল কারিগরী উহাদের ॥ ৩
বিক্ষিত হ'ল নানা শতদল নানা সাজে ॥
ইহারা বিগত শোক ধেন সুখী চক্রবাক্ ॥ ৪

কাল-ছপ কৰাল সংগীৰ কাল-ছৰুপ গৰুড় (বিনি)। † কাম-ছপী হন্তীৰ বিনি সিংহৰ্ডপ । ‡ বাল-ছপী, খন বন বছনে বিনি অনল-ভূপা।

বেনি—এ প্রভাপ রবি বৃদ্ধি পায় যত যাহার **হ**দয়ে শেষেতে উক্ত

যখনি প্রকাশ পায়। প্রথমেরা নাশ পায় ॥ ৩১

শনকাদির রাম-সকাশে আগমন

(b)—অর্জগণের সনে প্রায়ু রাম একবার।
হেরিবার ভরে যা'ন স্থান্দর উপবন।
শনকাদি আসিলেন বুঝি' শুভ অবসর।
আত্মা তাঁহা-সবাকার ব্রহ্মস্থ-সরে সীন।
যেন বা স্বরূপ ধরি' সুপ্রকাশ চারিবেদ।
দিখসন সবাকার শুধু এই অন্তরাগ।
যেইস্থানে বিরাজেন জ্ঞানী কুম্বজ মুনিক।
গাহিলেন মুনিবর অনেক জ্ঞানা-কথা।

সহিত পরম সধা পবন-প্রিরকুমার ॥
নব-পল্লবময় পুল্পিত ভক্ষগণ ॥ ১
মূলীল মূ-গুণ আর তেজাময় কলেবর ॥
দোধতে বালক যেন কিন্তু সবে মূপ্রবীণ ॥ ২
সমদর্শী তাঁ'রা সবে হুদি অপগত ভেদ ।
প্রীরাম-চরিত কথা শুনিতে সহ সোহাগ ॥ ৩
আসেন সেধান হ'তে শনকাদি হে ভবানি ॥
যাহাতে উপজে ভ্ডান অরণিণ অনল কথা ॥ ৪

দো—মুনিগণে রাম স্থাগত করিয়া আসিতে দেখিয়া নি**ল পী**তবাস নমেন হরষ-মন। বিছা'য়ে দেন আসন॥ ৩২

Cbi—তিনভাই হমুমান্ সহিত পুলকভরে।
রঘুপতি-রূপশোভা নিরশিয়া অতুলন।
অম্বজ-অম্বজ নবখন-কলেবর।
অনিমেয়ে চেয়ে র'ন পলক না পড়ে কজু।
ভকতি-বিভল দশা হেরি' রাম-রঘুবর।
ধ'রিয়া সবার কর বসা'ন মহর্ষিগণে।
বড় ধল্ম আজ আমি হে মুনি-অধীশগণ।
বছ ভাগ্যেতে তবে সৎসক্ষ পাওয়া যায়।

মূনিগণে ভা'র পর সবে দণ্ডবৎ করে।
মগন হ'য়েন প্রেমে বশে নাহি রয় মন। ১
ভবভয়-ভঞ্জন কচিরতা-আকর।

যুক্ত যুগলপাণি নত-মস্তক প্রাড় ॥ ২
নয়নেতে জলধার শিহুরিত কলেবর।
কহিলেন অতি প্রোণ-মনোহারী স্ববচনে। ৩
ধৌত সকল গাপ করি' লাভ দর্মনন।
আম বিনা বাহে ভবভয় চির নাশ পায়। ৪

ডো—কবি পণ্ডিড কামীদেরঞ্চ পথে সাধুজনে ক'ন ভবের বাঁধন বেদ-পুরাণাদি গ্রন্থ। মোক্ষ সঙ্গে সস্ত ॥ ৩৩

(5)—প্রভূর বচন শুনি' প্রমোদিত মুনিগণ।
জয়জয় ভগবান্ অন্তহীন অবিকার।
জয় নিপ্তণ জয় জয় হে গুণ-সাগর।
জয় হে কমলাপতি ধরা-ধর ডোমা জয়।

আরম্ভিল। স্তাভিগান অভি হর্ষিত মন।
অপাপ অনেকরূপ অধিতীয় কুপাধার। ১
মুধের আলয় জয় সুচতুর সুন্দর।
অনুপ জনমহীন আদিহীন শোভামর। ২

অগঞ্জা মৃতি। † একজাতীয় কাঠ, বাহা প্ৰশাবের সহিত বর্ষণ করিলে ক্ষমি উৎপন্ন হয়। ‡ কারনা-প্রায়ধ্যবের।

অপরেরে মানদাতা মানহীন জ্ঞানময়। ভৰজ কৃতজ্ঞ⇒ তুমি অজ্ঞানতা-বিনাশম। मर्व्यक्रभ मर्व्वगानी मर्व्यक्रमि-व्यविग्रमी। দশ্ব বিপদ যত দুর কর ভব-পাশ।

পাবন স্থুমা ভব গান করে বেদচয়। অনস্ত ভোমার নাম নামহীন নির্থন # ৩ মোদের শরণে লও হে অসীম সুধরাশি ! হুদি-মাঝে বসি'রাম মদ কাম কর'নাশ। ৪

বেশ-পরা-স্থময় অবিচঙ্গ প্রেম কুপাধার তুমি ७ भए-मद्राद्ध পুরাও মনের কাম। কুপা করি' দেহ রাম ॥ ৩৪

চৌ—দেহ হে জানকীপতি পুণিত ভকতি তব। তিনবিধ তাপ যাহা বিনাশে দহনভব ॥ প্রণতের কামধেমু স্থর-তরু প্রার্থিজনে। এই ভব-বারিধিতে কুম্বল্প-সম রাম।

मन-छेन्द्रकां इथ माक्न मोर्न कत्र'। বিষয়-বাসনা ভয় ঈ্রধার নিবারক। ভূপতি-মুকুটমণি অবনীর আভরণ। (र भूनि-मानममब-विनाम-পর মরাল। তপন-কুলের কেডু বেদ-পরিরক্ষক।

এই বর দাও প্রস্থু মোদের মোদিত মনে। ১ ভকত-মুলভ অতি সকল আনন্দ-ধাম 🛭 হে দীন-শরণ সম-দৃষ্টি বিধান কর'॥ ২ বিনয় বিবেক ভব-বিরাগের প্রসারক॥ বিতর ভক্তি জন্ম-মরণ-বারি ভারণ 🛚 ৩ সতত পৃঞ্জিত-পদ অজ্ঞ-যোনি বিধু-ভাল। সভাব করম কাল গুণাদির ভক্ষক॥ ৪ ত্রাডণ তুমি তুমি ত্রাতা সকল দোব-হরণ। তুলসী দাসের প্রভু ত্রিভুবন-আভরণ॥ ৫

পো—স্তুতি বারবার শনকাদি সবে

করি' অমুরাগে বিধি-পুরে যা'ন প্রেণমি' চরণ 'পর। লভি' মনোমত বর । ৩৫

রাম-সকালে হন্তুনাম-কর্তৃক ভরতের প্রশ্ন-জিজাসা

(5)--শনকাদি মূনিগণ বিধি-লোকে গেলে চলি'। রামের অমুক্তগণ আসি' ল'ন পদধূলি। প্রভুৱে শুধাইতে সঙ্কোচ রতে মনে। প্রবণ করিতে চা'ন জীমুখের বর-বাণী। व्यस्त्रयाभी व्यक्त कानित्मन भव कथा। कत्रात्कारफ् रुष्ट्रमान् करत्र शाम निर्वतन । ভরত অমুক্ষ তব চা'ন কিছু শুধাইতে। কহেন শ্রীরাম তুমি জান' ভাল কপিরাজ। প্রভুর বচন শুনি' ভরত ধরেন পায়।

প্রন-ভনয় পানে চা'ন সবে এ কারণে # ১ যাহাতে জুড়ায় প্রাণ হয় সব ভ্রম-হানি॥ বলেন প্রন-সুতে কহিতে মর্ম-কথা ॥ ২ শুন দেব দীনজনে দয়াময় ভগবন্। সঙ্কোচ প্রাণে রয় তব পদে নিবেদিতে ॥ ৩ কি আছে ভরতে মো'তে অন্তর **জ**গ-মাঝ k শুন হে শরণাগভ-ত্রাণকারি রমুরায়॥ ৪

(प)-नाहि नाथ मम হে কুপা-আধার

मत्मर किছ् হরবের নিধি শোক মোহ নাহি স্বপনে। সে কেবল ভব স্ব-গুণে 🛚 ১৬

७क गांवाक वांश किछ कर्किर क्लन ना त्वन, कांश केंशिक्क स्व ना । † विनि निक्ष क्क ।

চৌ-করণানিধান ক্ষম' এক বাচালভা মম। ट्र त्रच्-कृरणत मिन ने ना (वेप भूतोर्गिष्ठ। 🗃 মূখে আপনি প্রভু কর' সাধু-গুণগান। ভানিতে ভৃষিত দেব সাধুজন-লক্ষণ। माधु ७ व्यमाधु-भारव कि श्राप्तम (प्रशाहरत । 🗃রাম বলেন শুন সাধুজন-লক্ষণ। সাধু আর অসাধুর আচরণ সেইমড। পরশু ছেদন করে মলয়ের বিটপেরে।

ভকত ভোমার আমি তুমি ভক্ত-সুথ ঘন ৷ সাধুর মহিমা-গাথা গান করে নানামতে॥ ১ সাধু 'পরে সমধিক শ্রীতিময় তব প্রাণ॥ কুপার সাগর তুমি গুণ-জ্ঞান-বিচক্ষণ॥ ২ (ह व्यंगल-भाग माम व'ल मां व्याहिए ॥ শ্রুতি পুরাশেতে যাহা বাধানিত অমু'ধণ 🛊 ৩ চন্দন কুঠারের ব্যবহার যেইমভ u নিজগুণে সুবাসিত মলয় ডা'রেই করে॥ ৪

দো—ভা'তেই আদরে পোড়াইয়া মুখ

রহে দেব-শিরে পিটান'র ত্থ

জগত-প্রিয় 🕮 খণ্ড। পরও সহে এ দণ্ড ॥ ৬৭

চৌ--বিষয়েতে অ-জড়িত শীল ও গুণ-আকর। পর-ছবে ছখী সুখী সুখী নির্থিলে পর॥ সম ভাব অবিরোধী মদহীন অ-বিরাগী। (कांभन-भेतां यिनि मौनक्दन मना नगा। সবে মান দেন নিজে অ-মানী থাকিয়া যিনি। বিগত-কামনা সদা মম নাম-পরায়ণ। শীতলতা সরলতা স্থা-ভাব স্ব-স্নে। এই नक्ष वां ते समर्या अयु था। সম দম বিধি নীতি-বিচলিত কছু নহে।

লোভ আর ফোধহীন ভয় বা হরষ ভ্যাগী॥ ১ মন বাণী কাজে মোর প্রতি মতি গত মায়া॥ প্রাণের সমান মম হে ভরত সেই প্রাণী॥ ২ শাস্তি বিনয় বিনি বিরাগ আনন্দ মন ॥ ধর্ম-দায়িনী প্রীতি বিপ্রের জ্রীচরণে। ৩ তারেই জানিবে' ডাড অকপট সাধ্জন 🖟 কঠোর বচন কভু কাহারেও নাহি কহে॥ ৪

দো—স্তুতি অবিনয় সেই সাধুজন

সমান উভয় মম প্রাণ-সম অহুরাগ চরণে আমার। গুণধাম সুথাগার॥ ৩৮

চৌ—এবে শুন অসাধুর স্বভাবের দোষ যত। ছ:খ-আগার সদা অসাধুর সাথে বাস। थरणत श्रमग्र भारक निमाक्रण ভाপ तरह। यनि कष्ट्र व्यशस्त्रत्र निन्ना अवस्य यात्र । কাম ক্রোধ লোভ আর অহঙ্কার-পরায়ণ। অকারণে সব-সাধে বিরোধ ডাহার রয়। মিখ্যার লেন-দেন মিখ্যার কারবার। স্থ্যধুর কেকা-রব ময়ুর যেমন করে।

ভ্রমেও তা'দের সাথে থেকো' না নিমেষ মৃতঃ যেমন কু-গাভী করে কপিলার গুণ নাখ ॥ ১ অপরের সুধ হেরি' প্রাণ ডা'র সদা দহে ॥ হর্ষিত যেন পথে নিধি কুড়াইয়া পায়॥ ২ নিদয় কপট ছল কলুষের আয়তন। উপকার যেবা করে ডা'রি অপকারী হয় 🛚 🕫 শয়নে অশনে শুধু মিণ্যার ব্যবহার॥ অথচ কঠোর প্রাণ কণীতে জঠর ভরে 🛭 ৪

(य)-- भद्र-निम्मा भद्र-পাপময় সেই

ধনে রত মন পামর মানব পর-দার। পর-জোহে। ब्राक्तम नव्-स्मरह ॥ ७৯

(5)—लाएटे नवन छा'त लाए (मट-व्यावतन। यम-एत नाहि व्यातन भित्नामत-भवावतक। পরের মহিমা-গান যদি কন্তু কাণে যায়। পরের বিপদ যবে করে সেই দরশন। অনুক্রণ স্বার্থরত বাদ আত্মীয় সনে। পিতামাতা নাহি মানে নাহি মানে গুরুজন। মোহের বখেতে সদা জোহ করে পর সনে। দোষের সাগর বেন কৃট-মতি ব্যক্তিচারী। বিপ্রের সনে জোহ পর-জোহ সবিশেষ।

বুক ভাঙা হা-ছভাল খেদ ভরে বাহিরায় ॥ ১ পরা-স্থাপ হয় প্রাণ পুলকেতে নিমগন ! কাম লোভে বিজ্ঞভিত নিদারুণ ক্রোধ মনে ॥২ পতিত অংগতে নিজে ডুবায় অপরজন ॥ সাধুসঙ্গ হরি কথা ভাল নাহি লাগে মনে ॥ ৩ বেদ-বিধি-নিন্দক পর্ধন-অপহারী ॥ দম্ভ কপট প্রোণে পরিধান চাক্র বেশ । ৪

দো-এমন অধম ৰাপরেতে কিছ কুটিল মানব হইবে প্রকাশ

নাহি সভ্য-ত্ৰেভাযুগে। वह दश्न कशियुर्ग ॥ Ho.

টৌ—ধর্ম হেন নাহি ভাই পর-উপকার প্রায়। এমন নীচডা নাই পর পীড়া পায় যা'য়। সকল পুরাণ বেদে নিরূপিত হ'ল যাহা। মানব-শরীর ধরি পরে ত্থ দেয় যেই। স্বার্থ-ক্ষড়িত হ'য়ে নানা পাপ করে নরে। ডা'র কাছে আমি ভাই কাল-রূপে প্রকাশক। অণ্ডভ অথবা শুভ-ক্রিয়াফল প্রদায়ক। এ বিচার রাখি' মনে পর্ম চতুর যেবা। এ কারণে ত্যক্তি' কাল শুভাশুভ-বিধায়ক। সাধু অসাধুর গুণ করিলাম বিবরণ।

কহিলাম তা'ই এবে জ্ঞানীরা জানেন তাহা ॥১ জন্ম মরণ ছোর ছখ-রাশি সয় সেই॥ ভা'র ফলে পরলোক-হারা হ'য়ে খুরে' মরে ॥ ২ ছুখের আগার ধরা জানি' মোর করে সেবা॥ ৩ ভব্দেন আমারে স্থর মানব মুনি-নায়ক। স্মরণে রাখিলে জালে নাহি পড়ে কদাচন # 8

(नी-भव मांच राग थन (माय-थरन মায়া-ভাত মায়া ना रमधा नग्रतन

গুণ ও দোষ অনেক। (हर्ये (पर्श चविरवक ॥ 8)

চৌ- সমুখ-নিংম্ভ বাণী ওনিয়া অমুক্ত যত। পরাণে পরম সুখ প্রণয় ধরে না এত। करत्रन विनय श्रम-भडमरम वात्रवात । নিজ মন্দিরে ভবে যা'ন রাম রখুপতি। দেবঋষি কডবার আসিয়া অবনী 'পরে। নিত নব লীলা ঋষি আসি' করি' দরশন। **ভ**নিয়া ধাডার প্রাণে পুলকের বহে ধার। भनकापि मूनि यक क'न शकु प्रविश्व वि। ভথাপি সমাধি ভূলি' হ'ন্নে অনক্ত-মন।

তমুমান-জনে বতে অপার হর্ষ-ধার॥ ১ এমনি লীলায় কাল অপগত নব নিতি॥ ঐীরাম-চরিত পুত-গীত গা'ন প্রেম ভরে ॥ ২ করেন ধাতার পাশে অকপট বর্ণন ॥ ক'ন রাম-গুণগান কর' ডাড বারবার। ৩ যদিও তাঁ'-সবে সদা ধাডায় রছেন মিশি' ॥ সাদরে শুনেন রাম-গুণকথা-কীর্ত্তন । ৪

[॰] বে কেবল আহাৰ ও ছী-সহৰান ভালবানে।

(দ)—ত্রহ্ম-পর যবে চরি-কথা শুনি'

भनकामि ७८न ডিজে না যেজন

রাম-কথা ত্যঞ্জি ধ্যান। কে পাধাণ সে-সমান # ৪২

ब्राट्यब श्रेषांशंगटक खेशटपन

(b)--- এक वात त्र बुनाथ-चारमभ शतिया भिरत । বদেন আসনে নিজ বিজ জকু সভ্চন। ওনহ ওনহ সবে পুরবাসি মম বাণী। অধবা অ-নীভি নাহি প্রভুতা নাহিক ডা'য়। সে-ই মম প্রিয়তম পরম ভকত সেই। যদি বলি হেন কোন কথা নীত-বিরহিত। বড শুভ ভাগ্য-বলে মিলেছে এ নর-কায়। সাধন-আগার ইহা মোক্ষের সিংহ্ছার।

ছিল গুরু পুরবাসী উপনীত রাজ-পুরে॥ ভক্তের ভবহারী মধুর বচনে ক'ন ॥ ১ এ বচন নাহি বলি মমতা হৃদয়ে আনি'॥ শুনিয়া বুঝিয়া কর' যা'র যা' পরাণ চায়॥ ২ আমার অনুশাসন কায়-মানে মানে যেই। বিনা ডরে সেই ক্ষণে ক'রো মোরে নিবারিত ॥৩ দেব-চল্লভ এর মহিমা সকলে গায়। এ পে'য়ে যে না সামালে পরলোক আপনার #8

দো—দে তথায় গিয়ে কর্ম কাল আর माथा चूँ एएं कांतन বিধাতার 'পরে

করে নানা ছখ ভোগ। বুথা করে অভিযোগ ॥ ৪৩

(5)—নভেক বিষয় ভোগ এ দেহ পাওয়ার ফল। স্বরগেও অল্ল মুখ শেষে চুখ অরিরল। মানব-শরীর পে'য়ে ভোগেতে যে দেয় মন। পরশ মণিরে ফেলে' কুঁচ যে আদরে লয়। চৌরাশির লক্ষ● যোনি স্বেদ-জরাযুজ যত। মায়ার প্রেরণা-বশে স্বভাব করম কাল। অহেতৃকী-প্রেমময় করুণানিধান বিভু। মানব-শরীর ভব-সাগরের তরী সম। মুদুঢ় তরণী 'পরে সংগুরু কর্ণধার।

সে মৃত স্থধার ভূলে বিষে হয় নিমগন ॥ ১ কোনজন তা'রে কভু জ্ঞানবান নাহি কয়॥ অমর অজর এই জীব ঘুরে অবিরত॥ ২ তিন গুণ-বল হ'য়ে খুরে মরে জীব-পাল। विवरणहे पद्मा कति' नव-रपट रपन कडू॥ ० অমুকুল সমীরণ ভাছাতে করুণা মম। কঠোর সাধন এবে স্থ-সহজ এ প্রকার ॥ ৪

(प)-(यक्त ना छत्त সেই মন্দমতি

ভবের সাগরে অকৃতন্ত অভি পে'য়েও মানব কায়। আত্মঘাতী-ফল পায় ॥ ৪৭

(b)—(यवा u कीवान आद भदरलांक स्थ ठाउ। आमात वहन छनि' श्रांश मृह (मेंदर्श में अ সুলভ সুধদ পথ এ নর-জীবন কালে। ছুৰ্গম জ্ঞান-পথ বছ বাধা সেই পথে। অনেক ক্রেশের পরে যদি বা কেচ তা' পায়। ভকতি অ-বশ আর সকল সুধের খনি। বিপুল স্থকৃতি বিনা সম্ভ না যায় পাওয়া।

আমার ভক্তি এই বেদে ও পুরাণে বলে॥ ১ সাধনা কঠিন মন আধার পায় ন। ভা'তে॥ ভক্তি-বিহীন ব'লে ক্ষণা মম না পায় ॥ ২ সৎসঙ্গ করা বিনা কভু নাহি পায় প্রাণী। সন্ত-সঙ্গ দূর করে ভব-আসা-যাওয়া॥ ৩

নাধাৰণত: লোকে "চৌরালি-লক" বোনি বলিরা থাকে : কিছ প্রকৃত পক্ষে এই "লক" নাম্বের অর্থ পুসা।

📆 এক পুণ্য ভবে তা'র সম নাহি আর। অকপট মনে যেবা দ্বিজ্ব-পদ সেবা করে।

কায় বাক্ মনে ছিজ-পদে নতি অনিবার ॥ অফুকুল দেব মুনি হ'ন সেই নরবরে॥ ৪

বো-আর এক মত নাহি পায় নর

অভি গোপনীয় আমার ভক্তি

করজোড়ে কহি সবে। না ভজিলে মহাদেবে॥ ৪৫

(5)--বল'ত' ভকতি-পথ মাঝে আছে কি প্রয়াস। যোগ নাই যাগ নাই জ্বপ তপ উপবাস। সরল সভাব হ'বে নাহি র'বে কুটিলতা। মোর নাম দাস ধ'রে রাখে মানুষের আশ। অতি বিস্তার করি' আর কি বলিব কথা। অবিরোধী অ-বিগ্রাহ যা'র আশা ত্রাস নাই। সুখনয় চারিদিক ভা'র পাশে সর্ব্বদাই॥ ইচ্ছা-অভীত যিনি গৃহ-হীন মান-হান। চাহেন প্রীতিতে সদা সাধুজন-সংসর্গ। ভকতি-বিষয়ে মনে বাঁ'র দৃঢ় অনুরাগ।

যাহা পা'বে ভা'তে ভোষ হৃদয়েছে র'বে সদা ॥১ তা'র ভকতির 'পরে থাকে বল কি বিশ্বাস # আমি ড' অধীন রহি আচরণ যা'র যথা ৷ ২ অ-পাপ অ-রোষ দক্ষ বিজ্ঞানী ভকতি-সীন ॥৩ তৃণ সম যাঁ'র পাশে হেয স্বর্গ অপবর্গ≉। শঠতা মৃঢ়ভা নাহি কু-ভর্ক দে'ছেন ভ্যাগ ॥ ৪

(पा-भम खन-गान হৃদয়-দেবতা

নামে রতি যা'র যেজন পে'য়েছে

মায়া মদ মোহ গত। সে-ই জানে স্থথ কত ॥ ৪৬

(5)-छनिया ख्यांत मम जीतव्नार्थत वानी। জনক জননী গুরু স্থা তুমি স্বাকার। ধন ধাম তত্ত্ব রাম তুমি সব-উপকারী। তুমি বিনা কেবা আর আমাদের এ শিখা'বে ৷ স্বার্থ-বিহীন ভবে উপকারী দুইজন। স্বার্থের সখা সব জগত জুড়িয়া রয়। প্রেমরস-উপচিত সবার বচন শুনি'। আদেশ লভিয়া তবে যা'ন সবে ভবনেতে।

চরণ-কমলে সবে নমিল প্রশি' পাণি॥ করুণানিধান প্রিয় প্রাণের অধিক আর॥ ১ তুমি হে সকলবিধি প্রণতের ত্থহারী॥ পিতামাতা-আদি সব স্বার্থ-জড়িত ভবে॥ ২ তুমি তব ভক্ত আর হে অম্বর-নিস্দন। স্বপনেও ভাহাদের ধর্মের ভাব নয়॥ ৩ হাদয়েতে প্রমোদিত অতি রমুকুলমণি ম বিমোহন প্রভু-বাণী কীর্ত্তন করি' পথে॥ ৪

(पा- इत्र क'न छेम। নুপতি যথায়

অযোধ্যা-নিবাসী রত্মপতি রাম

নরনারী সব ধক্ত। সৎ-চিৎ-সুথ ব্রহ্ম ॥ ৪৭

এরাম-বশিষ্ঠ সংবাদ

চৌ—একবার আদিলেন বশিষ্ঠ মহর্ষিবর। অভীব আদর ভরে করিলেন আবাহন।

বিরাজিত য়থা রাম স্থাধাম মনোহর ॥ পাদোদক न'न कति' পদ-यूग প্রকালন । ১ 👽ন রাম গুণধাম মূনি ক'ন করংজাড়। মানব-শরীরে ভব লীলা হেরি' অবিরভ। অমিত মহিমা তব বেদ নাহি জানে সামা। পুরোহিত-কার্যভার স্থির কহি নীচ অভি। কুল-পুরোহিড-ভার অস্বীকার করি যবে। পরমপুরুষ আসি' ধরিবেন নররূপ।

হে কুপা-সাগর কিছু মিনতি আছয়ে মোর। মনোমাঝে সীমাহীন ভ্রম হয় সমুদিত ॥ ২ শ্বুমতি আমি কহ কি জানিব সে মহিমা। নিন্দিত শান্ত্ৰেতে বেদ কি পুৱাণ খডি ॥ ৩ বিধাতা কছেন এতে বংস উপকার হ'বে॥ হ'বেন রাঘবকুল-বিভূষণ জগ-ভূপ । ৪

ব্যে—তথ্য স্থান্ত

সব শুভফল

করিম্ম বিচার লভিব ইহায

যোগ যাগ জভ দান। ধর্ম নাহি হেন আন॥ ৪৮

জ্ঞান দয়া দম কিম্বা তীর্থ-নীরে মজ্জন। আগম নিগম আর পুরাণাদি পাঠ-বলে। সে তোমার পদ্ম-পদে অমুরাগ নির্ভর। মলিনতা অপগত ধু'লেই কি হয় মলে। প্রেম অমুরাগ-বারি বিহনে হে রমুরায়॥ সৰ্বজ্ঞানী ভত্তবিদ পণ্ডিভ গুণধাম। দক্ষ স্থাকণযুত অবনীতে সেইজন।

Сচী — জপ তপ যোগ-বিধি অথবা আপন ধর্ম। বেদের বিহিত আর ষত সব ক্রিয়াকর্ম॥ করম ধরম যাহা বলে সাধু-সঞ্জন # ১ क्थवा अवराग क्षकु अक्टे यम छाइ करण । সব সাধনেরি এই ওভফল মনোহর॥ ২ হবিঃ কি উপজে কছু বারি মন্থন-কলে॥ জদয়ের মলিনতা কখনই নাহি যায়। ৩ সেইজন শুধু খণ্ডহীন অনুভববান্। তব পদ-সরোজেতে মতি যা'র অন্ত'ধন। ৪

ব্যো-প্রভু এক বর क्रमा क्रमा

করি হে কামনা ভব পায়ে প্রেম কুপাকরি' দেহ রাম। নাহি হয় উপরাম ॥ ৪৯

(5)—এত বলি' মুনিবর যা'ন নিজ গৃহ পা'নে । করুণা-সাগর রাম প্রমোদিত অতি মনে ॥ অনস্তর ভকতের সুধদাতা রঘুনাথ। নগরের সামুদেশে সকলে করি' গমন। হেরিয়া প্রভুরে দবে প্রেমে করে জয়গান। জ্ঞান্ত হেরেন নিজে ধরণীর আমহারী। ভরত দিলেন নিজ উত্তরী বিচাইয়ে। আপনি প্রন-স্তুত ব্যক্তন করেন তাঁ'য়। হে ভবানি তাঁ'র সম ভাগ্যবান নাহি আর। আপনি জীৱাম তাঁ'র সেবার মহিমা-গান।

হমুমান ভরতাদি অহুছে শইয়া সাথ॥ ১ व्यारमर्भान तथ शक कतिवादित व्यानग्रन ॥ যাচকেরে সে সকলে পুলকে করেন দান ॥ ২ সুশীতল আত্রবনে যা'ন রাম ধ্রুধারী ॥ বাসলেন প্রভু ভা'য় সেবেন সকল ভা'য়ে ॥ ৩ পুলকিত কলেবর প্রেমবারি আঁখি ছা'র ॥ রামের চরণে ছেন অচলা ডক্তি যাঁ'র॥ ও বারবার নিজমুখে পুলকে করেন গান ॥ ৫

(प)-(महे व्यवमात গা'ন স্থমধুরে দেবঋষি আসি' প্রাণ মনোহর

করতলে ধরি' বীণ। এরাম-কীর্ত্তি নবীন। ৫০

मात्रदणत त्रात्र-मकारम जानमम ও खब

(b)--- मम शादन हार' (पव कमलपल-लाहन। कहाक-क्शाय यां'त रुप लाक विरमाहन ॥ নীল-সরসিজ খ্রাম অতমু মনোজ-অরি-। ब्राक्रम निर्भाद्य प्रम-वम-ख्यान । **छविछ विश्व-श्रार्थ नव क्रम श्रमायकर्ण।** বিপুল ধরার ভার ভুক্তবলে খণ্ডিত। রাবণ অরাতি তুমি স্থক্ষপ ভূপবর। ভোমার মহিমা গা'ন পুরাণ নিগমাগম। পরম করুণাময় বুধা মদ-খণ্ডন। মমভা-হরণ নাম কলিমল-মর্দন।

क्रमय-कक्ष-मक्रम्म-मथ्भ हदि।) সাধু মূনি রঞ্জন কলুষ বিভঞ্জন # অ-শরণ-শরণ হে দীনের পরিপালক। ২ বিরাধ দ্যণ ধর-নিস্দন পণ্ডিত ! জ্ঞয় দশরপকুল-কুমুদের সুধাকর। ৩ গা'ন সব সুর মুনি সাধ্জন-সমাগম ॥ কুশলী সকল বিধি অযোধ্যার আভরণ॥ ৪ তুলসীদাসের প্রভু রক্ষ' প্রণতজন ॥ ৫

দো-প্রেমেতে মাতিয়া জদে ধরি' রূপ

र्दमव अधिवन বাখানিয়া কণগ্ৰাম। শোভার আধার যা'ন চলি' বিধি-ধাম । ৫১

হর-পার্বভী সংবাদ

চৌ-অবধান কর সতি বিস্তারে এই কথা। জ্ঞীরাম-মহিমা-গ্রাম করিবারে কীর্ত্তন। সীমাহীন সীভাপতি অগণিত গুণ ডাঁর। मिला कर्गा किया धूनि यनि गंगा यात्र। স্থবিমল এই কথা হরি-পদপ্রদায়িনী। প্রবেশের প্রীতিকর কহিলাম সব কথা। রাম-গুণকথা কিছু কহিনু সংক্ষেপ ক'রে। এ প্রম কথা ক্ষনি হর্ষিতা উমা অভি। ধক্য ধক্য আমি শত ধক্য ত্রিপুরারি।

সকলি কহিনু ভোমা মোর অহুভব যথা : না পারে বাম্বকি বাণী শতকোটি অগণন ঃ ১ জনম করম নাম সব(ই) গণনার বা'র ॥ তথাপি রামের গুণ কচিলে না শেষ পায় ॥ ২ অচলা ভকতি জাগে এ গুণ-কাহিনী শুনি'। গরুড় বিহগরাজে ভুষুণ্ডি কহিল যথা। ৩ যা' কহিবে হে ভবানি কহিব ডা' এর পরে ॥ কহিলেন মুত্তভাবে করিয়া অতি মিনতি ॥ ৪ **ওনিলাম রাম-গুণকথা ভব-ভর্**হারী I ৫

| দো—কডাৰ্থ কু পায় | হে কুপা-নিশয় | মোহ-অপগত মন। |
|--------------------------|----------------|--------------------------|
| জানিলাম প্রভু | ঞ্জীরাম-প্রভাপ | জ্ঞান ও আনন্দ-ঘন॥ ৫২ (ক) |
| তব মুখশশী- | বিচ্যুত স্থা- | সম কথা-রখুবীর। |
| শুভিপুটে পান | করিয়া এ মন | ভৃপ্ত নহে মডি-ধীর ৫২ (ধ) |
| A10 700 111 | 11441 | \$0 .000 110 114 00 (|

প্রাণ যা'র ভ'রে যার জ্রীরাম-মহিমা ওনে'। मुनि-त्अर्छ यिनि मुक्त जीवकारण यरेजन।

ভাহার বিশেষ রস কিবা সে নাহিক জানে # শুনেন ঞীহরি-গুণকথা ডিনি অফুক্ণ ৷ ১

[•] ८६ हरि ! फूबि मील-कबरलन यक मात्र-काव, जान कावरलन-जनि बहारलरन खपत्र-कबरलन यनु (ध्यान-वसू) পাদকারী অসহ-সমপ । া বৃতন মেম্বের স্বরূপ ।

ভবের বারিধি পার হইতে যে লালায়িত।
বিষয়ী জনের তরে শ্রীহরির গুণগ্রাম।
শ্রবণ-লকভিধর কেবা আছে লগ-মাঝে।
রদ্পতি-গুণগাধা না লাগে মধুর যা'র।
শ্রীহরি-চরিতগাধা করিলে যা' কীর্ত্তন।
তমি যে কহিলে এই চরিত মানসহর।

রাম-কথা তা'র পালে স্থৃদৃঢ় তরণী-মত।
শ্রবণ-স্থদ অতি আর মন-অভিরাম। ২
রামের মহিমা যা'র মধুর না কাণে বাজে।
শাস্থ-হনন সেই মুচ় করে অনিবার। ৩
শ্রবণ করিয়া নাথ অমিত পুলক-মন।
গঙ্গুতে কহিল যাহা ভুষ্তি ধ্পবর। ৪

পৌ—কাক-কলেবরে বিজ্ঞান বিরাগ শ্রীরাম-ভক্তি দৃঢ়-জ্ঞান পে'ল চরণে গভীর রতি। এড়ে সন্দেহ অভি॥ ৫৩

চৌ—সহত্র নর-মাঝে শুন প্রভু ত্রিপুরারি।
কোটি ধর্ম-শীল-মাঝে অভিশয় অরন্ধন।
নিগম এ কথা বলে কোটি বিরাগীর মাঝে।
জ্ঞানবান্ কোটিজন মাঝে জ্বীবমূক্ত কেছ।
ডেমন সহত্র মাঝে সকল সুখ-আকর।
ধর্ম-অমুরাগী আর আসক্তি-হীন জ্ঞানী।
ভা' সবার মাঝে প্রভু ত্র্রভ সেইজন।
হরির ভক্তি হেন কি প্রকারে কাক পে'ল।

বিরাশে বিরস যেবা রহে ধর্ম ব্রত ধরি' ॥
বিরাগ-সংযুক্ত হ'য়ে বিবয়ে অ-রত মন ॥ ১
প্রেক্ত জ্ঞানাধিকারী অভীব বিরল আছে ॥
অভীব বিরল ভবে তাহে নাহি সন্দেহ ॥ ২
ব্রহ্ম-লীন বিজ্ঞানী মেলা অভি হুদ্বর ॥
দ্বীবন্মুক্ত আর ব্রহ্ম-পদে লীন যেই প্রাণী ॥ ৩
ব্রীরাম-ভকতি-রত গত মদ-মায়া মন ॥
ভব নাথ কুপা করি' দাসীরে বুঝা'য়ে বল' ॥ ৪

দ্যো—রাম-পরায়ণ বল' নাথ সেই জ্ঞান-রত যেবা কিসের কারণ গুণধাম মতি ধীর। লভিল কাক-শরীর॥ ৫৪

(চ)—প্রভুর রচিত-কথা এই মহা পুণ্মের। তুমিই বা কি প্রকারে শুনিলে এসব গাধা। গরুড় ত' মহাজ্ঞানী আর সব গুণ-রাশি। সে-ই বা কি কারণে ছাড়ি' বত মুনিগণে। বল' মোরে কি প্রকার কথা প্রতি-উন্তর। শুনিয়া উমার বাণী সরল মানসহরা। বস্তু সতি বস্তু তব প্রাণ অতি পুণ্যময়। শুনহ পরম পুণ্যময় এই ইতিহাস। উপজে রামের পদে বিশাস অমুপম।

কাক কোপা হ'তে পে'ল বল' ইহা কুপামর॥
বড় কুত্হল প্রাণে শুনিবারে সেই কথা ॥ ১
শ্রীহরি-সেবক তাঁরে অভীব নিকটবাসী॥
যাইয়া কাকের পাশে হরির মহিমা শুনে ॥ ২
হইল শুকতে চুই কাক ও বিহগবর ॥
ফুল্ল-হৃদরে হর বলেন আদর-শুরা॥ ৩
শ্রীরাম-চরণে প্রেম ডোমার ড'ক্ম নয়॥
যা' শুনে সকল-লোকে হয় শ্রম-ভ্যোনাশ॥ ৪
ভবনিধি ভরে নরে বিনা লেশ-পরিশ্রম॥ ৫

ডো—এমনি প্রশ্ন অভীব আদরে · করিল গরুড় কহি সে সকল

বায়স-সদলে গিয়া। শুন উমা মন দিয়া। ৫৫

(5)-এ ভব-মোচন কথা যেরূপে এ'ল প্রবণে। সে কাছিনী শুন তবে হে সুমুখি স্থলোচনে । দক্ষ-আলয়ে আগে এসে'ছিলে একবার। দক্ষ-যাগ মাঝে তব হ'য়েছিল অপমান। সে যাগ করিল নাশ মোর অমুচর যত। তথন মনেতে প্রিয়ে হ'য়েছিল অভি শোক। স্থন্দর গিরি বন সারত ভড়াগচয়।

সে অন্যে সভী-নামে প্রচার ছিল ভোমার # > নিদারণ ক্রোধে তুমি তাজে ছৈলে নিজ প্রাণ। সে সকল কথা ভূমি সবিশেষ অবগভ ॥ ২ হ'য়েছিমু অতি ছুখী সহিয়া তব বিয়োগ ॥ ফিরিয়া বিরাগ-ভরে হেরি কৌতকচয়। ৩

কাক-ভুষুতির উপাধ্যান

গিরিবর হুমেরুর দূরে উত্তরভাগে। ক্রকের আভাময় চূড়া তা'র মনোরম। ভাহাদের 'পরে ক্রম এক এক অভিকায়। ভূষরের 'পরে শোভে সরোবর স্থন্দর।

অতি মনোহর নীল পর্বত এক জাগে॥ তা'র মাঝে চারি চূড়া লাগে মোর বিমোহন ॥ ৪ অশেথ পাকুড় বট সহকার শোভা পায়। মণি-সোপান দেখি' বিমোহিত অন্তর 🛚 ৫

দো-শীতল কোমল তুলি'ছে মরাল

সুমধুর জল মুললিভ ব্লব সরসিজ নানারজ। श्रद्ध मध्य एक ॥ ८७

চৌ—সেই পর্বত 'পরে বিরাজে বায়সবর। মায়া-জানিত বহু গুণ কিবা দোষচয়। সে গিরির নিকটেতে কদাচ নাহিক আসে। ভথায় নিবসি' কাক যেভাবে হরিরে ভাকে। খাকে সে অশ্থ-মূলে মহাধ্যানে নিমগন। মানস-পূজন সারে সহকার ভরুমূলে। বটতক্ল-তলে করে হরি-কথা কীর্ত্তন। অভিনৰ দীলা-গাথা সদা অতি সমাদরে। মরাল বিমল মতি সবে তা' করে अবে। হৈরিত্ব সে কৌতুক তথায় গমন করি'।

কর-শেষেও ভা'র নাহি নাশ কলেবর ॥ মোহ মন-জ্বাত আদি অবিবেক যত রয়॥ ১ চির শাস্তি পাবনতা সতত তথায় ভাসে। অমুরাগ-ভরে শুন কহিব উমা ভোমাকে॥ ২ পাকুড়ের তলে করে জপ-যাগ সমাপন # আর কাজ নাহি ডা'র হরির ভজনা ফেলে ॥ ৩ আসে তথা শুনিবারে বিহুগেরা অগণন। নানাভাবে গান করে খগবর প্রেমভরে॥ ৪ সেই সরোবরে যা'রা বাস করে অফুক্ষণ ॥ অভীব পুলকে মোর হৃদয় উঠিল ভরি'॥ ৫

বে-মরাল-আকার আদরে শুনিয়া ধরি' কিছুকাল ৱাম-গুণগান

তথা করিয়াছি বাস। ফিরিয়াছি কৈলাস॥ ৫৭

গলতের লোহ

এবে শুন সেই কথা কাক-পাশে যেই হেডু। রত্বনাথ সীলা হেন করিলেন যবে রণে। यम्मी इ'लान निष्य प्रचनात्र-वाङ्यल ।

(5)—বলিলাম ভোমা উমা সেই সব ইভিহাস। ধগবর-নিকটেতে যধন করিয় বাস। যাইল গরুড় চরাচর-পগকুল-কেড় ৷ ১ শ্মরণ হ'লেই বাহা বড় লাজ পাই প্রাণে । পাঠা'লেন গরুড়েরে দেবঋষি সেইকালে । ২ নাগপাশে ত্রাণ করি' প্রকৃরে গরুড় যায়। व्यक्र-वक्षम कथा नानाचारव चति गता। বন্ধ যিনি বাণী মন-মতীত বিকারহীন। ভেবে'ছিম্ব এসে'ছেন ডিনি এই ধরা 'পর।

প্রবল বিষাদ ভা'র অস্তর মাকে ছায় ॥ গরুড বিচার করে মনোমাঝে সযভনে। ৩ চরাচর-বাথে মায়া-অঙাত আপন-লীন ম এবে দেখি সে প্রভাব নাহি এক কণা ভর # 8

বে ভবের বাঁধন ভার রাক্ষস

হয় বিমোচন वाँधिन कर्छा इ

ত্রপ করি' বাঁর নাম। নাগপাশে সেই রাম # ৫৮

বিষাদে বিষণ্ণ মন কৃতৰ্ক উঠায় শত। অভীব বিকল হ'য়ে দেবঋষি-পাশে যায়। নারদের মনে শুনি উপজে করুণা অতি। যে মায়া-ছলনে কত জ্ঞানী পরাভব পায়। যেই মায়া আমারেই নাচাইল কতবার। গকড় যে মহামোচ তব মন ছে'য়ে রয়। দেব-পিতামহ পাশে যাও হে বিহগরাজ।

চৌ—নানামতে বুঝাইল গরুড আপন মনে। জ্ঞান নাহি জাগে তবু ভ্রম নাহি প্রশাসনে ! इ'रप्रदिल खास्त्र मन डिमा खब त्यहेमड । > উদঘাটি' कृषि वाश निरंतमन करत शाय ॥ ক'ন ধীরে রাম-মায়া কহি শুন শগপতি গ্র স্থগভীর মোহ-জালে বি**জ**ডিত করে যা'য় **॥** সেই মায়া-বিজ্ঞতিত তুমি এবে খগবর॥ ৩ আমার কথায় তাহা দুরিত হ'বার নয়॥ যেমন আদেশ তা'র সেইমত কর কাজ ॥ ৪

্ৰে—এতেক কহিয়া গেলেন চলিয়া

হরি-মায়া বল দেব-ঋষিবর

বর্ণিয়া বারবার। গাতি' রাম-গুণ সার ॥ ৫৯

চৌ-গরুড তখন যার বিধাতার নিকেতনে। রাম উদ্দেশে বিধি নমিত করেন শির। বিধাত। বিচার ভবে করেন আপন মনে। হরির প্রেরিভ মায়া অমিত প্রভাব ভা'র। আমারি সঞ্জিত যবে চরাচরময়ী ধরা। এত ভাৰি ক'ন বিধি এ বচন স্থব্দর। चन्नताक यां कृषि (मर्दम निव-नम्रतः । সেইখানে হ'বে তব সংশয় নিবারণ।

निक मत्मर थुरल' वरन छा'त खिहतरा ॥ প্রভাপ ব্রিয়া প্রেমে শিহরি' উঠে শরীর 🛚 ১ সকলেই মায়া-বশ কি পণ্ডিত জ্ঞানিজনে ! মোচিত প্রভাবে যা'র আমি নিজে কডবার ৷ ২ অভিনৰ কিবা ইচা বিমোহিত হ'বে ভা'রা 🛚 শ্রীরাম-মহিমা গুড় অবগত শব্ধর ॥ ৩ এ পরম প্রশ্ন যেন ক'রো না অপর জনে # চলিল গরুড ছাড়ি' বিধি-লোক মান মন॥ ৪

(মা-পরম আতুর কুবের-সদনে

বিনতা-ভনয याहे यत्व तम्वि আসিল আমার পাশে। রাখি' ভোমা কৈলালে॥ ৬•

চৌ—সাদরে আমার পারে শির অবনত করি'। বলে শেবে আপনার সন্দেহ বিস্তারি'॥ ভাহার সে দীন ভাব। ভাহার বিনীত বাৰী। মিলে'ছ বিহুগরাজ প্রিমাঝে আমি হেবা। क्रथन हर्देख खब मध्यम मब छन ।

छनिया जानत छात कशिनाम (ह छवानि ॥) কেমনে বিশদ ক'রে বুঝাইব সব কথা # বছকাল ধ'রি যবে আচরিবে সংসম্ব 🛚 ২

স্থমধুর হরি-কথা করহ প্রবণ তথা। যে মহিমা-কথনের আদি মধ্য অবসান। যথায় হরির কথা নিভপ্রতি হয় ভ্রাভা। শুনিয়া হইবে ডব সংশয় নিবারণ।

কভমতে মুনিগণ গান যথা গুণ-গাথা # প্রতিপাদ্য শুধু এক প্রভু রাম ভগবানু 🛚 ৩ ভনিবারে একমনে পাঠা^{*}ব ডোমায় ভথা ॥ উদিবে চরণ-যুগে অমুরাগ অতুলন 🛚 ৪

(पी-नरमक विना মোহ না খুচিলে

না হরির কথা রামের চরণে

ভা' বিনা মোহ না যায়। দৃঢ় প্ৰেম নাহি পায়॥ ৬১

উত্তর-অভিমুখে নীল গিরি মনোহর। **এ**রাম-ভক্তি পথে অতীব প্রবীণ তিনি। অবিরশ রাম-কথা তুধা পানে নিমগন। তাঁ'র পাশে গিয়া শুন হরি-কথা সুমধুর। বুঝাইডে এই ভাবে শুনিয়া ধৈৰ্য্য ধরি'। রামের কুপায় এর ভেদ স্থবিদিত মোর। ভগবান্ খুচাইতে চা'ন ডা'র অভিমান। অপর কারণ ভা'রে পাঠা'তে কাকের পাশে। এইরির মারা শিবে বলবতী অভিশয়।

চৌ—থাণে অনুরাগ বিনা নাহি মিলে রযুপতি। আচর যতই যোগ জ্ঞান তপ কি বিরতি । যাও তথা যথা কাক ভুষুণ্ডি সুশীলবর ॥ ১ সকল গুণের ধাম প্রাচীন পরম জ্ঞানী। শুনে যত বিহগেরা সাদরে পুলক-মন॥ ২ অপগত হ'বে মোহ ছ:খ হইবে দূর 🛭 চলিল পুলক ভরে আবার প্রণাম করি'॥ ৩ গরুড়ের মনে বুঝি আছে অভিমান ছোর॥ বিরত হলা'ম তাই দিতে উপদেশ দান ॥ ৪ যে যাহার নিজ ভাষা বুঝে ভাল অনায়াসে। জ্ঞানী আছে কে এমন মোহিড যে নাহি হয় ॥ €

দো-জানী যে ভকত-কুল-শিরোমণি হরির বাহন যেই। করে মৃঢ় নর মায়া-পাশে বাঁধা সে-ই॥ ৬২ (ক) অহমার কিবা ৰিমোহিত যবে বিধাতা মহেশ কি কথা অপর জনে। ভৰেন মুনিরা মায়াপতি এই সার কথা রাখি' মনে ॥ ৬২ (খ)

গৰুড়ের কাক ভূষভির নিকট গমন ও রাম-কথা প্রবণ

চৌ — সুষু তি যথায় থাকে গরুড় তথায় যায়। পড়িতেই চ'থে গিরি অমনি মোদিত মন। তড়াগেতে স্নান করি' জন পান করি' তা'র। उदा नमागक नव स्वित विद्य यक। পুণিত লীলার কথা স্থুক হওয়া-অবসরে। গরুড় বিহগরাবে হেরি' তথা উপনীত। महा मयान्य कति श्रे श्राप्ट व्याना । ভা'র পর পূঞা করি' সহ অভি অনুরাগ।

অথও ভক্তি যা'র সদা মতি হরি-পায় ॥ মায়া মোহ অনুভাপ নিমেৰে অপনোদন ॥ ১ বটভক্র-ভলে যায় হরব হিয়ে অপার। ভনিবারে মনোরম রাম-কথা অমৃত । ২ ভাগ্যবান ৰগরাজ উতরিল সভা'পরে 🛭 ফুল্ল বায়সবর সহ খগপণ যভ 🛭 ৩ ৬ श'दत्र कृषत मित्र वितिवादत सूर्यातन 🛚 বচনে অমির ভরি' কহিতে লাগিল কাক। ৪ **দো**—মহাধন্ত আজি করহ আদেশ মৃত্বাণী কয় গুণ-গান যাঁ'র

I

হইলাম পে'য়ে কি করিব প্রভ বিনতা-তন্ম করেন মহেশ

र्थगतांख मत्रभन। কোন কাজে আগমন 🛚 ৬৩(ক) কুডার্থ-যুরতি নিজে। আপনার মুধামুকে ॥ ৬৩ (খ)

চৌ-শুন তাত যে কারণে হেথা মম আগমন। নিমেষে সকল ভাহা লভি' তব দরশন। হেরিয়া নয়ন ভরি' আশ্রম তব পুত। 🕮রাম-চরিত কথা পুণ্যময় নিরম্বর। সাদরে এখন ভাত দে কথা শুনাও মোরে। ভনি' গরুড়ের কথা পুশিত বিনয় ভরা। বায়সের প্রাণে বহে উৎসাহ অমুপম। প্রথমেই অমুরাগে হইয়া বিভোর-প্রায়। অনস্তর নারদের মোহ করি' বর্ণন। প্রভু-অবতার কথা কহিল তাহার পর।

সংশয় মোহ ভ্রম সব মম অপগত। ১ সকল সুধদ যাহা ত্থ-ডমোরাশি-হর॥ ভব পাশে এ মিনতি করি প্রভু বারেবারে॥ ২ সরল স-প্রেম আর স্থাদ মানসহরা।। আরম্ভ করিল রাম-গুণকথা-কীর্ত্তন ॥ ৩ রাম-লীলা-সরোবর রূপক কচে বুঝায় ॥ কহিল ভাহার পরে রাবণ-দেহ গ্রহণ ॥ ৪ তা'র পর বাল্যলীলা বাধানিল মনোহর ॥ ৫

(দা—মহা প্রেমভরে কৌশিকী-সনে

করি' কার্ত্তন মিলন কহিয়া বাল সে চরিডচয়। বিবাহ-কাহিনী কয় ॥ ৬৪

(চ)—শতংপর শ্রীরামের রাজ-অভিষেক কথা। দশরথ-অঙ্গীকার পুরবাসী-ছদিব্যথা॥ শ্ৰীরামের বিরহেতে সকলের কি বিষাদ। বনেতে গমন-কথা ভকত গুহে মিলন। প্রভু-সনে বাদ্মীকি:মিলন কথন করি'। সচিব-প্রতিগমন দশরথ-দেহত্যাগ। নুপতির ক্রিয়া-শেষে সাথে ল'য়ে পুরবাসী। রাম-সনে বহুবিধ অমুরোধ আলাপন। জরতের ব্রহ্মচর্য্য জয়স্টের ব্যবহার।

किंटिशन अत्रोम ७ शक्तन-मःवाप ॥ ১ প্রয়াগেতে অবস্থান জাহনী উত্তরণ। বলিলা যেমন র'ন চিত্রকৃট শৈলে হরি॥ ২ ভরতের আগমন রাম পদে অনুরাগ॥ কহিল ভরত-যাত্র। যথা প্রভু সুখ-রাশি॥ ৩ তাঁহার পাছক। ল'য়ে কোশল প্রতিগমন ॥ প্রভু অত্রিশ্ববি-সনে মিলন-সুথ অপার॥ ৪

(ए)—वित्राथ-इनन

পরে যে প্রকারে कश्या वत्रा

ভাবে কায় শরভঙ্গ। क्षक मदमक ॥ ७६

চৌ-বাধানিয়া দণ্ডকের পাবনতা অনুপম। যে প্রকারে পঞ্বতী বনে প্রভু নিবসিলা। ेश्रनः मन्त्रप-প্রতি করেন যে উপদেশ। भत्र ७ प्रवन-वथः विविज्ञिल भूनद्राग्न ।

স্থতীক্ষের প্রেম

জটায়ুর সধ্য-কথা বর্ণিল মনোরম। निवाति' मुनित जान महाश्वान व्यनानिना ॥ ১ যে ভাবেতে সুর্গণখা কুরূপা হইল শেষ ॥ वर्गन करत्र यथा त्रावण मरवाष भाग्न ॥ २

डा'त भत्र स्मिभूग वर्गिम विवत्रग। মায়া-সীতা হরণের ইতিহাস বিস্তার। य थकारत करें। शुत छेई एन ह- कि दा है न। অতঃপর রমুবীর-বির্তের বর্ণন।

মারীচ-রাবণ সনে ষেইমত আলাপন 🛚 বিবৃত করি' কহে রামের বিরহ-ভার ॥ ৩ কবদ্ধের বধ যথা শবরী স্থগতি পে'ল। পম্পা সরগী-ভীরে যে প্রকারে আগমন ॥ ৪

| (मो—थङ् -नात्रामत | সংবাদ কছে | মিশন হতুর সনে। |
|--------------------------|----------------|----------------------------|
| স্থগ্ৰীব-মিলন | আর প্রভু যথ। | বালিরে বধেন প্রাণে 🛭 ৬৬(ক) |
| স্থগ্রীবে টীকা | ক্রিয়া প্রদান | প্ৰবৰ্ষণ-গিন্ধি বাস। |
| বরষা শরৎ- | বর্ণন আর | রাম-রোষ কপি-ত্রাস। ৬৬(খ) |

সহ

টৌ—যেইরূপে কপিরাক্ত কপি-দেনা পাঠাইল। সীতা-উদ্দেশ ভরে দিকেদিকে প্রধাবিল। পর্বত-গুহা মাঝে যেইরূপে প্রবেশিল। সম্পাত্তি-মূৰে শুনি² সৰ কথা হনুমান্। যে প্রকারে হরুমান্ পুরীশ্বার হয় পার। ধ্বংসি' অশোক্ষন দশাননে বুঝাইয়া। সকল বানর সনে রাম-পদে আসি' ফিরে'। যেইমত সেনা-সহ প্রভু রাম রঘুবীর। মিলিল রামের পায়ে বিভীষণ যেপ্রকারে।

সম্পাতি-সনে দেখা কপির তথায় হ'ল। ১ উত্তাল বারি লাফে লভবন করি' যা'ন ॥ প্রবোধ প্রদান করে জানকীরে যে প্রকার ॥ ২ পুড়াইয়া লক্ষায় পুন: বারি লাফাইয়া। সীভার কুশল-কথা পদে নিবেদন করে ॥ ৩ মহা বিক্রমে পার হ'লেন সাগর-নীর॥ সাগর-শাসন কথা শুনাইল বিস্তারে॥ ৪

| Gनी—वैश्विया मागत | কপি-সেনা |
|-------------------|-----------|
| দূত-রূপে যায় | বীরকুল-বর |
| রক্ষঃ-বানর- | ভীষণ সময় |
| বলৈ মেঘনাদ | কুম্বকরণ- |

পর্ভ ছি' সাগর-পার। অঙ্গদ বালি-কুমার ॥ ৬৭(ক) বিবিধ প্রকারে বলে। প্রতাপ বধ-কৌশলে॥ ৬৭(খ)

(5) - বিবিধ প্রকারে কত মরে নিশাচরগণ। রাবণ-মরণ আর বিভীষণে রাজাসন। কহিল মিলন পুন: সীতা সনে রমুমণি। পুষ্পক চড়ি' পুন: সহ কপি-সেনাগণ। যেইমত রঘুমণি উতরেণ অঘোধ্যার। রাম-রাজ-অভিষেক করি' পুরী-বর্ণন। রাম-কথা সমাপন করিল বায়স-মণি। পুণিত চরিত-কথা গরুড করি' প্রবণ।

রাবণ-রাঘব রণ করে সব বর্ণন। ময়-স্থভা-শোকগাথা শোক-হীন দেবগণ॥ ১ দেবগণ-স্থাতিবাদ যোড করি' <u>ছই পাণি ॥</u> কুপাধার শ্রীরামের কোশলেতে আগমন॥ ২ वाग्रम विभाग कति' कट्ट मिट ममुगात्र ॥ গুণধাম-নীতি-কথা অনেক করি' কথন ॥ ৩ তব পাখে যে সকল কহিলাম হে ভবানি। कहिन वहन भरन উৎসাহ অञ्चलभ ॥ ८

কাক ভুষ্তির নিজ পূর্ব্য-জন্মকথা বর্ণন

বো-সন্দেহ অপগত মোর ভোমার প্রসাদে খগবর

গুনিলাম রাম-লীলা যত। রাম-পদে প্রেম উদ্গত ॥ ৬৮(ক) হ'য়েছিল অভি মোহ রণে চিলানন্দ-খন যেই রাম

চৌ-মানব-সমান হেরি' সব আচরণ তাঁ'র। এখন ব্রিফু ভ্রম আমারি হিভের ভরে। দারুণ আতপ-তাপে দক্ষ হয় যেইজন। বিষম বিকার যদি না জাগিত মোর মনে। শুনিভাম কেমনে বা হরি-কথা মনোহর। নিগম আগম আর পুরাণেও এই কয়। যা'র 'পরে @রামের হয় কুপা-ঈক্ষণ। তব দরশন মম রামের করুণা ভরে।

বন্ধ প্রভুকরি দরশন। বিকলতা তাঁ'র কি কারণ ॥ ৬৮(খ) ব'হেছিল মনোমাঝে অতি সংশয়-ধার ! কুপানিধানের ইচা করুণা আমার 'পরে॥ ১ সেই জানে ছায়া করে কি আমিয় বরষণ। কেমনে মিলন ভাত হ'ত বল ভোমা সনে।।২ করিলে যা' গান তুমি *আবণ-মু*থ আকর ॥ ক'ন মূনি সিদ্ধ যত সংশয় তিল নয় ৷ ৩

সেইজন শুধু পায় সম্ভের দরশন॥

ভোমার প্রসাদে এবে সব সন্দেহ হরে 1 8

(দা-ভনি' খগরাজ-পুলকিত কায় সুশীল সুমতি পে'লে মহাদেবি

বাণী স্থললিত সজল লোচন পুতক্থা-প্ৰেমী গোপন কথাও

সবিনয় অফুরাগ। হর্ষিত-মন কাক ॥ ৬৯(क) রস-ঘন হরিদাস।

করে সাধু সূতাকাল ৷ ৬৯(৫)

চৌ-একথা ভাবণ করি' বায়স-প্রবর ক'য়। সকল প্রকারে নাথ প্রশ্নীয় ভূমি মম। দ্বিধা নাঠি তব মনে নাঠি তব মোই মায়।। মোহ-ছল করি' ভোমা প্রভু হেথা পাঠাইল। নিক্র মোহ-কথা যাতা কতিলে বিহগবর। দেবঋষি মহাদেব ধাতা মুনি সনকাদি। কহ মোরে মোহ কা'রে অন্ধ বা নাহি করে। ८कान् चरन नाहि करत वामना भागल-व्याय ।

নভগ-নাথের 'পরে রাম-প্রীতি কম নয় ॥ তুমি রম্বনায়কের কুপাধার প্রাণসম ॥ ১ হে নাথ আমার 'পরে কডই করিলে দ্যা॥ দয়া করি' রাম মোর গৌরব বাড়াইল ॥ ২ ধরণী-উপরে তাহা নহে বিশ্বয়কর ॥ মানব মুনি-নায়ক আত্মতম্ব-ভেদবাদী ॥ ৩ কে আছে জগভী-ভলে কাম না নাচায় ঘা'রে॥ ক্রোধের দহনে কা'র প্রাণ নাহি দহে হায়॥ ৪

ৰো—জানী পণ্ডিত বিড়ম্বনা নাহি মদ-বক্ত কা'রে মুগ-নম্বনীর

তপোরত কবি করে কা'র সনে রমা নাহি করে

नव्रदनव वाग

গুণাধার দেবভারে। বল' লোভ সংসারে 🛚 ৭০(ক) কৰ্ণহীন প্ৰস্থৃতায়। (क चार्ड नार्श ना या'ग्र ॥ १०(७)

চৌ-ভিনন্তণ-ত্তমিপাভ-রোগে রোগী কেবা নয়। মান মদ কা'রে নাহি পরশে জীবনময়। ষৌবন-স্থর ভাপে কে আপনা না ভূলিল। অহন্তার মসী-ছাপ দেয় না কাহার গায়। চিন্তা-সাপিনী কা'রে না করিল দংখন।

মমতা কাহার যশ কহ মোরে না নাশিল 1 ১ কোন জন বিভাডিত নাহি হয় শোক-বায় । ধরা-মাঝে কেবা নাছি সছে মান্তা-বন্ধন ৷ ২

চিন্তাই কীট আর এ শরীর দারু-খান। ধন সন্তান আর প্রতিষ্ঠা-কামনা তিন। মহা বলবান্ এরা সব মায়া-পরিবার। মহেশ চতুরানন যা'র ভয়ে ভয়-যুত। এ ঘৃণ ধরে না কা'রে কে হেন ধীর্যবান্ ॥
কা'র মন হেন আছে করিল না যা' মলিন ॥ ৩
প্রবল অপার সবে কহিতে শক্তি কা'র॥
ভূচ্ছ জীবের কথা কেবা গণে কহ ডাঙা। ৪

| দো-সংসার-মাঝে | প্রসারিত রহে | মায়ার কটক চও। |
|------------------------|----------------|------------------------------|
| কামাদি সক <i>লে</i> | সেনাপড়ি সেনা | দম্ভ কপট ভগু । ৭১(ক) |
| ভবে এই মায়া | গ্রীরামের দাসী | বুৰিলে যদিও মিথা। |
| রাম- কু পা বিনা | খুচেনাক' ভ্ৰম | জ্ঞান হয় যেন নিভ্যা ॥ ৭১(४) |

Gb)—বেই মায়াময়ী মায়া ত্রিজুবনে নাচাইল।
প্রজুর নয়ন-ভঙ্গি-ভরে সেই থগবর।
সেই সং-চিং-স্থ-ঘন রঘুবর রাম।
ব্যাপ্য ব্যাপক আর অ-বিকল ধণ্ডহীন।
অমলিন সর্বদর্শী মায়া গুণ বিরহিত।
নির্গম নিরাকার মোহ নাহি ছোঁয় বাঁবে।
প্রাকৃতি-অতীত প্রভু স্বার হৃদ্য়-বাসী।
রামের স্থদয়ে মোহ কভু স্থান নাহি পায়।

যাহার মরম কেহ বুঝিবারে না পাইল ।
নচী-সম নাচে নাচ সহ নিজ অমুচর ॥ ১
জনম-অতীত বিজ্ঞানরূপ বলধাম ॥
অমিত অমোঘ-বল ভগবান্ অস্তহীন ॥ ২
অজেয় মহান্ আর বাণী ইন্দ্রিয়াতীভ ॥
নিত্য অ-পাপ বিভূ সুখরাশি চরাচরে ॥ ৩
বিরক্ষ অতীত-ইচ্ছা ব্রহ্ম তিনি অবিনাশী ॥
তমোরাশি কখনো কি দিনকর-পাশে যায় ॥ ৪

| দো—ভকতের হেতু | প্রভু ভগবান্ | ভূপ-কলেবর ধরি'। |
|----------------|------------------|--------------------------|
| পুত-লীলা নিজ | দেখা'ন সবারে | মানবেরে অমুকারি'॥ ৭২(ক) |
| न्हें यथा नाना | বেশেতে সাব্দিয়া | ফিরে অঙ্গন-ময়। |
| বেশ-অমুরূপ | ভাব সে দেখায় | নিজ-ভাব তাহা নয় ॥ ৭২(খ) |

(চী—দেইমত রঘুপাত-শীলা ওতে উরগারি।
মিলিনতা-ভরা মন বিষয়ের বশ যা'রা।
পাঞ্-রোগেতে রোগী হয় যেবা অফু'খন।
যদি কা'রো দিক্-অম হয় তবে উরগারি।
নৌকা-আরোহী হেরে মেদিনী চলিয়া যায়।
ঘূর্ণিত শিশু হেরে ঘুরিতেছে গৃহ আদি।
হেন কল্পনা শুধু হরিতে মোহ-আবেশ।
কিল্প যেবা মায়াবল্প-মন্দমতি ভাগ্যহত।
যুক্তি ঠেলি' সেই মৃট সন্দেহ পুষে প্রাণে।

দিভিস্থত-।বমোহন জন-মন-স্থকারী॥

এইমত করে মায়া প্রভুতে আবোপ তা'রা॥ ১

পীত বরণের শশী করে সেই দরশন॥

সে বলে প্রতীচী হ'তে সমূদিত তমোহারী॥ ২

মোছের বশেতে ভাবে নিজেরে অচল-প্রায়॥

সভ্য কহিলে বলে এ উহায় মিথ্যাবাদী॥ ৩

ম্বপনেও ভগবানে নাহি অজ্ঞতা-লেশ॥

প্রাণে যা'র প'ড়ে আছে আবরণ বহুশত॥ ৪

আপনার অজ্ঞভা আবোপ করে শীরামে॥ ৫

ৰে কাম কোধ লোভ মোহ-বল যেবা ছখ-রূপ গুহাসক। **(क्श्रांन हिनिर्व** সে ড' ডমোকুপ-রক্ত 🛚 ৭৬(ক) সে রখুনাথেরে নিৰ্জণ ক্ৰপ বুৰিতে সহজ न-७१ वृका ना वात । म-खर्भन मीना স্থগম অগম মুনি পরাভব পায়। ৭৩(খ)

Cচী—শুনহ বিহগরাজ এরাম-মহিমা-কথা। মোহ-সঞ্চার মম হ'য়েছিল বে প্রকার। তুমি ভাত রঘুনাথ রামের কুপা-ভাতন। এ-কারণে গোপনীয় কিছু নাহি ভব পাশে। রামের স্বভাব-কণা করি ভাত বর্ণন। क्य-भव्यक्तेश मः मात्र मुलाशात । এহেতু করেন মোহ বিদুরিত কুপাধার। ষেমন শিশুর দেহে হইলে দুবিত ত্রণ।

জ্ঞান-মত কহি সেই প্রাণ-মনোহর গাণা 🛭 শুনাই ভোমারে সেই স্বিশেব স্মাচার ॥ ১ হরিগুণ-অনুরাগী মোর হৃদি-রঞ্জন ॥ পরম রহস্ত-কথা বলিব তব সকালে ৷ ২ ভক্ত জনের মোহ না রাখেন কদাচন ঃ বন্ধ ক্লেশ-প্রদ আর নিদারণ শোকাগার। ৩ করণা ভকত 'পরে জীরামের এ প্রকার । জননী চিরা'ন তাহা হইয়া পাষাণী সম # 8

দো-যদিও যাতনা শিশু পায় ডাহে কাতরে রোদন করে। তারি ব্যাধি-নাশ তরে॥ ৭৪(ক) বেদনা ভাহার না ভাবেন মাতা খুচা'ন ভাহার মান। তথা দাস-হিত হেতু রঘুনাথ ভ্রম ভেয়াগিয়া কেন না সঁপিব প্রাণ ॥ ৭৪(খ) এমন প্রস্তুরে

(5)— श्रीद्वारमद्र कुला आत मूर्थे आलाता । এই कथा विल कद अवधान এইवाद ॥ যভবার নরক্রপ ধারণ করিয়া রাম। ডভবার আমি সেই কোশল নগরে যাই। জনমের উৎসব করি গিয়া দরশন। অভীষ্ট দেবতা মম জীরাম বালকরপ। আপন প্রভুর মুখ নির্ধি' নয়ন ভরি'। শাবক-বায়সরূপ ধরি' ফিরি তাঁ'র সাথে।

ভকতের তরে লীলা আচরে'ন গুণধাম ॥ ১ শিওলীলা নির্বিয়া অভিশয় স্থুৰ পাই ॥ পঞ বরষ **लोला** হেরি মন-বিমোহন ॥ ২ শতকোটি কাম জিনি' তমু-শোভা অপরূপ। নয়ন সফল মম করি আমি উরগারি ॥ ৩ রামের বালক-লীলা হেরি কভ বিধিমভে 🛚 ৪

সাথেতে উজিয়া যাই। (मा-यश यश या'न শিশু ভগবান্ পড়িলে ভূমিতে व्यमनि भू विद्रा बादे ॥ १८(क) প্রসাদ ভাঁহার করিলেন রখুবীর। একবার লীলা অতি অপরূপ পুলকি' উঠে শরীর॥ ৭৫(খ) त्म नौमा क्षपूत्र স্মরণ করিয়া

(5)--कहिर्छ बाग्रम छ्रत छन्द अग-नाग्रक। विजाम-চित्रिष्ठकथा छक्छ-सूथमाग्रक। हाक्र दुश-मन्दित्र गव विधि श्रुन्दत्र।

कनरक बिष्ठ मिन-बिष्ठ व्यामाप-वत्र ॥ >

মনোহর অঙ্গন কি শোষ্টা কহিব কা'রে।
দীলায় বিনোদ করি' জননীর প্রাণ মন।
মরকত মণি-সম মৃত্যু-কলেবর শ্রাম।
নবীন রাজীব সম কোমল চরণদ্বয়।
ফুন্দর রেখা ধ্বজ কুলিশাঙ্কুশ চারি।
কনক-রচিত কিবা ধ্চিত রতনবর।

চারি ভাই যেইখানে খেলেন পুলকডরে ।
করেন সে অঙ্গনে শিশু রাম বিচরণ ॥ ২
সারাদেহে শোভা করে যেন শতকোটি কাম ॥
পদক কৃচির নথ শশী-ভাতি হ'রে লয়॥ ৩
সে পদে নুপুর-মৃত্ব মধু শুঞ্জনকারী ॥
কটি-কিছিনী কল-মুখ্র মানসহর ॥ ৪

জো—নাজি রমণীয় বিশাল উরস গোপুর উদর ভাহে বালোচিত

ত্রিবলীর রেখা ডা'য়। বেশভূষা শোভা পায়। ৭৬

(5)—পাণিতল হিশ্বল অঙ্গুলী নথ শোভে।
কম্বু-কণ্ঠ বাল-কেশরী-অংস গ্রীবা।
আধ আধ লিশু-ভাষা অধরে অরুণ-ভাতি।
ললিত কপোল নাসা স্থাঠিত মনোহর।
স্থাল কমল-আঁথি ভবভয় বিমোচন।
জম্বা স্বাহিম প্রবণ-যুগল সম।
পীত অলরাখা গায়ে মরি কিবা গোভাময়।
দশরখ-অঙ্গন-বিচরণকারী হরি।
করেন আমার সনে বিবিধ কতই খেলা।
কল-হালি হেসে যবে আমারে ধরিতে বা'ন।

ভূষিত বিশাল ভূক-যুগল মানস লোভে ।

চিবুক আনন-ছবি অতুলন শোড়া কিবা ॥ ১
কুল্ল-থবল শোড়ে তুই ছুই রদ-পাঁতি ।
প্রাণ-বিমোহন হাসি যেন রাকা শশধর ॥ ২
শোভিত ললাট 'পরে ভিলক গোরোচন ॥
কুঞ্চিত কেশদাম শ্রাম-শিধিপাধা যেন ॥ ৩
মোহন দিঠিতে ভাবে প্রাণে বড় সুখ হয় ॥
নাচেন পূলকভরে আপনার ছায়া হেরি' ॥ ৪
পাই লাজ বিবরিতে তাঁ'র সেই সর লীলা ॥
পলাই মুখের গ্রাস তখন মোরে দেখান ॥ ৫

দো—নিকটে আসিলে
চরণ ছুঁইডে
উপ**জিল** মোহ
চিৎ-সুখ-খন

হাসেন শ্রীহরি যাইলে পলান ভাদয়ে আমার চরাচর-প্রাভূ কাঁদেন পলা'লে পরে।
চাহিতে চাহিতে কিরে' । ৭৭(ক)
সেই শিশুলীলা দেখি'।
তাঁ'র ছেলে-খেলা একি॥ ৭৭(খ)

(b)—বেমনি একথা মনে উদয় হইল মোর।
তবে রাম-কুণাবলে আমারে না ছথ দিল।
অপর কারণ কিছু আছয়ে ইহার কোন।
তথু এক সীতাপতি অথও জ্ঞান-রূপ।
জীবের রহিল বদি হেন অথও জ্ঞান।
মারার বশেতে জীব রহে মোহে বিজড়িত।
পর-বশ জীব আর জীনাথ খ-বশে রন।
বদিও জলীক এই জ্যে মারা-বিরহিত।

রামের প্রেরিড মায়া অমনি ব্যাপিল ঘোর ॥
কিয়া আর জাব-মড ভববোরে না খুরা'ল ॥ ১
এবে সে কারণ-কথা অবহিত হ'রে শুন ॥
বাকী জড় কি চেতন সজ্জিত মারা-কূপ ॥ ২
ডবে বল কি প্রভেদ জীব আর ভগবান্॥
সে শুণ-জননী মারা রহে বিজু-পদাঞ্জিত ॥ ৩
চরাচরে এক প্রভু কিন্ত জীব অগণন ॥
ভথাপি শ্রীহরি বিনা নহে ইহা নিবারিত ॥ ৪

| ८पोत्रम् नाथ-शम | ভৰনানাকরি' | বে চাহে মুক্তি-পদ। |
|------------------------|---------------|-------------------------|
| হইলেও জানী | শৃঙ্গ পুৰুহীন | পশু সেই চারিপদ । ৭৮(ক) |
| সৰ গিরি-চূড়ে | দাবানল-ভাতি | রাকা শশী ভারা সাথে। |
| মিলিলেও রবি | বিহনে কখনো | তমোদুর নহে তা'তে॥ ৭৮(খ) |

(b)--- त्रहेशक वंगतांक औहति-छलना विना । कथरना मिर्छ ना कौरव नाक्रण कथ-यांकना । হরির ভক্তজনে কখনো লাগে না মায়া। একারণে ভকতের কথনো বিনাশ নাই। যবে হেরিলেন রাম ভ্রমেতে চকিত মোরে। ভাঁহার লীলার কেহ না বুঝিল ভেদ সার। চলেন ধরিতে মোরে জামু-পাণি যোগে হরি। ছই পাথা ছড়াইয়া উড়িয়া চলিত্র আমি। যভদুর আকাশেতে উভিয়া পলাতে যাই।

প্রভুর প্রেরিড জ্ঞানে উল্লেখ ডাহার হিয়া ॥ ১ অন্তরে ভেদভক্তি বাডে ডা'র সর্বাহাই ॥ হাসিলেন মুহুহাসি শুন দীলা ভা'র পরে॥ ২ কিবা সহোদরগণ মাতা কি জনক আর ॥ অক্রণ-চরণ কর শ্রামল ব্যানধারী ॥ ৩ ধরিতে আমারে ভূজ বাড়া'ন জ্বনস্বামী ॥ ভত্ত তাঁচার বান্ত নিকটে দেখিতে পাই ॥ ৪

| দো —বিধি-লোকে উড়ে' | পৰাইত ভয়ে | দেখিত্ব ফিরিয়া পাছে। |
|----------------------------|-----------------|----------------------------|
| রাম-বাজ্ আর | আমার মাঝারে | ছু' আঙ্গুল দূর আছে ॥ ৭৯(ক) |
| শত আবরণ | ভেদ করি' মোর | গতি ছিল্মত দুর। |
| শেখানে গিয়াও | প্রভু-ভুজ হেরি' | হ'লাম ভয়ে আতৃর ॥ ৭৯(খ) |

(5)—মাজ ত্রাণ হ'ল ববে আঁখি হ'ল নিমীলি ছ। চেরে দেখি পুন: কিরি কোণলে মামি আগত। চাহিয়া আমার পানে হাসিলেন রযুনাথ। হে অওজ-রাজ ওন দেই উপরের মাঝে। কত অভিনব লোক কি রচনা অগণন। কোটি কমল্যোনি কোটি উমাপতি হর। গণনা-অভীত যম কাল আর লোকপাল। অসংখ্য গহন নদ সরোবর পারাবার। স্থর মূলি থগ নাগ গন্ধর্ব কিল্লর নর।

वााषिक वन्ति आमि अविभिन्न अवितार ॥ ১ হেরিত্র গণনাতীত কত ব্রহ্মাণ্ড রাজে। এক অন্ত হ'তে বড কি করিব বর্ণন। ২ অগণিত গ্রহ ভারা শশধর দিবাকর ॥ কতই ভূধর কত মহীতল স্থবিশাল॥ ৩ অনম্ভ-প্রসার কত রচনা নানা প্রকার॥ খেদ জরায়ুজ জীব কতই সচরাচর॥ ৪

| দো —কথনো দেখিনি | কাণেতে শুনিনি | মনেতে ভাবিনি যাহা। |
|------------------------|------------------|--|
| সে-সব অমৃত | হেরিমু স্থান | কেমনে কহিব ভা ল ॥৮ ০(ক) |
| শতেক বরষ | ক্রিন্থ তথায় | বাস প্ৰত্যেক খণ্ডে। |
| এমন করিয়া | দেধিয়া ভ্ৰমিত্ব | অনেক ব্ৰহ্ম-অণ্ডে। ৮০(খ) |

(6)—প্রভ্যেক পোক 'পরে পৃথক্ ভাগ্য-বিখাতা বিঞু শিব লোকশাল সকলি পৃথক্ ভথা।। গন্ধৰ্ব কিবৰ নৰ বেডাল পিলাচগণ। সে সকলি ভিন্ন ভিন্ন পশু পাৰী অগণনঃ ১ দেবতা দমুদ্রগণ তথার বিবিধ ভাঁতি। व्यत्नक पृथिवी शिवि नमी मत ७ माशव। প্রত্যেক লোক-মাঝে দেখে'ছি আমারে নিলে। প্রত্যেক লোকে দেখি র'য়েছে কোশলপুরী। দশর্থ কৌশল্যা তথা দেখিবারে পাই। প্রতি ব্রহ্ম-অণ্ড মাঝে অবভার রূপে রাম।

জীব সব ভথাকার নানাকার প্রতিকৃতি॥ मकन ब्रुटना छवा नानाविश करमवर ॥ २ অমুপম জ্বাচয় দেখিয়াছি কত কি যে ৷ বিভিন্ন সর্যু তথা ভিন্ন যত নরনারী ॥ ৩ সবই বিভিন্ন রূপ ভরতাদি তিনভাই **॥** (मिथवाडि मिस्नेतीमा व्याटरवन व्यागावाम ॥ ८

(प)-गक्लि भुषक् করি দরশন অগণন লোকে দেখিতু কেবল সেই শিশুরূপ সেই এক শোভা ष्ट्रवरन खुवरन কিরিলাম হেরি'

পৃথক্ পৃথক্ ধাম। সেই এক প্রস্থ রাম। ৮১(ক) लग्रामय तच्यीत । ভাজিত মোহ-সমীর ॥ ৮১(খ)

6ो - এমণ করিতে এই ভুবন গণনাহীন। ভ্রমিতে শেবে কিরি' নিঙ্গ আবাদেতে। তনি' পুন: অযোধ্যার প্রস্তু-অবভার-কথা। করিলাম দরশন জনমের মহোৎদব। রামের জঠর মাঝে হেরে'ছি জগত যত। অযোধ্যায় আদি' পুন: हित्रिक खनग्रवामी। व्याननात मन्नामार्थ विज्ञातिक वात्रवात । अक्ष मार्व (वन (हिन्नग्राहि क नकता।

ভেবে' দেখ বছ কল্প কালোদরে হ'ল দীন ॥ যাপন করিত্ব কাল তথা পুন: নানামতে॥ ১ প্রেমেতে পুরিত প্রাণ চলিত্ব বরিত তথা। যেমন কথন আগে ক'রেছি তোমারে সব॥ ২ দেখিবারে সেই সব বর্ণিয়া ক'ব কত # কুপার আধার প্রভু সবার অন্তর্যামী ॥ ৩ মোহের আবিদ পাঁকে মঞ্জিত মন আমার॥ বিশেব মোহেতে মন হইল অভি বিকল ॥ ৪

| ৰো-বিক্স চেরিয়া | হাদেন আবার | কুপানয় রষ্ট্রবীর। |
|------------------|---------------|--------------------------|
| সে হাদির কাঁকে | আসিত্ব বাহিরে | ত্তন ওরে মতি ধীর । ৮২(ক) |
| বাললীলা রাম | করিতে লাগিল। | আবার আমার দনে । |
| কোটি মতে ক্ত | বুকাইর ভারু | শান্তি নাহিত মনে। ৮২(খ) |

(5) — নির্বিরাদীলা আর প্রভূতাকেরিয়া তাঁর। আসান দেকের জ্ঞান হরণ হ'ল আমার ম পঞ্জিম ধরা 'পরে মুখে নাই আর কথা। প্রেমাকুল মোরে প্রমু করিয়া অবলোকন। সরোক্ত কর নিহ্ন রাধিয়। আবার শিবে। করিলেন মোরে রাম এককালে মোহশৃক্ত। প্রথম-দর্মার কথা প্রস্তুতা করি' স্মরণ। खक्रबं अकि पदा मिथिता अञ्च मन्। হরষ-সঞ্জ চ'বে জুড়িয়া বুগল পাণি।

রকা কর রকা কর আর্ত্তন-ভয়ত্রাতা ৷ ১ আপন প্রভাব মায়া করিলা অপহরণ 🏾 লীননাথ সব থেক ছরিলা নিমেবভারে 🛚 ২ ভকত-আনন্দদাতা দয়ালুর অপ্রগণ্য॥ हहेन खडीर मन शूनरकरड निमनन ॥ ७ অভ্যন অনুৱাগ উপজিল মোর প্রাণে 🛊 কহিছু অনেক বিধি মিনতি-পুরিত বাৰী। 8

| বে –প্রেমেতে প্রিভ | মোর কথা শুনি' | হেরি [*] দীন নি জ দাস । |
|--------------------|---------------|---|
| সুখদ-বচন | গম্ভীর মৃত্ | কহেন রমা-নিবাস। ৮৩ (ক) |
| হে কাক-ভুষ্ণ্ডি | যাচ'বর অভি | প্রীত ভোমা 'পরে জানি'। |
| অষ্টদিন্ধি কিবা | যত ঋকি লহ | মোক-মূখের খনি।৮৩ (খ) |

চৌ—বিরতি বিজ্ঞান জ্ঞান বিবেক মাছয়ে যত। মূনিজন-হর্মাভ এ জগতে গুণ শত। প্রদান করিব ভোম। নাহি সংশয় ভা'য়। প্রনিয়া বচন প্রাণ ভ'রে গেল অনুরাগে। সব দান দিতে প্রভু করিলেন অঙ্গীকার। ভক্তি-বিহীন গুণ সব সুধ এইমত। ভঙ্গনা-বিহীন হ'রে স্থথে মোর কিবা কাজ। সত্য যদি দাও বর হেনাধ হ'য়ে সদয়। ভবে প্রস্থাই বর প্রার্থনা পদতলে।

তা'ই চাহ মোর পাশে তব মন যাহা চায়॥ ১ ভাবিতে লাগিমু বর নিঙ্গ হৃদি-পুর-ভাগে। ভক্তি-দানের কথা ক'ন নি ড' একবার॥ ২ লবণ-বিহীন বহু সিদ্ধ ভোজন যত ॥ ভাবিয়া জুড়িয়া কর কহিলাম খগরাজ 🛚 🗢 সত্য যদি দীন 'পরে কর কুপ। কুপাময়॥ করি হে অস্তর্যামি দেহ বর দীন ব'লে॥ ৪

পো-অবিরল ভব তথা ভকতি যোগী-পতি মুনি পুঁলে যা' সভত ভক্ত-সুরভক্ প্রণত-তারণ গে নিজ ভকাত হে প্রভু আমারে

ৰেদ পুরাণে যা' গায়। কুপাতে কদাচ পায়॥৮৪ (ক) कुलानिधि च्रुभशम। पद्मा कति' (पर त्राम । ৮8 (**४**)

চৌ--'এবমস্তু' বলি' তবে রবুর কুল-নায়ক। 🕶নহ বার্দ ভূমি স্বভাবত: মতিমান। সকল সুখের খনি ভকতি চে'য়েছ তা'ই। व्यथ रयागानन-मार्ख परिवा व्यापन काय । তব চতুরতা হেরি' প্রীতি-ধার হাদে বয়। **ও**নহ বিহণ কৃহি আমার দ্য়ার ফলে। বিরাগ অথবা যোগ ভক্তি কি তম্বুজান। ত্তব অমুভবে হরা আসিবে সকল ভেদ।

বলেন বচন প্রভু অভীব স্থপ-দায়ক। **(मरहरू यांकिस्म और मर्स्याखम वंत्रमान ॥)** ভাগ্য ভোমার সম জগ-মাঝে কা'রো নাই 🛚 कउरे यजन कति' मृनि रेश नारि পाय ॥ २ চে'য়েছ ডকভি-বর পুলকিত অভিশয়। সবগুণ বিরাজিবে ভোমার শ্রদয়-তলে । ৩ আমার লীলার বহু রহস্ত অথবা ভ্রান ॥ আমার প্রসাদে নাহি লাগিবে সাধন-খেদ# ॥ ৪

শে—মায়া-জাত যত कानिम अनामि ভক্ত আমার কায় বাক্ মনে

ভ্ৰম সৰ আর স-গুণ অ-গুণ व्यित्र व्यानामात्र क'रता भात शरम ক্ষু না লাগিবে ভোৱে। बन्ध विद्या भारत ॥ ৮৫ (क) এ বিচারি' শুন কাক। অবিচল অমুরাগ। ৮৫ (৭)

[•] नाश्नाव क्रि

চৌ-এবে শুন বাণী মম নিশ্মল স্থললিত। নিজ সিদ্ধান্ত এই কহিব তব গোচরে। মম মায়া হ'তে এই জগতের উদ্ভব। সকলেই প্রিয় মম আমা হ'তে উদ্ভুত। মানবের মাঝে বিজ বিজ-মাঝে শ্রুতিধারী। निष्ठां होते ने भारत दिया य द्यांनी वित्रां १ - यू छ। ভাহাদের মাঝে প্রিয় লাগে মোর নিজ্ঞ-দাস। সভাই ভব পাশে কৰি আমি বারবার। खक्छि-विश्रीन यपि श'न-e postina। ভক্তি-বিশীন চিত হইলেও নীচ প্রাণী।

সভা সহজ যাতা নিগমাদি বাখানিত ! স্মরণে রাখিও আর সব ত্যক্তি ড'ক্তো মোরে ॥১ निवरम विविध यथा हजाहज स्मीव भव ॥ মানৰ স্বার হ'তে মোর পাশে আদৃত ॥ ২ তাহাদের মাঝে পুন: বেদধর্ম-নিষ্ঠাচারী। বিরাগী-ভিতরে অতি প্রিয় অমুভব-যুত। ৩ যে সম-অন্যুম্ভি অপরে না রাখে আশ ! ভকতের সম প্রিয় কেচ ষম নাহি আর ॥ ৪ সাধারণ জীব সম ভিনি মম প্রিয় হ'ন ! প্রাণ-সম প্রিয় সেই এ মোর ছোষণা-বাণী। ৫

(দা—পূণিত স্থ**ী**ল এ নীডিতে ভরা স্থমতি সেবকে শ্বতি বেদ সব

ভিজে না কাহার প্রাণ। कत्र हेहा व्यवसान ॥ ৮७

চৌ-একই পিতার হ'লে একাধিক সম্ভান। কেহ পশুত কেহ তপ-রত কেহ জ্ঞানী। কেহ মহা-জ্ঞানী কিম্বাধর্ম-রত কোনজন। কিন্ধ যে পিডায় রভ সব করি' পরিহার। সে তনয় প্রিয় হয় পিতার প্রাণের সম। এইনত চরাচর-মাঝে যত জীব রয়। মো' হ'তে উন্ত এই অধিদ ভূবন মাঝে। কিন্তু ভাহার মাঝে পরিহরি' মদ মায়।।

হয় তা'রা ভিন্ন মত শীল আর গুণবান্।। কেহ ধনবান কেহ সুধীর কেহ বা দানী ॥ ১ স্বারি উপরে থাকে পিতার সমান মন। স্থপনেও নাহি জানে এ বিনা ধরম আর॥ ২ হ'লেও অপর যত স্বত হ'তে হীনতম ॥ দেব নর আদি করি' দমুক্ত অম্বরচয় ॥ ৩ স্বারি উপরে মোর সমান করণা রাজে ॥ যে ভলে আমারে সঁপি'মানস বচন কায়া ॥৪

(प)-र'क (म श्रुक्य অৰুপটে সব-অন্তা অ-কাম মনে এ বিচারি

অথবারমণী ভাবে যে ভঞ্জিবে মম-রড মতি জগ-আলা ছাড়ি' *

কিম্বা আর জীব কোন। (म-इ ह'रव शिव्रडम ॥ ৮२ (क) প্রাণ-সম প্রিয় ভক্ত। মো'তে হও অনুরক্ত । ৮१ (४)

C51- जव 'পরে কাল নাহি দেখা'বে প্রভাব তা'র। কেলে ভাবিও নোরে আর ভক্ষ' অনিবার # তৃত্তি প্রভুর বাণী শুনি' হুদে নাহি আদে। कि ख्रथ श्रमत्त्र कार्य कारन कारन कारन मन। এ নয়ন জানে মোর প্রভুর রূপের শোভা। এছাবে প্রবাধি ধন্ত করি বহু ক্থে মোরে। খেলিতে লাগিলা পুনঃ তেমনি-ই লীলা-ভরে। नशरन यानिशा वन पूर्य किছु ज्ञान कति'।

শিহরিত কলেবর অতি স্থাধে মন ভালে। ১ কমনে ভা' রসনার করি আমি বর্ণন। কানে কেমনে ক'ব কি সে বিভা মনোলোভা ॥২ চাহেন জননী-পানে अडीव कृषिङ इति ॥ ०

কাতর নেহারি' মাতা উঠিয়া আসেন ছরা। যভনে বসাংয়ে কোলে করা'ন পীয়ৰ পান।

ধরেন চাপিয়া বুকে বলি' বাণী স্লেছ-ভরা॥ ওাঁচার ললিড লীলা আমরে করিয়া গান । ৪

| লো —যে স্থাপের ভারে | ত্তিপুর-অরাতি | অশুভ-বেশেতে র'ন। |
|----------------------------|---------------|-----------------------------|
| যে স্থ-সাগরে | কোশলের বাসী | নিড-প্রতি নিমগন । ৮৮ (ক) |
| সে শ্বধের অমু- | পরমাণু যেবা | বারেক স্বপনে পায়। |
| ব্ৰহ্মপদ-সুখ | ভা'ব গণনায | না আসে বিহুগ-বায় ॥ ১৮৮ (৩) |

টৌ--আরো কিছুদিন আমি রহিলাম অযোধ্যায়। হেরিলাম শিশুলীলা প্রেমের মগনভায়।

রামের প্রসাদে লড়ি' ভক্তির বরদান। এইক্সেথ্ যে অবধি নে'ছেন আপন ক'রে। স্থ-গোপন লীলা এই করিলাম কীর্ত্তন। আমার যা' অমুভব ভোমারে কহি ধংগশ। জীরামের কুপা বিনা ওন হে বিহগ-রায়। শকতি নাজানা হ'লে স্থায়ী নতে পরতীতি। দৃঢ় প্রীতি না থাকিলে ভক্তি নাহিক রয়।

আঞ্জমে এরু ফিরে' তাঁহারে করি' প্রণাম # ১ সে অবধি মায়া নাইি বিমোহিত করে মোরে॥ হরির প্রেরিত মায়া নাচা'ল মোরে যেমন । ২ হরির ভজনা বিনা না হয় ক্লেশের শেষ। তাঁহার শক্তি কত কভু নাহি স্থানা যায়। ৩ বিশ্বাস বিনা কচ কেমনে জাগিবে প্রীতি। সলিলের ঝিকিমিকি কডটুকু স্থায়ী হয়॥ ৪

| দো —গুরু বিনা জ্ঞান | হয় না কথনো | ভা' বিনা বিরাগ নয়। |
|----------------------------|---------------|--------------------------|
| হরিভক্তি বিনা | নাহি কোন স্থপ | বেদ পুরাণেডে কয় ॥ ৮৯(ক) |
| শান্তি কি প্রাণে | পায় কভু যা'র | সস্তোষ নাই স্বভাবে। |
| শন্ত উপায়েও | চলে কি কথনো | ভরণী জলের অভাবে ॥ ৮৯(খ) |

চৌ-সন্তোষ বিনা নাশ নাহি হয় কামনার। রামের ভজনা বিনা কামনা না নাশ হয়। পরা-জ্ঞান না জাগেলে সমতা আসে কি প্রাণে। দুরতা রহে কি কভু নভঃ অবর্ত্তমানে ॥ ধৰ্ম নাতিক থাকে প্ৰছোনা যদি রয়। ভাপ বিনা ভেছ কভু কেমনে প্রসার পা'বে। প্রিভ-সেবা বিনা সদাচার নাহি আসে। আত্ম-আনন্দ বিনাতির কি হে হয় মন। প্রজীতি না এলে প্রাণে সিদ্ধি কি কন্তু হয়।

কামনা থাকিতে ত্বথ কড়ু নহে লভিষার। थत्रनी विश्रम ७क छैरा कि कड़ श्रा । ১ ক্ষিতিতল বিনা বাস্ত থাকা সম্ভব নয় ৷ ২ জলের বিহনে রস কিসে সঞ্চব হ'বে ! एक विना क्रेश यथा क्थन का क्षकारण । ७ সমীরণ-তথ বিনা হয় নাক' প্রশন # **ঐ**হরি-ভঙ্কনা বিনা ভবঙ্কয় নাশ∙নয় ॥ ৪

| দো—বিশাস বিনা | নাহিক ভক্তি | তা' বিনা জবে না রাম। |
|---------------|-------------|--------------------------|
| রাম-কুণা বিনা | স্বপনেও জাব | শভে না ক' বিশ্লাম। ৯০(ক) |

জীরাষ্চরিত মানস

এ বিচার মনে ভজ রঘুবীর

রাখিয়া সভত কর্মণা-আকর-

ভর্ক সংশয় ভ্যঞ্চি । সুখদ চরণে মঞি । ৯০(খ)

(5)-- নিজমতি অমুসরি' করিলাম বর্ণন। দেখেছি' এসব আমি আপনার আঁখি খোগে। অসীম অপার সব রঘুনাথ-গুণগ্রাম। নিজনিজ মতি-মত মুনি হরিগুণ গা'ন।

প্রভুর প্রতাপ নাথ খগকুল-বিভূষণ । অভিরঞ্জন নাই যুক্তির সহযোগে ॥ ১ কিবা রূপ কিবা লীলা অথবা পাবন নাম। নিগম মহেশ শেষ অস্তুনা তাঁর পাঁন ॥ ২

রাবের মহানভা

ভোমা হ'তে আদি করি' মশক অবধি ধায়। দেইমত রঘুপতি-মহিমা অ-গত তল। শতকোটি কাম-সম স্থলর তত্থারী। বিলাস-বিভবযুত যেন কোটি সুরেশ্বর।

আকাশ মাঝারে তবু অন্ত না কেছ পায়। অন্তনাকেহ পায় অ-প্রমেয় অভিবল ॥ ৩ কোটি ঈশানী-সম অমিত অরাতিহারী # কোটি আকাশ-প্রায় প্রসার বিহগবর 🛭 ৪

দো-শতকোটি বায়-সম বলশালী শতকোটি শশী সমান শীতল শতকোটি কাল সমান আবার শতকোটি ধুম-কেতুর সমান

শমন সকল-ভব-ত্রাস ॥ ৯১ (ক) ছন্তর ছুর্গ# ছরন্ত । হর্জয় ভগবন্ত ॥ ৯১(খ)

শতকোটি রবি-ভাষ।

তীর্থ সহস্রকোটি-সম তিনি পুতধাম। কোটি হিমালয়-সম অবিচল রঘুবীর। কোটি কামধেত্ব-সম দয়াময় কুপাবান। শত বাগেবী-সম অ-প্রমেয় চতুরতা। কোটিকোটি বিষ্ণু-সম পালন-ভব-কারণ। কুবের সহস্রকোটি-সমান বিভববান্। ভারধারী যথা শতকোটি অহি-**ঈশ্ব**র।

(5)—অগাধ পাতাল-সম-শতকোটি প্রভু মোর। করাল শমন-শতকোটি-সমান ছোর। অধিল-পাতক চির-বিনাশন তাঁ'র নাম ॥ ১ শতকোটি পারাবার সম মহাগন্তীর 🏾 সকল কামনা-ফল-বিধায়ক ভগবান # ২ শতকোটি বিধি-সম সৃষ্টির নিপুণতা 🛭 রুজ্বদেব কোটিশভ-সমান জগ-নাশন॥ ৩ কোটি মায়া জিনি' তাঁ'র স্কনের উপাদান # সব(ই) সীম⊢বিরহিত অমুপ জগদীশ্বর ৷ ৪

ছ-- নিক্লপম নাহি উপমা আর সম শতকোটি-খন্ডোত রবি মন অনুসরি' এইমত নিজ টুকুল'ন অতি প্ৰভু শুধু ভাব-দো-অণের অতল-সাগর জীরাম সম্ভের কাছে শুনে'ছি যেমন

রাম(ই) সম রাম নিগম কয়। উপমায় যথা লম্ভা হয় 🛭 মুনিগণ তাঁ'র মহিষা গা'ন। মুখ কুপাময় ভাহাতে পা'ন 🛚 কেহ নাহি তল পায়। কহিলাম সমুদায় 🛚 ৯২(ক)

প্রেমভাব-বশ আনকী-পড়িরে শুধু ভগবান্ ভজিও সভত সুথাকর কুপাধাম। ভ্যঞ্জি' মায়া মদ মান 🛚 ঽ (ব)

(ठो-एनि' कृष्तित वागी अवरणत स्वकत । নয়নে ভরিল জল মন অভি হর্ষিত। শ্বরি' পূর্বের মোচ অহুতাপ এল এবে। বার বার বায়সের চরণে সুটায় শির। গুরু বিনা ভবনিধি তরিতে নাহি শক্তি। সন্দেহ-অহি তাত দংশিয়াছিল মোরে। ডোমা-সম অহি-বৈছ দিয়া প্রীঞ্চানকী-নাধ। ভোমার প্রসাদে মোর মোহ হ'ল খণ্ডন।

হর্ষিত খগপতি শিহরিত কলেবর 🛊 জীৱাম-প্ৰভাপ হ'ল হাদিমাৰে দৃঢ়ীভূত ॥ ১ পরম পুরুষে ভ্রমে মান্তুষ-সমান ভেবে ॥ বাড়ার প্রণয় মানি' তা'রে সম রখুবীর ॥ ২ হ'লেও বিধির সম কিম্বা শিব উমাপতি ॥ ত্থদ ভর্ক-কৃট বাহিরিল বেগভরে। ৩ জিয়া'লেন পুন: মোরে করুণা করি' অগাধ। ব্রীরামের ভেদ এবে ব্যানিলাম অতুলন । ৪

(मा-कत्रि' माधुवान প্রেমভরা মৃত্ হে প্রভু আপন কুপার সাগর

বছবিধ তা'র বিনীত বচন অবিবেক-হেতু

দাও সহস্তর

নতি করি' আছ্ডি' কর। বলে ভবে ধগবর ॥ ৯৩(ক) শুধাই ভোমার পাশ। कानि' त्यारत्र निक्रमात्र ॥ ৯७(४)

টো—তুমি হে সর্বরজ্ঞ জ্ঞাত-তত্ত আর মায়াহীন। মতিমান্ শীলবান্ সরল আচার-লীন ॥ জ্ঞান ও বিরাগযুত অমুভব-পরায়ণ। তুমি কহ কি কারণে লভিলে বায়স-কায়। শ্রীরাম-চরিতরূপ অমৃত-সরোবর। মহাদেব-জীবদনে এ কথা ওনে'ছি প্রভু।

তুমি রখুনায়কের অভি প্রিয় নিজ্জন ॥ ১ হে ডাত কুপায় কহ বৃঝাইয়া সমুদায় ॥ আস্বাদ কোথা হ'তে পে'লে তুমি নভচ্চর ৷ ২ মহা প্রলয়েও তব অভাব না হয় কছু। ভাহাও এ মনে করে সন্দেহ উৎপাদন॥ ৩ সকল জগত কাল-মুখগত খাত্ম-মত।

প্রকৃতই কাল সদা অনিবার্য্য অভিশয়। ৪

বো—তব 'পরে তা'র তব জ্ঞান-বলে তব মাঞ্জাম

অপলাপ নহে কড়ু শ্রীমুখের সে বচন। চরাচরময়ী ধরা সহ দেব নর যত।

সংখ্যাহীন ব্ৰহ্ম-অগু বিশাল ভূবনময়।

লাগে না প্ৰভাব ब्हेन च्हेन আসিতেই হ'ল

কারণ জানিতে

কি ভা'র কারণ বল'। অথবা ভা' যোগকল ॥ ১৪ (ক) মোহ ভ্ৰম সব ভ্যাগ। ত্তদে বড় অনুরাগ । ১৪ (খ)

(5)--গরুড-বচন শুনি' হরবিত হ'ল কাক। ধক্ত বিহগপতি ধক্ত তব পৃত-মতি। পুনি' ভব প্রেমভরা জিজাসা মনোহর। व्याननात्र मव कथा वर्षन कति यथा।

এ কথার(ও) প্রস্থ

কহিল ভবানী বাণী সহ অভি অনুবাগ॥ প্রশ্ন ডোমার মোরে মধুর লাগিল অভি॥ ১ বহু জনমের কথা উদিল স্মৃতির 'পর ॥ नमामत छरत छाछ धन छर्य संहे कथा। २

জীরাবচরিত বানস

ব্দপ তপ যজ্ঞ যাগ সম দম ব্ৰত দান। সকল ক্রিয়ার ফল রাম পদে প্রেম সার। এ শরীর পে'য়ে ভবে পে'য়েছি ভক্তি তাঁ'র। যাহা হ'তে কিছু নিজ স্বার্থ সাধিত হয়।

বিরাপ বিবেক যোগ আর অমুভব-জান ৷ ভা' বিনা কল্যাণ-প্রদ কিছুই নাহিক আর ॥ ৩ সে কারণে এই দেহে মমতা বেশী আমার। তত্বপরি সকলেরি অধিক মমতা রয় # ৪

| দো —হে পদ্মগ-অরি | ঞ ্জি-সম্মত | শাধু-উক্ত এই নীতি। |
|-------------------------|--------------------|-----------------------------------|
| হিতকারী জানি' | নীচের(ও) সহিত | করিবে পরম শ্রীতি॥ ৯৫ (ক) |
| গুটি-কীট হ'তে | উপক্ষে তম্ভ | পট্টবাদ তাহা হ'তে। |
| ভা'তে হেয় কীটে | গ্রাণের সমান | পালে সবে নানামতে॥ ৯ ৫ (খ) |

(5)—জীবের প্রকৃত স্বার্থ কেবল ইতারে বলে। কায় বাক্ মনে প্রেম রামের চরণতলে ॥ সুপবিত্র আর পুন: স্থন্দর সেই কায়। **এ**রাম-বিমু**খ** যদি ত্রন্মার দেহ পার। মোর এই কাক-দেহে শ্রীরাম-ভকতি জাগে। ইচ্ছা-মরণ ভবু এ শরীর বরজি না। মোহের বশেতে শুধু কুগতি ভূগে'ছি ছথে। অনেক জনম ধরি' আচরিমু ক্রিয়া কত। কোন যোনি নাহি হেন কহি হে বিহগপতি। বারবার ঘুরে' যাহে হয়নি আমার গতি॥ ৪ তে নাথ সকল ক্রিয়া করিয়া দেখে'ছি ইহা। वस् क्रमामन कथा न'रम्रास् न्यनरण स्मान ।

যাহারে লভিয়া রাম-মারাধনা পাওয়া যায়। ১ কবি পণ্ডিত কম্মহিমানা তা'র গা'য় ॥ দে হেতু এ কলেবর মোর অতি প্রিয় লাগে ॥ ২ বেদে কহে নাহি হয় ভঞ্জনা শরীর বিনা॥ শ্ৰীরাম-বিমূপ মনে খুম না আসিত স্থাপ ॥ ৩ করিলাম কত যোগ জ্বপ তপ যাগ ব্রভ ॥ कच्च ना পে'लाम खूब এ प्लट्ट (প'रम्रिक्ट वाहा ॥ শিবের কুপায় মোরে ব্যাপে না ক' মোহ-ছোর ॥ ৫

কলি-মাহান্ত্য বৰ্ণন

| ८चा व्यथ म जनम | যে ভাবে কাটিল | ত ন কৰি এবে তাহা। |
|-----------------------|---------------|-----------------------------------|
| व्यक्रभाम जारम | রতি আর মিটে | কষ্ট শুনিলে যাহা॥ ৯৬ (क) |
| পূৰ্ব্ব-কল্পে পাপ- | মূল যুগ কলি- | যুগ ছিল একবার। |
| অ-ধরম ভরা | हिल नातीनव | (वरमत्र विद्याशी व्यात्र । ৯৬ (४) |

(5)—সেই কলিযুগে আমি আসিয়া কোশলপুরী। শৃত্ত-শরীর ধরি' জনম গ্রহণ করি । মহেশ-ভক্ত ছিমু কায় মন আর বাণী। ধন-মদে মন্ত ছিন্ত কটু-বাদী অভিশর। यक्षि निवान किन त्रभूनाथ-त्राक्रशानी। এখন জেনে' हि काम कि क्षाकाव जरवाशांत । কোন জনমেও যদি অবোধ্যায় জন্ম পায়।

নিশিতাম অক্ত দেবে এড বোর অভিযানী। ১ উপ্রামতি ছিল মম পত্তে ভরা এ বাদয়। उपानि महिमा किছু उथन ना छाँ द सानि ॥ २ गर भारत हेश भा म जबना भूतात जात ॥ হয় রাম-পরায়ণ নাহি সংশব্ধ ভা°র 🛚 ৩

ष्यायान्धान अत्व वृत्त्व जान त्मरे धानी। বড়ই কঠিন সেই কলিকাল উরগারি।

বসেন জদত্তে যবে সীভানাৰ বহুপাৰি ৷ পাপে মজ্জিত ছিল যত সব নরনারী। ৪

| ৰো—কলির পাতক | क दिवर इंध बत्र म | পুণ্য-গ্ৰন্থ গুপ্ত। |
|-----------------|-------------------|---------------------------|
| पश्चिरमञ्ज्ञ भव | ৰল্পনা-যোগে | বছ মত তথা উপ্ত 🛚 ৯৭ (ক) |
| মোহ-ৰশ যত | মানব তথায় | সদাচার লোভ-গ্রস্ত। |
| বিবন্নিব এবে | ধৰ্ম যা' কিছু | ছিল কলিযুগ-শুল্ড ॥ ৯৭ (খ) |

(5)—हिन ना क' वर्ण-धर्म अथवा आक्षम हाति। त्वरानत विरत्नांशी हिन यक त्रव नत्रनाती ॥ বিপ্রে বেচিত বেদ নুপতি প্রজা-শোষক। সে ধরিত সেই পথ যা'র যাহা প্রাণ চায়। ৰুপা আডম্বর আর দম্ভ রত যেই জন। পরধন-অপহারী সে-ই বড় বৃদ্ধিমান। भिष्या-कथन भट्टे विक्रभकाती (यवा। আচার-বিহীন যেব। #ভতি-পথ পরিভাগী। ভার-নত যেবা বড নথে আর জটালালে।

বেদের অনুশাসন লাগিত না ক' রোচক ॥ ১ যে গাল-বান্ধান' পট্ বলিত পণ্ডিত তা'য়॥ সেইজন সম্ভ-নামে পে'ত তথা বিজ্ঞাপন ॥ ২ দত্ত করে যেই জন সেই সে আচারবান # কলিযুগে দেই পায় গুণবান্ ৰলি' সেবা ॥ ৩ किन्यूश-मास्य स्मिटे छानी आत स्म विताशी॥ সেলন ভাপদ নামে বিখ্যাত কলিকালে ॥ ও

(मा-वमन कृष्य অভ্ৰন্ত যাহার সেই যোগী সেই সিদ্ধ পুরুষ পরের অভিড-আচরণ যা'র ক্ৰিয়াবাক্ষন मिथा। कथः न

ভক্ষাভক্ষা ধায়। সকলের পূজা পায়। ৯৮ (ক) সে-ই গৌরব-ধন্ম। वका विनया माख ॥ ৯৮ (४)

চৌ-রমণী-বিবশ সবে দে কালের নর যত। শুজেরা বিজ্ঞাণে জ্ঞান উপদেশ করে। সব নর কাম-বশ লোভ-রত আর ক্রোধী। গুণের আকর অতি স্থন্সর পতি ত্যঞ্চি'। সধবা সেখানে থাকে ভূগণেতে অ ভূবিত ৷ লিয়ে নাই কাণ আর ঝাখি-হীন গুরু যেন। मिया-धन हरत रचवा अक्र हा न!हि हरत। মাতাপিতা আপনার সম্ভানে ধ'রে ধ'রে।

বাজিকর-হাতে নাচে মর্কট যেইমত 🛚 গলে উপবীত ধরি' কু-দান গ্রহণ করে॥ ১ সম্ভ ত্রাহ্মণ বেদ দেবভাগণ-বিরোধী 🖁 অভাগিনী নারী ভজে পর-পুরুষেতে মঞ্চি'। ২ বিধবা সভত করে শৃঙ্গার কত মত॥ না শুনে বচন অক্টে জ্ঞান-দৃষ্টি নাহি কোন। ৩ ভেমন পামর গুরু খোর নরকেতে জরে ॥ শিশায় দে ধর্ম শুধু যাহাতে উদর ভরে ॥ ৪

| (म - उन्नजान विना | নরনারী তথা | वज्ञ कथा माहि कन्न। |
|-------------------|---------------------|-------------------------|
| শোভে কড়ি-মূলে | গুক্ল-বিজ-বধ | তাহাতে নাহিক ভর ॥ ৯৯(ক) |
| বিবাদ. সেখানে | भूख बिक्र मत्न | शीन किटन वन' (मिष । |
| जस्म विवा मान | ৰি <i>থ সেইৰ</i> নে | হিন্দুল করে আঁথি। ৯৯(খ) |

(ठी-- পরনারী-রভ যেবা কপট তা-স্চতুর। সে হয় অভেদ-জ্ঞানী আর সে-ই জ্ঞানী জন। আপনি পতিত অধে: অপরে পাতিত করে। বেদ-নিন্দা করে যেবা বিস্তারি' ভর্ক জাল। ভেলি কৃষ্ণকার কিম্বা হীন বংশে উৎপন্ন। বনিতা-বিয়োগ-শোকে কিম্বা গ্রহনাশ-পরে। করায় নিজের সেবা তা'রা ছিজগণ সনে ! তথা ব্রাহ্মণ লোভী নিরক্ষর কাম-রড। অ-ব্রাহ্মণ করে জপ তপ ত্রত অগণন। আচার পালন করে নিজনিজ মক্তিমত।

বিরোধ মমত। আর অহমিকা-ভরপুর। क्रियुग-मीमा निरम क्रियाहि प्रत्मन । ১ নষ্ট করে ভা'রে থেবা সং-মার্গ সেবা করে। প্রতি নরকে সে মজে ধরি' করকর কাল ॥ ২ ভীল কোল কিরাত কি অক্স যত অধ্য-বর্ণ॥ মাথা মুড়াইয়া যা'রা সন্ন্যাসী-বেশ ধরে ॥ ৩ নিজ-করে নাশ করে ছই লোক এ কারণে ॥ আচার-বিহীন কিমা স্বলিতা-রমণী-ত্রত । ৪ ব্যাসাসন 'পরে বসি' করে কথা-কীর্ত্তন 🛭 কত যে অস-নীতি ভগা সে কথা কহিব কভ ॥ ৫

(ए)--वर्ग-मद्रव মৰ্য্যাদা-হত পাপ-রড রছে কলে ডা'র মোচ ঞ্চতি-সম্মত হরি-ভক্তি পথ সে মত তেয়াগি' মোহবশে রচে

কলিবুগ মাঝে লোক। দুখ ভয় রোগ শোক । ১০০(ক) জ্ঞান ও বিরাগ যুত। নুতন ধরম কত ॥ ১০০(খ)

GD - छेमानी क्या'रत धन यख्टन नाकात्र चरत। ভাপসেরা ধনবান নিধান গুহী যত। বিভাড়িত করি' নর পতি-রভা বনিভারে। মুত দেখা পিভামাভা ডঙদিন করে মাশ্য। খ জন-ভবন ভা'র ববে হ'তে লাগে প্রিয়। পাপ প্রায়ণ নৃপ আপনার ধর্মহীন। धनवान्-शैनकां कि कृतीन-माबादत शंगा। (वन वा श्रुवाक-अिक (य नष्ट पर्यग्रामानान। কবি তথা অগণিত নাহিক কবি-পোষণ। व्यकाम याखना मिटक बारम ख्या वात्रवात ।

বিরাগ নাহিক ভা'য় বিষয় ল'য়েছে হ'রে। কলির মজার কথা বিবরিয়া ক'ব কত॥ ১ क्माठाती त्म जामत्म मामीत्त्र वमाग्र चत्त्र ॥ यङ मिन विश्वभूषी निव्रषि' ना दश शक्त ॥ २ অবাতি লাগিতে থাকে নিজ প্রমান্তীয় ॥ দণ্ডি' প্রজারে করে বিডম্বনা প্রতিদিন 🕽 🗢 ৰিক্ষৰের চিহ্ন নাহি উপবীত ভিন্ন অস্ত । সম্ভ বলিয়া সেই কলিযুগে পুজাবান # 8 खन-निम्मक वह नाहि खनवान कन ॥ অন্ন বিনা লোক সব মরে করি' হাহাকার॥ ৫

দেই কলিযুগে (क)-थशवत छन কামাদি বিকার মান মোহ আর মানবেরা করে ভাষস-আচারে (एव ना वदरव সময়ে তথায়

हमना मख (द्य । প্রসারিত সবিশেষ 🛭 ১০১(ক) লপ তপ যাগ দান। (मिनी (मन्न ना शन । >>>(४)

(5)—त्नवात्न नातीत ७५ वास्त्रन त्क्नवाम । धनशीना तक्-कृषा मधला व्यपृर्व-काम ॥ সুখাভিলাবিশী অভি মতি নহে ধর্ম-রঙা।

বৃদ্ধি লবু স্কঠোর নাজি লেখ-কোমলভা 🛊 ১

রোগেতে পীডিত নর না পায় স্থাধের লেশ। পঞ্চাশ-বর্ষব্যাপী ভা'রা অল্ল-আন্তথর। বে-হাল ক'রেছে এই কলিকাল মানবেরে। देश लालमा कर्ने-वहरम श्रृतिक ध्रता। মহাশোকে ছথে কিল সকল মানব ভবে। ইব্রিয়-রোধ দান নাহি দয়া কি স্তমতি। নর নারী সবে এবে শরীর-পরিপোষক।

অকারণ অভিমান বিরোধ রছে বিশেষ। মনে অচমিকা যেন রহিবে কল্লান্ত-পর ৷ ২ তনয়া কি সহোদরা কিছু না বিচার করে। নাহি ভোষቀ না বিবেক কিল্বা নাহি শীভলডা। সব জাতি কি কু-জাতি বেছে' নে'ছে যাচকডা ॥৩ একেবারে অপগত সমতা মানসহর। । আচরণ বর্ণাশ্রম ধর্ম-কর্ম্ম গড় এবে ॥ ৪ পর-প্রতারণা আর জড়তা ছে'য়েছে ক্ষিতি। অবনী ভরিষা রচে যত পর-নিম্মক ৷ ৫

| দো—ও ন ব্যাল-অরি | এই কলিকাল | দোষ ও পাপ-আগার। |
|---------------------------|-------------------|-----------------------------|
| কিন্তু এক গুণ | আছে স্থ-মহৎ | প্রয়াস-বিনা নিস্তার ১০২(ক) |
| সভ্যৰূগে পু ৰা | ত্ৰেভায় দ্বাপয়ে | যক্ত যোগে যেই কল। |
| সেই গতি এই | কশিষুগে হরি- | নামেতে লভে কেবল 🛭 ১০২(ৰ) |

চৌ-সভারুগেতে যোগী হয় অমুভব-যুত। ত্রেভার বিবিধ যাগ আচরণ করে নরে। ষাপরেতে রঘুপতি-চরণ করি' পুজন। কলিযুগে শুধু এক হরিগুণ-ভলনায়। কলিয়গে নাহি যোগ নাহি যাগ নাহি জ্ঞান। অন্ত-আধার রাম রম্পতি-গুণগান ॥ সব আঞার তাজি' যেজন রামেরে ভাজে। সে ভবদাগরে তরে সংশয় নাহি তা'য়। কলির মহিমা এই অতি মহা-পুণ্যময়।

🕮 হরির ধ্যান করি' হয় ভব-উতরিত । প্রভরে সমপি' ফল ভবের বারিধি তরে ॥ ১ ভবনিধি-ভরা বিনা উপায় নাহিক কোনো # অভল ভবের এই পারাবারে পার পায় 🛚 ২ প্রেমের সভিত যেবা গুণাবলী-গানে মঙ্গে ॥ ৩ किन्यूर्ण नाम-कन मर्व शांख शांख भाग ॥ मञ्जूत मानम-भूगा भाभ मञ्जूत नग्र ॥ ८

| দো —যুগ নাহি আর | কলির সমান | विश्वाम हम्र यनि । |
|------------------------|---------------|---------------------------|
| রাম গুণগান | গে'য়ে ভরে নর | বিনায়াস ভবনিধি ৷ ১০৩ (ক) |
| সভ্য দয়া তপ | দান এর মাঝে | क्लिएं क्षरान मान । |
| যেন্তাবে সেন্ডাবে | যাচকেরে দিলে | করে দান কল্যাণ । ১০৩ (খ) |

(5)-- ताम-माग्रा-(ध्वत्रशांत्र भव-क्वरम व्यवित्रछ। নিৰ্মাণ সম্বন্ধণ সমতা ও অমুভব। সৰ-প্রধান কিছুরজ: আর কর্মের্ডি। বভারকঃ সম্বাহ্ম কভক ভামসভাব।

নিজ নিজ বুগ-ধর্ম হইডেছে আচরিত। মোদিভ মান্স সদা সভ্যযুগ-গুণ সব ॥ ১ মোদিত সদাই মন ত্রেভাষুগ এ প্রাকৃতি। দাপরের ধর্ম এই কিছু হর্ষ-ভয় ভাব॥ ২

ভম: বছ রজ: অল বিসম্বাদ চারিদিকে। স্থপতিত জন যিনি রাখি' মনে কাল-ধর্ম। 🕮 রাম-চরণ রক্তে দৃঢ় মতি রহে বাঁ'র। বাজিকর-মায়াজাল দর্শকে ভীত করে।

বিশিষ্ট ধরম এই কহিলাম কলিষ্গে। অধর্মেরে পরিহরি' প্রেমে আচরেন কর্ম॥ ৩ যুগ-ধর্ম তাঁহারে না কড় করে অ্থিকার ৷ প্রভাব না লাগে ভা'র নিজ-অরুচর 'পরে ॥ ৪

গুরু-অপনাম ও নিবের শাপ প্রদান

| দো হরি-মায়া-কৃত | দোষগুণ হরি- | ভन्नना विना ना वाग्र। |
|-------------------------|--------------|----------------------------|
| এ বিচারি' ত্যঞ্চি' | সকল কামনা | লাগ' রযুবর পায় ॥ ১০৪ (ক) |
| সেই কলিযুগে | অনেক বরষ | অযোধ্যায় বাস করি'। |
| আকাল আসিলে | বিদেশে গেলাম | অতীব বিপাকে পড়ি'॥ ১•৪ (খ) |

(5)--গেলাম কোশল ছাড়ি' উজ্জ্বয়িনীপুরী-মূবে। দরিজ্র মলিন দীন কাতর হইয়া ছবে। भंकत-**वातांश्यन वातांत्र मिनाम मन** ॥ ১ কিছকাল গতে কিছু ধন করি' আহরণ। অন্য কাঞ্চ নাহি তাঁ'র সদা শিব-অমুরক্ত ॥ বিপ্র এক বেদবিধি-যুত ধৃৰ্জ্জটি-ভক্ত। শস্তু-উপাসক তবু 🖣 হরিরে ভক্তিমান্॥ ২ অতি সাধু-ভাবাপর পরমার্থে জ্ঞানবান্। অতীব দয়ালু বিজ নীডি-যুত অহি-অরি॥ করিভাম তাঁ'র সেবা কপটভা হূদে ধরি'। তন্যের মত করি' বিজ পড়া'তেন মোরে। ৩ বাভিতে বিনয় ভেরি' অভিশয় দয়া ভরে। কত সাধু-উপদেশ কৈ করিব সে বাধান। শিব-মন্ত দ্বিজ্বর মোরে করিলেন দান। দক্ষ অহম্বারে মোর জ্ঞানয় উঠিল ভরি'॥ ৪ मिव-मिन्द्र शिया निक मह स्थल कति।

| দো —হীন লা তি আমি | মভিতে মলিন | অতি খল বশ-মোহ। |
|---------------------------------|---------------|-----------------------------|
| হরিভক্ত আর | বিপ্রের সনে | ছिল निमाक्रग (जार ॥ ১०৫ (क) |
| বুঝা'তেন গুক | হ'ডাম রাগভ | ছখিত হ'তেন নিতা। |
| নীজি কি ভাচার | ভাল লাগে ধা'র | দল্পেতে ভরা চিন্ত ॥ ১০৫ (খ) |

(5)—একবার শুক্ল মোরে ডাকিয়। পাশে আপন। স্থনীতি অনেক বিধি করিলেন বর্ণন । হে স্থক ভবানী-পতি ভন্দনার এই ফল। আপনি বিধাতা শিব ভঙ্গনা করেন ভার। বাঁছার চরণে নিজে শব্ধর অনুগত। शक भवत हिन्दिक करहन स्ट्रान । বিশ্বালাভ করি' আমি নীচলাতি পগবর। कृष्टिन कु-छात्रा वामि विष्यामी नीवनाष्टि। महावान् अंडि ७क द्वार्यत नाहिक स्मर्थ।

প্রীরাম-চরণে জাগে অফুরাগ অবিচল ॥ ১ পাপ-রভ মানবের কথা কিবা বল' আর ॥ তাঁ'র সনে জোহ করি' মুখ চাও ভাগ্যহত ॥১ खनिया डेठिन थान निमाद्रन तायां छत्न ॥ তইলাম পয়: পান করি' যথা কণ-ধর । ৩ করিভাম বিশ্ব-সনে জোহ সদা দিবারাভি। वाब वाब ज्ञान-भिका मिल्मन (मादब माल्य ॥३

যথা নীত যা'র পাশে অধিক আদর পার। অপ্লি হ'তে উৎপন্ন ধুঁয়া ভাই যেইমত। পথের উপরে ধৃলি অনাদরে প'ডে রয়। যে বায়ু ভাহারে তুলে প্রথমে ভা'রেই ভরে। শুন হে বিহুগরাল বিচারিয়া এ বচন। কি কবি পণ্ডিত আর সবে কছে এই নীতি। রেখ' না ক' সম্বন্ধ কভু কুটিলের সনে। আছিলাম খল আমি প্রাণে কুটিলডা ভরা।

| অগ্রে ভা'রেই বধ করে সেই ছরাশয়। |
|--|
| মেঘ-রূপ ধরি' করে অনলেই নির্ব্বাপিত 🛚 ৫ |
| চরণ-প্রহার সদা সবাকার শিরে বয় 🛚 |
| তা'র পর নূপ-শিরে মুকুটের 'পরে পড়ে॥ ৬ |
| জ্ঞানবান্ নীচ-সঙ্গ লাহি করে কলাচন॥ |
| খল-সনে ভাল নহে কলহ অথবা গ্রীডি॥ ৭ |
| খল সারমেয়-সম পরিহর' খল জ্ঞানে॥ |
| ভাল না লাগিত গুরু-কচন মানসহরা ॥ ৮ |

| (म) —निव-मन्मित्त | গিয়া একবার |
|--------------------------|---------------------------|
| আসিলেন গুরু | অহ কা র-ব ে |
| দয়ার মূরতি | না কহিলা কিছু |
| গুকু-অপমান | এ ভীষণ পাপ |

ৰপিভেছিলাম নাম। উঠি' না করি প্রণাম 🛭 ১০৬ (ক) হ্মদে নাছি ক্রোধ-লেশ। সহিতে নারে মহেশ 🛚 ১০৬ (খ)

(b)--- মন্দির-মাঝে ডবে হইল আকাশ বাণী। রে অভাগা জ্ঞানহীন আন্ধ-অভিমানি ॥ যদিও গুরুর ভো'র পরাণে নাহিক ক্রোধ। তথাপি দহিব ডো'রে আমি মহা শাপানলে। श्रीमान ना कति यमि अदि थम माझा छा दि। গুকুর উপরে রাখে ছেয় যে অধম খল। তা'রপর পশু-পাখী যোনিতে খুরিয়া শেষ। গুরু হেরি' ছিলি পাপি বদি' অব্দগর-প্রায়। এ অধম গভি লভি' বিটপি-কোটরে গিয়া।

অতীব দয়ার চিত্ত প্রাণে সম্যক্ বোধ॥ ১ নীতির হেলনে মোর পাশে নাহি ক্ষমা মিলে। ভ্রষ্ট ভবে হ'বে মোর বেদ-পথ চিরভরে॥ ২ কোটি যুগ ধরি' রহে রৌরব নরক-তল । অযুত জনম ধরি' সহে নিদারুণ ক্লেশ 🛚 ৩ হ' ভুদ্ধগ মতি ভো'র পাপে অবলোপ-প্রায়। थाक त्र व्यथमाधम त्रारेशात निवित्रशा 🛭 8

| দো —হাহাকার করি' | উঠিলেন গুৰু | শুনিয়া দারুণ শাপ। |
|-------------------------|---------------|-----------------------------|
| ৰম্পিড মোৱে | নির্ধি' জাগিল | অম্বরে পরিতাপ ॥ ১০৭ (ক) |
| প্রেম-ভরে করি' | হরেরে প্রণাম | করি' ছই কর জোড়। |
| शन-शन खारव | করেন মিনতি | বুঝিয়া নিয়তি মোর॥ ১০৭ (খ) |
| | | |

कुखाईक

ঈশান ঈশ্বর নির্বাণ-রূপ ভোষা নমি। ভূমি হে অন্ধপ-স্থিত গুণ ইচ্ছা-বিরহিত। তুমি নিরাকার আর ভুরীয় ওঁকার-মূল। মহাকাল-কাল ভূমি করাল হে কুপাত্রান। বিসু ব্ৰহ্ম বেদ-রূপ ব্যাপক অন্তর্যামি 🛊 চিদাকাশ আকাশ-বাস# চরণ ডব্লে প্রণন্ত 🛚 ১ অতীত ইন্সিয় মন বাক্য ঈশ-গিরিকুল। সংসার-অপার-পার নতি মম গুণধাম ৷ ২

[•] তুমি হৈতভবত আকাশ্বৎ এবং আকাশ ভোষার বস্তু : অর্থাৎ তুমি বিগল্পর ।

হিমাজি-সঙ্কাশ তুমি গৌর গম্ভীর হর। স্থারিত মৌলি কল্লোলিনী স্থারধূনী। চলত-কুগুল आंथि विभाग का मनाइत। মুগাধীশ-চশ্ম-বাস মুগু-হার শোভা পায়। প্রচন্তঃ প্রকৃষ্টণ তুমি প্রগল্ভ পরমেশ্বর। ত্রি-শূল নিম্মূলকারি হে প্রভু ত্রিশূল-পাণি। কল্যাণ-রূপ কলা-অতীত কল্লাস্টকারি। জ্ঞান-মুখ-পারাবার সব মোহ-অপহারি। ইহ কিবা পরলোকে মানব না যত দিন। তত দিন শান্তি নাই তাপ নাহি দুরে যায়। नाहि कानि योग क्रेश ना कानि श्रका छक्त। ক্ষম করার হথে তাপিত হথারে প্রস্তু।

ধর্ম মনোজ-শোভা-নিন্দিত তমু-ধর ৷ কঠে ভুকা শোভে ভালে বাল-নিশামণি । ০ প্রসর আনন নীলকণ্ঠ তুমি দয়াকর ॥ চরাচর-প্রিয় নাথ শঙ্কর নতি পায় ॥ ৪ অথণ্ড অজন্ম আর কোটিভাতু-জ্যোতিধর ॥ ভজি হে ভাবের গম্য ভবানী-ঈশ্বর আমি ॥ ৫ সক্ষন-সুধদাত। সদা ওচে ত্রিপুরারি॥ व्यनोत व्यनीत व्यकु मानन-मधन-व्यति॥ ७ खेमानाथ **खर भाग-**शत्रश्रुत इस भीन ॥ প্রস্থু সর্ব-ভূতবাসি প্রীতমনে রাখ পায় । ৭ ভোমারি চরণে সদা সর্বাদা মোর মন ॥ রক্ষাকর নমি ডোমা শিব ভগবান বিভূ ৮৮

্লোক-এ ক্স-অইক স-ভক্তি পাঠ হয়-প্রীতি হেতু করিলে মানবে विक निर्दितिमा या या। শস্কর-প্রীতি পায়॥ ৯

बिट्य मिक्रे क्या-किका

| দো —মিনতি শুনিয়া | সর্ববজ্ঞ শিব | দেখি' দিল-অমুরাগ। |
|--------------------------|-----------------|----------------------------------|
| করেন মন্দিরে | দেব-বাণী পুনঃ | বিজ্ঞবর বর মাগ'॥ ১ ০৮ (ক) |
| ध्यमन यनि दर | মোর 'পরে প্রস্থ | यनि अरे मौति स्मर। |
| প্রথমে বিভরি' | ও পদে ভক্তি | পরে আর বর দেহ॥ ১০৮(খ) |
| ভব মায়া-বশে | এ জড় মান্ব | ফিরি'ছে হারা'য়ে জ্ঞান। |
| এর 'পরে ফ্রোধ | না করিও প্রভু | কুপানিধি ভগবান্ ॥ ১০৮(গ) |
| হে শহর প্রভূ | मीरन मग्रामव | কুপা কর এই দীনে। |
| ভোমার কুপায় | শাপ বর হয় | (यन (इ जज्जमित ॥ ১०৮(च) |
| | | |

Cb)---कक्नानिशन এবে এই कुना कत' এतে। यहां कन्गान वाट्ट अ मानव नाख करत ॥ পরহিত-সিঞ্চিত ত্রাহ্মণ-বাণী শুনি'। যদিও অধম-মতি ক'রেছে দারুণ পাপ। ভথাপি ভোমার হেরি' সাধুত। বিকোত্তম। পত্ৰ-উপকারী যেবা আর ক্ষমা-পরায়ণ। বিকল না হ'বে কভু মোর অভিশস্পাত।

'এবমক্ষ' বলি' শেষে হইল আকাশ-বাৰী # ১ তাই এর প্রতি আমি দিয়াছি গভীর শাপ। করণা ইহার পরে করিলাম অতুলন ৷ ২ মোর পালে রাম-সম প্রিয় সেই আছাণ # সহস্র যোনিতে স্থির ফিরিবে এ অচিরাৎ 🛭 🔊

[•] त्व्याची। † त्यां

ভবে জন্ম-মরণেতে বৈ ছ-সহ ছব পার।
জ্ঞান দুর নাহি হ'বে কোন যোনি-মাৰে গিরা।
একে ড' জনম তব হ'ল রছুনাথ-পুরী।
পুরীর প্রভাবে আর অন্ধুগ্রহ-ভবে মোর।
বৎস শুনহ এবে সভ্যভাষা এ আমার।
আর যেন করিও না কভু ছিল্ল-অপমান।
ইন্দ্র-কুলিশ কিবা বিশাল ত্রিশূল মম।
এদের(ও) প্রহারে যা'র জীবন নাহিক যায়।
এ বিবেক যত্নভবে শ্বরণে রাখিলে পরে।
অপর বহিল ভব 'পরে মম আশীর্বাদ।

তাহার কিছুই নাহি কথনো লাগিবে ডা'য় ॥
এখন মম বাণী শুল শুন এবে মন দিরা॥ ৪
তাহাতে আমার সেবা করিলে পরাণ ভরি'॥
রামের ভকতি স্থির জাগিকে হাণরে ডো'র ॥ ৫
জিল-সেবা এড শুধু হরি-মন ভূষিবার ॥
সন্তে করিও মনে অপার আভিগবান ॥ ৬
কাল-করণ্ড দও সুদর্শন সুভীষণ ॥
জিজ-জোহ অনলে সে ভক্ষ হয় নিশ্চয় ॥ ৭
ত্তর ডা'র আর কিছু নাই সংসারে ॥
কচিমড সব ঠাই রহিবে গতি অবাধ ॥ ৮

কাক-ভুষুতির পূর্বকথা

| (प) भिव-वानी छ नि | পুশকিত গুরু | 'এব দন্ত' এই বলি' । |
|--------------------------|---------------------------|-------------------------------|
| আমারে বুঝা'য়ে | শিব-রত মনে | ভবনে গেলেন চলি' 🛭 ১০৯(ক) |
| কাল-প্রেরণায় | বিন্ধ্য-গিরিতে | যাইয়া হ³লাম ব্যা ল ≉। |
| কোন ক্লেশ বিনা | সে-ভমু ত্য ঞ্চি য় | গত হ'লে কিছুকাল 🛭 ১০৯(ৰ) |
| যে শরীর ধরি | তাহা ই আবার | ত্যক্তিতাম অনারাদে। |
| সে যেন ধারণ | নুডন বসন | ড্যজিয়া জীর্ণ বাদে। ১০৯(গ) |
| হর রাখিলেন | বেদের সম্মান | আমি নাহি পাই কট্ট। |
| নানা কলেবর | খগবর ধরি | জ্ঞান নাহি হয় নষ্ট॥ ১০৯(ঘ) |

(চী—ডির্যাগ দেব নর যে শরীর ধরিতাম।
সব সুখ-মাঝে ছিল শুধু এক ত্থ-ভার।
শেষের শরীর মোর হ'ল এক বিপ্রের।
সে বোনিতে মিলি' যত অপর বালক সনে।
কিশোর হইলে পিডা দেন মোরে শিক্ষাদান।
মনের বাসনা যত সমুদয় ডিরোহিত।
কহ খগরাজ হেন কেবা আছে ধরা'পরে।
কিছু না লাগিত ভাল এই প্রেম-লীন মনে।
পরলোক গত যবে কাল-বলে পিডামাডা।
বন-মাঝে যথা যথা মুনিগণে হেরিডাম।

ভা'ভেই ভজ্পনা রামে যথাবিধি করিতাম ॥

অমন দয়ার গুরু-সনে রুত্ ব্যবহার ॥ ১

দেব-গুরুভি যাহা গীত বেদ-পুরাণের ॥

ক্রীরাম-চরিজ্পীলা খেলিতাম একমনে ॥ ২

শুনি বুঝি স্ব তবু ভাহাতে মজে না প্রাণ ॥

রামের চরণ-পানে শুরু টান প্রধাবিত ॥ ৩

যেবা কামধের ছাড়ি' গর্দভৌ-সেবা করে ॥

পরাজিত পিতা মোরে পড়াইয়া এ-কারণে ॥ ৪
বনে চলিলাম তবে ভজিতে ভক্ত-ক্রাভা ॥

ভাঁ'দেরি জাবাসে গিয়া পদতলে নমিতাম ॥ ৫

개기

শুধা'তাম রাম-গুণ জাঁ' সবায় প্রেমন্তরে।
কিরিতাম শুনি' শুনি' হরিগুণ-অনুবাদ।
ক্ষত ধন মান-আশা মন হ'তে অপগত।
জ্জীরাম-চরণ যবে হেরিব নয়ন জরি'।
বাঁহারে শুধাই সেই মুনিই এ কথা ক'ন।
আমারে অ-গুণবাদ কিছু ভাল না লাগিত।

কহিলে সে গুণগান গুনিডাম গ্রীভিডরে।
অবারিড ছিল গতি শঙ্কর প্রসাদাৎ ॥ ৬
গুধু এক মহানল অন্তরে ধুমারিত ॥
তখন মানিব মোর জনম সকল করি' ॥ ৭
ভগবান সর্ব্ব-ভূড-অধিগত হ'রে র'ন ॥
বিভূর স-গুণ লীলা তবে প্রাণ লালারিত ॥ ৮

বে - শুকুর বচন শ্বরণ করিয়া প্রেম রাম-পদতলে। রশ্বপতি-গুণ গাহিয়া বেড়াই নব অমুরাগ-বলে॥ ১১ • (क) লোমশ-মূমির সকালে গমন ও শাপ-বর লাভ সুমেক্ল-শিধরে লোমশ মুনি আসীন। বটভক্ল ভলে ভেরিয়া চরণ প্রণতি করিয়া कशिनाम वानी मीन ॥ ১১० (४) कृशीवान् युनिवान । শুনি' বাণী মম বিনীত কোমল আসিয়াছ কোন কাজ ৷ ১১ (গ) मांगरत अधा न ব্রাহ্মণ তুমি কহিলাম প্রভু কুপানিধি তুমি त्रव कान' श्वनवान्।

আরাধনা দেহ

(5)-छ्यन जामरत मूनि त्यांगळान-अताया। আমারে জানিয়া সেই পরাজ্ঞান-অধিকারী। ব্রহা-উপদেশ মূনি করিলেন আরম্ভন। রূপ-হীন বৃদ্ধি আর ইচ্ছার অগোচর। মন ইক্সিয়াডীত মল-হীন অবিনাশী। ভিনিই সে তুমি মাঝে নাহিক কিছুই ভেদ। ष्यत्नक विशासन भूनि एमन स्मारत छेशरमभ । আবার কহিছু তাঁ'র চরণে প্রণাম করি'। শ্রীরাম-ভক্তি নীরে আমার মানস মীন। कुला कति' कत व्यक्त क्षरे छेलाम नान। আমার প্রভুরে আগে নির্থি নয়ন ভরি'। শুনি' মুনি পুনঃ কহি হরি-কথা অমুপম। খণ্ডন করি' তবে নিগুণ-মতবাদ। উন্তরে দিমু প্রতি-উত্তর মূনিবরে। শুন প্রাক্ত যদি বছ অপমান-শর বয়। चकि-वर्रंग यकि ककु करत्र कान कन।

স-গুণ ব্ৰহ্ম-

কীর্ত্তন করি' কিছু রম্মপতি-গুণগণ 🛭 ব্রহ্মজ্ঞান-রড আর পরম বিবেকাচারী। ১ আৰৈত অ-ভন্ম তিনি অতীত বিষয় মন। অফুভবগম্য শুধু অধণ্ড পরমেশ্র ॥ ২ বিকার-অভীত আর অবিচল স্থপরাশি। क्रम ६ महत्र यथा अहे भारत मन दान । ० নিক্ত্রণ-মতবাদে না লাগিল মন লেশ। সপ্তণ-সাধনা প্রস্তু কহু মোরে দয়া করি' # ৪ কেমনে পুথক করি তাহারে মুনি প্রবীণ। নয়নে বাহাতে পাই হেরিতে 🕮ভগবান। ৫ পরে নির্গুণ-বাদ ওনিব যতন করি'। ধরিও নিপ্র ণ-মত করিলেন নিরূপণ ॥ ৬ मक्रान्त्र शाक कति हर्त्र-छात द्यक्तिवाम । ভাহাতে রোবের চিহ্ন মুনি-দেহে উঠে ড'রে ॥१ कानीत(७) अपरा उत्र (त्रात्वत छेपत्र रत । চন্দন(ও) তা'ছে করে অনল-লিখা স্থান ! ৮

বুঝাইয়া ভগবানু 🛚 ১১০ (ঘ)

| বো —কোপ-ভরে মূনি | যবে বারবার | স্থাপন করেন জ্ঞান। |
|-------------------------|--------------|------------------------------|
| বসিয়া তখন | মনোমাঝে করি | বছবিধি অনুমান 🛚 ১১১ (ক) |
| ভেদ-বুজি বিনা | কেন আসে রোব | ভেদ বিনা-অজ্ঞান। |
| মারা-ব ত্ত জ ড় | সীমাবদ্ধ জীব | হয় কি বিষ্ণু-সমান ॥ ১১১ (৭) |

পর-জ্রোহী কথনো কি হয় ভয়-বিরহিত। বিপ্র-অহিড করি' বংশ কি রহে আর। স্তমতি জাগে কি যেবা খলের সাথেতে রয়। পরমাত্মা-বিৎ ভব-সাগরে কন্তু কি পড়ে। নীতি-জ্ঞান বিনা রাজ্য কখনো কি রক্ষা হয়। পুণ্য-বিহনে কেছ পার কি বিমল যশ। হরিভক্তি-সম লাভ হয় অন্য প্রকারেতে। ধরা-মাঝে এর প্রায় আর হানি কিলে হয়। অসাক্ষাতে নিন্দা করা কিবা পাপ এর চেয়ে। দয়ার অধিক আর কি ধরম জগ ছে'য়ে॥ € এমনি যুক্তি কভ উঠে মনে অগণিত। সপ্তৰ-স্থাপনা যেই করিলাম শেষবার। (त मृष् भारत भिका ना धारिक होत मन। প্রভায় না করিয়া প্রকৃত বচনে মম। টান ভোর অভিশয় আপন অধম মতে। হরবে মুনির শাপ লইলাম তুলি' শিরে।

(D)-- সর্ব্ব-হিডকামী যেবা ছখী কভু সে কি হয়। স্পর্শমণি যা'র কাছে দীনডা কি ডা'র রয় ॥ কামী কি বৃহিতে পারে কালিমায় অ-লেপিড #১ কর্ম সম্ভবে পরা-জ্ঞান লাভ হয় যা³র॥ পর্লী-গামীর কহ স্থ-গতিকি কভূহয় ॥ ২ কভু সুখী হয়, কি যে হরি-নিশা সদা করে। হরির মহিমা-গান-পরেও কি পাপ রয়। ৩ পাপ না করিলে ভোগ বড়ু কি করে কুয়শ। নিয়ত করে যা' গান যত বেদ পুরাণেতে 🛙 ৪ শরীর ধরিয়া যদি রামে মতি নাহি হয়। মনি-উপদেশ নছে অস্তরে প্রবেশিত ৷ গর্ভিছ্ন' উঠেন মনি ক্রোধের ভরে অপার ॥ ৬ ভর্ক-বিভর্ক বহু করিলি আমার সনে। সকল যুক্তিতে ডর করিলি বায়স-সম॥ ৭ হ' গিয়া চপ্তাল-খগ মোর অভিশম্পাতে ॥ দীনভাব নাহি মনে ভয় নাহি অস্তরে । ৮

| ্বো— স্বরিত-ধরিমু | কাক-কলেবর | মুনিপদে করি' নতি। |
|--------------------------|---------------|------------------------------------|
| র্যুকুলমণি | রাম-পদ শ্বরি' | উড়িয় হরষ-মতি । ১১২(ক) |
| হে উদা যেজন | রাম-পদে রভ | গত কাম মদ ফোৰ। |
| প্রাক্ত-মূস জগ | ষে ভেৱে মানসে | व्यारम ना विरत्नाय-त्वाय ॥ ১১২ (४) |

চৌ-তন পগরাক এতে মূনি-দোষ নাহি কোন। সবারি প্রেরক সেই রপুকুল-বিভূষণ ॥ কুপার সাগর করি' মুনির মানস-ভ্রম। জানি' প্রভু মোরে তাঁ'র কায়-মন-বাক্য দাস। আমার ধীরতা হেরি' ক্রোধ-বিরহিত প্রাণ। অভিনয় খেদ-জরে পরিভাপ করি' তিনি। অনেক প্রকারে মোরে পরিডোষ করি² দান।

পরীক্ষা আপন পদে করিলেন প্রেম মম॥ ১ मनित खनरत्र नता कतान शुनः ध्यकाम । ঞ্জিরাম-চরণে মম প্রতীতি অ-পরিমাণ । ২ বিশেষ আদর করি' আবার ডাকেন মূনি। कविराम द्राम-मञ्ज हत्रदय व्यामारत मान ॥ ७

মম আজীবন-প্রিয় শিশু রাম-রূপ ধ্যান ।
প্রাণ-মনোহর কত কত স্থুপ ভরা রূপ।
তা'র পর কিছু কাল রাখিয়া আপন পাশে।
অতীব আদর ভরে শুনাইয়া সেই বাণী।
এ গোপন রাম-লীলা প্রেমের অপার উৎস।
এখন ভোমারে জানি' পরম ভকত তাঁ'র।
হে তাত নাহিক যা'র শ্রীরাম-ভকতি প্রাণে।
বুঝা'ন আমারে মুনি কডই বিবিধ ভাঁতি।
আপন কমল-পাণি পরশি' আমার শিরে।
শ্রীরাম-চরিত তো'র হুদয়েতে অবিরল।

দেন বলি' বিধি সেই পরম কুপানিধান ॥
সে রূপের ধ্যান আগে ব'লেছি হে ধগভূপ ॥ ৪
শ্রীরাম-চরিত কথা শুনা'ন বিবিধ ভাষে ॥
শ্রবণের স্থধকর বচন বলেন মুনি ॥ ৫
মহেশ-প্রাদদে তবে করিয়াছি লাভ বংস ॥
অকপটে উদ্ঘাটন করিলাম ভেদ ইহার ॥ ৬
না উঠা'য়ো এই কথা কভু তা'র সন্নিধানে ॥
করিলাম মুনি-পদে প্রেমের সহিত নতি ॥ ৭
আশীষ দিলেন কভ ভাসিয়া পুলক-নীরে ॥
আমার আশীষে এবে রহিবে সদা অচল ॥ ৮

| দো-শ্রীরামের প্রিয় | হও সদা মান- | অতীত স্থ-গুণবান্। |
|--------------------------|--------------|------------------------------|
| কামরূপ আর | ইচ্ছা-মরণ | বিরাগ জ্ঞান-নিধান 🛭 ১১৩ (ক) |
| যে থানেই ভূমি | করিবে নিবাস | শ্বরিয়া শ্রীভগবান্। |
| যোজন ব্যাপিয়া | মালা মোহ ভৰা | কভু না পাইবে স্থান 🛭 ১১৩ (খ) |

(D)-कान कतरमत छण किया अल छण्डत । রামের রহস্তলীলা ললিত বিধান যত। আয়াস বিহনে তব মানসে উদিত হ'বে। বাসনা উদিবে যাহা হ'বে ভাহা স্থুসাধিত। আশীষ-বচন এই যেমনি কছেন মুনি। সত্য হো'ক জ্ঞানী মনি তোমার আশীদ বত। অপার হরষ প্রাণে দেববাণী শুনি' কাণে। করিয়া মিনতি মুনি-আদেশ করি' গ্রহণ। অতীব হরব ভরে আসিছ এ আঞ্চমে। করিতে তেখায় বাস হ'য়ে গেল এইমত। বসিয়া নিয়ত করি রশ্বপতি গুণ-গান। যখনি কোশলপুরে আসি' রাম রশুরায়। মহা উল্লাসে গিয়া তথন কোশলে রই। আবার প্রভুর মম সে মোহন বালরূপ। সকল কথাই ভোমা করিলাম বর্ণন। শভা ভোমার সব মিটা'রেছি পগবর।

না লাগিবে স্বভাবজ দোষ গুণ সম্পন্ন ৷ ইভিহাস পুরাণে যা' গুপ্ত বা প্রকটিত ॥ ১ নিত নব অক্ররাগ রাম-পাদপদ্যে র'বে । श्रित व्यनारम किছू ना त'रव व्यनिश्रेष्ठ ॥ २ গভীর নিনাদে নভেঃ হ'ল পুত ব্রহ্ম-বাণী ॥ এ মোর ভকত প্রিয় কায় মন কর্ম্ম-গত ॥ ৩ সব সংশব্ধ গত প্রেম ওত-প্রোত মনে। চরণ-সরোজে করি' বার বার প্রণমন ॥ ৪ ছন্ন ভ বর পে'র প্রভুর ভক্তি-গুণে ॥ সপ্ত-বিংশ কল্প এবে কাল-কোলে নিপতিত। ৫ তনে যত বিহুগেরা পরম পুলক-প্রাণ ॥ মানবের হিড-ভরে ধরেন মানব-কায় । ৬ তাঁহার বালক-লীলা নির্থিরা ধক্ত হই । জদয়ে ধরিয়া ফিরে' আসি হেপা খগ-ভূপ। ৭ এই নীচ কাক-দেহ লভিগাম বে কারণ ঃ কি কৃতিৰ আছা রাম-ভক্তি কি মনোহর ॥ ৮

বো-ভা'ই এ শরীর প্রিয় মম অভি পে'মু এতে রাম-স্নেহ। পে'লাম ইহাতে প্রস্ত-দর্শন অপগত সন্দেহ ॥ ১১৪ (ক) ভজির প্রতি পক্ষপাত করি' পাইলাম ঋষি-শাপ। यूनि-एल छ বর পে'ন্ড দেখ জন্মনার কি প্রভাপ ॥ ১১৪ (খ)

(চী—ভক্তির এ প্রভাপ ক্ল'নেও যে ত্যাগ করে। প্রম ক'রে মরে যেবা অবিরদ জ্ঞান ভরে ॥ মূর্থ দে মহা মোহে কামধের পরিত্যঞ্জি। 🕶ন থগনাথ হরি-ভক্তিরে পরিহরি'। মুর্থ সে বিনা ভরী পারহীন পারাবার। ভুষ্ণির এ বচন শুনি' ডবে হে ভবানি। ভোমার প্রসাদে প্রভু আমার জ্বর-মাঝে। শুনিলাম মহাপুত শ্রীরামের গুণগ্রাম। আর এক কথা **প্রভু** করি'ভোমা জিজাসা। সব সাধু মূনি এই ক'ন বেদ পুরাণেতে। সেই জ্ঞান-উপদেশ দিলেন তোমারে মুনি। হে প্রেমি হে কুপাধাম মোরে কুপা দেখাইয়া। ভক্তি ও জ্ঞানে ভেদ কিবা দাও বুঝাইয়া।

व्यक्-विवेदश कृत करत महत भू कि' भू कि' ॥ > অপর উপায়ে যেবা চাহে স্থাধ কাল হরি। সাঁতারি' আপন বলে প্রয়াসে হইতে পার 🛚 ২ গৰুড় মোদিত মন কহিল কোমল বাণী। সংশয় মোহ ভ্রম শোক কিছুনাহি রাজে ॥৩ শাস্তি ভোমার কুপা-বলে জদে লভিলাম। বুঝা'য়ে বলহ মোরে মিটাও মম পিপাস। ॥ ৪ চুল ভ নাহি কিছু জ্ঞানের সম জগতে ॥ অধচ ভক্তি সম আদর না হ'ল শুনি' ॥ ৫ সমাদর ভারে কাক আরম্ভিল বর্ণন। ৬

জান-ভাঁজি মিরপণ

ভকতি ও জান-মাঝে কিছুই নাহিক ভেদ। তথাপিও মুনিরাক প্রভেদ করেন বাহা। জ্ঞান কি বিরাগ আর বোগ কিম্বা অফুভব। পুরুষ-প্রতাপ হয় প্রবল সকল ভাতি।

छूरे-रे रुद्रग करत खर-मखर *(चंप* # ॥ শুনহ বিহগবর অবহিত হ'য়ে ভারা॥ ৭ এ সব পুরুষ-বাচ্য শুন ধগ-পুরুব॥ বভাবে অবলা মায়া আ-জনম জডজাতি ॥৮

| দো —নারী ত্য জি বারে | পারে সে পুরুষে | যে বিরাগী মতি-ধীর। |
|------------------------------------|----------------|------------------------------|
| পারে না ক' কামী | বিষয়ে মগন | চ্যুত পদ-রসুবীর ॥ ১১৫ (क) |
| পরাজ্ঞান-খনি | মুনিও বিবশ | বিধুমুখী আঁখি ছেরি'। |
| নিজ বিষ্ণু-মায়া | আপনি প্ৰকাশে | ভবে মায়া-রূপ ধরি' ৷ ১১৫ (খ) |

চৌ---এ বিচার-মাবে মোর নাহি কোন পক্ষপাত। এ শুধু বাধান করি সাধু বেদ সস্তু-মত ॥ কি মঞ্জার রীত্তি এক দেখ ভাবি' আহ-অরি। মায়া ও ভক্তি-বলি' এই তুই যাহা আছে। ভা'র মাঝে রম্ববীর ভকভিতে অভি প্রীত।

नांगी-कर्ण विश्वाहिङ नाहि इस कडू नांगी ॥ > ्नात्री-वर्ग विनि' अता विनिक भवात्र कार्छ। निष्नौ (वहात्रौ भाग्ना विन' 😘 कीर्खिक ॥ २

স্বার্থাত ছঃব ।

<u> প্রীরামচরিত মানস</u>

অনাবিল ভক্তিতে তাঁ'র অতি প্রীতি হয়। উপমা-রহিত শুদ্ধ রামপদ-প্রেম রূসে। ভাহারে হেরিয়া মায়া রহে সদা কৃঞ্চিত। এ বিচার করি' যেবা মহামুনি পরাজ্ঞানী।

সেই হেতু মায়া জাঁরে ভয় করে অভিশয় ম ভাঙিয়া সকল বাধা বাহার মানস রসে 🛚 ৩ কভ না করিতে পারে তা'রে তিল প্রতারিত । ভিনিও বাচেন নিড প্রজু-প্রেম সুধ-ধনি। ।

| ড়ো— এ গোপন ভেদ | শ্ৰীরমুনাথের | সহ ত্বে কে হ না পায়। |
|------------------------|----------------------------|----------------------------------|
| যে পায় কুপা য় | মোহ তা ² র পাশে | অপনেও নাহি বায়॥ ১১৬ (ক) |
| | জ্ঞান-দীপক | |
| অপর প্রভেদ | জ্ঞান ভক্তিতে | গুন এই স্থপ্রবীণ। |
| যা'র ফলে প্রেম | রামের চরণে | বিরাজিবে অমলিন ॥ ১১৬ (খ) |

পরম বিভুর অংশ এই জীব অবিনাশী। মায়ায় বিবশ হ'য়ে সে আসি' ধরণী 'পরে। চেতনের 'পরে গাঁঠ জডের পড়িয়া গেছে। त्म इ'राज मेत्रश व्यापा मरह कीव ममूनाय। খোলার উপায় বছ বেদ ও পুরাণে গা'য়। कीरवद समस्य महा व्यक्तान-वाँ थियात । यनि ज्ञावान तमन कन्न मः त्याग अहै। সতগুণ-প্রছাগাভী যা'র অন্তরে বসে। ক্রপ তপ ব্রত আদি বিধি সংযম আর। এই সব তৃণ সেই উদরে যখন ভরে। বিখাস-হয়-ভাও নিবৃত্তি ছাদন-পাশ। দোহন করিয়া এই পয়: ঝোঠ ধর্ম ময়। শীতল ভাহারে করে সম্ভোষ ক্ষমা-বায়। প্রসন্ধতা-মুৎভাতে বিচার-মন্থনী দিয়ে। মন্থন করিয়া লভে সে পরম নবনীত।

(5)-कथन-काठी छ এक कथा अन बाद हेश। कथरन एक नाहि बारम वृतिवाद अधु छाहा। জ্ঞান-ময় অমলিন স্বভাবত: সুপ-রালি # ১ স্বকরে জড়িত যথা পশু পাখী কি বানরে। খুলিতে কঠিন বড যদিও সে গাঁঠ মিছে ॥ ২ নাহি খুলে সেই গাঁঠ আর না সে স্থুণ পায়। भिथिन मा ब'रय चारता अधिक क्रजा'रय यात्र ॥७ চুৰেই ঠেকে না গাঁঠ সুচিবে কেমনে আর । মোচিভ কঠিন গাঁঠ ভবেই কদাচ সেই ॥ ৪ कक्रमा-निधान विष्ठ 🗃 हतित्र कुलावरम ॥ বেদ-বিধি-বিরুচিত শুভ-ক্রিয়া ও আচার ৷ ৫ ভাব-রূপ বৎসেরে লভে মহামুখ-ভরে ॥ আহীর অ-পাপ মন সদা আত্মত দাস # ৬ নিছামভাব-অগ্নি 'পরে যবে উত্তলর# ৷ মন-নিগ্রহ ভক্ত ধীরভার যোগ পায় 🕽 ৭ দম-দণ্ডাধার 'পরে সভ্যবাণী-পাশ দিয়ে ॥ বিমল বিরাপ অভি মনোহর স্থ-পুণিত ৷ ৮

| দো —যোগাগ্নি ত খ ন | ক্রিয়া আলিড | শুভাশুভ কাৰে আলি'। |
|----------------------------------|---------------|------------------------------|
| বৃদ্ধিতেণ অূড়া 'বে | জ্ঞান-ছবি যবে | মোহ-মলা যাবে অলি'। ১১৭ (ক) |
| ८म भन्नम ह विः | যন্তনে লভিয়া | विकान-क्रेगी वृषि । |
| চিত-দীপ ভরি' | সম-দীপদানে | রাধিবে সহিত শুদ্ধি ৷ ১১৭ (খ) |

[•] बाग (मध्या । † निक्याश्विका वृद्धि । »

| স্থপ্ন জাগরণ | গাঢ় স্থুম-আর | ত্ৰিগুণ-কাপাশ# হ'ডে। |
|----------------|---------------|------------------------------|
| ভূরীয়ের ভূলা | করি' আহরণ | স্থদৃঢ় বৰ্ষি-সাথে 🛭 ১১৭ (গ) |
| করিলে কালিড | ভেজ-মণ্ডিভ | विकानमग्र.मीथ। |
| নিমেবে পুড়িবে | মোহ-আদি সব | বেমনি যা'বে সমীপ। ১১৭ (খ) |

টে—"আমি দেই" এই ভাব খণ্ডহীন এই বৃদ্ধি। এ বিচিত্র প্রদীপের চণ্ড শিখার দীরি। আত্ম-অফুভব রশ্মি এ হ'তে ছডা'বে যবে। অবিভা-জনিত সব মায়া মোছ-আঁথিয়ার। তথনি বিজ্ঞান-বন্ধি আত্ম-অন্তভবালোকে। এ গাঁঠ খুলিতে বৃদ্ধি যদি হয় সক্ষম। একটি মঞ্চার কথা কচি ভোমা খগরায়। তথন সে ঋজি সিজি সবারে করি' প্রেরণ। কল বল ছল করি' ভাচার নিকটে যায়। ভবে যদি এই বৃদ্ধি হয় স্বচত্ত্ব অভি। এই ভাবে মায়া-বাধা যদি তা'র নাতি ঘটে। দেহ-ঘরে বাভায়ন সম ইন্দিয় যত। আসিতে দেখেন যেই বিষয়ের সমীরণ। বিষয়ের মহাবায়ু জন্তককতলে পিয়া। किरम आत गाँठि थूरण कृषि-छता आधियात । ই ক্রিয় কি দেবতা জ্ঞান নাহি ভালবাদে। विषएत्रत नभीत्रण वृक्षि भक्षांन यत ।

সব ভব-ভেদ ভ্রম সমূলে বিনাশ হ'বে। ১ চিরতরে নাশ হ'বে সহ যত পরিবার ॥ क्षम मन्मिदा विन अ-गाँठ भूता भूता ॥ २ কুডার্থ এ ভীব ভবে পাইয়া পরম ধন ॥ খুলি'ছে এ গাঁট ভবু মায়া হয় অন্তরায় 🕯 ৩ বৃদ্ধিরে কভমতে দেয় নানা প্রলোভন ॥ व्यां हन-मभीरत निक कारनत मीर्प निदाय ॥ ८ বিশ্ব জানিয়া সবে চাহে না তা'দের প্রতি : ত্ৰন দেবতা-বাধা উপাধি আসিয়া সুটে। ৫ প্ৰতি ইন্দ্ৰিয়-ছাৱে এক দেব অধিষ্ঠিত ॥ অমনি ভাতার থার ক'রে দেন বিমোচন ৷ ৬ আত্ম-অমুভব দীপ দেয় তবে নিবাইরা ॥ কুলে এসে ভরী ভূবে প্রাণ করে হাহাকার। ৭ সদাই তা'দের প্রীতি ইন্সিয়-ভোগরসে ॥ আবার সে দীপ বল' কে আর আলা'বে ভবে 💵

| ডো —ডখন আবার | ব হু ভাবে জীব | ভোগে সংসার-ক্রেশ। |
|---------------------|----------------------|----------------------------|
| হরি-মায়া অভি | ভরিতে কঠিন | সহজে নহে খগেল । ১১৮ (ক) |
| বলিতে কঠিন | বুঝিতে কঠিন | জ্ঞান-সাধনায় কষ্ট। |
| বলি কলাচিৎ | জ্ঞান কেচ পায | বিশ্ব করে ভা' নই ॥ ১১৮ (ব) |

(5)—खान-পথ ৰগপতি কুপাণের ধার যেন। পতন হইতে দেরী লাগে না ক' এক ক্ষণ॥ এ পথে যে বিনা বাধা হ'তে পারে উভরিত। কৈবলা তা'র তরে র'য়েছে অবধারিত ॥ ১ কৈবল্য পরা-পদ অভিশয় ছল্ল छ। হে প্রভ্রু পরা সে-পদ অনিচ্ছায় কোর ক'রে। জীরাম-ভলনা কলে আসে ভক্তের পারে ॥ ২

সম্ভ পুরাণ কিবা নিগমাদি ক'ন সব ॥

স্থল বিনা জল যথা ডিষ্টিডে নাহি পায়। সেই মত মোক্ষ-মুখ শুন খগকুল-পতি। এ কথা বৃঝিয়া মনে চতুর ভকভঞ্জন। **छक्टि कदात्र करण विभागांग व्यया**ठिख। যেমন তুপ্তির তরে মানবে আহার করে। সেইমত হরিভক্তি স্থগম পুলক-ধাম।

করুক না কেন কেহ কোটি যতন ভা⁴র ॥ হরির ভক্তি ছাড়ি' রহিছে নাহি শক্তি॥ ৩ ভক্তিতে প্রলোভিত ত্যজিয়া মৃক্তি ধন ৷ সংসার-মায়ামূল অপবিদ্যা বিনাশিত ॥ ৪ অনিচ্ছায় সে ভোজন জঠর-মাঝারে জরে ॥ কে আছে পামর যা'রে নাহি লাগে প্রাণারাম 16

| দো—দেব্য দেবক- | ভাব বিনা ক ভু | ভব-হুখ নহে অস্ত। |
|----------------------|----------------------|--------------------------------------|
| সেই হেতু ভ ল' | রামের চরণ | দৃঢ় করি' সি দ্ধান্ত। ১১৯ (ক) |
| চেডনেরে অড় | করেন যেজন | बर्फ सन देछ्ड । |
| · শক্তিমান হেন | জীরত্বনাথেরে | যে ভৰে দে জীব ধয়। ১১৯ (४) |

ভজিৰ মাহাত্ম কীৰ্ত্তন

(5)—জ্ঞান ও ভক্তি-কথা কহিলাম সমুদয়। ভক্তি শুনহ এবে ক্তই মহিমাময়॥ শ্রীরাম-ভক্তি যেন চিস্তামণি স্থন্দর। মোহরূপী দরিজভা নিকটে কম্ম না যায়। অবিভারাপিশী মিটে স্থানবিড আধিয়ার। যাহার হৃদয়-মাঝে ভক্তি বিরাজ করে। বিষ হয় সুধা আর অরি হয় স্থা ভার। যেসৰ দাৰুণ মনোছুখে জীব ছখী রহে। যাহার জদয়ে রহে জ্রীরাম-ভক্তি ধন। ধরণী মাঝারে সে-ই চতুরের শিরোমণি। যদিও এমন মণি এ জগতী-ডলে রয়। উপায়(৪) সহত্র অতি এই ভক্তি শভিবার। বেদ ও পুরাণ অতি পৃত পর্বাত-মত। মরম-বিজ্ঞানী সাধু কোদাল স্থ-মতিমান। ভাবের সহিত যেবা সন্ধান তথা করে। আমার মনেতে প্রভু অভিদৃত্ বিশাস। জীরাম সাগর ধীর সংখন মেঘ বেন। সকল সাধন-কল 🕮 হরি-'পরে ভকতি। এ বিচার করি' মনে সৎসক্ষ যেবা করে।

এতেন রডন রতে যা'র জদি-অন্তর 🛚 🕽 দীপ্ত জ্যোতি:তে নিজ রহে সেই দিবারাতি। কিছু নাহি প্রয়োজন প্রদীপ কি মুত-বাতি ॥ লোভরূপী মহাবায়ু কভু না তা'রে নিবায় ॥ ২ হার মানে মদ-আদি পতগেরা কাছে ভা'র ॥ কণটভা কাম লোভ ভা'র কাছ হ'তে সরে ১৩ সে মণি বিহনে স্থুখ কন্তু নহে লভিবার # না লাগে সেসব এরে প্রাণে চির-স্থব বছে ॥ ৪ অপনেও তথ-লেশ নাহি করে পরশন । উচিত যতন যেবা করে লাগি' এই মণি ॥ ৫ প্রীরাম-করুণা বিনা প্রাপ্ত না কেহ হয়। ভবু ভাগ্যহত জন পদাঘাতে বারবার॥ ৬ 🗃 রাম-চরিতকথা তাহাতে আকর শত 🛚 জ্ঞান ও বিরাগ ডা'র বেন ভীত্র ছ'-নয়ান। ৭ স্রথের আকর ভক্তি-মণি সেই লাভ করে। ঞীরাম হ'তেও বড় ঞীরামের নিজ-দাস॥ ৮ চন্দনতক হরি সাধুজন সমীরণ ৷ সম্ভ বিহনে কেহ নাহি পায় সে যুক্তি। ১ বামের ভক্তি অভি সহজেই লাভ করে। ১০

জো—বেদ-পারাবার মদ্দর জ্ঞান পারাবার মধি' করেন মধুর বিরাগ-চর্ম জ্ঞান-জ্ঞাস-ঘায় বিজয়ে যা' পাবে ডাহাই ভক্তি

সাধুরাই দেবগণ।
কথা-স্থা আহরণ। ১২• (ক)
লোভ মোহ অরি মারি'।
থগেদ দেখ বিচারি'। ১২• (খ)

গরুড়ের লাভ প্রশ্ন

(চী-পুনরায় প্রেমন্ডরে কছে ধগ-ঈশর। ভবে নাথ মোরে ভব সেবক করিয়া জ্ঞান। প্রথমেই বল'মোরে হে নাথ বায়সবর। কিবাসে পরম সুখ সব-চেয়ে তুখ ভারি। সাধু-অসাধুর ভেদ নহে ভব অগোচর। বেদ-বিখ্যাত কোন আছে যা' পরম পুণ্য। ভা'র পর কহ দেব মন-রোগ বুঝাইয়া। কাক বলে শুন ভাত মন দিয়া সহ প্ৰীতি। নর-সম দেহধারী অপর কেহই নাই। ন্ধর্গ-নরক আর মোক্ষ-সোপান এই। এ শরীর ধরি' যেবা না হরি-ভক্তি-'পর। হাতে ঠেলি' দুর করি' কেলিয়া পরশমণি। জগতের মাঝে ছখী নাহি ধনহীন-সম। পর-উপকার করা মানস বচন কায়। স্স্তু সহেন ছথ পরের হিড-কারণ। ভূর্জ-ভক্তর প্রায় সম্ভ করণাময়। শণের মৃতন খল পারে বন্ধন ভারে। স্বার্থ নাহিক তবু খল পর-অপকারী। পর-সম্পদ নাশ করি' নিজে নাশ পায়। ছুষ্টের আগমন জগভের ছুখ-হেডু। সভের আগমন সদা পর-সুধকারী। हिःमा-काकाव श्रा-धर्म धारे तक दशा विव अक्र-निम्नक मधुक श्रेरा तरह। विश्व-विमाक वह नत्राद्ध वान कति'। (यम आंत्र (मद-१.समा करत (यह अधिमानी। (शहक-क्षनम धरतं शाधु-निकात करण।

কুপা-পরারণ যদি তুমি প্রভু মোর 'পর । এই সাত প্রান্ধে মম উত্তর কর দান ॥ ১ সব হ'তে হলভি কোন্ দেহ ধরা'পর ॥ সংক্ষেপ করি' ইহা বলগ বিচার করি'। ২ তাঁ'দের সভাব কহি' করহ মম গোচর । কিবা সে ভীষণ পাপ সবাকার অগ্রগণ্য ॥ ৩ সব তুমি জান' আর কুপারাশি-ভরা হিয়া ॥ সংক্ষেপে কহি আমি ডোমা এই সব নীভি ৷ ৪ চরাচর-জীব যাহা কামনা করে সভাই ॥ জ্ঞান ও বিরাগ ভক্তি কল্যাপদায়ী এই ॥ ৫ त्म इत्र विषय-त्रक मन्त मन्त्रकत् ॥ বৰলে কুড়া'য়ে লয় মূল্যহীন কাচথানি ॥ ৬ সুখ আর কিছু নাই সস্ত-মিলনোপ্ম। সন্ত-শভাব ইচা কহিলাম প্ররায় 🛙 ৭ অসাধু পরের ছখ সভত করে স্জন # হিছেতে সহেন নিজ বিপদ নির্ভিশ্য ॥৮ क्यां कालन किया दः थ-मद्रव वदत्र ॥ বেমন মুহিক আর অহি ওছে অহি-অরি॥৯ শস্ত নাশিয়া যথা নীহার গ্লিয়া যায় : স্বার বিশিত যথা এচের অধ্য কেতু ॥ ১০ বিশ-সুবদ যথা শশধর তমোহারী # নিকার সম পাপ কিছু নাই ধরাময় ॥ ১১ হাজার জনম ধরি' সে শরীর সেই বছে। सन्दर्भ संशटक स्माय वाग्रामत क्रम श्रीत । ১३ রৌরব-মাথে হয় পডিড সে হেয় প্রাণী। মোৰ-নিশি প্রিয় হা'র জ্ঞান-রবি অস্তাচলে । ১৬ নিন্দা সকল জনে করে যেই মৃতজন। তে ভাত এখন শুন মন-রে।গ যেসকল। চর্ম-চটিকা⊕ দেহ করে সে পরিগ্রহণ,॥ যা' হ'তে সকলে ভোগে অতি বিষময় কল ॥ ১৪

ৰল-বোগ

মনের ব্যাধি যে সব অজ্ঞান তা'র মূল।
কাম যেন বাযু কফ প্রলোভন সীমাজীত।
এ তিনের সনে যেবা প্রীতি-আচরণ করে।
বিষয়ের মনোরধ ক্লেশে যা' পুরণ হয়।
নমতা দক্ত-সম স্বর্গা সে কণ্ড্যন।
অপরের স্থা দেখে জ্ঞলনেরে বলে ক্ষয়।
অহমিকা গ্রন্থিবাত ক্লেশ দেয় অতিশয়।
উদরী অ-পরিমিত বৃদ্ধি পাওয়া বাসনার।
অবিবেক মাৎস্থ্য সে-ও ছু' প্রকার জর।

এই শৃল হ'তে হয় স্থষ্ট অপর শৃল ॥
রোব পিন্ত ভাহে প্রাণ হয় নিত জব্জরিত ॥১৫
ঘোর সন্ধিপাত রোগে নিশ্চয় ভা'রে ধরে ॥
শৃল বলি' অভিহিত সে ভাবনা সমৃদয় ॥ ১৬
গলগণ্ড গশুমালা হর্ম খেদ-রোগগণ ॥
মন-ছইডা যাহা কুষ্টেতে পরিচয় ॥ ১৭
দস্ত কপট মদ মানে চশ্মরোগ কয় ॥
মুত ধন মান-সাধ ত্র্যাহিক অরাধিকার ॥ ১৮
এমনি কভই রোগ কভ ক'ব খগবর ॥ ১৯

দ্বো—একেতেই ভুগে' মরে লোক এ ত' অসাধ্য জনে প্রাণিগণে এরা পীড়ে অবিরল কেমনে পা' নিয়ম ধরম তপ ও আচার জ্ঞান যাগ কোটি ঔষধ আছে তবুরোগ যায় নাক':

অসাধ্য অনেক ব্যাধি।
কেমনে পা'বে সমাধিশ ॥ ১২১(ক)
ভৱান যাগ জপ দান।
যায় না ক' হরি-যান ॥ ১২১(ধ)

(b)—এইরূপ রোগে বোগী ভবে জীব সমুদয় ।
মনের রোগের কিছু করিলাম বর্ণন ।
রোগ আছে এ বুজিলে কডক শমতা পায় ।
বিষয়-কুপথ্য পে'য়ে মুনির(ও) হৃদয়-মাঝে ।
রামের হইলে কুপা নাশে এই সব রোগ ।
সংগুক্ত-কবিরাজ-বানী 'পরে বিখাস ।
জীরাম-ভক্তি রোগে সঞ্জীবনীতক্ত-মূল ।
সংযোগ হ'লে তেন ডবেই বিনশে রোগ ।
তথনি জানিবে রোগ একেবারে নিরাময় ।
স্থমতি-রাপিনী কুধা বাড়ে ভা'র প্রতিদিন ।
বিমল জ্ঞানের জলধারা-যোগে করে সান ।
বিধাতা মহেশ শুক সনক নারদ মুনি ।

হর্ষ শোকাদি আর প্রীতি বিয়োগ ভয় ॥
আছে ত' সবার আছে জানে তা' বিরল জন ॥>
তবে ভাহে ছখ-দায়ী রোগ নাহি নাশ পায় ॥
উদ্গত হয় রোগ নরের কি কথা আছে ॥ ২
কাহারো ললাটে যদি ঘটে গুভ-সংযোগ ॥
সংযম এতে গুধু না রাখা বিষয়-আশ ॥ ৩
প্রাজাভয়া মতি তা'র অনুপান গভ-তুল ॥
নতুবা যতন কোটি কে তা'র ঘূচা'বে ভোগ ॥৪
যখন প্রদয়-মাঝে বিরাগ প্রবল হয় ॥
দুর্ববলত। ভোগ-আশা নিবারিত দিন দিন ॥৫
তখন রামের প্রেম জনে করে অধিষ্ঠান ॥
ব্রহ্ম-বিচারে বাঁ'রা বিদিত জ্ঞানের খনি ॥ ৩

उपन-मार्था

হে খগ-নায়ক মত সবাকারি এক এই। শ্রুতি কি পুরাণ সব গ্রন্থ ইহাই কয়। कृत्यंत्र शिक्षे (क्य यम क्ष्म छहत्व। নভোমাঝে নানাঞ্চাতি বিকশিত হয় ফল। মৃগ-ভৃষিকার জলে যদি ভূষা নিবারিত। व्याधात्र यपि वा क्छ पिवाकरत्र नाम करत् । हिम इ'एड यनि कड़ अनल क्षक है हम।

শ্রীরাম-চরণে মতি হওয়া বিনা পথ নেই ॥ রামের ভকতি বিনা কড় স্থপ নাহি হয় ॥ ৭ বন্ধ্যা-ভনয়ে কেহ হড করে মহাহবে# ৪ জীব নাহি পায় সুখ হরি যদি প্রতিকৃদ।। ৮ শুঙ্গ শশক-শিরে হইলেও উদ্গত 🛭 শ্ৰীরাম-বিমুখ স্থুখ তথাপি না লাভ করে॥ ৯ শ্ৰীরাম-বিমুখে স্থপ ডবাপি পা'বার নয়। ১০

| দো —সলিলে মথিয়া | মৃত পার যদি | ভেল মধি' বালুকায়। |
|--------------------------|-----------------------|--------------------------------|
| ভবু হৈরি পূজা- | বিনা না ভরিবে | এ কথা রুণা না যায়। ১২২ (ক) |
| মশকে বিধাতা | পারেন করিতে | অকো মশাহ'তে হীন। |
| এ বিচার রাখি' | সংশয় ত্য ঞি ' | শ্ৰীরামে ভক্তে প্রবীণ। ১২২ (খ) |
| ্লোক—কৃ ত-নিশ্চয় | মানস আমার | অক্তথা এর নয়। |
| শ্রীহরি-ভঙ্গনা | ক্রিয়া মান্ব | ভবনিধি পার হয়॥ ১২২ (গ) |

(5)—এই কহিলাম নাথ নিম্ন মতি অনুসারে। অনুপম চরি লীলা সংক্ষেপে বিস্তারে ॥ বেদের ইহাই শেষ কথা ওচে উরগারি। প্রভুরামে তাজি' আর কা'বে সেবা করা যায়। তুমি বিজ্ঞান-রূপ মোহ না জিনিতে পারে। শুধাইলে রাম-কথা পুণিত নিরতিশয়। मख-मक मना इल छ मःमादा। (एषर शक्ष थड़ याशन मतन विहाति'। বিহুগ-অধম আমি সব বিধি অ-পাবন ৷

পরিছরি' সব কাজ ভজ' রাম ধ্রথারী। ১ মম সম মচ-প্রতি ভরা যিনি মমভায়॥ হে নাথ কভই দয়া করিলে আ**মার 'পরে ॥**২ 😎 ক্রকাদি হর ত্রিপুরারি-মনোময় 🛭 **চউক সে একবার আর ওধু ক্ষণভরে।। ৩** আমি কিহে রখুপতি-ভজনার অধিকারী। করিলেন প্রস্ত মোরে বিদিত জগ-পাবন । ৪

| দো—ধক্ত ধক্ত আৰু | অভি ধক্ত আমি | হ'লেও অধমাধম। |
|------------------|--------------|--------------------------|
| নিজ দাস জানি' | দিলেন 🗒 রাম | হেন দাধু-সমাগম ॥ ১২৩ (क) |
| যথা-জ্ঞান সব | কহিলাম আমি | কিছু না করি' গোপন। |
| ঞ্জিরামের লীলা | অভগ-সমান | তল পায় কোন্জন 🛭 ১২৩ (খ) |

(5)—শ্বরণ করিয়া নানা 🖺রাম-গুণনিকর। নিগম কহিয়া নেতি বাঁহার মহিমা গায়। যে চরণ চিরপুজ্য ক্রন্ধা-জাদি মহেশের। এমন মহিমা আর নাহি হেরি নাহি ওনি।

বার বার হরষিত বায়সের কলেবর 🛚 শক্তি অতুল তাঁর প্রতাপে কে তল পার। ১ অতীৰ ককুণা ঠা'র উপরে এ অধ্যের 🛭 খগনাথ রখুপত্তি-সমান কাহারে পণি ॥ ২

निष्क नाथक किया जीवन्यूक कि छेनानी। শরবীর যোগী আর তাপদ অথবা জ্ঞানী। আমার প্রভুর সেবা বিনা কেহ নাহি ভরে। শরণ লওয়ার পরে পাপ-যুত মম সম।

কৰ্মবিৎ কবি কিম্বা বিভাৱান কি সন্মাসী। কর্ম-নিরত আর পণ্ডিত বিজ্ঞানী। ৩ এমন 👼 রাম-পদে নমি আমি বারে বারে ॥ শুদ্ধ করেন যিনি ভাঁহারে প্রণাম মম। ৪

| (| দৌ—গাঁ'র নাম ভব- | ভেষজের সম | হারী ভিনতাপ-শৃল। |
|---|------------------|---------------------|-------------------------|
| | সে কুপাল যেন | আমারে সবারে | র'ন চির-অমুকুল। ১২৪ (ক) |
| | শুনি' বায়দের | বচন পাবন | হেরি' প্রেম রাম-পদে। |
| | গত-সন্দেহ | কহেন গ রু ড় | এ বচন গদগংদ ॥ ১২৪ (४) |

রামের চরণে এবে লাগিল নুডন রভি। মোহরূপী জগধির তুমি হে তরণী মম। কি আর করিব প্রাম্ভু এর প্রতি উপকার। রাম-পদ-অফুরাগী তুমি দেব পুর্ণকাম। मस विवित्री नहीं धर्मी अध्वाधत। সম্ভ-জনয় যেন স্থকোমল নবনীত। নবনী গলিত হয় আপনার উদ্বাপে। জনম জীবন মম সফল হইল আৰু। আৰু হ'তে ৰে'ন মোরে তব এক কিছুর।

(5)—তোমার বচন শুনি' কৃতকৃত্য আমি আজ। <u>এরাম-চরিত-সুধাসিঞ্চিত</u> ধগরাজ। মায়ালাভ মোহ মোর বিগত বিষল মতি॥ ১ ভোমার প্রসাদে নাথ প্রাণে সুথ অমূপম # তোমার চরণ-ডলে নভি মম বার বার॥ ২ ভোমার সমান ভাত কেহ নহে ভাগ্যবান্॥ পরহিত-হেতৃ ওধু রহেন ধরণী 'পর ॥ ৩ কবির বচন কিছু উপমানহে প্রকৃত । সন্ত জবিত হ'ন সদা পর-পরিতাপে॥ ৪ সংশয় অপগত ভব কুপা খগরাবা ॥ ছে ভবানি বার বার কহিল বিহগবর ॥ ৫

| (म) —कत्रिया व्यनाम | বায়সের পায় | প্রেম-লীন মতি-ধীর।] | |
|----------------------------|---------------|-----------------------------|--|
| চলিল গক্ত | বৈকুঠে ভবে | करम बाधि' बच्चवीत ॥ १२० (क) | |
| माधु-ममार्गम | বিনা মহাদেবি | লাভ নাহি জগম্য। | |
| (महे मद्यानाम | ছরি-কুপা বিনা | নাহি হয় বেদ কয় ॥ ১২৫ (খ) | |

রাবারণ-বাহার্য

(5)-कश्नाम अ भवम भुगुमम देखिशाम। প্রণতের সুরন্ধক করণা-আগার রাম। ন্তির চিতে বেবা করে জীরাম-কথা অবণ। ভীর্ব-ভ্রমণ আর সাধনা যতেক সব। বছবিধ ধর্ম কর্ম আর যভ বভ দান। कीवग्रा प्रमा त्मवा छक्र किया विक्रभर्त ।

अवटलंडे निमाक्त छव-शाम दग्न नाम ॥ ताकीय-व्यवज्ञान तथाम कारण व्यविदाम ॥ ১ সব পাপ ছুচে তা'র কায়া কর্ম কি বচন ॥ যোগ कি বিরাগ কিছা জ্ঞানলাভ ও বিভব ॥ ২ ব্যক ইক্সিয়-রোধ জপ তপ কি যাজন। विद्या विनय आत विरवक-दार्शिख मरन । ७

এ সব সাধন যত কবিত নিগমাদিতে। দে ভক্তি জীরামের বেলেতে ইহাও বলে।

गकरमति शतिपठि' औतारमत छक्**ष्टि** । विश्त डांशांत कुला कबांठ ना का'दत मिटन । ४

(पी-अ कथा (य कन 🕮 হরি-ভক্তি

CA PATO মুনি-অগোচর মনে ধরি? বিশ্বাস। পায় সে বিনা-প্রয়াস । ১২৬

C5)---সে-ই গুণী সে-ই জ্ঞানী সে-ই ভবে সব জ্ঞাতা। পণ্ডিত ধরাতল-বিভূষণ সে-ই দাতা। কুলের ভারক দে-ই দে-ই ধর্ম-প্রায়ণ। নীভিতে নিপুণ দে-ই স্থচতুর দেই জন। मिटे कवि तम विषान तम-हे बौत वण-शौत। थक महे एक यथा श्रवाहियी अवस्तो । সেই নরপতি ধর্ম থে পরম স্থায়বান। थवा-थन्न रम्हे थन मार्न या वाश्विक हम । মহাধ্য গেইজন ধেবা সাধ্যক্ষ করে।

রামের চরণতলে চির-রত যা'র মন 🛚 ১ বেদের মীমাংসা ঠিক বুঝে'ছে ভাহার মন ॥ व्यक् शह-श्रारण (यवा त्मवा करत त्रचुवीत ॥ २ ধক্ত সেই পতি-এত পালে পূর্ণ যে রমণী। थक तिह विक निक-शाम यया निकारान्॥ ७ ধক্ত সে প্রবীণ-মতি পুণ্যে যাহা রভ র'র ॥ ধক্ত-জনম ভিজা অখণ্ড যে ড জিল ধরে ॥ ৪

(पी-49 अन प्रिव রাম-পরায়ণ

সেই মহাকুল ভকত ভনয

शृक्य क्रगडो-छल । আসিয়াছে যেই কুলে । ১২৭

(5)-ক্রিলাম সব কথা যেমন আমার মতি। হেরি' অন্তরে তব প্রীতি-হিলোল বয়। ना कहिल এই कथा धुई क्लेड स्ता। क्काथी लाखी कामी करन ना कहिरद कनाठन। <u>हताठत-अ</u>ष्ट्र तारम रच नाहि करते पूक्त ॥ २ কথনই শুনা'বে না যা'ব দ্বিজ-ভ্রোত মতি। **শ্রিরাম-কথা-সুধার সেইজন অধিকারী।** গুরুপদে প্রীতি যা'র আরে নীতি-রত যেবা। এ কথা ডাহার কালে লাগিবে অমির সম।

এ मत क्रमय-मास्त्र शालान आहिन अछि ॥ বলিলাম উদহাটি' রাম-কথা সমুদয়। ১ অবিচল মন দিয়া হরিকখা যে না अन्त । যদিও সে ইন্দের সম হয় নরপতি 🛚 সন্ত-সঙ্গ যা'র অতি প্রাণ-মনোহারী। ৩ (क' न (म-डे अधिकाती विध्ये (य कात मिना ! बाम-इबन यांब क कोवरन आर्ताशांत्र ॥ 8

CVI-AICHA BACA সে জন করিবে

যে চাহে ভক্তি अकि-यूग मिरव

কিছা চাতে নিৰ্বাণ। क कथा यहान भाग । ३२४

(5)--किलाम महारमित ब्राम-कथा अञ्चलम । कलि-मलाहाबी मन-मिलनेका-विमुद्रम ॥ ভব-রোগ বিনাশক সঞ্চীবনীর প্রায়। সম্ভ-সোপান চাক ইহাতে র'য়েছে অভি। **बि**हित्र कुना या'त 'नदि हम सङ्गनम ।

ৰিমোহন রাম-কথা বেদ পশুত গা'র । ১ পথের মতন এরা সাধিতে রাম-ভক্তি। (महे करत a (माशान-छेशर शम-बात्रण # २ কপটভাহীন হ'য়ে যে গাহে এ হরি-কথা। খনে গায় আর যেবা করে ভা' অমুমোদন। শুনিয়া এ সব ৰুধা শ্ৰতিশয় প্ৰিয় লাগে। তোমার কুপায় প্রভু গত সন্দেহ যত।

মনের কামনা ভা'র পূরণে সন্দেহ কোথা ॥ গো-পদ সমান ভবনিধি করে উত্তরণ॥ ৩ ক্রেন ভবানী তবে অতুলন অমুরাগে ॥ কভ প্রেম রাম-পদে এবে ভাহা ক'ব কভ 🛙 ৪

দো-শত ধ্যু আমি সব ত্ব গিয়া : ভোমার কুপায় রামের চরণে

বিশ্বের অধিপতি। উপঞ্চিল দৃঢ় প্রীতি । ১২৯

(5)-ভবানী-ভবানীপত্তি-শুভদ এ সংবাদ। **७**व-छग्न **अक्षत मत्मह-अक्ष**क। ব্দগত মাঝারে যত রামের ভক্তগণ। রশ্বপতি-কুপাবলে মম মন্তি যেইমত। যোগ যাগ ৰূপ তপ কি ব্ৰত কি পূজা হোম। এই কলিয়ুগে আর সাধন নাহিক কোন । কেবল স্মরণ তাঁরে কীর্ত্তন গুণগ্রাম। শুধু এক কাল যাঁ'র পতিত দাদেরে ত্রাণ।

च्यत्थव निवान आव भगन प्रव∙विशाप ॥ ভকত-বিমোহন সঞ্জন-ভোৰক ৷ > রাম-কথা সম প্রিয় না গণে কিছু এমন ॥ এ পৃত রচিত-কথা করিলাম কীব্তিত । ২ শ্রীরাম-চরিত কথা শুনা ভরি' তুই কাণ 🛭 ৩ বেদেতে এ কথা গায় সাধু কবিগণে গা'ন ॥ রে মন তাঁচারে ভল' কুটিলতা ত্যাগ করি'। কে না পায় পরাগতি শ্রীরাম-ভলনা করি'। ৪

| ছ—কেবা ভরে নাই |
|--------------------|
| অঞ্চামিশ ব্যাধ- |
| আভীর যবন |
| শু ওকবার |
| রমুকুলমণি- |
| কি কলির কিবা |
| বেশী কি যদি বা |
| ভবু অবি ছা- |
| ख्यान खुन्दर |
| সে কেবল রাম |
| যাঁ'র করেণার |
| পরমা শাস্তি |
| |

পতিত-পাবন ভব্দিয়া রামে। ওরে মৃচ্মন আদি কত খলে ভারিলা সহজে আপন নামে॥ গেল ভব-পার শ্বরিয়া রাম। পাপরূপ যত মুধে নাম ল'য়ে সে রাম-চরণে করি প্রণাম ॥ ১ লীলা-সুধ্ এই (य शांट्ड (य अटन (यक्नन वटन) विनाग्रारम भू'रम अधारम हरण ॥ মন-মলিনতা ष्ट्र'ठात कविका प्यतर्ग बार्ष । জানি' মনোহর নাশি' রখুনাথ চরণে রাথে ॥ ২ জনিত বিকার व्यमार्थ मनग्र ए: ४-जाणा। করুণা-মাকর কে তাঁ'র সমান মোক্ষদাতা ॥ কুপালু অকাম পরমাণু পেয়ে কৃটম্ভি এই তুলসীদাস।

তুলদীদালের দীনতা ও কলপ্রতি

(का-मम मम मोन এ विठाति' मत्न नीटन मग्रामग्र হর' আহতু মম

मिक्क भद्रार्थ

ভোমা সব কেবা আর। माक्रेन करनेब छात्र ॥ ১৩• (२)

সে রাম সমান কে ত্রাডা ত্রাস ॥ ৩

কামীর কামিনী লোভীর কনক যেমন প্রিয় হে রাম। ডেমনি হে প্রভূ অবিশ্বল তুমি হও,মম প্রাণারাম । ১৩০ (ব) শ্লোক-্ষে প্ৰথম-প্ৰকাশিত প্রভু কবি-শিরোরত্ন 🖣 শস্তু-প্রণীত |স্ফুর্গম অনশ্য-ভক্তি জাগে **এ**রাম-পদারবিদে এমন পাবন রামায়ণ। রখুনাপ-নাম-রত निक-श्रमि-जमः भाष्त्रि-जरत মানিয়া ভাহায় সদা हेहारत जुलमौनाम व्यव्हाबाउक करत्र ॥ ১ চরিত-মানস রূপে পুণ্যময় পাপহর অমুভব-জ্ঞান ভক্তিপ্ৰদ সভত মঙ্গলকর মায়া মোহ মলহারী স্থবিমল প্রেমবারি-পরিপূর্ণ সর্বদা ওভদ। শ্ৰীমদ জানকী-পতি চরিত-মানস-সরে ভক্তিভরে যেবা করে স্নান দহন হইতে পায় ত্রাণ ॥ ২ মার্জগু-কিরণ ঘোর-সে অন সংসাররূপী

কলিষ্গের সমস্ত পাপধ্বংসকারী জ্ঞীরামচরিত-মানসের এই সপ্তম সোপান সমাপ্ত হইল॥

উত্তরকাণ্ড

(उवत्रकाक ममाल)